गे पुरुष
चीत

प्रकाशकीय

जहाँ आदित्य का प्रकाश नहीं पहुँच पाता, वहाँ भी साहित्य का आलोक अपनी प्रभा फैला सकता है। इसलिए साहित्य अर्थात् ज्ञान सूर्य से भी अधिक प्रभास्वर माना गया है।

साहित्य भी वही उपयोगी है जिसमें जीवन-निर्माण की प्रेरणा हो, अन्तःकरण को पवित्रता और प्रसन्नता प्रदान करने की क्षमता हो। ऐसा साहित्य ही वास्तव में आज के लोकजीवन का मंगल कर सकता है।

जैन आगमों में जीवननिर्माण की अनन्त-अनन्त प्रेरणाएँ भरी हैं, यद्यपि वह साहित्य प्राकृतभाषा में ग्रथित है, किन्तु फिर भी सतत स्वाध्याय करने वाले साधकों के लिए वह भाषा भी मातृभाषा की भाँति सुबोध और सहज आकर्षण का विषय रही है। मूल पाठों के स्वाध्याय से जो आनन्द और जो भावात्मक प्रेरणा मिलती है, वह उसके अनुवाद से कहाँ मिल पायेगी? इसीलिए जैन परम्परा में मूल आगम-साहित्य के स्वाध्याय की परिपाटी चली आ रही है।

प्रस्तुत पुस्तक में आगमों के वे पाठ संकलित किये गये हैं जिनका स्वाध्याय प्रायः श्रमण-श्रमणी तथा स्वाध्यायप्रेमी सद्गृहस्थ करते रहते हैं। इसका संकलन किया है, सेवाभावी श्री अखिलेश मुनि जी ने। श्री अखिलेश मुनिजी की संकलनदक्षता 'मंगलवाणी' के रूप में सर्वोत्तम सिद्ध हो चुकी है। आज तक मंगलवाणी के जितने अधिक संस्करण निकले हैं, और वह जितनी लोकप्रिय हुई है, जैनसमाज के प्रकाशनों में शायद ही कोई दूसरी पुस्तक इतनी लोकप्रिय हुई हो। हम मुनिश्री के इस श्रम के आभारी हैं।

इस पुस्तक के पाठ एवं प्रूफसंशोधन आदि कार्यों में प्रसिद्ध विद्वान मुनिश्री नेमिचन्द्रजी महाराज तथा हमारे चिर-परिचित सहयोगी श्रीचन्दजी सुराना 'सरस' का जो सहयोग मिला उसके लिए हम उनके कृतज्ञ रहेंगे।

आशा है, यह संकलन पाठकों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

मन्त्री
सन्मति ज्ञानपीठ

प्राक्कथन

भौतिक ज्ञान और आत्मज्ञान में रातदिन का अन्तर है। भौतिक ज्ञान मनुष्य को अपने और परिवार के पेट भरने, अपनी आजीविका कमाने, अपने लिए सत्ता, महत्ता, पद-प्रतिष्ठा और यशकीर्ति प्राप्त करने की कला सिखाता है, भौतिक ज्ञान मनुष्य को विविध विषयों, विज्ञान की शाखाओं का विवरण प्रस्तुत कर देता है; वह भाषाज्ञान से लेकर विविध शिल्पों, कलाओं, विद्याओं तथा तकनीकियों में मनुष्य को निष्णात कर देता है; इसके विपरीत आत्म-ज्ञान मनुष्य को आत्मा से सम्बन्धित तमाम विषयों का अनुभवयुक्त ज्ञान करा देता है। वह विज्ञान, राजनीति आदि तमाम भौतिक ज्ञानों पर अंकुश रखने का एवं हेयोपादेय का विवेक करा देता है। सच्चा ज्ञान मनुष्य को कष्टसहिष्णु, संयमी, विश्ववत्सल, सर्वभूतात्मभूत और आस्रवनिरोधदक्ष बना देता है। मगर आत्मा के सम्बन्ध में विभिन्न शास्त्रों की बातें या द्रव्यगुण-पर्याय की शब्दावली का कोरा रटना आत्मज्ञान नहीं; उसे तो तोतारटन ही कहा जा सकता है। वह आत्मज्ञान तो तब कहला सकता है, जब शास्त्रज्ञान के साथ आत्मानुभूति हो, उपर्युक्त गुणों से युक्त अनुभवविज्ञान हो, जिससे शरीर और शरीर से सम्बन्धित पदार्थों और आत्मा व आत्मा से सम्बन्धित गुणों व शक्तियों की भिन्नता प्रत्यक्ष अनुभव में आ जाय, समय आने पर म्यान से तलवार की तरह शरीर या शरीर-सम्बद्ध वस्तु को अलग करने में जरा भी झिझक न हो; महापुरुषों के बताये हुए सिद्धान्तों के प्रति पूर्णतः समर्पणवृत्ति हो, उनकी सत्यता में पूर्ण विश्वास हो, साधना से सिद्धिप्राप्त महापुरुषों के अनुभवों को आत्मसात् करने की पूरी तमन्ना हो। यही वास्तविक भेदविज्ञान है। और इसे प्राप्त करने के दो ही कारण हैं—स्वतः प्रेरणा से तथा शास्त्र-गुरु आदि निमित्तों से।

आगमों के द्वारा ही महापुरुषों के अनुभव उपलब्ध होते हैं

अनुभवी महापुरुष हमारे सामने नहीं हैं, ऐसी दशा में उनके अनुभवों की

जानकारी आज हमें आगमों-धर्मशास्त्रों के द्वारा ही हो सकती है। जो पुरुष हमारे बीच आज नहीं है, उनसे हम जीवित और प्रत्यक्ष की तरह बातचीत कर सकें, इसके लिए आगम ही सर्वोत्तम माध्यम है। और जैनागमों जिनों—वीतरागपुरुषों द्वारा उपदिष्ट श्रुत, आगम ही सूक्त या शास्त्र कहलाते हैं, तथा वे अनुभवसिद्ध वचन किसी एक वर्ग या सम्प्रदायविशेष के प्रति पक्षपात से युक्त नहीं होते। आजकल के कई क्षुद्राशय लोग तर्कों और युक्तियों से उल्टी बातें भी साधारण लोगों के दिमाग में बिठा कर गुमराह कर देते हैं। लेकिन जैन-आगम प्रज्ञा से धर्मतत्व की समीक्षा करने का स्पष्ट उद्‌घोष करते हैं।

आगम की व्याख्या

आगम का वास्तविक अर्थ ही यह है—"आ समन्तात् गम्यते ज्ञायते जीवन-जगत् तत्त्वार्थो येनाऽसो आगमः" जिससे जीवन और जगत् के तत्त्वों के समीचीन अर्थ का ज्ञान हो, हेय-ज्ञेय-उपादेय का भलीभांति बोध हो उसे आगम कहते हैं।

आगमवचन प्रमाणभूत और साक्षीरूप

बहुत-सी बातें हम इन्द्रियों और मन से भी जान नहीं सकते; अनुभव भी कई दफा देशकाल और परिस्थिति की छाप से प्रभावित होता है। ऐसी स्थिति में आगम ही एकमात्र साक्षी व प्रमाणभूत होता है, जिसके जरिये व्यक्ति यथार्थ निर्णय प्राप्त कर सकता है। इसीलिए भगवद्‌गीता में कहा है—

'तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ'

"कार्य और अकार्य की व्यवस्था सम्यग्ज्ञान में शास्त्र ही तुम्हारे लिए प्रमाण है।"

वास्तव में आगम इन्द्रियज्ञान, मनोज्ञान, परिस्थिति या किसी पक्ष आदि से प्रभावित नहीं होता; वह सर्वज्ञों द्वारा आत्मा से सीधे प्रत्यक्षीकृत ज्ञान से युक्त होता है। इसलिए आगमज्ञान ही जीवन और जगत की समस्त ग्रन्थियों को सुलझाने में सहायक होता है।

आगम बार-बार स्वाध्याय से ही ज्ञानप्राप्ति में सहायक

परन्तु आगम तभी सहायक सिद्ध होते हैं जब उन आगमों का पाँचों अंगों से युक्त बार-बार स्वाध्याय किया जाय। वाचना, पृच्छना, पर्यटना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा, ये स्वाध्याय के पांच अंग हैं। इस विधि से जैनागम का स्वाध्याय करने पर ही अज्ञानरूप अन्धकार का भेदन और सम्यग्ज्ञान-आत्मज्ञान का प्रकाश प्राप्त होता है। उत्तराध्ययनसूत्र में गणधर श्री इन्द्रभूति गौतम के प्रश्न 'सज्झाएणं भंते जीवे किं जणयइ' ? "भंते ! स्वाध्याय से जीव को क्या लाभ होता है ?" के उत्तर में वीतरागप्रभु महावीर उत्तर देते हैं—सज्झाएणं नाणा वरणिज्जं कम्मं खवेइ' स्वाध्याय से ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है।

आगमों का स्वाध्याय करने से चित्त एकाग्र होगा, ज्ञान का उत्तरोत्तर विकास होगा, बुद्धि और भावना निर्मल होगी और कर्मों की निर्जरा (आंशिक क्षय) होगी। ज्ञानावरण कर्मों का क्षय होने से सम्यग्ज्ञान प्राप्त होगा ही।

'जैनागम पाठमाला, नामकरण क्यों ?

यही कारण है कि प्रस्तुत ग्रन्थ का नाम 'जैनागम पाठमाला' रखा गया है। इसमें जीवन को सर्वांगीण रूप से ज्ञान परिपूर्ण बनाने वाले दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, नन्दीसूत्र, सुखविपाकसूत्र, दशाश्रुतस्कन्ध, चित्तसमाधि पंचम दशा, औपपातिक सूत्र की प्रकीर्णक गाथाएँ, तत्त्वार्थसूत्र आदि आगम के सुवचन पुष्पों की सुन्दर माला गूँथी गई है। सेवाभावी श्री अखिलेशजी महाराज की प्रेरणा से पुस्तक को सर्वांगसुन्दर बनाने में सुप्रसिद्ध लेखक श्रीचन्द जी सुराणा 'सरस' ने पुरुषार्थ किया है। एतदर्थ उन्हें धन्यवाद !

आशा है, जीवन-निर्माण की दृष्टि वाले स्वाध्यायीजन इस पुस्तक का समादर करेंगे और सम्यग्ज्ञान की ज्योति जगा कर चारित्र के पथ पर बढ़ेंगे। सुज्ञेषु किं बहुना·····················

जैन भवन, लोहामण्डी, आगरा-२
दि० १-६-७४

—मुनि नेमिचन्द्र

सज्झाएणं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ।

जैनागम पाठमाला

अनुक्रम

पढमं अज्झयणं

दुमपुप्फिया

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो ।
देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥

जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आवियइ रसं ।
न य पुप्फं किलामेइ सो य पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥

एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो ।
विहंगमा व पुप्फेसु दाणभत्तेसणे रया ॥ ३ ॥

वयं च वित्तिं लब्भामो न य कोइ उवहम्मई ।
अहागडेसु रीयंते पुप्फेसु भमरा जहा ॥ ४ ॥

महुकारसमा बुद्धा जे भवंति अणिस्सिया ।
नाणापिंडरया दंता तेण वुच्चंति साहुणो ॥ ५ ॥

—त्ति बेमि ॥

बीअं अज्झयणं

सामण्णपुव्वयं

कहं नु कुज्जा सामण्णं जो कामे न निवारए।
पए पए विसीयंतो संकप्पस्स वसंगओ ॥ १ ॥

वत्थगन्धमलंकारं इत्थीओ सयणाणि य।
अच्छन्दा जे न भुंजन्ति न से चाइ त्ति वुच्चइ ॥ २ ॥

जे य कन्ते पिए भोए लद्धे विपिट्ठिकुव्वई।
साहीणे चयइ भोए से हु चाइ त्ति वुच्चइ ॥ ३ ॥

समाए पेहाए परिव्वयंतो
सिया मणो निस्सरई बहिद्धा।
न सा महं नोवि अहं पि तीसे
इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं ॥ ४ ॥

आयावयाही चय सोउमल्लं
कामे कमाही कमियं खु दुक्खं।
छिन्दाहि दोसं विणएज्ज रागं
एवं सुही होहिसि संपराए ॥ ५ ॥

पक्खन्दे जलियं जोइं धूमकेउं दुरासयं।
नेच्छन्ति वन्तयं भोत्तुं कुले जाया अगन्धणे ॥ ६ ॥

धिरत्थु ते जसोकामी जो तं जीवियकारणा ।
वन्तं इच्छसि आवेउं सेयं ते मरणं भवे ॥ ७ ॥

अहं च भोयरायस्स तं चऽसि अन्धगवण्हिणो ।
मा कुले गंधणा होमो संजमं निहुओ चर ॥ ८ ॥

जइ तं काहिसि भावं जा जा दच्छसि नारिओ ।
वायाइद्धो व्व हडो अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥ ९ ॥

तीसे सो वयणं सोच्चा संजयाए सुभासियं ।
अंकुसेण जहा नागो धम्मे संपडिवाइओ ॥ १० ॥

एवं करेन्ति संबुद्धा पण्डिया पवियक्खणा ।
विणियट्टन्ति भोगेसु जहा से पुरिसोत्तमो ॥ ११ ॥

—त्ति बेमि ॥

तइयं अज्झयणं

खुड्डियायारकहा

संजमे सुट्ठिअप्पाणं विप्पमुक्काण ताइणं ।
तेसिमेयमणाइण्णं निग्गंथाण महेसिणं ।। १ ।।

उद्देसियं कीयगडं नियागमभिहडाणि य ।
राइभत्ते सिणाणे य गंधमल्ले य वीयणे ।। २ ।।

सन्निही गिहिमत्ते य रायपिंडे किमिच्छए ।
संवाहणा दंतपहोयणा य संपुच्छणा देहपलोयणा य ।। ३ ।।

अट्ठावए य नाली य छत्तस्स य धारणट्ठाए ।
तेगिच्छं पाणहा पाए समारंभं च जोइणो ।। ४ ।।

सेज्जायरपिंडं च आसंदीपलियंकए ।
गिहंतरनिसेज्जा य गायस्सुव्वट्टणाणि य ।। ५ ।।

गिहिणो वेयावडियं जा य आजीववित्तिया ।
तत्तानिव्वुडभोइत्तं आउरस्सरणाणि य ।। ६ ।।

मूलए सिंगवेरे य उच्छुखंडे अनिव्वुडे ।
कंदे मूले य सच्चित्ते फले वीए य आमए ।। ७ ।।

सोवच्चले सिंधवे लोणे रोमालोणे य आमए ।
सामुद्दे पंसुखारे य कालालोणे य आमए ।। ८ ।।

धूवणेत्ति वमणे य वत्थीकम्म विरेयणे ।
अंजणे दंतवणे य गायाभंगविभूसणे ।। ९ ।।

सव्वमेयमणाइण्णं निग्गंथाण महेसिणं ।
संजमम्मि य जुत्ताणं लहुभूयविहारिणं ।। १० ।।

पंचासवपरिन्नाया तिगुत्ता छसु संजया ।
पंचनिग्गहणा धीरा निग्गंथा उज्जुदंसिणो ।। ११ ।।

आयावयंति गिम्हेसु हेमंतेसु अवाउडा ।
वासासु पडिसंलीणा संजया सुसमाहिया ।। १२ ।।

परीसहरिऊदंता धुयमोहा जिइंदिया ।
सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा पक्कमंति महेसिणो ।। १३ ।।

दुक्कराइं करेत्ताणं दुस्सहाइं सहेत्तु य ।
केइत्थ देवलोएसु केई सिज्झंति नीरया ।। १४ ।।

खवित्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य ।
सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता ताइणो परिनिव्वुडा ।। १५ ।।

—त्ति बेमि ।।

चउत्थं अज्झयणं

छज्जीवणिया

सुयं मे आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता। सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती ॥ सू० १ ॥

कयरा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता? सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती ॥ सू० २ ॥

इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता। सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती–तं जहा–पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया तसकाइया ॥ सू० ३ ॥

पुढवी चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ४ ॥

आऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ५ ॥

तेऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ६ ॥

वाऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ७ ॥

वणस्सई चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं, तं जहा—अग्गवीया मूलवीया पोरवीया खंधवीया वीयरुहा सम्मुच्छिमा तणलया वणस्सइकाइया सवीया चित्तमंतमक्खाया, अणेगजोवा, पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ८ ॥

से जे पुण इमे अणेगे वहवे तसा पाणा तं जहा—अंडया पोयया जराउया रसया संसेइमा सम्मुच्छिमा उब्भिया उववाइया। जेसिं केसिंचि पाणाणं अभिक्कंतं पडिक्कंतं संकुचियं पसारियं रुयं भंतं तसियं पलाइयं आगइगइविन्नाया—जे य कीडपयंगा जा य कुंथुपिवीलिया सव्वे वेइंदिया सव्वे तेइंदिया सव्वे चउरिंदिया सव्वे पंचिंदिया सव्वे तिरिक्खजोणिया सव्वे नेरइया सव्वे मणुया सव्वे देवा सव्वे पाणा, परमाहम्मिया एसो खलु छट्ठो जीवनिकाओ तसकाओ त्ति पवुच्चई ॥ सू० ९ ॥

इच्चेसिं छण्हं जीवनिकायाणं नेव सयं दंडं समारंभेज्जा नेवन्नेहिं दंडं समारंभावेज्जा दंडं समारंभंते वि अन्ने न समणु जाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० १० ॥

पढमे भंते ! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमण सव्वं भंते ! पाणाइवायं पच्चक्खामि—से सुहुमं वा वायरं वा तसं वा थावरं वा नेव सयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायावेज्जा पाणे अइवायंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

पढमे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥ सू० ११ ॥

अहावरे दोच्चे भंते ! महव्वए मुसावायाओ वेरमणं सव्वं भंते ! मुसावायं पच्चक्खामि—से कोहा वा लोहा वा भया वा हासा वा नेव सयं मुसं वएज्जा नेवन्नेहिं मुसं वायावेज्जा मुसं वयंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते। पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

दोच्चे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ॥ सू० १२ ॥

अहावरे तच्चे भंते ! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमणं सव्वं भंते ! अदिन्नादाणं पच्चक्खामि से गामे वा नगरे वा रण्णे वा अप्पं वा वहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा, नेव सयं अदिन्नं गेण्हेज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गेण्हावेज्जा अदिन्नं गेण्हंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

तच्चे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥ सू० १३ ॥

अहावरे चउत्थे भंते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं सव्वं भंते ! मेहुणं पच्चक्खामि—से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्ख-जोणियं वा, नेव सयं मेहुणं सेवेज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं सेवावेज्जा मेहुणं सेवंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं

पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

चउत्थे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ॥ सू० १४ ॥

अहावरे पंचमे भंते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं सव्वं भंते ! परिग्गहं पच्चक्खामि—से गामे वा नगरे वा रण्णे वा अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा, नेव सयं परिग्गहं परिगेण्हेज्जा नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगेण्हावेज्जा परिग्गहं परिगेण्हंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

पंचमे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥ सू० १५ ॥

अहावरे छट्ठे भंते ! वए राईभोयणाओ वेरमणं सव्वं भंते ! राईभोयणं पच्चक्खामि—से असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा नेव सयं राइं भुंजेज्जा नेवन्नेहिं राइं भुंजावेज्जा राइं भुंजंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

छट्ठे भंते ! वए उवट्ठिओमि सव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं ॥ सू० १६ ॥

इच्चेयाइं पंच महव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्तहियट्ठयाए उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥ सू० १७ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते

वा जागरमाणे वा—से पुढविं वा भित्तिं वा सिलं वा लेलुं वा ससरक्खं वा कायं ससरक्खं वा वत्थं हत्थेण वा पाएण वा कट्ठेण वा किलिंचेण वा अंगुलियाए वा सलागाए वा सलागाहत्थेण वा, न आलिहेज्जा न विलिहेज्जा न घट्टेज्जा न भिंदेज्जा अन्नं न आलिहावेज्जा न विलिहावेज्जा न घट्टावेज्जा न भिंदावेज्जा अन्नं आलिहंतं वा विलिहंतं वा घट्टंतं वा भिंदंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं नं समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० १८ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से उदगं वा ओसं वा हिमं वा महियं वा करगं वा हरतणुगं वा सुद्धोदगं वा उदओल्लं वा कायं उदओल्लं वा वत्थं ससिणिद्धं वा कायं ससिणिद्धं वा वत्थं, न आमुसेज्जा न संफुसेज्जा न आवीलेज्जा न पवीलेज्जा न अक्खोडेज्जा न पक्खोडेज्जा न आयावेज्जा न पयावेज्जा अन्नं न आमुसावेज्जा न संफुसावेज्जा न आवीलावेज्जा न पवीलावेज्जा न अक्खोडा-वेज्जा न पक्खोडावेज्जा न आयावेज्जा न पयावेज्जा अन्नं आमुसंतं वा संफुसंतं वा आवीलंतं वा पवीलंतं वा अक्खोडंतं वा पक्खोडंतं वा आयावंतं वा पयावंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहिं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।। सू० १९ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से अगणिं वा इंगालं वा मुम्मुरं वा अच्चिं वा जालं वा अलायं वा सुद्धागणिं वा उक्कं वा, न उंजेज्जा न घट्टेज्जा न भिंदेज्जा न उज्जालेज्जा न पज्जालेज्जा न निव्वावेज्जा अन्नं न उंजावेज्जा न घट्टावेज्जा न भिंदावेज्जा न उज्जालावेज्जा न पज्जालावेज्जा न निव्वावेज्जा अन्नं उंजंतं वा घट्टंतं वा भिंदंतं वा उज्जालंतं वा पज्जालंतं वा निव्वावंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० २० ।

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से सिएण वा विहुयणेण वा तालियंटेण वा पत्तेण वा पत्तभंगेण वा साहाए वा साहाभंगेण वा पिहुणेण वा पिहुणहत्थेण वा चेलेण वा चेलकण्णेण वा हत्थेण वा मुहेण वा अप्पणो वा कायं वाहिरं वा वि पुग्गलं, न फुमेज्जा न वीएज्जा अन्नं न फुमावेज्जा न वीयावेज्जा अन्नं फुमंतं वा वीयंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० २१ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से वीएसु वा वीयपइट्ठिएसु वा रूढेसु वा रूढपइट्ठिएसु वा जाएसु वा जायपइट्ठिएसु वा हरिएसु वा हरियपइटिठएसु वा छिन्नेसु वा छिन्नपइट्ठिएसु वा सच्चित्तेसु वा सच्चित्तकोलपडिनिस्सिएसु वा, न गच्छेज्जा न चिट्ठेज्जा न निसीएज्जा न तुयट्टेज्जा अन्न न गच्छावेज्जा न चिट्ठावेज्जा न निसीयावेज्जा न तुयट्टावेज्जा अन्न गच्छंतं वा चिट्ठंतं वा निसीयंतं वा तुयट्टंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० २२ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से कीडं वा पयंगं वा कुंथुं वा पिवीलियं वा हत्थंसि वा पायंसि वा बाहुंसि वा ऊरुंसि वा उदरंसि वा सीसंसि वा वत्थंसि वा पडिग्गहंसि वा कंवलगंसि वा पायपुच्छणंसि वा रयहरणंसि वा गोच्छगंसि वा उडगंसि वा दंडगंसि वा पीढगंसि वा फलगंसि वा सेज्जंसि वा संथारगंसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए तओ संजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय एगंतमवणेज्जा नो णं संघायमावज्जेज्जा ॥ सू० २३॥

अजयं चरमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई।
वंधई पावयं कम्मं तं से होई कडुयं फलं ॥ १ ॥

अजयं चिट्ठमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई।
वंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ २ ॥

अजयं आसमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई।
वंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ३ ॥

अजयं सयमाणो उ पाणभूयाइं हिंसइ।
बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ४ ॥

अजयं भुंजमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई।
वंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ५ ॥

अजयं भासमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई।
वंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ६ ॥

कहं चरे ? कहं चिट्ठे ? कहमासे ? कहं सए ?
कहं भुंजन्तो भासन्तो पावं कम्मं न वंधई ? ॥ ७ ॥

जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं सए।
जयं भुंजन्तो भासन्तो पावं कम्मं न बंधई ॥ ८ ॥

सव्वभूयप्पभूयस्स सम्मं भूयाइ पासओ।
पिहियासवस्स दंतस्स पावं कम्मं न वंधई ॥ ९ ॥

पढमं नाणं तओ दया एवं चिट्ठइ सव्वसंजए।
अन्नाणी किं काही ? किं वा नाहिइ छेय पावगं ? ॥१०॥

सोच्चा जाणइ कल्लाणं सोच्चा जाणइ पावगं।
उभयं पि जाणइ सोच्चा जं छेयं तं समायरे ॥ ११ ॥

जो जीवे वि न याणाइ अजीवे वि न याणई ।
जीवाजीवे अयाणंतो कहं सो नाहिइ संजमं ? ॥ १२ ॥

जो जीवे वि वियाणाइ अजीवे वि वियाणई ।
जीवाजीवे वियाणंतो सो हु नाहिइ संजमं ॥ १३ ॥

जया जीवे अजीवे य दो वि एए वियाणई ।
तया गइं वहुविहं सव्वजीवाण जाणई ॥ १४ ॥

जया गइं वहुविहं सव्वजीवाण जाणई ।
तया पुण्णं च पावं च वंधं मोक्खं च जाणई ॥ १५ ॥

जया पुण्णं च पावं च वंधं मोक्खं च जाणई ।
तया निव्विदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ॥ १६ ॥

जया निव्विदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ।
तया चयइ संजोगं सब्भिंतरवाहिरं ॥ १७ ॥

जया चयइ संजोगं सब्भिंतरवाहिरं ।
तया मुंडे भवित्ताणं पव्वइए अणगारियं ॥ १८ ॥

जया मुंडे भवित्ताणं पव्वइए अणगारियं ।
तया संवरमुक्किट्ठं धम्मं फासे अणुत्तरं ॥ १९ ॥

जया संवरमुक्किट्ठं धम्मं फासे अणुत्तरं ।
तया धुणइ कम्मरयं अवोहिकलुसं कडं ॥ २० ॥

जया धुणइ कम्मरयं अवोहिकलुसं कडं ।
तया सव्वत्तगं नाणं दंसणं चाभिगच्छई ॥ २१ ॥

जया सव्वत्तगं नाणं दंसणं चाभिगच्छई ।
तया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ॥ २२ ॥

जया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ।
तया जोगे निरुंभित्ता सेलेसिं पडिवज्जई ॥ २३ ॥

जया जोगे निरुंभित्ता सेलेसिं पडिवज्जई ।
तया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥ २४ ॥

जया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ ।
तया लोगमत्थयत्थो सिद्धो हवइ सासओ ॥ २५ ॥

सुहसायगस्स समणस्स सायाउलगस्स निगामसाइस्स ।
उच्छोलणापहोइस्स दुलहा सुग्गइ तारिसगस्स ॥ २६ ॥

तवोगुणपहाणस्स उज्जुमइ खंतिसंजमरयस्स ।
परीसहे जिणंतस्स सुलहा सुग्गइ तारिसगस्स ॥ २७ ॥

पच्छा वि ते पयाया खिप्पं गच्छन्ति अमरभवणाइं ।
जेसिं पिओ तवो संजमो य खन्ती य बम्भचेरं च ॥ २८ ॥

इच्चेयं छज्जीवणियं सम्मद्दिट्ठी सया जए ।
दुलहं लभित्तु सामण्णं कम्मुणा न विराहेज्जासि ॥ २९ ॥

—त्ति बेमि ॥

पंचमं अज्झयणं

पिंडेसणा (पढमोद्देसो)

संपत्ते भिक्खकालम्मि असंभंतो अमुच्छिओ ।
इमेण कमजोगेण भत्तपाणं गवेसए ॥ १ ॥

से गामे वा नगरे वा गोयरग्गगओ मुणी ।
चरे मंदमणुव्विग्गो अव्वक्खित्तेण चेयसा ॥ २ ॥

पुरओ जुगमायाए पेहमाणो महिं चरे ।
वज्जंतो बीयहरियाइं पाणे य दगमट्टियं ॥ ३ ॥

ओवायं विसमं खाणुं विज्जलं परिवज्जए ।
संकमेण न गच्छेज्जा विज्जमाणे परक्कमे ॥ ४ ॥

पवडन्ते व से तत्थ पक्खलन्ते व संजए ।
हिंसेज्ज पाणभूयाइं तसे अदुव थावरे ॥ ५ ॥

तम्हा तेण न गछेज्जा संजए सुसमाहिए ।
सइ अन्नेण मग्गेण जयमेव परक्कमे ॥ ६ ॥

इंगालं छारियं रासिं तुसरासिं च गोमयं ।
ससरक्खेहिं पाएहिं संजओ तं न अक्कमे ॥ ७ ॥

न चरेज्ज वासे वासंते महियाए व पडंतीए ।
महावाए व वायंते तिरिच्छसंपाइमेसु वा ॥ ८ ॥

न चरेज्ज वेससामंते बंभचेरवसाणुए ।
बंभयारिस्स दंतस्स होज्जा तत्थ विसोत्तिया ॥ ९ ॥

अणायणे चरंतस्स संसग्गीए अभिक्खणं।
होज्ज वयाणं पीला सामण्णम्मि य संसओ ॥ १० ॥

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं।
वज्जए वेससामंतं मुणी एगंतमस्सिए ॥ ११ ॥

साणं सूइयं गाविं दित्तं गोणं हयं गयं।
संडिब्भं कलहं जुद्धं दूरओ परिवज्जए ॥ १२ ॥

अणुन्नए नावणए अप्पहिट्ठे अणाउले।
इंदियाणि जहाभागं दमइत्ता मुणी चरे ॥ १३ ॥

दवदवस्स न गच्छेज्जा भासमाणो य गोयरे।
हसंतो नाभिगच्छेज्जा कुलं उच्चावयं सया ॥ १४ ॥

आलोयं थिग्गलं दारं संधिं दगभवणाणि य।
चरंतो न विणिज्झाए संकट्ठाणं विवज्जए ॥ १५ ॥

रन्नो गिहवईणं च रहस्सारक्खियाण य।
संकिलेसकरं ठाणं दूरओ परिवज्जए ॥ १६ ॥

पडिकुट्ठकुलं न पविसे मामगं परिवज्जए।
अचियत्तकुलं न पविसे चियत्तं पविसे कुलं ॥ १७ ॥

साणीपावारपिहियं अप्पणा नावपंगुरे।
कवाडं नो पणोल्लेज्जा ओग्गहंसि अजाइया ॥ १८ ॥

गोयरग्गपविट्ठो उ वच्चमुत्तं न धारए।
ओगासं फासुयं नच्चा अणुन्नविय वोसिरे ॥ १९ ॥

नीयदुवारं तमसं कोट्ठगं परिवज्जए।
अचक्खुविसओ जत्थ पाणा दुप्पडिलेहगा ॥ २० ॥

जत्थ पुप्फाइ वीयाइं विप्पइण्णाइं कोट्ठए।
अहुणोवलित्तं उल्लं दट्ठूणं परिवज्जए ॥ २१ ॥

एलगं दारगं साणं वच्छगं वावि कोट्ठए।
उल्लंघिया न पविसे विऊहित्ताण व संजए ॥ २२ ॥

असंसत्तं पलोएज्जा नाइदूरावलोयए।
उप्फुल्लं न विणिज्झाए नियट्टेज्ज अयंपिरो ॥ २३ ॥

अइभूमिं न गच्छेज्जा गोयरग्गगओ मुणी।
कुलस्स भूमिं जाणित्ता मियं भूमिं परक्कमे ॥ २४ ॥

तत्थेव पडिलेहेज्जा भूमिभागं वियक्खणो।
सिणाणस्स य वच्चस्स संलोगं परिवज्जए ॥ २५ ॥

दगमट्टियआयाणं वीयाणि हरियाणि य।
परिवज्जंतो चिट्ठेज्जा सव्विंदियसमाहिए ॥ २६ ॥

तत्थ से चिट्ठमाणस्स आहरे पाणभोयणं।
अकप्पियं न इच्छेज्जा पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥ २७ ॥

आहरंती सिया तत्थ परिसाडेज्ज भोयणं।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ २८ ॥

सम्मद्दमाणी पाणाणि वीयाणि हरियाणि य।
असंजमकरिं नच्चा तारिसं परिवज्जए ॥ २९ ॥

साहट्टु निक्खिवित्ताणं सच्चित्तं घट्टियाण य।
तहेव समणट्ठाए उदगं संपणोल्लिया ॥ ३० ॥

ओगाहइत्ता चलइत्ता आहरे पाणभोयणं।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ३१ ॥

पुरेकम्मेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ३२ ॥

एवं उदओल्ले ससिणिद्धे ससरक्खे मट्टिया ऊसे।
हरियाले हिंगुलए मणोसिला अंजणे लोणे ॥ ३३ ॥

गेरुय वण्णिय सेडिय सोरट्ठिय पिट्ठ कुक्कुस कए य।
उक्कट्ठमसंसट्ठे संसट्ठे चेव बोधव्वे ॥ ३४ ॥

असंसट्ठेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा।
दिज्जमाणं न इच्छेज्जा पच्छाकम्मं जहिं भवे ॥ ३५ ॥

संसट्ठेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा।
दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा जं तत्थेसणियं भवे ॥ ३६ ॥

दोण्हं तु भुंजमाणाणं एगो तत्थ निमंतए।
दिज्जमाणं न इच्छेज्जा छंदं से पडिलेहए ॥ ३७ ॥

दोण्हं तु भुंजमाणाणं दोवि तत्थ निमंतए।
दिज्जमाणं पडिच्छज्जा जं तत्थेसणियं भवे ॥ ३८ ॥

गुव्विणीए उवन्नत्थं विविहं पाणभोयणं।
भुज्जमाणं विवज्जेज्जा भुत्तसेसं पडिच्छए ॥ ३९ ॥

सिया य समणट्ठाए गुव्विणी कालमासिणी।
उट्ठिया वा निसीएज्जा निसन्ना वा पुणुट्ठए ॥ ४० ॥

तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४१ ॥

थणगं पिज्जेमाणी दारगं वा कुमारियं।
तं निक्खिवित्तु रोयंतं आहरे पाणभोयणं ॥ ४२ ॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४३ ॥

जं भवे भत्तपाणं तु कप्पाकप्पम्मि संकियं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४४ ॥

दगवारएण पिहियं नीसाए पीढएण वा ।
लोढेण वा वि लेवेण सिलेसेण व केणई ॥ ४५ ॥

तं च उब्भिंदिया देज्जा समणट्ठाए व दावए ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४६ ॥

असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा दाणट्ठा पगडं इमं ॥ ४७ ॥

तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४८ ॥

असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा पुण्णट्ठा पगडं इमं ॥ ४९ ॥

तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ५० ॥

असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा वणिमट्ठा पगडं इमं ॥ ५१ ॥

तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ५२ ॥

असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा समणट्ठा पगडं इमं ॥ ५३ ॥

तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ५४ ॥

उद्देसियं कीयगडं पूईकम्मं च आहडं ।
अज्झोयर पामिच्चं मीसजायं च वज्जए ॥ ५५ ॥

उग्गमं से पुच्छेज्जा कस्सट्ठा केण वा कडं ? ।
सोच्चा निस्संकियं सुद्धं पडिगाहेज्ज संजए ॥ ५६ ॥

असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
पुप्फेसु होज्ज उम्मीसं बीएसु हरिएसु वा ॥ ५७ ॥

तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ५८ ॥

असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
उदगम्मि होज्ज निक्खित्तं उत्तिंगपणगेसु वा ॥ ५९ ॥

तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ६० ॥

असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
तेउम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च संघट्टिया दए ॥ ६१ ॥

तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ६२ ॥

एवं उस्सक्किया ओसक्किया
उज्जालिया पज्जालिया निव्वाविया ।
उस्सिंचिया निस्सिंचिया
ओवत्तिया ओयारिया दए ॥ ६३ ॥

तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ।। ६४ ।।

होज्ज कट्ठं सिलं वा वि इट्टालं वा वि एगया ।
ठवियं संकमट्ठाए तं चहोज्ज चलाचलं ।। ६५ ।।

न तेण भिक्खू गच्छेज्जा दिट्ठो तत्थ असंजमो ।
गंभीरं झुसिरं चेव सव्विंदियसमाहिए ।। ६६ ।।

निस्सेणिं फलगं पीढं उस्सवित्ताणमारुहे ।
मंचं कीलं च पासायं समणट्ठाए व दावए ।। ६७ ।।

दुरूहमाणी पवडेज्जा हत्थं पायं व लूसए ।
पुढविजीवे वि हिंसेज्जा जे य तन्निस्सिया जगा ।। ६८ ।।

एयारिसे महादोसे जाणिऊण महेसिणो ।
तम्हा मालोहडं भिक्खं न पडिगेण्हंति संजया ।। ६९ ।।

कंदं मूलं पलंबं वा आमं छिन्नं व सन्निरं ।
तुंबागं सिंगबेरं च आमगं परिवज्जए ।। ७० ।।

तहेव सत्तुचुण्णाइं कोलचुण्णाइं आवणे ।
सक्कुलिं फाणियं पूयं अन्नं वा वि तहाविहं ।। ७१ ।।

विक्कायमाणं पसढं रएण परिफासियं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ।। ७२ ।।

वहु-अट्ठियं पुग्गलं अणिमिसं वा वहु-कंटयं ।
अत्थियं तिंदुयं विल्लं उच्छुखंडं व सिंबलिं ।। ७३ ।।

अप्पे सिया भोयणजाए वहु-उज्झिय-धम्मिए ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ।। ७४ ।।

तहेवुच्चावयं पाणं अदुवा वारधोयणं ।
संसेइमं चाउलोदगं अहुणाधोयं विवज्जए ॥ ७५ ॥

जं जाणेज्ज चिराधोयं मईए दंसणेण वा ।
पडिपुच्छिऊण सोच्चा वा जं च निस्संकियं भवे ॥ ७६ ॥

अजीवं परिणयं नच्चा पडिगाहेज्ज संजए ।
अह संकियं भवेज्जा आसाइत्ताण रोयए ॥ ७७ ॥

थोवमासायणट्ठाए हत्थगम्मि दलाहि मे ।
मा मे अच्चंबिलं पूइं नालं तण्हं विणित्तए ॥ ७८ ॥

तं च अच्चंबिलं पूइं नालं तण्हं विणित्तए ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ७९ ॥

तं च होज्ज अकामेणं विमणेण पडिच्छियं ।
तं अप्पणा न पिवे नो वि अन्नस्स दावए ॥ ८० ॥

एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिया ।
जयं परिट्ठवेज्जा परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥ ८१ ॥

सिया य गोयरग्गगओ इच्छेज्जा परिभोत्तुयं ।
कोट्ठगं भित्तिमूलं वा पडिलेहित्ताण फासुयं ॥ ८२ ॥

अणुन्नवेत्तु मेहावी पडिच्छन्नम्मि संवुडे ।
हत्थगं संपमज्जित्ता तत्थ भुंजेज्ज संजए ॥ ८३ ॥

तत्थ से भुंजमाणस्स अट्ठियं कंटओ सिया ।
तण-कट्ठ-सक्करं वा वि अन्नं वा वि तहाविहं ॥ ८४ ॥

तं उक्खिवित्तु न निक्खिवे आसएण न छड्डए ।
हत्थेण तं गहेऊणं एगंतमवक्कमे ॥ ८५ ॥

एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिया ।
जयं परिट्ठवेज्जा परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥ ८६ ॥

सिया य भिक्खू इच्छेज्जा सेज्जमागम्म भोत्तुयं ।
सपिंडपायमागम्म उंडुयं पडिलेहिया ॥ ८७ ॥

विणएण पविसित्ता सगासे गुरुणो मुणी ।
इरियावहियमायाय आगओ य पडिक्कमे ॥ ८८ ॥

आभोएत्ताण नीसेसं अइयारं जहक्कमं ।
गमणागमणे चेव भत्तपाणे व संजए ॥ ८९ ॥

उज्जुप्पन्नो अणुव्विग्गो अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
आलोए गुरुसगासे जं जहा गहियं भवे ॥ ९० ॥

न सम्ममालोइयं होज्जा पुव्विं पच्छा व जं कडं ।
पुणो पडिक्कमे तस्स वोसट्ठो चिंतए इमं ॥ ९१ ॥

अहो जिणेहिं असावज्जा वित्ती साहूण देसिया ।
मोक्खसाहणहेउस्स साहुदेहस्स धारणा ॥ ९२ ॥

नमोक्कारेण पारेत्ता करेत्ता जिणसंथवं ।
सज्झायं पट्ठवेत्ताणं वीसमेज्ज खणं मुणी ॥ ९३ ॥

वीसमंतो इमं चिंते हियमट्ठं लाभमट्ठिओ ।
जइ मे अणुग्गहं कुज्जा साहू होज्जामि तारिओ ॥ ९४ ॥

साहवो तो चियत्तेणं निमंतेज्ज जहक्कमं ।
जइ तत्थ केइ इच्छेज्जा तेहिं सद्धिं तु भुंजए ॥ ९५ ॥

अह कोइ न इच्छेज्जा तओ भुंजेज्ज एक्कओ ।
आलोए भायणे साहू जयं अपरिसाडयं ॥ ९६ ॥

तित्तगं व कडुयं व कसायं
अंबिलं व महुरं लवणं वा ।
एय लद्धमन्नट्ठ-पउत्तं
महु-घयं व भुंजेज्ज संजए ॥ ९७ ॥

अरसं विरसं वा वि सूइयं वा असूइयं ।
उल्लं वा जइ वा सुक्कं मन्थु-कुम्मास-भोयणं ॥ ९८ ॥

उप्पण्णं नाइहीलेज्जा अप्पं पि बहु फासुयं ।
मुहालद्धं मुहाजीवी भुंजेज्जा दोसवज्जियं ॥ ९९ ॥

दुल्लहा उ मुहादाई मुहाजीवी वि दुल्लहा ।
मुहादाई मुहाजीवी दो वि गच्छंति सोग्गइं ॥ १०० ॥
—त्ति बेमि ॥

पंचमं अज्झयणं

पिंडेसणा (बीओ उद्देसो)

पडिग्गहं संलिहित्ताणं लेव-मायाए संजए ।
दुगंधं वा सुगंधं वा सव्वं भुंजे न छड्डुए ॥ १ ॥

सेज्जा निसीहियाए समावन्नो व गोयरे ।
अयावयट्ठा भोच्चाणं जइ तेणं न संथरे ॥ २ ॥

तओ कारणमुप्पन्ने भत्तपाणं गवेसए ।
विहिणा पुव्व-उत्तेण इमेणं उत्तरेण य ॥ ३ ॥

कालेण निक्खमे भिक्खू कालेण य पडिक्कमे ।
अकालं च विवज्जेत्ता काले कालं समायरे ॥ ४ ॥

अकाले चरसि भिक्खू कालं न पडिलेहसि ।
अप्पाणं च किलामेसि सन्निवेसं च गरिहसि ॥ ५ ॥

सइ काले चरे भिक्खू कुज्जा पुरिसकारियं ।
अलाभोत्ति न सोएज्जा तवो त्ति अहियासए ॥ ६ ॥

तहेवुच्चावया पाणा भत्तट्ठाए समागया ।
तं-उज्जुयं न गच्छेज्जा जयमेव परक्कमे ॥ ७ ॥

गोयरग्ग-पविट्ठो उ न निसीएज्ज कत्थई ।
कहं च न पवंधेज्जा चिट्ठित्ताण व संजए ॥ ८ ॥

अग्गलं फलिहं दारं कवाडं वा वि संजए ।
अवलंविया न चिट्ठेज्जा गोयरग्गगओ मुणी ॥ ९ ॥

समणं माहणं वा वि किविणं वा वणीमगं ।
उवसंकमंतं भत्तट्ठा पाणट्ठाए व संजए ॥ १० ॥

तं अइक्कमित्तु न पविसे न चिट्ठे चक्खु-गोयरे ।
एगंतमवक्कमित्ता तत्थ चिट्ठेज्ज संजए ॥ ११ ॥

वणीमगस्स वा तस्स दायगस्सुभयस्स वा ।
अप्पत्तियं सिया होज्जा लहुत्तं पवयणस्स वा ॥ १२ ॥

पडिसेहिए व दिन्ने वा तओ तम्मि नियत्तिए ।
उवसंकमेज्ज भत्तट्ठा पाणट्ठाए व संजए ॥ १३ ॥

उप्पलं पउमं वा वि कुमुयं वा मगदंतियं ।
अन्नं वा पुप्फ सच्चित्तं तं च संलुंचिया दए ॥ १४ ॥

तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ १५ ॥

उप्पलं पउमं वा वि कुमुयं वा मगदंतियं ।
अन्नं वा पुप्फ सच्चित्तं तं च सम्मद्दिया दए ॥ १६ ॥

तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ १७ ॥

सालुयं वा विरालियं कुमुदुप्पलनालियं ।
मुणालियं सासवनालियं उच्छुखंडं अनिव्वुडं ॥ १८ ॥

तरुणगं वा पवालं रुक्खस्स तणगस्स वा ।
अन्नस्स वा वि हरियस्स आमगं परिवज्जए ॥ १९ ॥

तरुणियं व छिवाडिं आमियं भज्जियं सइं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ २० ॥

तहा कोलमणुस्सिन्नं वेलुयं कासवनालियं ।
तिलपप्पडगं नीमं आमगं परिवज्जए ॥ २१ ॥

तहेव चाउलं पिट्ठं वियडं वा तत्तनिव्वुडं ।
तिलपिट्ठ पूइ पिन्नागं आमगं परिवज्जए ॥ २२ ॥

कविट्ठं माउलिंगं च मूलगं मूलगत्तियं ।
आमं असत्थपरिणयं मणसा वि न पत्थए ॥ २३ ॥

तहेव फलमंथूणि वीयमंथूणि जाणिया ।
बिहेलगं पियालं च आमगं परिवज्जए ॥ २४ ॥

समुयाणं चरे भिक्खू कुलं उच्चावयं सया ।
नीयं कुलमइक्कम्म ऊसढं नाभिधारए ॥ २५ ॥

अदीणो वित्तिमेसेज्जा न विसीएज्ज पंडिए ।
अमुच्छिओ भोयणम्मि मायन्ने एसणारए ॥ २६ ॥

वहुं परघरे अत्थि विविहं खाइमसाइमं ।
न तत्थ पंडिओ कुप्पे इच्छा देज्ज परो न वा ॥ २७ ॥

सयणासण वत्थं वा भत्तपाणं व संजए ।
अदेंतस्स न कुप्पेज्जा पच्चक्खे वि य दीसओ ॥ २८ ॥

इत्थियं पुरिसं वा वि डहरं वा महल्लगं ।
वंदमाणो न जाएज्जा नो य णं फरुसं वए ॥ २९ ॥

जे न वंदे न से कुप्पे वंदिओ न समुक्कसे ।
एवमन्नेसमाणस्स सामण्णमणुचिट्ठई ॥ ३० ॥

सिया एगइओ लद्धुं लोभेण विणिगूहई ।
मा मेयं दाइयं संतं दट्ठूणं सयमायए ॥ ३१ ॥

अत्तट्ठगुरुओ लुद्धो बहु पावं पकुव्वई ।
दुत्तोसओ य से होइ निव्वाणं च न गच्छई ॥ ३२ ॥

सिया एगइओ लद्धुं विविहं पाणभोयणं ।
भद्दगं भद्दगं भोच्चा विवण्णं विरसमाहरे ॥ ३३ ॥

जाणंतु ता इमे समणा आययट्ठी अयं मुणी ।
संतुट्ठो सेवई पंतं लूहवित्ती सुतोसओ ॥ ३४ ॥

पूयणट्ठी जसोकामी माणसम्माणकामए ।
बहुं पसवई पावं मायासल्लं च कुव्वई ॥ ३५ ॥

सुरं वा मेरगं वा वि अन्नं वा मज्जगं रसं ।
ससक्खं न पिबे भिक्खू जसं सारक्खमप्पणो ॥ ३६ ॥

पिया एगइओ तेणो न मे कोइ वियाणई ।
तस्स पस्सह दोसाइं नियडिं च सुणेह मे ॥ ३७ ॥

वड्ढई सोंडिया तस्स मायमोसं च भिक्खुणो ।
अयसो य अनिव्वाणं सययं च असाहुया ॥ ३८ ॥

निच्चुव्विग्गो जहा तेणो अत्तकम्मेहिं दुम्मई ।
तारिसो मरणंते वि नाराहेइ संवरं ॥ ३९ ॥

आयरिए नाराहेइ समणे यावि तारिसो ।
गिहत्था वि णं गरहंति जेण जाणंति तारिसं ॥ ४० ॥

एवं तु अगुणप्पेही गुणाणं च विवज्जओ ।
तारिसो मरणंते वि नाराहेइ संवरं ॥ ४१ ॥

तवं कुव्वइ मेहावी पणीयं वज्जए रसं ।
मज्जप्पमायविरओ तवस्सी अइउक्कसो ॥ ४२ ॥

तस्स पस्सह कल्लाणं अणेगसाहुपूइयं ।
विउलं अत्थसंजुत्तं कित्तइस्सं सुणेह मे ॥ ४३ ॥

एवं तु स गुणप्पेही अगुणाणं च विवज्जओ ।
तारिसो मरणंते वि आराहेइ संवरं ॥ ४४ ॥

आयरिए आराहेइ समणे यावि तारिसो ।
गिहत्था वि णं पूयंति जेण जाणंति तारिसं ॥ ४५ ॥

तवतेणे वयतेणे रूवतेणे य जे नरे ।
आयारभावतेणे य कुव्वइ देवकिव्विसं ॥ ४६ ॥

लद्धूण वि देवत्तं उववन्नो देवकिव्विसे ।
तत्था वि से न याणाइ किं मे किच्चा इमं फलं? ॥ ४७ ॥

तत्तो वि से चइत्ताणं लब्भिही एलमूययं ।
नरयं तिरिक्खजोणिं वा बोही जत्थ सुदुल्लहा ॥ ४८ ॥

एयं च दोसं दट्ठूणं नायपुत्तेण भासियं ।
अणुमायं पि मेहावी मायामोसं विवज्जए ॥ ४९ ॥

सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहिं
संजयाण बुद्धाण सगासे ।
तत्थ भिक्खू सुप्पणिहिंदिए
तिव्वलज्ज गुणवं विहरेज्जासि ॥ ५० ॥

—त्ति बेमि ॥

छट्ठमज्झयणं

महायारकहा

नाणदंसणसंपन्नं संजमे य तवे रयं ।
गणिमागमसंपन्नं उज्जाणम्मि समोसढं ॥ १ ॥

रायाणो रायमच्चा य माहणा अदुव खत्तिया ।
पुच्छंति निहुअप्पाणो कहं भे आयारगोयरो ? ॥ २ ॥

तेसिं सो निहुओ दंतो सव्वभूयसुहावहो ।
सिक्खाए सुसमाउत्तो आइक्खइ वियक्खणो ॥ ३ ॥

हंदि धम्मत्थकामाणं निग्गंथाणं सुणेह मे ।
आयारगोयरं भीमं सयलं दुरहिट्ठियं ॥ ४ ॥

नन्नत्थ एरिसं वुत्तं जं लोए परमदुच्चरं ।
विउलट्ठाणभाइस्स न भूयं न भविस्सई ॥ ५ ॥

सखुड्डगवियत्ताणं वाहियाणं च जे गुणा ।
अखंडफुडिया कायव्वा तं सुणेह जहा तहा ॥ ६ ॥

दस अट्ठ य ठाणाइं जाइं बालोऽवरज्झई ।
तत्थ अन्नयरे ठाणे निग्गंथत्ताओ भस्सई ॥ ७ ॥

वयछक्क कायछक्कं अकप्पो गिहिभायणं ।
पलियंक निसेज्जा य सिणाणं सोहवज्जणं ॥ ८ ॥

तत्थिमं पढमं ठाणं महावीरेण देसियं ।
अहिंसा निउणं दिट्ठा सव्वभूएसु संजमो ॥ ९ ॥

जावंति लोए पाणा तसा अदुव थावरा ।
ते जाणमजाणं वा न हणे णोवि घायए ॥ १० ॥

सव्वे जीवा वि इच्छन्ति जीविउं न मरिज्जिउं ।
तम्हा पाणवहं घोरं निग्गंथा वज्जयंति णं ॥ ११ ॥

अप्पणट्ठा परट्ठा वा कोहा वा जइ वा भया ।
हिंसगं न मुसं बूया नो वि अन्नं वयावए ॥ १२ ॥

मुसावाओ य लोगम्मि सव्वसाहूहिं गरहिओ ।
अविस्सासो य भूयाणं तम्हा मोसं विवज्जए ॥ १३ ॥

चित्तमंतमचित्तं वा अप्पं वा जइ वा बहुं ।
दंतसोहणमेत्तं पि ओग्गहंसि अजाइया ॥ १४ ॥

तं अप्पणा न गेण्हंति नो वि गेण्हावए परं ।
अन्नं वा गेण्हमाणं पि नाणुजाणंति संजया ॥ १५ ॥

अबंभचरियं घोरं पमायं दुरहिट्ठियं ।
नायरंति मुणी लोए भेयाययणवज्जिणो ॥ १६ ॥

मूलमेयमहम्मस्स महादोससमुस्सयं ।
तम्हा मेहुणसंसग्गिं निग्गंथा वज्जयंति णं ॥ १७ ॥

विडमुब्भेइमं लोणं तेल्लं सप्पिं च फाणियं ।
न ते सन्निहिमिच्छन्ति नायपुत्तवओरया ॥ १८ ॥

लोभस्सेसो अणुफासो मन्ने अन्नयरामवि ।
जे सिया सन्निहीकामे गिही पव्वइए न से ॥ १९ ॥

जं पि वत्थं व पायं वा कंबलं पायपुच्छणं ।
तं पि संजमलज्जट्ठा धारंति परिहरंति य ॥ २० ॥

न सो परिग्गहो वुत्तो नायपुत्तेण ताइणा ।
मुच्छा परिग्गहो वुत्तो इइ वुत्तं महेसिणा ॥ २१ ॥

सव्वत्थुवहिणा वुद्धा संरक्खणपरिग्गहे ।
अवि अप्पणो वि देहम्मि नायरंति ममाइयं ॥ २२ ॥

अहो निच्चं तवोकम्मं सव्ववुद्धेहिं वण्णियं ।
जाय लज्जासमा वित्ती एगभत्तं च भोयणं ॥ २३ ॥

संतिमे सुहुमा पाणा तसा अदुव थावरा ।
जाइं राओ अपासंतो कहमेसणियं चरे ? ॥ २४ ॥

उदउल्लं वीयसंसत्तं पाणा निवडिया महिं ।
दिया ताइं विवज्जेज्जा राओ तत्थ कहं चरे ? ॥ २५ ॥

एयं च दोसं दट्ठूणं नायपुत्तेण भासियं ।
सव्वाहारं न भुंजंति निग्गंथा राइभोयणं ॥ २६ ॥

पुढविकायं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥ २७ ॥

पुढविकायं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥ २८ ॥

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
पुढविकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥ २९ ॥

आउकायं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥ ३० ॥

आउकायं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥ ३१ ॥

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
आउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥ ३२ ॥

जायतेयं न इच्छंति पावगं जलइत्तए ।
तिक्खमन्नयरं सत्थं सव्वओ वि दुरासयं ॥ ३३ ॥

पाईणं पडिणं वा वि उड्ढं अणुदिसामवि ।
अहे दाहिणओ वा वि दहे उत्तरओ वि य ॥ ३४ ॥

भूयाणमेसमाघाओ हव्ववाहो न संसओ ।
तं पईवपयावट्ठा संजया किंचि नारभे ॥ ३५ ॥

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
तेउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥ ३६ ॥

अनिलस्स समारंभं बुद्धा मन्नंति तारिसं ।
सावज्जबहुलं चेयं नेयं ताईहिं सेवियं ॥ ३७ ॥

तालियंटेण पत्तेण साहाविहुयणेण वा ।
न ते वीइउमिच्छन्ति वीयावेऊण वा परं ॥ ३८ ॥

जंपि वत्थं व पायं वा कंवलं पायपुंछणं ।
न ते वायमुईरंति, जयंपरिहरंति य ॥ ३९ ॥

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
वाउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥ ४० ॥

वणस्सइं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥ ४१ ॥

वणस्सइं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥ ४२ ॥

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
वणस्सइसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥ ४३ ॥

तसकायं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करणजोएण सजया सुसमाहिया ॥ ४४ ॥

तसकायं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥ ४५ ॥

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
तसकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥ ४६ ॥

जाइं चत्तारिऽभोज्जाइं इसिणाहारमाईणि ।
ताइं तु विवज्जंतो संजमं अणुपालए ॥ ४७ ॥

पिंडं सेज्जं च वत्थं च चउत्थं पायमेव य ।
अकप्पियं न इच्छेज्जा पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥ ४८ ॥

जे नियागं ममायंति कीयमुद्देसियाहडं ।
वहं ते समणुजाणंति इइ वुत्तं महेसिणा ॥ ४९ ॥

तम्हा असणपाणाइं कीयमुद्देसियाहडं ।
वज्जयंति ठियप्पाणो निग्गंथा धम्मजीविणो ॥ ५० ॥

कंसेसु कंसपाएसु कुंडमोएसु वा पुणो ।
भुंजंतो असणपाणाइ आयारा परिभस्सइ ॥ ५१ ॥

सीओदगसमारंभे मत्तधोयणछड्डणे ।
जाइं छन्नंति भूयाइं दिट्ठो तत्थ असंजमो ॥ ५२ ॥

पच्छाकम्मं पुरेकम्मं सिया तत्थ न कप्पई ।
एयमट्ठं न भुंजंति निग्गंथा गिहिभायणे ॥ ५३ ॥

आसंदीपलियंकेसु मंचमासालएसु वा ।
अणायरियमज्जाणं आसइत्तु सइत्तु वा ॥ ५४ ॥

नासंदीपलियंकेसु न निसेज्जा न पीढए ।
निग्गंथाऽपडिलेहाए बुद्धवुत्तमहिट्ठगा ॥ ५५ ॥

गंभीरविजया एए पाणा दुप्पडिलेहगा ।
आसंदीपलियंका य एयमट्ठं विवज्जिया ॥ ५६ ॥

गोयरग्गपविट्ठस्स निसेज्जा जस्स कप्पई ।
इमेरिसमणायारं आवज्जइ अबोहियं ॥ ५७ ॥

विवत्ती बंभचेरस्स पाणाणं अवहे वहो ।
वणीमगपडिग्घाओ पडिकोहो अगारिणं ॥ ५८ ॥

अगुत्ती बंभचेरस्स इत्थीओ यावि संकणं ।
कुसीलवड्ढणं ठाणं दूरओ परिवज्जए ॥ ५९ ॥

तिण्हमन्नयरागस्स निसेज्जा जस्स कप्पई ।
जराए अभिभूयस्स वाहियस्स तवस्सिणो ॥ ६० ॥

वाहिओ वा अरोगी वा सिणाणं जो उ पत्थए ।
वोक्कंतो होइ आयारो जढो हवइ संजमो ॥ ६१ ॥

संतिमे सुहुमा पाणा घसासु भिलुगासु य ।
जे उ भिक्खू सिणायंतो वियडेणुप्पिलावए ॥ ६२ ॥

तम्हा ते न सिणायंति सीएण उसिणेण वा ।
जावज्जीवं वयं घोरं असिणाणमहिट्ठगा ॥ ६३ ॥

सिणाणं अदुवा कक्कं लोद्धं पउमगाणि य ।
गायस्सुव्वट्टणट्ठाए नायरंति कयाइ वि ॥ ६४ ॥

नगिणस्स वा वि मुंडस्स दीहरोमनहंसिणो ।
मेहुणा उवसंतस्स किं विभूसाए कारियं ? ।। ६५ ।।

विभूसावत्तियं भिक्खू कम्मं बंधइ चिक्कणं ।
संसारसायरे घोरे जेणं पडइ दुरुत्तरे ।। ६६ ।।

विभूसावत्तियं चेयं वुद्धा मन्नंति तारिसं ।
सावज्जबहुलं चेयं नेयं ताईहिं सेवियं ।। ६७ ।।

खवेंति अप्पाणममोहदंसिणो
तवे रया संजम अज्जवे गुणे ।
धुणंति पावाइं पुरेकडाइं
नवाइ पावाइं न ते करेंति ।। ६८ ।।

सओवसंता अममा अकिंचणा
सविज्जविज्जाणुगया जसंसिणो ।
उउप्पसन्ने विमले व चंदिमा
सिद्धिं विमाणाइ उवेंति ताइणो ।। ६९ ।।

—त्ति बेमि ।।

सत्तमज्झयणं

वक्कसुद्धि

चउण्हं खलु भासाणं परिसंखाय पन्नवं।
दोण्हं तु विणयं सिक्खे दो न भासेज्ज सव्वसो ॥ १ ॥

जा य सच्चा अवत्तव्वा सच्चामोसा य जा मुसा।
जा य बुद्धेहिऽणाइन्ना न तं भासेज्ज पन्नवं ॥ २ ॥

असच्चमोसं सच्चं च अणवज्जमकक्कसं।
समुप्पेहमसंदिद्धं गिरं भासेज्ज पन्नवं ॥ ३ ॥

एयं च अट्ठमन्नं वा जं तु नामेइ सासयं।
स भासं सच्चमोसं पि तं पि धीरो विवज्जए ॥ ४ ॥

वितहं पि तहामुत्ति जं गिरं भासए नरो।
तम्हा सो पुट्ठो पावेणं किं पुण जो मुसं वए ? ॥ ५ ॥

तम्हा गच्छामो वक्खामो अमुगं वा णे भविस्सई।
अहं वा णं करिस्सामि एसो वा णं करिस्सई ॥ ६ ॥

एवमाई उ जा भासा एसकालम्मि संकिया।
संपयाईयमट्ठे वा तं पि धीरो विवज्जए ॥ ७ ॥

अईयम्मि य कालम्मी पच्चुप्पन्नमणागए।
जमट्ठं तु न जाणेज्जा एवमेयं ति नो वए ॥ ८ ॥

अईयम्मि य कालम्मी पच्चुप्पन्नमणागए।
जत्थ संका भवे तं तु एवमेयं ति नो वए ॥ ९ ॥

अईयम्मि य कालम्मी पच्चुप्पन्नमणागए ।
निस्संकियं भवे जं तु एवमेयं ति निद्दिसे ॥ १० ॥

तहेव फरुसा भासा गुरुभूओवघाइणी ।
सच्चा वि सा न वत्तव्वा जओ पावस्स आगमो ॥ ११ ॥

तहेव काणं काणे त्ति पंडगं पंडगे त्ति वा ।
वाहियं वा वि रोगि त्ति तेणं चोरे त्ति नो वए ॥ १२ ॥

एएणन्नेण अट्ठेण परो जेणुवहम्मई ।
आयारभावदोसन्नू न तं भासेज्ज पन्नवं ॥ १३ ॥

तहेव होले गोले त्ति साणे वा वसुले त्ति य ।
दमए दुहए वा वि नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥ १४ ॥

अज्जिए पज्जिए वावि अम्मो माउस्सिय त्ति य ।
पिउस्सिए भाइणेज्ज त्ति धूए नत्तुणिए त्ति य ॥ १५ ॥

हले हले त्ति अन्ने त्ति भट्टे सामिणि गोमिणि ।
होले होले वसुले त्ति इत्थियं नेवमालवे ॥ १६ ॥

नामधिज्जेण णं बूया इत्थीगोत्तेण वा पुणो ।
जहारिहमभिगिज्झ आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥ १७ ॥

अज्जए पज्जए वा वि वप्पो चुल्लपिउ त्ति य ।
माउला भाइणेज्ज त्ति पुत्ते नत्तुणिय त्ति य ॥ १८ ॥

हे हो हले त्ति अन्ने त्ति भट्टा सामिय गोमिए ।
होल गोल वसुले त्ति पुरिसं नेवमालवे ॥ १९ ॥

नामधेज्जेण णं बूया पुरिसगोत्तेण वा पुणो ।
जहारिहमभिगिज्झ आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥ २० ॥

पंचिंदियाण पाणाणं एस इत्थी अयं पुमं ।
जाव णं न विजाणेज्जा ताव जाइ त्ति आलवे ॥ २१ ॥

तहेव मणुस्सं पसुं पक्खि वा वि सरीसिवं ।
थूले पमेइले वज्झे पाइमे त्ति य नो वए ॥ २२ ॥

परिवुड्ढे त्ति णं बूया बूया उवचिए त्ति य ।
संजाए पीणिए वा वि महाकाए त्ति आलवे ॥ २३ ॥

तहेव गाओ दुज्झाओ दम्मा गोरहग त्ति य ।
वाहिमा रहजोग त्ति नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥ २४ ॥

जुवं गवे त्ति णं बूया धेणुं रसदय त्ति य ।
रहस्से महल्लए वा वि वए संवहणे त्ति य ॥ २५ ॥

तहेव गंतुमुज्जाणं पव्वयाणि वणाणि य ।
रुक्खा महल्ल पेहाए नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥ २६ ॥

अलं पासायखंभाणं तोरणाणं गिहाण य ।
फलिहग्गलनावाणं अलं उदगदोणिणं ॥ २७ ॥

पीढए चंगबेरे य नंगले मइयं सिया ।
जंतलट्ठी व नाभी वा गंडिया व अलं सिया ॥ २८ ॥

आसणं सयणं जाणं होज्जा वा किंचुवस्सए ।
भूओवघाइणिं भासं नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥ २९ ॥

तहेव गंतुमुज्जाणं पव्वयाणि वणाणि य ।
रुक्खा महल्ल पेहाए एवं भासेज्ज पन्नवं ॥ ३० ॥

जाइमंता इमे रुक्खा दीहवट्टा महालया ।
पयायसाला विडिमा वए दरिसणि त्ति य ॥ ३१ ॥

तहा फलाइं पक्काइं पायखज्जाइं नो वए।
वेलोइयाइं टालाइं वेहिमाइ त्ति नो वए ॥ ३२ ॥

असंथडा इमे अंवा वहुनिवट्टिमा फला।
वएज्ज वहुसंभूया भूयरूव त्ति वा पुणो ॥ ३३ ॥

तहेवोसहीओ पक्काओ नीलियाओ छवीइय।
लाइमा भज्जिमाओ त्ति पिहुखज्ज त्ति नो वए ॥ ३४ ॥

रूढा वहुसंभूया थिरा ऊसढा वि य।
गब्भियाओ पसूयाओ संसाराओ त्ति आलवे ॥ ३५ ॥

तहेव संखडिं नच्चा किच्चं कज्जं ति नो वए।
तेणगं वा वि वज्झे त्ति सुतित्थ त्ति य आवगा ॥ ३६ ॥

संखडिं संखडिं वूया पणियट्ठ त्ति तेणगं।
बहुसमाणि तित्थाणि आवगाणं वियागरे ॥ ३७ ॥

तहा नईओ पुण्णाओ कायतिज्ज त्ति नो वए।
नावाहिं तारिमाओ त्ति पाणिपेज्ज त्ति नो वए ॥ ३८ ॥

वहुवाहडा अगाहा वहुसलिलुप्पिलोदगा।
वहुवित्थडोदगा यावि एवं भासेज्ज पन्नवं ॥ ३९ ॥

तहेव सावज्जं जोगं परस्सट्ठाए निट्ठियं।
कीरमाणं ति वा नच्चा सावज्जं न लवे मुणी ॥ ४० ॥

सुकडे त्ति सुपक्के त्ति सुछिन्ने सुहडे मडे।
सुनिट्ठिए सुलट्ठे त्ति सावज्जं वज्जए मुणी ॥ ४१ ॥

पयत्तपक्के त्ति व पक्कमालवे।
पयत्तछिन्न त्ति व छिन्नमालवे।

पयत्तलट्ठ त्ति व कम्महेउयं,
पहारगाढ त्ति व गाढमालवे ॥ ४२ ॥

सव्वुक्कसं परग्घं वा अउलं नत्थि एरिसं ।
अवक्कियमवत्तव्वं अवियत्तं चेव नो वए ॥ ४३ ॥

सव्वमेयं वइस्सामि सव्वमेयं त्ति नो वए ।
अणुवीइ सव्वं सव्वत्थ एवं भासेज्ज पन्नवं ॥ ४४ ॥

सुक्कीयं वा सुविक्कीयं अकेज्जं केज्जमेव वा ।
इमं गेण्ह इमं मुंच पणियं नो वियागरे ॥ ४५ ॥

अप्पग्घे वा महग्घे वा कए वा विक्कए वि वा ।
पणियट्ठे समुपन्ने अणवज्जं वियागरे ॥ ४६ ॥

तहेवासंजयं धीरो आस एहि करेहि वा ।
सयं चिट्ठ वयाहि त्ति नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥ ४७ ॥

वहवे इमे असाहू लोए वुच्चंति साहुणो ।
न लवे असाहुं साहु त्ति साहुं साहु त्ति आलवे ॥ ४८ ॥

नाणदंसणसंपन्नं संजमे य तवे रयं ।
एवं गुणसमाउत्तं संजयं साहुमालवे ॥ ४९ ।

देवाणं मणुयाणं च तिरियाणं च वुग्गहे ।
अमुयाणं जओ होउ मा वा होउ त्ति नो वए ॥ ५० ॥

वाओ वुट्ठं व सीउण्हं खेमं धायं सिवं ति वा ।
कया णु होज्ज एयाणि मा वा होउ त्ति नो वए ॥ ५१ ॥

तहेव मेहं व नहं व माणवं
न देव देव त्ति गिरं वएज्जा ।

समुच्छिए उन्नए वा पओए
वएज्ज वा वुट्ठ वलाहए त्ति ॥ ५२ ॥

अंतलिक्खे त्ति णं बूया गुज्झाणुचरिय त्ति य ।
रिद्धिमंतं नरं दिस्स रिद्धिमंतं ति आलवे ॥ ५३ ॥

तहेव सावज्जणुमोयणी गिरा
ओहारिणी जा य परोवघाइणी ।
से कोह लोह भयसा व माणवो
न हासमाणो वि गिरं वएज्जा ॥ ५४ ॥

सवक्कसुद्धि समुपेहिया मुणी
गिरं च दुट्ठं परिवज्जए सया ।
मियं अदुट्ठं अणुवीइ भासए
सयाण मज्झे लहई पसंसणं ॥ ५५ ॥

भासाए दोसे य गुणे य जाणिया
तीसे य दुट्ठे परिवज्जए सया ।
छसु संजए सामणिये सया जए
वएज्ज वुद्धे हियमाणुलोमियं ॥ ५६ ॥

परिक्खभासी सुसमाहिइंदिए
चउक्कसायावगए अणिस्सिए ।
स निद्धणे धुन्नमलं पूरेकडं
आराहए लोगमिणं तहा परं ॥ ५७ ॥

—त्ति बेमि ॥

अट्ठमज्झयणं

आयारपणिही

आयारप्पणिहिं लद्धुं जहा कायव्व भिक्खुणा ।
तं भे उदाहरिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह मे ।। १ ।।

पुढवि दग अगणि मारुय तणरुक्ख सबीयगा ।
तसा य पाणा जीव त्ति इइ वुत्तं महेसिणा ।। २ ।।

तेसिं अच्छणजोएण निच्चं होयव्वयं सिया ।
मणसा कायवक्केण एवं भवइ संजए ।। ३ ।।

पुढविं भित्तिं सिलं लेलुं नेव भिंदे न संलिहे ।
तिविहेण करणजोएण संजए सुसमाहिए ।। ४ ।।

सुद्धपुढवीए न निसिए ससरक्खम्मि य आसणे ।
पमज्जित्तु निसीएज्जा जाइत्ता जस्स ओग्गहं ।। ५ ।।

सीओदगं न सेवेज्जा सिलावुट्ठं हिमाणि य ।
उसिणोदगं तत्तफासुयं पडिगाहेज्ज संजए ।। ६ ।।

उदउल्लं अप्पणो कायं नेव पुंछे न संलिहे ।
समुप्पेह तहाभूयं नो णं संघट्टए मुणी ।। ७ ।।

इंगालं अगणिं अच्चिं अलायं व सजोइयं ।
न उंजेज्जा न घट्टेज्जा नो णं निव्वावए मुणी ।। ८ ।।

तालियंटेण पत्तेण साहाविहुयणेण वा ।
न वीएज्ज अप्पणो कायं बाहिरं वा वि पोग्गलं ।। ९ ।।

तणरुक्खं न छिंदेज्जा फलं मूलं व कस्सई।
आमगं विविहं वीयं मणसा वि न पत्थए॥ १० ॥

गहणेसु न चिट्ठेज्जा वीएसु हरिएसु वा।
उदगम्मि तहा निच्चं उत्तिगपणगेसु वा॥ ११ ॥

तसे पाणे न हिंसेज्जा वाया अदुव कम्मुणा।
उवरओ सव्वभूएसु पासेज्ज विविहं जगं॥ १२ ॥

अट्ठ सुहुमाइं पेहाए जाइं जाणित्तु संजए।
दयाहिगारी भूएसु आस चिट्ठ सएहि वा॥ १३ ॥

कयराइं अट्ठ सुहुमाइं जाइं पुच्छेज्ज संजए।
इमाइं ताइं मेहावी आइक्खेज्ज वियक्खणो॥ १४ ॥

सिणेहं पुप्फसुहुमं च पाणुत्तिगं तहेव य।
पणगं बीय हरियं च अंडसुहुमं च अट्ठमं॥ १५ ॥

एवमेयाणि जाणित्ता सव्वभावेण संजए।
अप्पमत्तो जए निच्चं सव्विदियसमाहिए॥ १६ ॥

धुवं च पडिलेहेज्जा जोगसा पायकंबलं।
सेज्जमुच्चारभूमिं च संथारं अदुवासणं॥ १७ ॥

उच्चारं पासवणं खेलं सिंघाणजल्लियं।
फासुयं पडिलेहित्ता परिट्ठावेज्ज संजए॥ १८ ॥

पविसित्तु परागारं पाणट्ठा भोयणस्स वा।
जयं चिट्ठे मियं भासे ण य रूवेसु मणं करे॥ १९ ॥

वहुं सुणेइ कण्णेहिं वहुं अच्छीहिं पेच्छइ।
न य दिट्ठं सुयं सव्वं भिक्खू अक्खाउमरिहइ॥ २० ॥

सुयं वा जइ वा दिट्ठं न लवेज्जोवघाइयं ।
न य केणइ उवाएणं गिहिजोगं समायरे ॥ २१ ॥

निट्ठाणं रसनिज्जूढं भद्दगं पावगं ति वा ।
पुट्ठो वा वि अपुट्ठो वा लाभालाभं न निद्दिसे ॥ २२ ॥

न य भोयणम्मि गिद्धो चरे उंछं अयंपिरो ।
अफासुयं न भुंजेज्जा कीयमुद्देसियाहडं ॥ २३ ॥

सन्निहिं च न कुव्वेज्जा अणुमायं पि संजए ।
मुहाजीवी असंबद्धे हवेज्ज जगनिस्सिए ॥ २४ ॥

लूहवित्ती सुसंतुट्ठे अप्पिच्छे सुहरे सिया ।
आसुरत्तं न गच्छेज्जा सोच्चाणं जिणसासणं ॥ २५ ॥

कण्णसोक्खेहिं सद्देहिं पेमं नाभिनिवेसए ।
दारुणं कक्कसं फासं काएण अहियासए ॥ २६ ॥

खुहं पिवासं दुस्सेज्जं सीउण्हं अरई भयं ।
अहियासे अव्वहिओ देह दुक्खं महाफलं ॥ २७ ॥

अत्थंगयम्मि आइच्चे पुरत्था य अणुग्गए ।
आहारमाइयं सव्वं मणसा वि न पत्थए ॥ २८ ॥

अतिंतिणे अचवले अप्पभासी मियासणे ।
हवेज्ज उयरे दंते थोवं लद्धुं न खिंसए ॥ २९ ॥

न बाहिरं परिभवे अत्ताणं न समुक्कसे ।
सुयलाभे न मज्जेज्जा जच्चा तवस्सिबुद्धिए ॥ ३० ॥

से जाणमजाणं वा कट्टु आहम्मियं पयं ।
संवरे खिप्पमप्पाणं बीयं तं न समायरे ॥ ३१ ॥

अणायारं परक्कम्म नेव गूहे न निण्हवे।
सुई सया वियडभावे असंसत्ते जिइंदिए ॥ ३२ ॥

अमोहं वयणं कुज्जा आयरियस्स महप्पणो।
तं परिगिज्झ वायाए कम्मुणा उववायए ॥ ३३ ॥

अधुवं जीवियं नच्चा सिद्धिमग्गं वियाणिया।
विणियट्टेज्ज भोगेसु आउं परिमियमप्पणो ॥ ३४ ॥

बलं थामं च पेहाए सद्धामारोगमप्पणो।
खेत्तं कालं च विन्नाय तहप्पाणं निजुंजए ॥ ३५ ॥

जरा जाव न पीलेइ वाही जाव न वड्ढई।
जाविंदिया न हायंति ताव धम्मं समायरे ॥ ३६ ॥

कोहं माणं च मायं च लोभं च पापवड्ढणं।
वमे चत्तारि दोसे उ इच्छंतो हियमप्पणो ॥ ३७ ॥

कोहो पीइं पणासेइ माणो विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ लोहो सव्वविणासणो ॥ ३८ ॥

उवसमेण हणे कोहं माणं मद्दवया जिणे।
मायं चज्जवभावेण लोभं संतोसओ जिणे ॥ ३९ ॥

कोहो य माणो य अणिग्गहीया
माया य लोभो य पवड्ढमाणा।
चत्तारि एए कसिणा कसाया
सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स ॥ ४० ॥

राइणिएसु विणयं पउंजे
धुवसीलयं सययं न हावएज्जा।

कुम्मो व्व अल्लीणपलीणगुत्तो
परक्कमेज्जा तवसंजमम्मि ॥ ४१ ॥

निद्दं च न बहुमन्नेज्जा संपहासं विवज्जए।
मिहोकहाहिं न रमे सज्झायम्मि रओ सया ॥ ४२ ॥

जोगं च समणधम्मम्मि जुंजे अणलसो धुवं।
जुत्तो य समणधम्मम्मि अट्ठं लहइ अणुत्तरं ॥ ४३ ॥

इहलोगपारत्तहियं जेणं गच्छइ सोग्गइं।
बहुस्सुयं पज्जुवासेज्जा पुच्छेज्जत्थ विणिच्छयं ॥ ४४ ॥

हत्थं पायं च कायं च पणिहाय जिइंदिए।
अल्लीणगुत्तो निसिए सगासे गुरुणो मुणी ॥ ४५ ॥

न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ।
न य ऊरुं समासेज्जा चिट्ठेज्जा गुरुणंतिए ॥ ४६ ॥

अपुच्छिओ न भासेज्जा भासमाणस्स अंतरा।
पिट्ठिमंसं न खाएज्जा मायामोसं विवज्जए ॥ ४७ ॥

अप्पत्तियं जेण सिया आसु कुप्पेज्ज वा परो।
सव्वसो तं न भासेज्जा भासं अहियगामिणिं ॥ ४८ ॥

दिट्ठं मियं असंदिद्धं पडिपुन्नं वियंजियं।
अयंपिरमणुव्विग्गं भासं निसिर अत्तवं ॥ ४९ ॥

आयारपन्नत्तिधरं दिट्ठिवायमहिज्जगं।
वइविक्खलियं नच्चा न तं उवहसे मुणी ॥ ५० ॥

नक्खत्तं सुमिणं जोगं निमित्तं मंत भेसजं।
गिहिणो तं न आइक्खे भूयाहिगरणं पयं ॥ ५१ ॥

अन्नट्ठं पगडं लयणं भएज्ज सयणासणं।
उच्चारभूमिसंपन्नं इत्थीपसुविवज्जियं ॥ ५२ ॥

विवित्ता य भवे सेज्जा नारीणं न लवे कहं।
गिहिसंथवं न कुज्जा कुज्जा साहूहिं संथवं ॥ ५३ ॥

जहा कुक्कुडपोयस्स निच्चं कुललओ भयं।
एवं खु बंभयारिस्स इत्थीविग्गहओ भयं ॥ ५४ ॥

चित्तभित्तिं न निज्झाए नारिं वा सुअलंकियं।
भक्खरं पिव दट्ठूणं दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥ ५५ ॥

हत्थपायपडिच्छिन्नं कण्णनासविगप्पियं।
अवि वाससइं नारिं बंभयारी विवज्जए ॥ ५६ ॥

विभूसा इत्थिसंसग्गी पणीयरसभोयणं।
नरस्सत्तगवेसिस्स विसं तालउडं जहा ॥ ५७ ॥

अंगपच्चंगसंठाणं चारुल्लवियपेहियं ।
इत्थीणं तं न निज्झाए कामरागविवड्ढणं ॥ ५८ ॥

विसएसु मणुन्नेसु पेमं नाभिनिवेसए।
अणिच्चं तेसिं विन्नाय परिणामं पोग्गलाण उ ॥ ५९ ॥

पोग्गलाण परीणामं तेसिं नच्चा जहा तहा।
विणीयतण्हो विहरे सीईभूएण अप्पणा ॥ ६० ॥

जाए सद्धाए निक्खंतो परियायट्ठाणमुत्तमं।
तमेव अणुपालेज्जा गुणे आयरियसम्मए ॥ ६१ ॥

तवं चिमं संजमजोगयं च
सज्झायजोगं च सया अहिट्ठए ।
सूरे व सेणाए समत्तमाउहे
अलमप्पणो होइ अलं परेसिं ॥ ६२ ॥

सज्झायसज्झाणरयस्स ताइणो
अपावभावस्स तवे रयस्स ।
विसुज्झई जं सि मलं पुरेकडं
समीरियं रुप्पमलं व जोइणा ॥ ६३ ॥

से तारिसे दुक्खसहे जिइंदिए
सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे ।
विरायई कम्मघणम्मि अवगए
कसिणब्भपुडावगमे व चंदिमा ॥ ६४ ॥

—त्ति बेमि ॥

नवमं अज्झयणं

विणयसमाही (पढमो उद्देसो)

थंभा व कोहा व मयप्पमाया
गुरुस्सगासे विणयं न सिक्खे।
सो चेव उ तस्स अभूइभावो
फलं व कीयस्स वहाय होइ॥ १॥

जे यावि मंदि त्ति गुरुं विइत्ता
डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा।
हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा
करेंति आसायण ते गुरूणं॥ २॥

पगईए मंदा वि भवंति एगे
डहरा वि य जे सुयवुद्धोववेया।
आयारमंता गुण सुट्ठिअप्पा
जे हीलिया सिहिरिव भास कुज्जा॥ ३॥

जे यावि नागं डहरं ति नच्चा
आसायए से अहियाय होइ।
एवायरियं पि हु हीलयंतो
नियच्छई जाइपहं खु मंदे॥ ४॥

आसीविसो यावि परं सुरुट्ठो
किं जीवनासाओ परं नु कुज्जा।
आयरियपाया पुण अप्पसन्ना
अवोहिआसायण नत्थि मोक्खो॥ ५॥

जो पावगं जलियमवक्कमेज्जा
आसीविसं वा वि हु कोवएज्जा ।
जो वा विसं खायइ जोवियट्ठी
एसोवमासायणया गुरूणं ॥ ६ ॥

सिया हु से पावय नो डहेज्जा
आसीविसो वा कुविओ न भक्खे ।
सिया विसं हालहलं न मारे
न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ७ ॥

जो पव्वयं सिरसा भेत्तुमिच्छे
सुत्तं व सीहं पडिबोहएज्जा ।
जो वा दए सत्तिअग्गे पहारं
एसोवमासायणया गुरूणं ॥ ८ ॥

सिया हु सीसेण गिरिं पि भिंदे
सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे ।
सिया न भिंदेज्ज व सत्तिअग्गं
न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ९ ॥

आयरियपाया पुण अप्पसन्ना
अबोहिआसायण नत्थि मोक्खो ।
तम्हा अणाबाह सुहाभिकंखी
गुरुप्पसायाभिमुहो रमेज्जा ॥ १० ॥

जहाहियग्गी जलणं नमंसे
नाणाहुईमंतपयाभिसित्तं ।
एवायरियं उवचिट्ठएज्जा
अणंतनाणोवगओ वि संतो ॥ ११ ॥

जस्संतिए धम्मपयाइ सिक्खे
तस्संतिए वेणइयं पउंजे ।
सक्कारए सिरसा पंजलीओ
कायग्गिरा भो मणसा य निच्चं ॥ १२ ॥

लज्जा दया संजम बंभचेरं
कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं ।
जे मे गुरू सययमणुसासयंति
ते हं गुरू सययं पूययामि ॥ १३ ॥

जहा निसंते तवणच्चिमाली
पभासई केवलभारहं तु ।
एवायरिओ सुयसीलबुद्धिए
विरायई सुरमज्झे व इंदो ॥ १४ ॥

जहा ससी कोमुइजोगजुत्तो
नक्खत्ततारागणपरिवुडप्पा ।
खे सोहई विमले अब्भमुक्के
एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्झे ॥ १५ ॥

महागरा आयरिया महेसी
समाहिजोगे सुयसीलबुद्धिए ।
संपाविउकामे अणुत्तराइं
आराहए तोसए धम्मकामी ॥ १६ ॥

सोच्चाण मेहावी सुभासियाइं
सुस्सूसए आयरियप्पमत्तो ।
आराहइत्ताण गुणे अणेगे
से पावई सिद्धिमणुत्तरं ॥ १७ ॥

—त्ति बेमि ॥

नवमं अज्झयणं

विणयसमाही (बीओ उद्देसो)

मूलाओ खंधप्पभवो दुमस्स
खंधाओ पच्छा समुवेंति साहा ।
साहप्पसाहा विरुहंति पत्ता
तओ से पुप्फं च फलं रसो य ॥ १ ॥

एवं धम्मस्स विणओ मूलं परमो से मोक्खो ।
जेण कित्ति सुयं सिग्घं निस्सेसं चाभिगच्छई ॥ २ ॥

जे य चंडे मिए थद्धे दुव्वाई नियडी सढे ।
वुज्झइ से अविणीयप्पा कट्ठं सोयगयं जहा ॥ ३ ॥

विणयं पि जो उवाएणं चोइओ कुप्पई नरो ।
दिव्वं सो सिरिमेज्जंति दंडेण पडिसेहए ॥ ४ ॥

तहेव अविणीयप्पा उववज्झा हया गया ।
दीसंति दुहमेहंता आभिओगमुवट्ठिया ॥ ५ ॥

तहेव सुविणीयप्पा उववज्झा हया गया ।
दीसंति सुहमेहंता इड्ढि पत्ता महायसा ॥ ६ ॥

तहेव अविणीयप्पा लोगंसि नरनारिओ ।
दीसंति दुहमेहंता छाया ते विगलिंदिया ॥ ७ ॥

दंडसत्थपरिजुण्णा असब्भ वयणेहि य ।
कलुणा विवन्नछंदा खुप्पिवासाए परिगया ॥ ८ ॥

तहेव सुविणीयप्पा लोगंसि नरनारिओ।
दीसंति सुहमेहंता इड्ढि पत्ता महायसा ॥ ९ ॥

तहेव अविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा।
दीसंति दुहमेहंता आभिओगमुवट्ठिया ॥ १० ॥

तहेव सुविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा।
दीसंति सुहमेहंता इड्ढि पत्ता महायसा ॥ ११ ॥

जे आयरियउवज्झायाणं सूस्सूसावयणंकरा।
तेसिं सिक्खा पवड्ढंति जलसित्ता इव पायवा ॥ १२ ॥

अप्पणट्ठा परट्ठा वा सिप्पा णेउणियाणि य।
गिहिणो उवभोगट्ठा इहलोगस्स कारणा ॥ १३ ॥

जेण बंधं वहं घोरं परियावं च दारुणं।
सिक्खमाणा नियच्छंति जुत्ता ते ललिइंदिया ॥ १४ ॥

ते वि तं गुरुं पूयंति तस्स सिप्पस्स कारणा।
सक्कारेंति नमंसंति तुट्ठा निद्देसवत्तिणो ॥ १५ ॥

किं पुण जे सुयग्गाही अणंतहियकामए।
आयरिया जं वए भिक्खू तम्हा तं नाइवत्तए ॥ १६ ॥

नीयं सेज्जं गइं ठाणं नीयं च आसणाणि य।
नीयं च पाए वंदेज्जा नीयं कुज्जा य अंजलिं ॥ १७ ॥

संघट्टइत्ता काएणं तहा उवहिणामवि।
खमेह अवराहं मे वएज्ज न पुणो त्ति य ॥ १८ ॥

दुग्गओ वा पओएणं चोइओ वहई रहं।
एवं दुबुद्धि किच्चाणं वुत्तो वुत्तो पकुव्वई ॥ १९ ॥

आलवंते लवते वा न निसेज्जाए पडिस्सुणे ।
मोत्तूणं आसणं धीरो सुस्सूसाए पडिस्सुणे ॥ १९ ॥

कालं छंदोवयारं च पडिलेहित्ताण हेउर्हि ।
तेण तेण उवाएण तं तं संपडिवायए ॥ २० ॥

विवत्ती अविणीयस्स संपत्ती विणियस्स य ।
जस्सेयं दुहओ नायं सिक्खं से अभिगच्छइ ॥ २१ ॥

जे यावि चंडे मइइड्ढिगारवे
पिसुणे नरे साहस हीणपेसणे ।
अदिट्ठधम्मे विणए अकोविए
असंविभागी न हु तस्स मोक्खो ॥ २२ ॥

निद्देसवत्ती गुण जे गुरूणं
सुयत्थधम्मा विणयम्मि कोविया ।
तरित्त ते ओहमिणं दुरुत्तरं
खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ॥ २३ ॥

—त्ति बेमि ॥

नवमं अज्झयणं

विणयसमाही (तइओ उद्देसो)

आयरियं अग्गिमिवाहियग्गी
सुस्सूसमाणो पडिजागरेज्जा ।
आलोइयं इंगियमेव नच्चा
जो छन्दमाराहयइ स पुज्जो ॥ १ ॥

आयारमट्ठा विणयं पउंजे
सुस्सूसमाणो परिगिज्झ वक्कं ।
जहोवइट्ठं अभिकंखमाणो
गुरुं तु नासाययई स पुज्जो ॥ २ ॥

राइणिएसु विणयं पउंजे
डहरा वि य जे परियायजेट्ठा ।
नियत्तणे वट्टइ सच्चवाई
ओवायवं वक्ककरे स पुज्जो ॥ ३ ॥

अन्नायउंछं चरई विसुद्धं
जवणट्ठया समुयाणं च निच्चं ।
अलद्धुयं नो परिदेवएज्जा
लद्धुं न विकत्थयई स पुज्जो ॥ ४ ॥

संथारसेज्जासणभत्तपाणे
अप्पिच्छया अइलाभे वि संते ।
जो एवमप्पाणभितोसएज्जा
संतोसपाहन्नरए स पुज्जो ॥ ५ ॥

सक्का सहेउं आसाए कंटया
अओमया उच्छहया नरेणं ।
अणासए जो उ सहेज्ज कंटए
वईमए कण्णसरे स पुज्जो ॥ ६ ॥

मुहुत्तदुक्खा हु हवंति कंटया
अओमया ते वि तओ सुउद्धरा ।
वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि
वेराणुवंधीणि महब्भयाणि ॥ ७ ॥

समावयंता वयणाभिघाया
कण्णंगया दुम्मणियं जणंति ।
धम्मो त्ति किच्चा परमग्गसूरे
जिइंदिए जो सहई स पुज्जो ॥ ८ ॥

अवण्णवायं च परम्मुहस्स
पच्चक्खओ पडिणीयं च भासं ।
ओहारिणिं अप्पियकारिणिं च
भासं न भासेज्ज सया स पुज्जो ॥ ९ ॥

अलोलुए अक्कुहए अमाई
अपिसुण यावि अदीणवित्ती ।
नो भावए नो वि य भावियप्पा
अकोउहल्ले य सया स पुज्जो ॥ १० ॥

गुणेहि साहू अगुणेहिऽसाहू
गिण्हाहि साहू गुणमुंचऽसाहू ।
वियाणिया अप्पगमप्पएणं
जो रागदोसेहिं समो स पुज्जो ॥ ११ ॥

तहेव डहरं व महल्लगं वा
इत्थीपुमं पव्वइयं गिहिं वा।
नो हीलए नो वि य खिसएज्जा
थंभं च कोहं च चए स पुज्जो ॥ १२ ॥

जे माणिया सययं माणयंति
जत्तेण कन्नं व निवेसयंति।
ते माणए माणरिहे तवस्सी
जिइंदिए सच्चरए स पुज्जो ॥ १३ ॥

तेसिं गुरूणं गुणसागराणं
सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं।
चरे मुणी पंचरए तिगुत्तो
चउक्कसायावगए स पुज्जो ॥ १४ ॥

गुरुमिह सययं पडियरिय मुणी
जिणमयनिउणे अभिगमकुसले।
धुणिय रयमलं पुरेकडं
भासुरमउलं गइं गये ॥ १५ ॥

—त्ति बेमि ॥

नवमं अज्झयणं

विणयसमाही (चउत्थो उद्देसो)

सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता ॥ सू० १ ॥

कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता ? ॥ सू० २ ॥

इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता, तंजहा—(१) विणयसमाही (२) सुयसमाही (३) तवसमाही (४) आयारसमाही ।

विणए सुए अ तवे आयारे निच्चं पंडिया ।
अभिरामयंति अप्पाणं जे भवंति जिइंदिया ॥ १ ॥
॥ सू० ३ ॥

चउव्विहा खलु विणयसमाही भवइ, तंजहा—(१) अणुसासिज्जंतो सुस्सूसइ (२) सम्मं संपडिवज्जइ (३) वेयमाराहयइ (४) न य भवइ अत्तसंपग्गहिए । चउत्थं पयं भवइ ।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

पेहेइ हियाणुसासणं
सुस्सूसइ तं च पुणो अहिट्ठए ।
न य माणमएण मज्जइ
विणयसमाही आययट्ठिए ॥ २ ॥
॥ सू० ४ ॥

चउव्विहा खलु सुयसमाही भवइ, तंजहा—(१) सुयं मे भविस्सइ त्ति अज्झाइयव्वं भवइ (२) एगग्गचित्तो भविस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ (३) अप्पाणं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ (४) ठिओ परं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ। चउत्थं पयं भवइ।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

नाणमेगग्गचित्तो य ठिओ ठावयई परं।
सुयाणि य अहिज्जित्ता रओ सुयसमाहिए॥ ३॥
॥ सू० ५॥

चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ, तंजहा –(१) नो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा (२) नो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा (३) कित्तिवण्णसद्दसिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा (४) नन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा। चउत्थं पयं भवइ।

भवइ य इत्थ सिलोगो –

विविहगुणतवोरए य निच्चं
भवइ निरासए निज्जरट्ठिए।
तवसा धुणइ पुराणपावगं
जुत्तो सया तवसमाहिए॥ ४॥
॥ सू० ६॥

चउव्विहा खलु आयारसमाही भवइ, तंजहा—(१) नो इहलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा (२) नो परलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा (३) नो कित्तिवण्णसद्दसिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा (४) नन्नत्थ आरहंतेहिं हेऊहिं आयारमहिट्ठेज्जा। चउत्थं पयं भवइ।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

जिणवयणरए अतिंतिणे
पडिपुण्णाययमाययट्ठिए ।
आयारसमाहिसंवुडे
भवइ य दंते भावसंधए ॥ ५ ॥
॥ सू० ७ ॥

अभिगम चउरो समाहिओ
सुविसुद्धो सुसमाहियप्पओ ।
विउलहियसुहावहं पुणो
कुव्वइ सो पयखेममप्पणो ॥ ६ ॥

जाइमरणाओ मुच्चई
इत्थंथं च चयइ सव्वसो ।
सिद्धे वा भवइ सासए
देवे वा अप्परए महिड्ढिए ॥ ७ ॥

—त्ति बेमि ॥

दसमज्झयणं

स-भिक्खु

निक्खम्ममाणाए वुद्धवयणे
निच्चं चित्तसमाहिओ हवेज्जा ।
इत्थीण वसं न यावि गच्छे
वंतं नो पडियायई जे स भिक्खू ॥ १ ॥

पुढविं न खणे न खणावए
सीओदगं न पिए न पियावए ।
अगणिसत्थं जहा सुनिसियं
तं न जले न जलावए जे स भिक्खू ॥ २ ॥

अनिलेण न वीए न वीयावए
हरियाणि न छिंदे न छिंदावए ।
वीयाणि सया विवज्जयंतो
सच्चित्तं नाहारए जे स भिक्खू ॥ ३ ॥

वहणं तसथावराण होइ
पुढवितणकट्ठनिस्सियाणं ।
तम्हा उद्देसियं न भुंजे
नो वि पए न पयावए जे स भिक्खू ॥ ४ ॥

रोइय नायपुत्तवयणे
अत्तसमे मन्नेज्ज छप्पि काए ।
पंच य फासे महव्वयाइं
पंचासवसंवरे जे स भिक्खू ॥ ५ ॥

चत्तारि वमे सया कसाए
धुवजोगी य हवेज्ज बुद्धवयणे ।
अहणे निज्जायरूवरयए
गिहिजोगं परिवज्जए जे स भिक्खू ॥ ६ ॥

सम्मद्दिट्ठी सया अमूढे
अत्थि हु नाणे तवे संजमे य ।
तवसा धुणइ पुराणपावगं
मणवयकायसुसंवुडे जे स भिक्खू ॥ ७ ॥

तहेव असणं पाणगं वा
विविहं खाइमसाइमं लभित्ता ।
होही अट्ठो सुए परे वा
तं न निहे न निहावए जे स भिक्खू ॥ ८ ॥

तहेव असणं पाणगं वा
विविहं खाइमसाइमं लभित्ता ।
छंदिय साहम्मियाण भुंजे
भोच्चा सज्झायरए य जे स भिक्खू ॥ ९ ॥

न य वुग्गहियं कहं कहेज्जा
न य कुप्पे निहुइंदिए पसंते ।
संजमधुवजोगजुत्ते
उवसंते अविहेडए जे स भिक्खू ॥ १० ॥

जो सहइ हु गामकंटए
अक्कोसपहारतज्जणाओ य ।
भयभेरवसद्दसंपहासे
समसुहदुक्खसहे य जे स भिक्खू ॥ ११ ॥

पडिमं पडिवज्जिया मसाणे
नो भायए भयभेरवाइं दिस्स ।
विविहगुणतवोरए य निच्चं
न सरीरं चाभिकंखई जे स भिक्खू ॥१२॥

असइं वोसट्ठचत्तदेहे
अक्कुट्ठे व हए व लूसिए वा ।
पुढवि समे मुणी हवेज्जा
अनियाणे अकोउहल्ले य जे स भिक्खू ॥१३॥

अभिभूय काएण परीसहाइं
समुद्धरे जाइपहाओ अप्पयं ।
विइत्तु जाईमरणं महब्भयं
तवे रए सामणिए जे स भिक्खू ॥ १४ ॥

हत्थसंजए पायसंजए
वायसंजए संजइंदिए ।
अज्झप्परए सुसमाहियप्पा
सुत्तत्थं ज वियाणई जे स भिक्खू ॥ १५ ॥

उवहिम्मि समुच्छिए अगिद्धे
अन्नायउंछं पुलनिप्पुलाए ।
कयविक्कयसन्निहिओ विरए
सव्वसंगावगए य जे स भिक्खू ॥ १६ ॥

अलोल भिक्खू न रसेसु गिद्धे
उंछं चरे जीविएनाभिकंखे ।
इड्ढि च सक्कारण पूयणं च
चए ठियप्पा अणिहे जे स भिक्खू ॥ १७ ॥

न परं वएज्जासि अयं कुसीले
जेणन्नो कुप्पेज्ज न तं वएज्जा ।
जाणिय पत्तेयं पुण्णपावं
अत्ताणं न समुक्कसे जे स भिक्खू ॥ १८ ॥

न जाइमत्ते न य रूवमत्ते
न लाभमत्ते न सुएणमत्ते ।
मयाणि सव्वाणि विवज्जइत्ता
धम्मज्झाणरए जे स भिक्खू ॥ १९ ॥

पवेयए अज्जपयं महामुणी
धम्मे ठिओ ठावयई परं पि ।
निक्खम्म वज्जेज्ज कुसीललिंगं
न यावि हस्सकुहए जे स भिक्खू ॥ २० ॥

तं देहवासं असुइं असासयं
सया चए निच्चहियट्ठियप्पा ।
छिंदित्तु जाईमरणस्स बंधणं
उवेइ भिक्खू अपुणागमं गइं ॥ २१ ॥

—त्ति बेमि ॥

रइवक्का (पढमा चूलिया)

इह खलु भो ! पव्वइएणं, उप्पन्नदुक्खेणं, संजमे अरइ-समावन्नचित्तेणं, ओहाणुप्पेहिणा अणोहाइएणं चेव, हयरस्सि-गयंकुस-पोयपडागाभूयाइं इमाइं अट्ठारस ठाणाइं सम्मं संपडिलेहियव्वाइं भवंति । तंजहा—

१—हं भो ! दुस्समाए दुप्पजीवी ।

२—लहुस्सगा इत्तरिया गिहीणं कामभोगा ।

३—भुज्जो य साइवहुला मणुस्सा ।

४—इमे य मे दुक्खे न चिरकालोवट्ठाई भविस्सइ ।

५—ओमजणपुरक्कारे ।

६—वंतस्स य पडियाइयणं ।

७—अहरगइवासोवसंपया ।

८—दुल्लभे खलु भो ! गिहीणं धम्मे गिहिवासमज्झे वसंताणं ।

९—आयंके से वहाय होइ ।

१०—संकप्पे से वहाय होइ ।

११—सोवक्केसे गिहवासे । निरुवक्केसे परियाए ॥

१२—वंधे गिहवासे । मोक्खे परियाए ॥

१३—सावज्जे गिहवासे । अणवज्जे परियाए ॥

१४—वहुसाहारणा गिहीणं कामभोगा ॥

१५—पत्तेयं पुण्णपावं ॥

१६—अणिच्चे खलु भो ! मणुयाण जीविए कुसग्गजल-विंदुचंचले ॥

१७—वहुं च खलु भो पावं कम्मं पगडं ॥

१८—पावाणं च खलु भो ! कडाणं कम्माणं पुव्विं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिकंताणं वेयइत्ता मोक्खो, नत्थि अवेयइत्ता, तवसा वा झोसइत्ता अट्ठारसमं पयं भवइ ॥ सू० १ ॥

भवइ य इत्थ सिलोगो—

जया य चयई धम्मं अणज्जो भोगकारणा ।
से तत्थ मुच्छिए वाले आयइं नाववुज्झइ ॥ १ ॥

जया ओहाविओ होइ इंदो वा पडिओ छमं ।
सव्वधम्म परिब्भट्ठो स पच्छा परितप्पइ ॥ २ ॥

जया य वंदिमो होइ पच्छा होइ अवंदिमो ।
देवया व चुया ठाणा स पच्छा परितप्पइ ॥ ३ ॥

जया य पूइमो होइ पच्छा होइ अपूइमो ।
राया व रज्जपब्भट्ठो स पच्छा परितप्पइ ॥ ४ ॥

जया य माणिमो होइ पच्छा होइ अमाणिमो ।
सेट्ठि व्व कव्वडे छूढो स पच्छा परितप्पइ ॥ ५ ॥

जया य थेरओ होइ समइक्कंतजोव्वणो ।
मच्छो व्व गलं गिलित्ता स पच्छा परितप्पइ ॥ ६ ॥

जया य कुकुडंवस्स कुतत्तीहिं विहम्मइ ।
हत्थी व वंधणे वद्धो स पच्छा परितप्पइ ॥ ७ ॥

पुत्तदारपरिकिण्णो मोहसंताणसंतओ ।
पंकोसन्नो जहा नागो स पच्छा परितप्पइ ॥ ८ ॥

अज्ज आहं गणी हुंतो भावियप्पा वहुस्सुओ।
जइ हं रमंतो परियाए सामण्णे जिणदेसिए ॥ ९ ॥

देवलोगसमाणो उ परियाओ महेसिणं।
रयाणं अरयाणं तु महानिरयसारिसो ॥ १० ॥

अमरोवमं जाणिय सोक्खमुत्तमं
रयाण परियाए तहारयाणं।
निरओवमं जाणिय दुक्खमुत्तमं
रमेज्ज तम्हा परियाय पंडिए ॥ ११ ॥

धम्माउ भट्ठं सिरिओ ववेयं
जन्नग्गि विज्झायमिव प्पतेयं।
हीलंति णं दुव्विहियं कुसीला
दाढुद्धियं घोरविसं व नागं ॥ १२ ॥

इहेवधम्मो अयसो अकित्ती
दुन्नामधेज्जं च पिहुज्जणम्मि।
चुयस्स धम्माउ अहम्मसेविणो
संभिन्नवित्तस्स य हेट्ठओ गई ॥ १३ ॥

भुंजित्तु भोगाइ पसज्झ चेयसा
तहाविहं कट्टु असंजमं वहुं।
गइं च गच्छे अणभिज्झियं दुहं
वोही य से नो सुलभा पुणो पुणो ॥ १४ ॥

इमस्स ता नेरइयस्स जंतुणो
दुहोवणीयस्स किलेसवत्तिणो।
पलिओवमं झिज्जइ सागरोवमं
किमंग पुण मज्झ इमं मणोदुहं ? ॥ १५ ॥

न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सई
असासया भोगपिवास जंतुणो।
न चे सरीरेण इमेणवेस्सई
अविस्सई जीवियपज्जवेण मे॥ १६॥

जस्सेवमप्पा उ हवेज्ज निच्छिओ
चएज्ज देहं न उ धम्मसासणं।
तं तारिसं नो पयलेंति इंदिया
उवेंतवाया व सुदंसणं गिरिं॥ १७॥

इच्चेव संपस्सिय बुद्धिमं नरो
आयं उवायं विविहं वियाणिया।
काएण वाया अदु माणसेणं
तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिट्ठिज्जासि॥ १८॥

—त्ति बेमि॥

विवित्तचरिया (विइया चूलिया)

चूलियं तु पवक्खामि सुयं केवलिभासियं ।
जं सुणित्तु सपुन्नाणं धम्मे उप्पज्जए मई ॥ १ ॥

अणुसोयपट्ठिएवहुजणम्मि पडिसोयलद्धलक्खेणं ।
पडिसोयमेव अप्पा दायव्वो होउकामेणं ॥ २ ॥

अणुसोयसुहोलोगो
पडिसोओ आसवो सुविहियाणं ।
अणसोओ संसारो
पडिसोओ तस्स उत्तारो ॥ ३ ॥

तम्हा आयारपरक्कमेण संवरसमाहिवहुलेणं ।
चरिया गुणा य नियमा य होंति साहूण दट्ठव्वा ॥ ४ ॥

अणिएयवासो समुयाणचरिया
अन्नायउंछं पइरिक्कया य ।
अप्पोवही कलहविवज्जणा य
विहारचरिया इसिणं पसत्था ॥ ५ ॥

आइण्णओमाणविवज्जणा य
ओसन्नदिट्ठाहडभत्तपाणे ।
संसट्ठकप्पेण चरेज्ज भिक्खू
तज्जायसंसट्ठ जई जएज्जा ॥ ६ ॥

अमज्जमंसासि अमच्छरीया
अभिक्खणं निव्विगइं गया य ।

अभिक्खणं काउस्सग्गकारी
सज्झायजोगे पयओ हवेज्जा ॥ ७ ॥

न पडिन्नवेज्जा सयणासणाइं
सेज्जं निसेज्जं तह भत्तपाणं।
गामे कुले वा नगरे व देसे
ममत्तभावं न कहिंपि कुज्जा ॥ ८ ॥

गिहिणो वेयावडियं न कुज्जा
अभिवायणं वंदण पूयणं च।
असंकिलिट्ठेहिं समं वसेज्जा
मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी ॥ ९ ॥

न या लभेज्जा निउणं सहायं
गुणाहियं वा गुणओ समं वा।
एक्को वि पावाइं विवज्जयंतो
विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥ १० ॥

संवच्छरं चावि परं पमाणं
वीयं च वासं न तहिं वसेज्जा।
सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू
सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ ॥ ११ ॥

जो पुव्वरत्तावररत्तकाले
संपिक्खई अप्पगमप्पएणं।
किं मे कडं ? किं च मे किच्चसेसं ?
किं सक्कणिज्जं न समायरामि ? ॥ १२ ॥

किं मे परो पासइ ? किं च अप्पा ?
किं वाहं खलियं न विवज्जयामि ?

इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो
अणागयं नो पडिबंध कुज्जा ॥ १३ ॥

जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं
काएण वाया अदु माणसेणं ।
तत्थेव धीरो पडिसाहरेज्जा
आइन्नओ खिप्पमिव क्खलीणं ॥ १४ ॥

जस्सेरिसा जोग जिइंदियस्स
धिइमओ सप्पुरिसस्स निच्चं ।
तमाहु लोए पडिबुद्धजीवी
सो जीवइ संजमजीविएणं ॥ १५ ॥

अप्पा खलु सययं रक्खियव्वो
सव्विदिएहिं सुसमाहिएहिं ।
अरक्खिओ जाइपहं उवेइ
सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुच्चइ ॥ १६ ॥

—त्ति बेमि ॥

दसवेआलियं सम्मत्तं

उत्तरज्झयणं

पढमं अज्झयणं

विणयसुयं

संजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो ।
विणयं पाउकरिस्सामि आणुपुव्वि सुणेह मे ॥ १ ॥

आणानिद्देसकरे गुरूणमुववायकारए ।
इंगियागारसंपन्ने से विणीए त्ति वुच्चई ॥ २ ॥

आणाऽनिद्देसकरे गुरूणमणुववायकारए ।
पडिणीए असंबुद्धे अविणीए त्ति वुच्चई ॥ ३ ॥

जहा सुणी पूइकण्णी निक्कसिज्जइ सव्वसो ।
एवं दुस्सीलपडिणीए मुहरी निक्कसिज्जई ॥ ४ ॥

कणकुण्डगं चइत्ताणं विट्ठं भुंजइ सूयरे ।
एवं सीलं चइत्ताणं दुस्सीले रमई मिए ॥ ५ ॥

सुणियाऽभावं साणस्स सूयरस्स नरस्स य ।
विणए ठवेज्ज अप्पाणं इच्छन्तो हियमप्पणो ॥ ६ ॥

तम्हा विणयमेसेज्जा सीलं पडिलभे जओ ।
वुद्धपुत्त नियागट्ठी न निक्कसिज्जइ कण्हुई ॥ ७ ॥

निसन्ते सियाऽमुहरी वुद्धाणं अन्तिए सया ।
अट्ठजुत्ताणि सिक्खेज्जा निरट्ठाणि उ वज्जए ॥ ८ ॥

अणुसासिओ न कुप्पेज्जा खंतिं सेविज्ज पण्डिए ।
खुड्डेहि सह संसग्गिं हासं कीडं च वज्जए ॥ ९ ॥

मा य चण्डालियं कासी वहुयं मा य आलवे ।
कालेण य अहिज्जित्ता तओ झाएज्ज एगगो ।। १० ।।

आहच्च चण्डालियं कट्टु न निण्हविज्ज कयाइ वि ।
कडं कडे त्ति भासेज्जा अकडं नो कडे त्ति य ।। ११ ।।

मा गलियस्से व कसं वयणमिच्छे पुणो पुणो ।
कसं व दट्ठुमाइण्णे पावग परिवज्जए ।। १२ ।।

अणासवा थूलवया कुसीला
मिउं पि चण्डं पकरेंति सीसा ।
चित्ताणुया लहु दक्खोववेया
पसायए ते हु दुरासयं पि ।। १३ ।।

नापुट्ठो वागरे किंचि पुट्ठो वा नालियं वए ।
कोहं असच्चं कुव्वेज्जा धारेज्जा पियमप्पियं ।। १४ ।।

अप्पा चेव दमेयव्वो अप्पा हु खलु दुद्दमो ।
अप्पा दन्तो सुही होइ अस्सिं लोए परत्थ य ।। १५ ।।

वरं मे अप्पादन्तो संजमेण तवेण य ।
माहं परेहि दम्मन्तो वन्धणेहि वहेहि य ।। १६ ।।

पडिणीयं च वुद्धाणं वाया अदुव कम्मुणा ।
आवी वा जइ वा रहस्से नेव कुज्जा कयाइ वि ।। १७ ।।

न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
न जुंजे ऊरुणा ऊरुं सयणे नो पडिस्सुणे ।। १८ ।।

नेव पल्हत्थियं कुज्जा पक्खपिण्डं व संजए ।
पाए पसारिए वावि न चिट्ठे गुरुणन्तिए ।। १९ ।।

आयरिएहिं वाहिन्तो तुसिणीओ न कयाइ वि ।
पसायपेही नियागट्ठी उवचिट्ठे गुरुं सया ॥ २० ॥

आलवन्ते लवन्ते वा न निसीएज्ज कयाइ वि ।
चइऊणमासणं धीरो जओ जत्तं पडिस्सुणे ॥ २१ ॥

आसणगओ न पुच्छेज्जा नेव सेज्जागओ कया ।
आगम्मुक्कुडुओ सन्तो पुच्छेज्जा पंजलीउडो ॥ २२ ॥

एवं विणयजुत्तस्स सुत्तं अत्थं च तदुभयं ।
पुच्छमाणस्स सीसस्स वागरेज्ज जहासुयं ॥ २३ ॥

मुसं परिहरे भिक्खू न य ओहारिणिं वए ।
भासादोसं परिहरे मायं च वज्जए सया ॥ २४ ॥

न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं न निरट्ठं न मम्मयं ।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा उभयस्सन्तरेण वा ॥ २५ ॥

समरेसु अगारेसु सन्धीसु य महापहे ।
एगो एगित्थिए सद्धिं नेव चिट्ठे न संलवे ॥ २६ ॥

जं मे बुद्धाणुसासन्ति सीएण फरुसेण वा ।
मम लाभो त्ति पेहाए पयओ तं पडिस्सुणे ॥ २७ ॥

अणुसासणमोवायं दुक्कडस्स य चोयणं ।
हियं तं मन्नए पण्णो वेसं होइ असाहुणो ॥ २८ ॥

हियं विगयभया बुद्धा फरुसं पि अणुसासणं ।
वेसं तं होइ मूढाणं खन्तिसोहिकरं पयं ॥ २९ ॥

आसणे उवचिट्ठेज्जा अणुच्चे अकुए थिरे ।
अप्पुट्ठाई निरुट्ठाई निसीएज्जप्पकुक्कुए ॥ ३० ॥

कालेण निक्खमे भिक्खू कालेण य पडिक्कमे ।
अकालं ज विवज्जित्ता काले कालं समायरे ।। ३१ ।।

परिवाडीए न चिट्ठेज्जा भिक्खू दत्तेसणं चरे ।
पडिरूवेण एसित्ता मियं कालेणं भक्खए ।। ३२ ।।

नाइदूरमणासन्ने नन्नेसिं चक्खुफासओ ।
एगो चिट्ठेज्ज भत्तट्ठा लंघिया तं नइक्कमे ।। ३३ ।।

नाइउच्चे व नीए वा नासन्ने नाइदूरओ ।
फासुयं परकडं पिण्डं पडिगाहेज्ज संजए ।। ३४ ।।

अप्पपाणेऽप्पवीयंमि पडिच्छन्नंमि संवुडे ।
समयं संजए भुंजे जयं अपरिसाडियं ।। ३५ ।।

सुकडे त्ति सुपक्के त्ति सुच्छिन्ने सुहडे मडे ।
सुणिट्ठिए सुलट्ठे त्ति सावज्जं वज्जए मुणी ।। ३६ ।।

रमए पण्डिए सासं हयं भद्दं व वाहए ।
वालं सम्मइ सासन्तो गलियस्सं व वाहए ।। ३७ ।।

खड्डुया मे चवेडा मे अक्कोसा य वहा य मे ।
कल्लाणमणुसासन्तो पावदिट्ठि त्ति मन्नई ।। ३८ ।।

पुत्तो मे भाय नाइ त्ति साहू कल्लाण मन्नई ।
पावदिट्ठी उ अप्पाणं सासं दासं व मन्नई ।। ३९ ।।

न कोवए आयरियं अप्पाणं पि न कोवए ।
वुद्धोवघाई न सिया न सिया तोत्तगवेसए ।। ४० ।।

आयरियं कुवियं नच्चा पत्तिएण पसायए ।
विज्झवेज्ज पंजलिउडो वएज्ज न पुणो त्ति य ।। ४१ ।।

धम्मज्जियं च ववहारं बुद्धेहायरियं सया।
तमायरन्तो ववहारं गरहं नाभिगच्छई ॥ ४२ ॥

मणोगयं वक्कगयं जाणित्तायरियस्स उ।
तं परिगिज्झ वायाए कम्मुणा उववायए ॥ ४३ ॥

वित्ते अचोइए निच्चं खिप्पं हवइ सुचोइए।
जहोवइट्ठं सुकयं किच्चाइं कुव्वई सया ॥ ४४ ॥

नच्चा नमइ मेहावी लोए कित्ती से जायए।
हवई किच्चाणं सरणं भूयाणं जगई जहा ॥ ४५ ॥

पुज्जा जस्स पसीयन्ति संबुद्धा पुव्वसंथुया।
पसन्ना लाभइस्सन्ति विउलं अट्ठियं सुयं ॥ ४६ ॥

स पुज्जसत्थे सुविणीयसंसए
मणोरुई चिट्ठइ कम्मसंपया।
तवोसमायारिसमाहिसंवुडे
महज्जुई पंचवयाइं पालिया ॥ ४७ ॥

स देवगन्धव्वमणुस्सपूइए
चइत्तु देहं मलपंकपुव्वयं
सिद्धे वा हवइ सासए
देवे वा अप्परए महिड्ढिए ॥ ४८ ॥

—त्ति बेमि ॥

परीसहपविभत्ती

सू० १—सुयं मे, आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अभिभूय, भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा ।

सू० २—कयरे खलु ते बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अभिभूय, भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा ?

सू० ३—इमे खलु ते बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अभिभूय, भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा, तं जहा—

१ दिगिंछापरीसहे, २. पिवासापरीसहे, ३. सीयपरीसहे, ४. उसिणपरीसहे, ५. दंसमसयपरीसहे, ६. अचेलपरीसहे, ७. अरइपरीसहे, ८. इत्थीपरीसहे, ९. चरियापरीसहे १०. निसीहियापरीसहे, ११. सेज्जापरीसहे, १२. अक्कोसपरीसहे, १३. वहपरीसहे, १४. जायणापरीसहे, १५. अलाभपरीसहे, १६. रोगपरीसहे, १७ तणफासपरीसहे, १८. जल्लपरीसहे, १९. सक्कारपुरक्कारपरीसहे, २०. पन्नापरीसहे, २१. अन्नाणपरीसहे, २२. दंसणपरीसहे ।

परीसहाणं पविभत्ती कासवेणं पवेइया ।
तं भे उदाहरिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह मे ।। १ ।।

(१) दिगिंछापरीसहे

दिगिंछापरिगए देहे तवस्सी भिक्खु थामवं ।
न छिन्दे न छिन्दावए न पए न पयावए ॥ २ ॥
कालीपव्वंगसंकासे किसे धमणिसंतए ।
मायन्ने असणपाणस्स अदीणमणसो चरे ॥ ३ ॥

(२) पिवासापरीसहे

तओ पुट्ठो पिवासाए दोगुंछी लज्जसंजए ।
सीओदगं न सेविज्जा वियडस्सेसणं चरे ॥ ४ ॥
छिन्नावाएसु पन्थेसु आउरे सुपिवासिए ।
परिसुक्कमुहेऽदीणे तं तितिक्खे परीसहं ॥ ५ ॥

(३) सीयपरीसहे

चरन्तं विरयं लूहं सीयं फुसइ एगया ।
नाइवेलं मुणी गच्छे सोच्चाणं जिणसासणं ॥ ६ ॥
न मे निवारणं अत्थि छवित्ताणं न विज्जई ।
अहं तु अग्गिं सेवामि इइ भिक्खू न चिन्तए ॥ ७ ॥

(४) उसिणपरीसहे

उसिणपरियावेणं परिदाहेण तज्जिए ।
घिंसु वा परियावेणं सायं नो परिदेवए ॥ ८ ॥
उण्हाहितत्ते मेहावी सिणाणं नो वि पत्थए ।
गायं नो परिसिंचेज्जा न वीएज्जा य अप्पयं ॥ ९ ॥

(५) दंसमसयपरीसहे

पुट्ठो य दंसमसएहिं समरेव महामुणी ।
नागो संगामसीसे वा सूरो अभिहणे परं ॥ १० ॥
न संतसे न वारेज्जा मणं पि न पओसए ।
उवेहे न हणे पाणे भुंजन्ते मंससोणियं ॥ ११ ॥

(६) अचेलपरीसहे

परिजुण्णेहिं वत्थेहिं होक्खामि त्ति अचेलए ।
अदुवा सचेलए होक्खं इइ भिक्खू न चिन्तए ॥ १२ ॥
एगयाऽचेलए होइ सचेले यावि एगया ।
एयं धम्महियं नच्चा नाणी नो परिदेवए ॥ १३ ॥

(७) अरइपरीसहे

गामाणुगामं रीयन्तं अणगारं अकिंचणं ।
अरई अणुप्पविसे तं तितिक्खे परीसहं ॥ १४ ॥
अरइं पिट्ठओ किच्चा विरए आयरक्खिए ।
धम्मारामे निरारम्भे उवसन्ते मुणी चरे ॥ १५ ॥

(८) इत्थीपरीसहे

संगो एस मणुस्साणं जाओ लोगंमि इत्थिओ ।
जस्स एया परिन्नाया सुकडं तस्स सामण्णं ॥ १६ ॥
एवमादाय मेहावी पंकभूया उ इत्थिओ ।
नो ताहिं विणिहन्नेज्जा चरेज्जत्तगवेसए ॥ १७ ॥

(९) चरियापरीसहे

एग एव चरे लाढे अभिभूय परीसहे ।
गामे वा नगरे वावि निगमे वा रायहाणिए ॥ १८ ॥

असमाणो चरे भिक्खू नेव कुज्जा परिग्गहं ।
असंसत्तो गिहत्थेहिं अणिएओ परिव्वए ॥ १९ ॥

(१०) निसीहियापरीसहे

सुसाणे सुन्नगारे वा रुक्खमूले व एगओ ।
अकुक्कुओ निसीएज्जा न य वित्तासए परं ॥ २० ॥
तत्थ से चिट्ठमाणस्स उवसग्गाभिधारए ।
संकाभीओ न गच्छेज्जा उट्ठित्ता अन्नमासणं ॥ २१ ॥

(११) सेज्जापरीसहे

उच्चावयाहिं सेज्जाहिं तवस्सी भिक्खू थामवं ।
नाइवेलं विहन्नेज्जा पावदिट्ठी विहन्नई ॥ २२ ॥
पइरिक्कुवस्सयं लद्धुं कल्लाणं अदु पावगं ।
किमेगरायं करिस्सइ एवं तत्थऽहियासए ॥ २३ ॥

(१२) अक्कोसपरीसहे

अक्कोसेज्ज परो भिक्खुं न तेसिं पडिसंजले ।
सरिसो होइ बालाणं तम्हा भिक्खू न संजले ॥ २४ ॥
सोच्चाणं फरुसा भासा दारुणा गामकण्टगा ।
तुसिणीओ उवेहेज्जा न ताओ मणसीकरे ॥ २५ ॥

(१३) वहपरीसहे

हओ न संजले भिक्खू मणं पि न पओसए ।
तितिक्खं परमं नच्चा भिक्खुधम्मं विचिंतए ॥ २६ ॥
समणं संजयं दन्तं हणेज्जा कोइ कत्थई ।
नत्थि जीवस्स नासु त्ति एवं पेहेज्ज संजए ॥ २७ ॥

(१४) जायणापरीसहे

दुक्करं खलु भो निच्चं अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वं से जाइयं होइ नत्थि किंचि अजाइयं ॥ २८ ॥
गोयरग्गपविट्ठस्स पाणी नो सुप्पसारए ।
सेओ अगारवासु त्ति इइ भिक्खू न चिन्तए ॥ २९ ॥

(१५) अलाभपरीसहे

परेसु घासमेसेज्जा भोयणे परिणिट्ठिए ।
लद्धे पिण्डे अलद्धे वा नाणुतप्पेज्ज संजए ॥ ३० ॥
अज्जेवाहं न लब्भामि अवि लाभो सुए सिया ।
जो एवं पडिसंचिक्खे अलाभो तं न तज्जए ॥ ३१ ॥

(१६) रोगपरीसहे

नच्चा उप्पइयं दुक्खं वेयणाए दुहट्टिए ।
अदीणो थावए पन्नं पुट्ठो तत्थहियासए ॥ ३२ ॥
तेगिच्छं नाभिनन्देज्जा संचिक्खत्तगवेसए ।
एवं खु तस्स सामण्णं जं न कुज्जा न कारवे ॥ ३३ ॥

(१७) तणफासपरीसहे

अचेलगस्स लूहस्स संजयस्स तवस्सिणो ।
तणेसु सयमाणस्स हुज्जा गायविराहणा ॥ ३४ ॥
आयवस्स निवाएणं अउला हवइ वेयणा ।
एवं नच्चा न सेवन्ति तन्तुजं तणतज्जिया ॥ ३५ ॥

(१८) जल्लपरीसहे

किलिन्नगाए मेहावी पंकेण व रएण वा ।
घिंसु वा परितावेण सायं नो परिदेवए ॥ ३६ ॥

वेएज्ज निज्जरापेही आरियं धम्मऽणुत्तरं ।
जाव सरीरभेउ त्ति जल्लं काएण धारए ।। ३७ ।।

(१९) सक्कारपुरक्कारपरीसहे

अभिवायणमब्भुट्ठाणं सामी कुज्जा निमन्तणं ।
जे ताइं पडिसेवन्ति न तेसिं पीहए मुणी ।। ३८ ।।
अणुक्कसाई अप्पिच्छे अन्नाएसी अलोलुए ।
रसेसु नाणुगिज्झेज्जा नाणुतप्पेज्ज पन्नवं ।। ३९ ।।

(२०) पन्नापरीसहे

से नूणं मए पुव्वं कम्माणाणफला कडा ।
जेणाहं नाभिजाणामि पुट्ठो केणइ कण्हुई ।। ४० ।।
अह पच्छा उइज्जन्ति कम्माणाणफला कडा ।
एवमस्सासि अप्पाणं नच्चा कम्मविवागयं ।। ४१ ।।

(२१) अन्नाणपरीसहे

निरट्ठगम्मि विरओ मेहुणाओ सुसंवुडो ।
जो सक्खं नाभिजाणामि धम्मं कल्लाण पावगं ।। ४२ ।।
तवोवहाणमादाय पडिमं पडिवज्जओ ।
एवं पि विहरओ मे छउमं न नियट्टई ।। ४३ ।।

(२२) दंसणपरीसहे

नत्थि नूणं परे लोए इड्ढी वावि तवस्सिणो ।
अदुवा वंचिओ मि त्ति इइ भिक्खू न चिन्तए ।। ४४ ।।
अभू जिणा अत्थि जिणा अदुवावि भविस्सई ।
मुसं ते एवमाहंसु इइ भिक्खू न चिन्तए ।। ४५ ।।

एए परीसहा सव्वे कासवेण पवेइया ।
जे भिक्खू न विहन्नेज्जा पुट्ठो केणइ कण्हुई ।। ४६ ।।
—त्ति बेमि ।।

तइयं अज्झयणं

चाउरंगिज्जं

चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणीह जन्तुणो ।
माणुसत्तं सुई सद्धा संजमंमि य वीरियं ॥ १ ॥

समावन्नाण संसारे नाणागोत्तासु जाइसु ।
कम्मा नाणाविहा कट्टु पुढो विस्संभिया पया ॥ २ ॥

एगया देवलोएसु नरएसु वि एगया ।
एगया आसुरं कायं आहाकम्मेहि गच्छई ॥ ३ ॥

एगया खत्तिओ होइ तओ चण्डालवोक्कसो ।
तओ कीडपयंगो य तओ कुन्थुपिवीलिया ॥ ४ ॥

एवमावट्टजोणीसु पाणिणो कम्मकिव्विसा ।
न निविज्जन्ति संसारे सव्वट्ठेसु व खत्तिया ॥ ५ ॥

कम्मसंगेहिं सम्मूढा दुक्खिया वहुवेयणा ।
अमाणुसासु जोणीसु विणिहम्मन्ति पाणिणो ॥ ६ ॥

कम्माणं तु पहाणाए आणुपुव्वी कयाइ उ ।
जीवा सोहिमणुप्पत्ता आययन्ति मणुस्सयं ॥ ७ ॥

माणुस्सं विग्गहं लद्धुं सुई धम्मस्स दुल्लहा ।
जं सोच्चा पडिवज्जन्ति तवं खन्तिमहिंसयं ॥ ८ ॥

आहच्च सवणं लद्धुं सद्धा परमदुल्लहा ।
सोच्चा नेआउयं मग्गं वहवे परिभस्सई ॥ ९ ॥

सुइं च लद्धुं सद्धं च वीरियं पुण दुल्लहं ।
बहवे रोयमाणा वि नो एणं पडिवज्जए ॥ १० ॥

माणुसत्तंमि आयाओ जो धम्मं सोच्च सद्दहे ।
तवस्सी वीरियं लद्धुं संवुडे निद्धुणे रयं ॥ ११ ॥

सोही उज्जुयभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई ।
निव्वाणं परमं जाइ घयसित्त व्व पावए ॥ १२ ॥

विगिंच कम्मुणो हेउं जसं संचिणु खन्तिए ।
पाढवं सरीरं हिच्चा उड्ढं पक्कमई दिसं ॥ १३ ॥

विसालिसेहिं सीलेहिं जक्खा उत्तरउत्तरा ।
महासुक्का व दिप्पन्ता मन्नन्ता अपुणच्चवं ॥ १४ ॥

अप्पिया देवकामाणं कामरूवविउव्विणो ।
उड्ढ कप्पेसु चिट्ठन्ति पुव्वा वाससया बहू ॥ १५ ॥

तत्थ ठिच्चा जहाठाणं जक्खा आउक्खए चुया ।
उवेन्ति माणुसं जोणिं से दसंगेऽभिजायई ॥ १६ ॥

खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च पसवो दासपोरुसं ।
चत्तारि कामखन्धाणि तत्थ से उववज्जई ॥ १७ ॥

मित्तवं नायवं होइ उच्चागोए य वण्णवं ।
अप्पायंके महापन्ने अभिजाए जसोबले ॥ १८ ॥

भोच्चा माणुस्सए भोए अप्पडिरूवे अहाउयं ।
पुव्वं विसुद्धसद्धम्मे केवलं बोहिं बुज्झिया ॥ १९ ॥

चउरंगं दुल्लहं मत्ता संजमं पडिवज्जिया ।
तवसा धुयकम्मंसे सिद्धे हवइ सासए ॥ २० ॥

—त्ति बेमि ॥

चउत्थं अज्झयणं

असंखयं

असंखयं जीविय मा पमायए
जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं ।
एवं वियाणाहि जणे पमत्ते
कण्णू विहिंसा अजया गहिन्ति ॥ १ ॥

जे पावकम्मेहि धणं मणूसा
समाययन्ती अमइं गहाय ।
पहाय ते पास पयट्टिए नरे
वेराणुवद्धा नरयं उवेन्ति ॥ २ ॥

तेणे जहा सन्धिमुहे गहीए
सकम्मुणा किच्चइ पावकारी ।
एवं पया पेच्च इहं च लोए
कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ॥ ३ ॥

संसारमावन्न परस्स अट्ठा
साहारणं जं च करेइ कम्मं ।
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले
न वन्धवा वन्धवयं उवेन्ति ॥ ४ ॥

वित्तेण ताणं न लभे पमत्ते
इमंमि लोए अदुवा परत्था ।
दीवप्पणट्ठे व अणन्तमोहे
नेयाउयं दट्ठुमदट्ठुमेव ॥ ५ ॥

सुत्तेसु यावी पडिबुद्धजीवी
न वीससे पण्डिए आसुपन्ने ।
घोरा मुहुत्ता अवलं सरीरं
भारुण्डपक्खी व चरप्पमत्तो ॥ ६ ॥

चरे पयाइं परिसंकमाणो
जं किंचि पासं इह मण्णमाणो ।
लाभन्तरे जीविय वूहइत्ता
पच्छा परिन्नाय मलावधंसी ॥ ७ ॥

छन्दं निरोहेण उवेइ मोक्खं
आसे जहा सिक्खियवम्मधारी ।
पुव्वाइं वासाइं चरप्पमत्तो
तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मोक्खं ॥ ८ ॥

स पुव्वमेवं न लभेज्ज पच्छा
एसोवमा सासयवाइयाणं ।
विसीयई सिढिले आउयंमि
कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥ ९ ॥

खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउं
तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे ।
समिच्च लोयं समया महेसी
अप्पाणरक्खी चरमप्पमत्तो ॥ १० ॥

मुहुं मुहुं मोहगुणे जयन्तं
अणेगरूवा समणं चरन्तं ।
फासा फुसन्ती असमंजसं च
न तेसु भिक्खू मणसा पउस्से ॥ ११ ॥

मन्दा य फासा वहुलोहणिज्जा
तहप्पगारेसु मणं न कुज्जा।
रक्खेज्ज कोहं विणएज्ज माणं
मायं न सेवे पयहेज्ज लोहं ॥ १२ ॥

जे संखया तुच्छ परप्पवाई
ते पिज्जदोसाणुगया परज्झा।
एए अहम्मे त्ति दुगुंछमाणो
कंखे गुणे जाव सरीरभेओ ॥ १३ ॥

—त्ति वेमि ॥

पंचमं अज्झयणं

अकाममरणिज्जं

अण्णवंसि महोहंसि एगे तिण्णे दुरुत्तरं ।
तत्थ एगे महापन्ने इमं पण्हमुदाहरे ॥ १ ॥

सन्तिमे य दुवे ठाणा अक्खाया मारणन्तिया ।
अकाममरणं चेव सकाममरणं तहा ॥ २ ॥

वालाणं अकामं तु मरणं असइं भवे ।
पण्डियाणं सकामं तु उक्कोसेण सइं भवे ॥ ३ ॥

तत्थिमं पढमं ठाणं महावीरेण देसियं ।
कामगिद्धे जहा वाले भिसं कूराइं कुव्वई ॥ ४ ॥

जे गिद्धे कामभोगेसु एगे कूडाय गच्छई ।
न मे दिट्ठे परे लोए चक्खुदिट्ठा इमा रई ॥ ५ ॥

हत्थागया इमे कामा कालिया जे अणागया ।
को जाणइ परे लोए अत्थि वा नत्थि वा पुणो ? ॥ ६ ॥

जणेण सद्धिं होक्खामि इइ वाले पगब्भई ।
कामभोगाणुराएणं केसं संपडिवज्जई ॥ ७ ॥

तओ से दण्डं समारभई तसेसु थावरेसु य ।
अट्ठाए य अणट्ठाए भूयग्गामं विहिंसई ॥ ८ ॥

हिंसे वाले मुसावाई माइल्ले पिसुणे सढे ।
भुंजमाणे सुरं मंसं सेयमेयं ति मन्नई ॥ ९ ॥

कायसा वयसा मत्ते वित्ते गिद्धे य इत्थिसु ।
दुहओ मलं संचिणइ सिसुणागु व्व मट्टियं ॥ १० ॥

तओ पुट्ठो आयंकेणं गिलाणो परितप्पई ।
पभीओ परलोगस्स कम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥ ११ ॥

सुया मे नरए ठाणा असीलाणं च जा गई ।
बालाणं कूरकम्माणं पगाढा जत्थ वेयणा ॥ १२ ॥

तत्थोववाइयं ठाणं जहा मेयमणुस्सुयं ।
आहाकम्मेहि गच्छन्तो सो पच्छा परितप्पई ॥ १३ ॥

जहा सागडिओ जाणं समं हिच्चा महापहं ।
विसमं मग्गमोइण्णो अक्खे भग्गंमि सोयई ॥ १४ ॥

एवं धम्मं विउक्कम्म अहम्मं पडिवज्जिया ।
बाले मच्चुमुहं पत्ते अक्खे भग्गे व सोयई ॥ १५ ॥

तओ से मरणन्तंमि बाले सन्तस्सई भया ।
अकाममरणं मरई धुत्ते व कलिना जिए ॥ १६ ॥

एयं अकाममरणं बालाणं तु पवेइयं ।
एत्तो सकाममरणं पण्डियाणं सुणेह मे ॥ १७ ॥

मरणं पि सपुण्णाणं जहा मेयमणुस्सुयं ।
विप्पसण्णमणाघायं संजयाण वुसीमओ ॥ १८ ॥

न इमं सव्वेसु भिक्खूसु न इमं सव्वेसुऽगारिसु ।
नाणासीला अगारत्था विसमसीला य भिक्खुणो ॥ १९ ॥

सन्ति एगेहिं भिक्खूहिं गारत्था संजमुत्तरा ।
गारत्थेहि य सव्वेहिं साहवो संजमुत्तरा ॥ २० ॥

चीराजिणं नगिणिणं जडीसंघाडिमुण्डिणं ।
एयाणि वि न तायन्ति दुस्सीलं परियागयं ॥ २१ ॥

पिण्डोलए व दुस्सीले नरगाओ न मुच्चई ।
भिक्खाए वा गिहत्थे वा सुव्वए कम्मई दिवं ॥ २२ ॥

अगारिसामाइयंगाइं सड्ढी काएण फासए ।
पोसहं दुहओ पक्खं एगरायं न हावए ॥ २३ ॥

एवं सिक्खासमावन्ने गिहवासे वि सुव्वए ।
मुच्चई छविपव्वाओ गच्छे जक्खसलोगयं ॥ २४ ॥

अह जे संवुडे भिक्खू दोण्हं अन्नयरे सिया ।
सव्वदुक्खप्पहीणे वा देवे वावि महड्ढिए ॥ २५ ॥

उत्तराइं विमोहाइं जुइमन्ताणुपुव्वसो ।
समाइण्णाइं जक्खेहिं आवासाइं जसंसिणो ॥ २६ ॥

दीहाउया इड्ढिमन्ता समिद्धा कामरूविणो ।
अहुणोववन्नसंकासा भुज्जो अच्चिमालिप्पभा ॥ २७ ॥

ताणि ठाणाणि गच्छन्ति सिक्खित्ता संजमं तवं ।
भिक्खाए वा गिहत्थे वा जे सन्ति परिनिव्वुडा ॥ २८ ॥

तेसिं सोच्चा सपुज्जाणं संजयाण वुसीमओ ।
न संतसन्ति मरणन्ते सीलवन्ता वहुस्सुया ॥ २९ ॥

तुलिया विसेसमादाय दयाधम्मस्स खन्तिए ।
विप्पसीएज्ज मेहावी तहाभूएण अप्पणा ॥ ३० ॥

तओ काले अभिप्पेए सड्ढी तालिसमन्तिए ।
विणएज्ज लोमहरिसं भेयं देहस्स कंखए ॥ ३१ ॥

अह कालंमि संपत्ते आघायाय समुस्सयं ।
सकाममरणं मरई तिण्हमन्नयरं मुणी ॥ ३२ ॥

—त्ति बेमि ॥

छट्ठमज्झयणं

खुड्डागनियंठिज्जं

जावन्तऽविज्जापुरिसा सव्वे ते दुक्खसंभवा ।
लुप्पन्ति वहुसो मूढा संसारंमि अणन्तए ॥ १ ॥

समिक्ख पंडिए तम्हा पासजाईपहे वहू ।
अप्पणा सच्चमेसेज्जा मेत्तिं भूएसु कप्पए ॥ २ ॥

माया पिया ण्हुसा भाया भज्जा पुत्ता या ओरसा ।
नालं ते मम ताणाय लुप्पन्तस्स सकम्मुणा ॥ ३ ॥

एयमट्ठं सपेहाए पासे समियदंसणे ।
छिन्द गेहिं सिणेहं च न कंखे पुव्वसंथवं ॥ ४ ॥

गवासं मणिकुंडलं पसवोदासपोरुसं ।
सव्वमेयं चइत्ताणं कामरूवी भविस्ससि ॥ ५ ॥

थावरं जंगमं चेव धणं धण्णं उवक्खरं ।
पच्चमाणस्स कम्मेहिं नालं दुक्खाउ मोयणे ॥ ६ ॥

अज्झत्थं सव्वओ सव्वं दिस्स पाणे पियायए ।
न हणे पाणिणो पाणे भयवेराओ उवरए ॥ ७ ॥

आयाणं नरयं दिस्स नायएज्ज तणामवि ।
दोगुंछी अप्पणो पाए दिन्नं भुंजेज्ज भोयणं ॥ ८ ॥

इहमेगे उ मन्नन्ति अप्पच्चक्खाय पावगं ।
आयरियं विदित्ताणं सव्वदुक्खा विमुच्चई ॥ ९ ॥

भणन्ता अकरेन्ता य वन्धमोक्खपइण्णिणो ।
वायाविरियमेत्तेण समासासेन्ति अप्पयं ॥ १० ॥

न चित्ता तायए भासा कओ विज्जाणुसासणं ? ।
विसन्ना पावकम्मेहिं वाला पंडियमाणिणो ॥ ११ ॥

जे केइ सरीरे सत्ता वण्णे रूवे य सव्वसो ।
मणसा कायवक्केणं सव्वे ते दुक्खसंभवा ॥ १२ ॥

आवन्ना दीहमद्धाणं संसारंमि अणंतए ।
तम्हा सव्वदिसं पस्स अप्पमत्तो परिव्वए ॥ १३ ॥

वहिया उड्ढमादाय नावकंखे कयाइ वि ।
पुव्वकम्मखयट्ठाए इमं देहं समुद्धरे ॥ १४ ॥

विविच्च कम्मुणो हेउं कालकंखी परिव्वए ।
मायं पिंडस्स पाणस्स कडं लद्धूण भक्खए ॥ १५ ॥

सन्निहिं च न कुव्वेज्जा लेवमायाए संजए ।
पक्खी पत्तं समादाय निरवेक्खो परिव्वए ॥ १६ ॥

एसणासमिओ लज्जू गामे अणियओ चरे ।
अप्पमत्तो पमत्तेहिं पिंडवायं गवेसए ॥ १७ ॥

एवं से उदाहु अणुत्तरनाणी
अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरे ।
अरहा नायपुत्ते
भगवं वेसालिए वियाहिए ॥ १८ ॥

—त्ति वेमि ॥

सत्तमं अज्झयणं

उरब्भिज्जं

जहाएसं समुद्दिस्स कोइ पोसेज्ज एलयं ।
ओयणं जवसं देज्जा पोसेज्जा वि सयंगणे ॥ १ ॥

तओ से पुट्ठे परिवूढे जायमेए महोदरे ।
पीणिए विउले देहे आएसं परिकंखए ॥ २ ॥

जाव न एइ आएसे ताव जीवइ से दुही ।
अह पत्तंमि आएसे सीसं छेत्तूण भुज्जई ॥ ३ ॥

जहा खलु से उरब्भे आएसाए समीहिए ।
एवं वाले अहम्मिट्ठे ईहई नरयाउयं ॥ ४ ॥

हिंसे वाले मुसावाई अद्धाणंमि विलोवए ।
अन्नदत्तहरे तेणे माई कण्हुहरे सढे ॥ ५ ॥

इत्थीविसयगिद्धे य महारंभ—परिग्गहे ।
भुंजमाणे सुरं मंसं परिवूढे परंदमे ॥ ६ ॥

अयकक्कर—भोई य तुंदिल्ले चियलोहिए ।
आउयं नरए कंखे जहाएसं व एलए ॥ ७ ॥

आसणं सयणं जाणं वित्तं कामे य भुंजिया ।
दुस्साहडं धणं हिच्चा वहुं संचिणिया रयं ॥ ८ ॥

तओ कम्मगुरूजन्तू पच्चुप्पन्नपरायणे ।
अय व्व आगयाएसे मरणन्तंमि सोयई ॥ ९ ॥

तओ आउपरिक्खीणे चुया देहा विहिंसगा।
आसुरियं दिसं बाला गच्छन्ति अवसा तमं ॥ १० ॥

जहा कागिणिए हेउं सहस्सं हारए नरो।
अपत्थं अम्बगं भोच्चा राया रज्जं तु हारए ॥ ११ ॥

एवं माणुस्सगा कामा देवकामाण अन्तिए।
सहस्सगुणिया भुज्जो आउं कामा य दिव्विया ॥ १२ ॥

अणेगवासानउया जा सा पन्नवओ ठिई।
जाणि जीयन्ति दुम्मेहा ऊणे वाससयाउए ॥ १३ ॥

जहा य तिन्नि वाणिया मूलं घेत्तूण निग्गया।
एगोऽत्थ लहई लाहं एगो मूलेण आगओ ॥ १४ ॥

एगो मूलं पि हारित्ता आगओ तत्थ वाणिओ।
ववहारे उवमा एसा एवं धम्मे वियाणह ॥ १५ ॥

माणुसत्तं भवे मूलं लाभो देवगई भवे।
मूलच्छेएण जीवाणं नरग-तिरिक्खत्तणं धुवं ॥ १६ ॥

दुहओ गई बालस्स आवई वहमूलिया।
देवत्तं माणुसत्तं च जं जिए लोलयासढे ॥ १७ ॥

तओ जिए सइं होइ दुविहं दोग्गइं गए।
दुल्लहा तस्स उम्मज्जा अद्धाए सुचिरादवि ॥ १८ ॥

एवं जियं सपेहाए तुलिया बालं च पंडियं।
मूलियं ते पवेसन्ति माणुसं जोणिमेन्ति जे ॥ १९ ॥

वेमायाहिं सिक्खाहिं जे नरा गिहिसुव्वया।
उवेन्ति माणुसं जोणिं कम्मसच्चा हु पाणिणो ॥ २० ॥

जेसिं तु विउला सिक्खा मूलियं ते अइच्छिया ।
सीलवन्ता सवीसेसा अद्दीणा जन्ति देवयं ॥ २१ ॥

एवमद्दीणवं भिक्खु अगारिं च वियाणिया ।
कहण्णु जिच्चमेलिक्खं जिच्चमाणे न संविदे ॥ २२ ॥

जहा कुसग्गे उदगं समुद्देण समं मिणे ।
एवं माणुस्सगा कामा देवकामाण अन्तिए ॥ २३ ॥

कुसग्गमेत्ता इमे कामा सन्निरुद्धंमि आउए ।
कस्स हेउं पुराकाउं जोगक्खेमं न संविदे ? ॥ २४ ॥

इह कामाणियट्टस्स अत्तट्ठे एवरज्झई ।
सोच्चा नेयाउयं मग्गं जं भुज्जो परिभस्सई ॥ २५ ॥

इह कामणियट्टस्स अत्तट्ठे नावरज्झई ।
पूइदेहनिरोहेणं भवे देवे त्ति मे सुयं ॥ २६ ॥

इड्ढी जुई जसो वण्णो आउं सुहमणुत्तरं ।
भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु तत्थ से उववज्जई ॥ २७ ॥

वालस्स पस्स वालत्तं अहम्मं पडिवज्जिया ।
चिच्चा धम्मं अहम्मिट्ठे नरए उववज्जई ॥ २८ ॥

धीरस्स पस्स धीरत्तं सव्वधम्माणुवत्तिणो ।
चिच्चा अधम्मं धम्मिट्ठे देवेसु उववज्जई ॥ २९ ॥

तुलियाण वालभावं अवालं चेव पण्डिए ।
चइऊण वालभावं अवालं सेवए मुणि ॥ ३० ॥

—त्ति वेमि ॥

अट्ठमं अज्झयणं

काविलीयं

अधुवे असासयंमि
संसारंमि दुक्खपउराए ।
किं नाम होज्ज तं कम्मयं
जेणाऽहं दोग्गइं न गच्छेज्जा ॥ १ ॥

विजहित्तु पुव्वसंजोगं
न सिणेहं कहिंचि कुव्वेज्जा ।
असिणेह सिणेहकरेहिं
दोसपओसेहिं मुच्चए भिक्खू ॥ २ ॥

तो नाण—दंसणसमग्गो
हियनिस्सेसाए सव्वजीवाणं ।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए
भासई मुणिवरो विगयमोहो ॥ ३ ॥

सव्वं गन्थं कलहं च
विप्पजहे तहाविहं भिक्खू ।
सव्वेसु कामजाएसु
पासमाणो न लिप्पई ताई ॥ ४ ॥

भोगामिसदोसविसण्णे
हियनिस्सेयसबुद्धिवोच्चत्थे ।
वाले य मन्दिए मूढे
वज्झई मच्छिया व खेलंमि ॥ ५ ॥

दुपरिच्चया इमे कामा
नो सुजहा अधीरपुरिसेहिं।
अह सन्ति सुव्वया साहू
जे तरन्ति अतरं वणिया व ॥ ६ ॥

समणा मु एगे वयमाणा
पाणवहं मिया अयाणन्ता।
मन्दा निरयं गच्छन्ति
बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं ॥ ७ ॥

न हु पाणवहं अणुजाणे
मुच्चेज्ज कयाइ सव्वदुक्खाणं।
एवारिएहिं अक्खायं
जेहिं इमो साहुधम्मो पन्नत्तो ॥ ८ ॥

पाणे य नाइवाएज्जा
से समिए त्ति वुच्चई ताई।
तओ से पावयं कम्मं
निज्जाइ उदगं व थलाओ ॥ ९ ॥

जगनिस्सिएहिं भूएहिं
तसनामेहिं थावरेहिं च।
नो तेसिमारभे दंडं
मणसा वयसा कायसा चेव ॥ १० ॥

सुद्धेसणाओ नच्चाणं
तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं।
जायाए घासमेसेज्जा
रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥ ११ ॥

पन्ताणि चेव सेवेज्जा
सीयपिण्डं पुराणकुम्मासं ।
अदु वुक्कसं पुलागं वा
जवणट्ठाए निसेवए मंथुं ॥ १२ ॥

जे लक्खणं च सुविणं च
अंगविज्जं च जे पउंजन्ति ।
न हु ते समणा वुच्चन्ति
एवं आयरिएहिं अक्खायं ॥ १३ ॥

इहजीवियं अणियमेत्ता
पब्भट्ठा समाहिजोएहिं ।
ते कामभोगरसगिद्धा
उववज्जन्ति आसुरे काए ॥ १४ ॥

तत्तो वि य उवट्टित्ता
संसारं वहुं अणुपरियडन्ति ।
वहुकम्मलेवलित्ताणं
वोही होइ सुदुल्लहा तेसिं ॥ १५ ॥

कसिणं पि जो इमं लोयं
पडिपुण्णं दलेज्ज इक्कस्स ।
तेणावि से न संतुस्से
इइ दुप्पूरए इमे आया ॥ १६ ॥

जहा लाहो तहा लोहो
लाहा लोहो पवड्ढई ।
दोमास — कयं कज्जं
कोडीए वि न निट्ठियं ॥ १७ ॥

नो रक्खसीसु गिज्झेज्जा
गंडवच्छासु ऽणेगचित्तासु ।
जाओ पुरिसं पलोभित्ता
खेल्लन्ति जहा व दासेहिं ॥ 18 ॥

नारीसु नोवगिज्झेज्जा
इत्थी विप्पजहे अणगारे ।
धम्मं च पेसलं नच्चा
तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ॥ 19 ॥

इइ एस धम्मे अक्खाए
कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं ।
तरिहिन्ति जे उ काहिन्ति
तेहिं आराहिया दुवे लोगा ॥ 20 ॥

—त्ति बेमि ॥

नवमं अज्झयणं

नमिपव्वज्जा

चइऊण देवलोगाओ उववन्नो माणुसंमि लोगंमि ।
उवसन्त—मोहणिज्जो सरई पोराणियं जाइं ॥ १ ॥

जाइं सरित्तु भयवं सहसंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे ।
पुत्तं ठवेत्तु रज्जे अभिणिक्खमई नमी राया ॥ २ ॥

से देवलोगसरिसे अन्तेउरवरगओ वरे भोए ।
भुंजित्तु नमी राया बुद्धो भोगे परिच्चयई ॥ ३ ॥

मिहिलं सपुरजणवयं वलमोरोहं च परियणं सव्वं ।
चिच्चा अभिनिक्खन्तो एगन्तमहिट्ठिओ भयवं ॥ ४ ॥

कोलाहलगभूयं आसी मिहिलाए पव्वयन्तंमि ।
तइया रायरिसिंमि नमिंमि अभिणिक्खमन्तंमि ॥ ५ ॥

अब्भुट्ठियं रायरिसिं पव्वज्जा—ठाणमुत्तमं ।
सक्को माहणरूवेण इमं वयणमब्ववी ॥ ६ ॥

किण्णु भो ! अज्ज मिहिलाए कोलाहलग संकुला ।
सुव्वन्ति दारुणा सद्दा पासाएसु गिहेसु य ? ॥ ७ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारण—चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्ववी— ॥ ८ ॥

मिहिलाए चेइए वच्छे सीयच्छाए मणोरमे ।
पत्त—पुप्फ—फलोवेए वहूणं वहुगुणे सया ॥ ९ ॥

वाएण हीरमाणंमि चेइयंमि मणोरमे ।
दुहिया असरणा अत्ता एए कन्दन्ति भो ! खगा ॥ १० ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारण—चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी— ॥ ११ ॥

एस अग्गी य वाऊ य एयं डज्झइ मन्दिरं ।
भयवं ! अन्तेउरं तेणं कीस णं नावपेक्खसि ? ॥ १२ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारण—चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी— ॥ १३ ॥

सुहं वसामो जीवामो जेसिं मो नत्थि किंचण ।
मिहिलाए डज्झमाणीए न मे डज्झइ किंचण ॥ १४ ॥

चत्तपुत्तकलत्तस्स निव्वावारस्स भिक्खुणो ।
पियं न विज्जई किंचि अप्पियं पि न विज्जए ॥ १५ ॥

बहुं खु मुणिणो भद्दं अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वओ विप्पमुक्कस्स एगन्तमणुपस्सओ ॥ १६ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारण—चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥ १७ ॥

पागारं कारइत्ताणं गोपुरट्टालगाणि च ।
उस्सूलगसयग्घीओ तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥ १८ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारण—चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी— ॥ १९ ॥

सद्धं नगरं किच्चा तवसंवरमग्गलं ।
खन्ति निउणपागारं तिगुत्तं दुप्पधंसयं ॥ २० ॥

धणं परक्कमं किच्चा जीवं च इरियं सया ।
धिइं च केयणं किच्चा सच्चेण पलिमन्थए ।। २१ ।।

तवनारायजुत्तेण भेत्तूणं कम्मकंचुयं ।
मुणी विगयसंगामो भवाओ परिमुच्चए ।। २२ ।।

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारण —चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्ववी— ।। २३ ।।

पासाए कारइत्ताणं वद्धमाणगिहाणि य ।
वालग्गपोइयाओ य तओ गच्छसि खत्तिया ! ।। २४ ।।

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारण—चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी ।। २५ ।।

संसयं खलु सो कुणई जो मग्गे कुणई घरं ।
जत्थेव गन्तुमिच्छेज्जा तत्थ कुव्वेज्ज सासयं ।। २६ ।।

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारण चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमव्ववी— ।। २७ ।।

आमोसे लोमहारे य गंठिभेए य तक्करे ।
नगरस्स खेमं काऊणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ।। २८ ।।

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारण- चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी— ।। २९ ।।

असइं तु मणुस्सेहिं मिच्छादण्डो पजुंजई ।
अकारिणोऽत्थ वज्झन्ति मुच्चई कारओ जणो ।। ३० ।।

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारण—चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमव्ववी— ।। ३१ ।।

जे केइ पत्थिवा तुब्भं ना नमन्ति नराहिवा ! ।
वसे ते ठावइत्ताणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥ ३२ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारण—चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी— ॥ ३३ ॥

जो सहस्सं सहस्साणं संगामे दुज्जए जिणे ।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं एस से परमो जओ ॥ ३४ ॥

अप्पाणमेव जुज्झाहि किं ते जुज्झेण वज्झओ ?
अप्पाणमेव अप्पाणं जइत्ता सुहमेहए ॥ ३५ ॥

पंचिन्दियाणि कोहं माणं मायं तहेव लोहं च ।
दुज्जयं चेव अप्पाणं सव्वं अप्पे जिए जियं ॥ ३६ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारण—चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी—॥ ३७ ॥

जइत्ता विउले जन्ने भोइत्ता समणमाहणे ।
दच्चा भोच्चा य जट्ठा य तओ गच्छसि खत्तिया! ॥३८ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारण—चोइयो ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी—॥ ३९ ॥

जो सहस्सं सहस्साणं मासे मासे गवं दए ।
तस्सावि संजमो सेओ अदिन्तस्स वि किंचण ॥ ४० ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारण—चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी—॥ ४१ ॥

घोरासमं चइत्ताणं अन्नं पत्थेसि आसमं ।
इहेव पोसहरओ भवाहि मणुयाहिवा ! ॥ ४२ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारण—चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी—॥ ४३ ॥

मासे मासे तु जो वालो कुसग्गेणं तु भुंजए ।
न सो सुयक्खायधम्मस्स कलं अग्घइ सोलसिं ॥ ४४ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारण—चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी—॥ ४५ ॥

हिरण्णं सुवण्णं मणिमुत्तं कंसं दूसं च वाहणं ।
कोसं वड्ढावइत्ताणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥ ४६ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारण—चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी—॥ ४७ ॥

सुवण्ण-रुप्पस्स उ पव्वया भवे
सिया हु केलाससमा असंखया ।
नरस्स लुद्धस्स न तेहिं किंचि
इच्छा उ आगाससमा अणन्तिया ॥ ४८ ॥

पुढवी साली जवा चेव हिरण्णं पसुभिस्सह ।
पडिपुण्णं नालमेगस्स इइ विज्जा तवं चरे ॥ ४९ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारण—चोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी—॥ ५० ॥

अच्छेरगमब्भुदए भोए चयसि पत्थिवा !
असन्ते कामे पत्थेसि संकप्पेण विहन्नसि ॥ ५१ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारण—चोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी—॥ ५२ ॥

सल्लं कामा विसं कामा कामा आसीविसोवमा ।
कामे पत्थेमाणा अकामा जन्ति दोग्गइं ॥ ५३ ॥

अहे वयइ कोहेणं माणेणं अहमा गई ।
माया गईपडिग्घाओ लोभाओ दुहओ भयं ॥ ५४ ॥

अवउज्झिऊण माहणरूवं विउव्विऊण इन्दत्तं ।
वन्दइ अभित्थुणन्तो इमाहि महुराहिं वग्गूहिं ॥ ५५ ॥

अहो ! ते निज्जिओ कोहो
अहो ! ते माणो पराजिओ ।
अहो ! ते निरक्किया माया
अहो ! ते लोभो वसीकओ ॥ ५६ ॥

अहो ! ते अज्जवं साहु अहो ते साहु मद्दवं ।
अहो ! ते उत्तमा खन्ती अहो ! ते मुत्ति उत्तमा ॥ ५७ ॥

इहं सि उत्तमो भन्ते ! पेच्चा होहिसि उत्तमो ।
लोगुत्तमुत्तमं ठाणं सिद्धिं गच्छसि नीरओ ॥ ५८ ॥

एवं अभित्थुणन्तो रायरिसिं उत्तमाए सद्धाए ।
पयाहिणं करेन्तो पुणो पुणो वन्दई सक्को ॥ ५९ ॥

तो वन्दिऊण पाए चक्कंकुसलक्खणे मुणिवरस्स ।
आगासेणुप्पइओ ललियचवलकुंडलतिरीडी ॥ ६० ॥

नमी नमेइ अप्पाणं सक्खं सक्केण चोइओ ।
चइऊण गेहं वइदेही सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥ ६१ ॥

एवं करेन्ति संबुद्धा पंडिया पवियक्खणा ।
विणियट्टन्ति भोगेसु जहा से नमी रायरिसि ॥ ६२ ॥

—त्ति बेमि ।

दसमं अज्झयणं

दुमपत्तयं

दुमपत्तए पंडुयए जहा
निवडइ राइगणाण अच्चए।
एवं मणुयाण जीवियं
समयं गोयम ! मा पमायए॥ १॥

कुसग्गे जह ओसबिन्दुए थोवं चिट्ठइ लम्बमाणए।
एवं मणुयाण जीवियं समयं गोयम ! मा पमायए॥ २॥

इइ इत्तरियम्मि आउए
जीवियए बहुपच्चवायए।
विहुणाहि रयं पुरे कडं
समयं गोयम ! मा पमायए॥ ३॥

दुलहे खलु माणुसे भवे
चिरकालेण वि सव्वपाणिणं।
गाढा य विवाग कम्मुणो
समयं गोयम ! मा पमायए॥ ४॥

पुढविक्कायमइगओ उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं समयं गोयम ! मा पमायए॥ ५॥

आउक्कायमइगओ उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं समयं गोयम ! मा पमायए॥ ६॥

तेउक्कायमइगओ उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं समयं गोयम ! मा पमायए॥ ७॥

वाउक्कायमइगओ उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ८ ॥

वणस्सइकायमइगओ उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालमणन्तदुरन्तं समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ९ ॥

वेइन्दियकायमइगओ उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखिज्जसन्नियं समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १० ॥

तेइन्दियकायमइगओ उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखिज्जसन्नियं समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ११ ॥

चउरिन्दियकायमइगओ उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखिज्जसन्नियं समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १२ ॥

पंचिन्दियकायमइगओ उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
सत्तट्ठ भवग्गहणे समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १३ ॥

देवे नेरइए य अइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
इक्किक्क—भवग्गहणे
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १४ ॥

एवं भव-संसारे संसरइ सुहासुहेहि कम्मेहिं ।
जीवो पमाय-वहुलो समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १५ ॥

लद्धूण वि माणुसत्तणं
आरिअत्तं पुणरावि दुल्लहं ।
वहवे दसुया मिलेक्खुया
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १६ ॥

लद्धूण वि आरियत्तणं
अहीणपंचिन्दियया हु दुल्लहा।
विगलिन्दियया हु दीसई
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १७ ॥

अहीणपंचिन्दियत्तं पि से लहे
उत्तमधम्मसुई हु दुल्लहा।
कुतित्थिनिसेवए जणे
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १८ ॥

लद्धूण वि उत्तमं सुइं
सद्दहणा पुणरावि दुल्लहा।
मिच्छत्तनिसेवए जणे
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ १९ ॥

धम्मं पि हु सद्दहन्तया
दुल्लहया काएण फासया।
इह कामगुणेहि मुच्छिया
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ २० ॥

परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते।
से सोयबले य हायई
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ २१ ॥

परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते।
से चक्खुबले य हायई
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ २२ ॥

परिजूरइ ते सरीरयं केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से घाणवले य हायई समयं गोयम ! मा पमायए ।। २३ ।।

परिजूरइ ते सरीरयं केसा पण्डरया हवन्ति ते ।
से जिब्भवले य हायई समयं गोयम ! मा पमायए ।। २४ ।।

परिजूरइ ते सरीरयं केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से फासवले य हायई समयं गोयम ! मा पमायए ।। २५ ।।

परिजूरइ ते सरीरयं केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से सव्ववले य हायई समयं गोयम ! मा पमायए ।। २६ ।।

अरई गण्डं विसूइया
आयंका विविहा फुसन्ति ते ।
विवडइ विद्धंसइ ते सरीरयं
समयं गोयम ! मा पमायए ।। २७ ।।

वोछिन्द सिणेहमप्पणो
कुमुयं सारइयं व पाणियं ।
से सव्वसिणेहवज्जिए
समयं गोयम ! मा पमायए ।। २८ ।।

चिच्चाण धणं च भारियं
पव्वइओ हि सि अणगारियं ।
मा वन्तं पुणो वि आविए
समयं गोयम! मा पमायए ।। २९ ।।

अवउज्झिय मित्तवन्धवं
विउलं चेव धणोहसंचयं ।
मा तं विइयं गवेसए
समयं गोयम! मा पमायए ।। ३० ।।

न हु जिणे अज्ज दिस्सई
वहुमए दिस्सई मग्गदेसिए।
संपइ नेयाउए पहे
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ३१ ॥

अवसोहिय कण्टगापहं
ओइण्णो सि पहं महालयं।
गच्छसि मग्गं विसोहिया
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ३२ ॥

अवले जह भारवाहए
मा मग्गे विसमे वगाहिया।
पच्छा पच्छाणुतावए
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ३३ ॥

तिण्णो हु सि अण्णवं महं
किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ।
अभितुर पारं गमित्तए
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ३४ ॥

अकलेवरसेणिमुस्सिया सिद्धिं गोयम लोयं गच्छसि।
खेमं च सिवं अणुत्तरं समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ३५ ॥

वुद्धे परिनिव्वुडे चरे गामगए नगरे व संजए।
सन्तिमग्गं च वूहए समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ३६ ॥

वुद्धस्स निसम्म भासियं सुकहियमट्ठपवोवसोहियं।
रागं दोसं च छिन्दिया सिद्धिगइं गए गोयमे ॥ ३७ ॥

—त्ति वेमि।

इक्कारसमं अज्झयणं

बहुस्सुयपुज्जा

संजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो।
आयारं पाउकरिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह मे ॥ १ ॥

जे यावि होइ निव्विज्जे थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
अभिक्खणं उल्लवई अविणीए अबहुस्सुए ॥ २ ॥

अह पंचहिं ठाणेहिं जेहिं सिक्खा न लब्भई।
थम्भा कोहा पमाएणं रोगेणाऽलस्सएण य ॥ ३ ॥

अह अट्ठहिं ठाणेहिं सिक्खासीले त्ति वुच्चई।
अहस्सिरे सया दन्ते न य मम्ममुदाहरे ॥ ४ ॥

नासीले न विसीले न सिया अइलोलुए।
अकोहणे सच्चरए सिक्खासीले त्ति वुच्चई ॥ ५ ॥

अह चउदसहिं ठाणेहिं वट्टमाणे उ संजए।
अविणीए वुच्चई सो उ निव्वाणं च न गच्छइ ॥ ६ ॥

अभिक्खणं कोही हवइ पबन्धं च पकुव्वई।
मेत्तिज्जमाणो वमइ सुयं लद्धूण मज्जई ॥ ७ ॥

अवि पावपरिक्खेवी अवि मित्तेसु कुप्पई।
सुप्पियस्सावि मित्तस्स रहे भासइ पावगं ॥ ८ ॥

पइण्णवाई दुहिले थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
असंविभागी अवियत्ते अविणीए त्ति वुच्चई ॥ ९ ॥

अह पन्नरसहिं ठाणेहिं सुविणीए त्ति वुच्चई।
नीयावत्ती अचवले अमाई अकुऊहले ॥ १० ॥

अप्पं चाऽहिक्खिवई पवन्धं च न कुव्वई।
मेत्तिज्जमाणो भयई सुयं लद्धुं न मज्जई॥ ११॥

न य पावपरिक्खेवी न य मित्तेसु कुप्पई।
अप्पियस्सावि मित्तस्स रहे कल्लाण भासई॥ १२॥

कलह-डमरवज्जए वुद्धे अभिजाइए।
हिरिमं पडिसंलीणे सुविणीए त्ति वुच्चई॥ १३॥

वसे गुरुकुले निच्चं जोगवं उवहाणवं।
पियंकरे पियंवाई से सिक्खं लद्धुमरिहई॥ १४॥

जहा संखम्मि पयं निहियं दुहओ वि विरायइ।
एवं वहुस्सुए भिक्खू धम्मो कित्ती तहा सुयं॥ १५॥

जहा से कम्वोयाणं आइण्णे कन्थए सिया।
आसे जवेण पवरे एवं हवइ वहुस्सुए॥ १६॥

जहाइण्णसमारूढे सुरे दढपरक्कमे।
उभओ नन्दिघोसेणं एवं हवइ वहुस्सुए॥ १७॥

जहा करेणुपरिकिण्णे कुंजरे सट्ठिहायणे।
वलवन्ते अप्पडिहए एवं हवइ वहुस्सुए॥ १८॥

जहा से तिक्खसिंगे जायखन्धे विरायई।
वसहे जूहाहिवई एवं हवइ वहुस्सुए॥ १९॥

जहा से तिक्खदाढे उदग्गे दुप्पहंसए।
सीहे मियाण पवरे एवं हवइ वहुस्सुए॥ २०॥

जहा से वासुदेवे संख-चक्क गयाधरे।
अप्पडिहयवले जोहे एवं हवइ वहुस्सुए॥ २१॥

जहा से चाउरन्ते चक्कवट्टी महिड्ढिए।
चउदसरयणाहिवई एवं हवइ वहुस्सुए॥ २२॥

जहा से सहस्सक्खे वज्जपाणी पुरन्दरे ।
सक्के देवाहिवई एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २३ ॥

जहा से तिमिरविद्धंसे उच्चिट्ठन्ते दिवायरे ।
जलन्ते इव तेएण एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २४ ॥

जहा से उडुवई चन्दे नक्खत्त परिवारिए ।
पडिपुण्णे पुण्णमासीए एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २५ ॥

जहा से सामाइयाणं कोट्ठागारे सुरक्खिए ।
नाणाधन्नपडिपुण्णे एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २६ ॥

जहा सा दुमाण पवरा जम्बू नाम सुदंसणा ।
अणाढियस्स देवस्स एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २७ ॥

जहा सा नईण पवरा सलिला सागरंगमा ।
सीया नीलवन्तपवहा एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २८ ॥

जहा से नगाण पवरे सुमहं मन्दरे गिरी ।
नाणोसहिपज्जलिए एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २९ ॥

जहा से सयंभूरमणे उदही अक्खओदए ।
नाणारयणपडिपुण्णे एवं हवइ बहुस्सुए ॥ ३० ॥

समुद्दगम्भीरसमा दुरासया
अचक्किया केणइ दुप्पहंसया ।
सुयस्स पुण्णा विउलस्स ताइणो
खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ॥ ३१ ॥

तम्हा सुयमहिट्ठिज्जा उत्तमट्ठगवेसए ।
जेणऽप्पाणं परं चेव सिद्धिं संपाउणेज्जासि ॥ ३२ ॥

—त्ति बेमि ॥

बारसमं अज्झयणं

हरिएसिज्जं

सोवागकुलसंभूओ गुणुत्तरधरो मुणी ।
हरिएसबलो नाम आसि भिक्खू जिइन्दिओ ॥ १ ॥

इरिएसण-भासाए उच्चार समिईसु य ।
जओ आयाणनिक्खेवे संजओ सुसमाहिओ ॥ २ ॥

मणगुत्तो वयगुत्तो कायगुत्तो जिइन्दिओ ।
भिक्खट्ठा बम्भइज्जम्मि जन्नवाडं उवट्ठिओ ॥ ३ ॥

तं पासिऊणमेज्जन्तं तवेण परिसोसियं ।
पन्तोवहिउवगरणं उवहसन्ति अणारिया ॥ ४ ॥

जाईमयपडिथद्धा हिंसगा अजिइन्दिया ।
अबम्भचारिणो बाला इमं वयणमब्बवी ॥ ५ ॥

कयरे आगच्छइ दित्तरूवे
काले विगराले फोक्कनासे ।
ओमचेलए पंसुपिसायभूए
संकरदूसं परिहरिय कण्ठे ॥ ६ ॥

कयरे तुमं इय अदंसणिज्जे
काए व आसा इहमागओ सि ।
ओमचेलगा पंसुपिसायभूया
गच्छ क्खलाहि किमिहं ठिओसि ? ॥ ७ ॥

जक्खो तहिं तिन्दुयरुक्खवासी
अणुकम्पओ तस्स महामुणिस्स ।

पच्छायइत्ता नियगं सरीरं
इमाइं वयणाइमुदाहरित्था ॥ ८ ॥

समणो अहं संजओ वम्भयारी
विरओ धणपयणपरिग्गहाओ ।
परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले
अन्नस्स अट्ठा इहमागओ मि ॥ ९ ॥

वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जई य
अन्नं पभूयं भवयाणमेयं ।
जाणाहि मे जायणजीविणु त्ति
सेसावसेसं लभऊ तवस्सी ॥ १० ॥

उवक्खडं भोयण माहणाणं
अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं ।
न ऊ वयं एरिसमन्नपाणं
दाहामु तुज्झं किमिहं ठिओ सि ? ॥११॥

थलेसु बीयाइ ववन्ति कासगा
तहेव निन्नेसु य आससाए ।
एयाए सद्धाए दलाह मज्झं
आराहए पुण्णमिणं खु खेत्तं ॥ १२ ॥

खेत्ताणि अम्हं विइयाणि लोए
जहि पकिण्णा विरुहन्ति पुण्णा ।
जे माहणा जाइविज्जोववेया
ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥ १३ ॥

कोहो य माणो य वहो य जेसिं
मोसं अदत्तं च परिग्गहं च ।

ते माहणा जाइविज्जाविहूणा
ताइं तु खेत्ताइं सुपावयाइं ॥ १४ ॥

तुब्भेत्थ भो भावधरा गिराणं
अट्ठं न जाणाह अहिज्ज वेए।
उच्चावयाइं मुणिणो चरन्ति
ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥ १५ ॥

अज्झावयाणं पडिकूलभासी
पभाससे किं तु सगासि अम्हं।
अवि एयं विणस्सउ अन्नपाणं
न य णं दहामु तुमं नियण्ठा ! ॥ १६ ॥

समिईहि मज्झं सुसमाहियस्स
गुत्तीहि गुत्तस्स जिइन्दियस्स।
जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्जं
किमज्ज जन्नाण लहित्थ लाहं? ॥ १७ ॥

के एत्थ खत्ता उवजोइया वा
अज्झावया वा सह खण्डिएहिं।
एयं दण्डेण फलेण हन्ता
कण्ठम्मि घेत्तूण खलेज्ज जो णं ? ॥ १८॥

अज्झावयाणं वयणं सुणेत्ता
उद्धाइया तत्थ बहू कुमारा।
दण्डेहि वित्तेहि कसेहि चेव
समागया तं इसि तालयन्ति ॥ १९ ॥

रन्नो तहिं कोसलियस्स धूया
भद्दत्ति नामेण अणिन्दियंगी।

तं पासिया संजय हम्ममाणं
कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेइ ॥ २० ॥

देवाभिओगेण निओइएणं
दिन्ना मु रन्ना मणसा न ज्ञाया ।
नरिन्ददेविन्दऽभिवन्दिएणं
जेणम्हि वन्ता इसिणा स एसो ॥ २१ ॥

एसो हु सो उग्गतवो महप्पा
जिइन्दिओ संजओ वम्भयारी ।
जो मे तया नेच्छइ दिज्जमाणिं
पिउणा सयं कोसलिएण रन्ना ॥ २२ ॥

महाजसो एस महाणुभागो
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
मा एयं हीलेह अहीलणिज्जं
मा सव्वे तेएण भे निद्दहेज्जा ॥ २३ ॥

एयाइं तीसे वयणाइ सोच्चा
पत्तीइ भद्दाइ सुहासियाइं ।
इसिस्स वेयावडियट्ठयाए
जक्खा कुमारे विणिवाडयन्ति ॥ २४ ॥

ते घोररूवा ठिय अन्तलिक्खे
असुरा तहिं तं जणं तालयन्ति ।
ते भिन्नदेहे रुहिरं वमन्ते
पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो ॥ २५ ॥

गिरिं नहेहिं खणह
अयं दन्तेहिं खायह ।

जाततेयं पाएहि हणह
जे भिक्खुं अवमन्नह ॥ २६ ॥

आसीविसो उग्गतवो महेसी
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
अगणिं व पक्खन्द पयंगसेणा
जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह ॥ २७ ॥

सीसेण एयं सरणं उवेह
समागया सव्वजणेण तुब्भे ।
जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा
लोगं पि एसो कुविओ डहेज्जा ॥ २८ ॥

अवहेडिय पिट्ठिसउत्तमंगे
पसारियावाहु अकम्मचेट्ठे ।
निब्भेरियच्छे रुहिरं वमन्ते
उड्ढंमुहे निग्गयजीहनेत्ते ॥ २९ ॥

ते पासिया खण्डिय कट्ठभूए
विमणो विसण्णो अह माहणो सो ।
इसिं पसाएइ सभारियाओ
हीलं च निन्दं च खमाह भन्ते! ॥ ३० ॥

वालेहि मूढेहि अयाणएहिं
जं हीलिया तस्स खमाह भन्ते ! ।
महप्पसाया इसिणो हवन्ति
न हु मुणी कोवपरा हवन्ति ॥ ३१ ॥

पुव्विं च इण्हिं च अणागयं च
मणप्पदोसो न मे अत्थि कोइ ।

जक्खा हु वेयावडियं करेन्ति
तम्हा हु एए निहया कुमारा ॥ ३२ ॥

अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा
तुब्भे न वि कुप्पह भूइपन्ना ।
तुब्भं तु पाए सरणं उवेमो
समागया सव्वजणेण अम्हे ॥ ३३ ॥

अच्चेमु ते महाभाग ! न ते किंचि न अच्चिमो ।
भुंजाहि सालिमं कूरं नाणावंजण संजुयं ॥ ३४ ॥

इमं च मे अत्थि पभूयमन्नं
तं भुंजसू अम्ह अणुग्गहट्ठा ।
वाढं ति पडिच्छइ भत्तपाणं
मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥ ३५ ॥

तहियं गन्धोदयपुप्फवासं
दिव्वा तहिं वसुहारा य वुट्ठा ।
पहयाओ दुन्दुहीओ सुरेहिं
आगासे अहो दाणं च घुट्ठं ॥ ३६ ॥

सक्खं खु दीसइ तवोविसेसो
न दीसइ जाइविसेस कोई ।
सोवागपुत्तं हरिएससाहू
जस्सेरिसा इड्ढि महणुभागा ॥ ३७ ॥

किं माहणा ! जोइसमारभन्ता
उदएण सोहिं वहिया विमग्गहा ? ।
जं मग्गहा बाहिरियं विसोहिं
न तं सुदिट्ठं कुसला वयन्ति ॥ ३८ ॥

कुसं च जूवं तणकट्ठमग्गिं
सायं च पायं उदगं फुसन्ता ।
पाणाइ भूयाइ विहेडयन्ता
भुज्जो वि मन्दा ! पगरेह पावं ॥ ३९ ॥

कहं चरे ? भिक्खु ! वयं जयामो ?
पावाइ कम्माइ पणोल्लयामो ? ।
अक्खाहि णे संजय ! जक्खपूइया !
कहं सुजट्ठं कुसला वयन्ति ? ॥ ४० ॥

छज्जीवकाए असमारभन्ता
मोसं अदत्तं च असेवमाणा ।
परिग्गहं इत्थिओ माणमायं
एयं परिन्नाय चरन्ति दन्ता ॥ ४१ ॥

सुसंवुडो पंचहिं संवरेहिं
इह जीवियं अणवकंखमाणो ।
वोसट्ठकाओ सुइचत्तदेहो
महाजयं जयई जन्नसिट्ठं ॥ ४२ ॥

के ते जोई, के व ते जोइठाणे ?
का ते सुया, किं च ते कारिसंगं ? ।
एहा य ते कयरा सन्ति भिक्खू !
कयरेण होमेण हुणासि जोइं ? ॥ ४३ ॥

तवो जोई जीवो जोइठाणं
जोगा सुया सरीरं कारिसंगं ।
कम्म एहा संजमजोगसन्ती
[illegible] मी इसिणं पसत्थं ॥ ४४ ॥

के ते हरए, के य ते सन्ति तित्थे ?
कहिंसि ण्हाओ व रयं जहासि ? ।
आइक्ख णे संजय ! जक्खपूइया !
इच्छामो नाउं भवओ सगासे ॥ ४५ ॥

धम्मे हरए बम्भे सन्तितित्थे
अणाविले अत्तपसन्नलेसे ।
जहिंसि ण्हाओ विमलो विसुद्धो
सुसीइभूओ पजहामि दोसं ॥ ४६ ॥

एयं सियाणं कुसलेहि दिट्ठं
महासिणाणं इसिणं पसत्थं ।
जहिंसि ण्हाया विमला विसुद्धा
महारिसी उत्तम ठाणं पत्ता ॥ ४७ ॥

—त्ति बेमि ॥

तेरसमं अज्झयणं

चित्तसम्भूइज्जं

जाईपराजिओ खलु
कासि नियाणं तु हत्थिणपुरम्मि ।
चुलणीए वम्भदत्तो
उववन्नो पउमगुम्माओ ॥ १ ॥

कम्पिल्ले संभूओ
चित्तो पुण जाओ पुरिमतालम्मि ।
सेट्ठिकुलम्मि विसाले
धम्मं सोऊण पव्वइओ ॥ २ ॥

कम्पिल्लम्मि य नयरे
समागया दो वि चित्तसम्भूया ।
सुहदुक्खफलविवागं
कहेन्ति ते एक्कमेक्कस्स ॥ ३ ॥

चक्कवट्टी महीड्ढीओ वम्भदत्तो महायसो ।
भायरं वहुमाणेणं इमं वयणमव्ववी ॥ ४ ॥

आसिमो भायरा दो वि अन्नमन्नवसाणुगा ।
अन्नमन्नमणूरत्ता अन्नमन्नहिएसिणो ॥ ५ ॥

दासा दसण्णे आसी मिया कालिंजरे नगे ।
हंसा मयंगतीरे सोवागा कासिभूमिए ॥ ६ ॥

देवा य देवलोगम्मि आसि अम्हे महिड्ढिया ।
इमा नो छट्ठिया जाई अन्नमन्नेण जा विणा ॥ ७ ॥

कम्मा नियाणप्पगडा तुमे राय विचिन्तिया।
तेसिं फलविवागेण विप्पओगमुवागया ॥ ८ ॥

सच्चसोयप्पगडा कम्मा मए पुरा कडा।
ते अज्ज परिभुंजामो किं नु चित्ते वि से तहा? ॥ ९ ॥

सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं
कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि।
अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहिं
आया ममं पुण्णफलोववेए ॥ १० ॥

जाणासि संभूय! महाणुभागं
महिड्ढियं पुण्णफलोववेयं ॥
चित्तं पि जाणाहि तहेव रायं!
इड्ढी जुई तस्स वियप्पभूया ॥ ११ ॥

महत्थरूवा वयणप्पभूया
गाहाणुगीया नरसंघमज्झे।
जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया
इहऽज्जयन्ते समणो म्हि जाओ ॥ १२ ॥

उच्चोयए महु कक्के य बम्भे
पवेइया आवसहा य रम्मा।
इमं गिहं चित्तधणप्पभूयं
पसाहि पचालगुणोववेयं ॥ १३ ॥

नट्टेहि गीएहि य वाइएहिं
नारीजणाइं परिवारयन्तो।
भुंजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू!
मम रोयई पव्वजा हु दुक्खं ॥ १४ ॥

तं पुव्वनेहेण कयाणुरागं
नराहिवं कामगुणेसु गिद्धं ।
धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही
चित्तो इमं वयणमुदाहरित्था ॥ १५ ॥

सव्वं विलवियं गीयं सव्वं नट्टं विडम्बियं ।
सव्वे आभरणा भारा सव्वे कामा दुहावहा ॥ १६ ॥

बालाभिरामेसु दुहावहेसु
न तं सुहं कामगुणेसु रायं ।
विरत्तकामाण तवोधणाणं
जं भिक्खुणं सीलगुणे रयाणं ॥ १७ ॥

नरिंद ! जाई अहमा नराणं
सोवागजाई दुहओ गयाणं ।
जहिं वयं सव्वजणस्स वेस्सा
वसीय सोवागनिवेसणेसु ॥ १८ ॥

तीसे य जाईइ उ पावियाए
वुच्छामु सोवागनिवेसणेसु ।
सव्वस्स लोगस्स दुगंछणिज्जा
इहं तु कम्माइं पुरेकडाइं ॥ १९ ॥

सो दाणि सि राय ! महाणुभागो
महिड्ढिओ पुण्णफलोववेओ ।
चइत्तु भोगाइ असासयाइं
आयाणहेउं अभिणिक्खमाहि ॥ २० ॥

इह जीविए राय ! असासयम्मि
धणियं तु पुण्णाइं अकुव्वमाणो ।
से सोयई मच्चुमुहोवणीए
धम्मं अकाऊण परंसि लोए ॥ २१ ॥

जहेह सीहो व मियं गहाय
मच्चू नरं नेइ हु अन्तकाले ।
न तस्स माया व पिया व भाया
कालम्मि तम्मि सहरा भवंति ॥ २२ ॥

न तस्स दुक्खं विभयन्ति नाइओ
न मित्तवग्गा न सुया न वन्धवा ।
एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं
कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं ॥ २३ ॥

चेच्चा दुपयं च चउप्पयं च
खेत्तं गिहं धणधन्नं च सव्वं ।
सकम्मप्पवीओ अवसो पयाइ
परं भवं सुन्दर पावगं वा ॥ २४ ॥

तं इक्कगं तुच्छसरीरगं से
चिईगयं डहिय उ पावगेणं ।
भज्जा य पुत्ता वि य नायओ य
दायारमन्नं अणुसंकमन्ति ॥ २५ ॥

उवणिज्जई जीवियमप्पमायं
वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं ।
पंचालराया ! वयणं सुणाहि
मा कासि कम्माइं महालयाइं ॥ २६ ॥

अहं पि जाणामि जहेह साहू !
जं मे तुमं साहसि वक्कमेयं ।
भोगा इमे संगकरा हवन्ति
जे दुज्जया अज्जो अम्हारिसेहिं ॥ २७ ॥

हत्थिणपुरम्मि चित्ता दट्ठूणं नरवइं महिड्ढियं ।
कामभोगेसु गिद्धेणं नियाणमसुहं कडं ॥ २८ ॥

तस्स मे अपडिकन्तस्स इमं एयारिसं फलं ।
जाणमाणो वि जं धम्मं कामभोगेसु मुच्छिओ ॥ २९ ॥

नागो जहा पंकजलावसन्नो
दट्ठं थलं नाभिसमेइ तीरं ।
एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा
न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो ॥ ३० ॥

अच्चेइ कालो तूरन्ति राइओ
न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा ।
उविच्च भोगा पुरिसं चयन्ति
दुमं जहा खीणफलं व पक्खी ॥ ३१ ॥

जइ ता सि भोगे चइउं असत्तो
अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं ! ।
धम्मे ठिओ सव्वपयाणुकम्पी
तो होहिसि देवो इओ विउव्वी ॥ ३२॥

न तुज्झ भोगे चइऊण बुद्धी
गिद्धो सि आरम्भपरिग्गहेसु ।
मोहं कओ एत्तिउ विप्पलावो
गच्छामि रायं ! आमन्तिओ सि ॥ ३३ ॥

पंचालराया वि य बम्भदत्तो
साहुस्स तस्स वयणं अकाउं ।
अणुत्तरे भुंजिय कामभोगे
अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो ॥ ३४ ॥

चित्तो वि कामेहि विरत्तकामो
उदग्गचारित्ततवो महेसी ।
अणुत्तरं संजम पालइत्ता
अणुत्तरं सिद्धिगइं गओ ॥ ३५ ॥
—त्ति बेमि ॥

चउदसमं अज्झयणं

उसुयारिज्जं

देवा भवित्ताण पुरे भवम्मी
केई चुया एगविमाणवासी ।
पुरे पुराणे उसुयारनामे
खाए समिद्धे सुरलोगरम्मे ॥ १ ॥

सकम्मसेसेण पुराकएणं
कुलेसु दग्गेसु य ते पसूया ।
निव्विण्णसंसारभया जहाय
जिणिन्दमग्गं सरणं पवन्ना ॥ २ ॥

पुमत्तमागम्म कुमार दो वी
पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।
विसालकित्ती य तहोसुयारो
रायत्थ देवी कमलावई य ॥ ३ ॥

जाईजरा मच्चुभयाभिभूया
बहिंविहाराभिनिविट्ठचित्ता ।
संसारचक्कस्स विमोक्खणट्ठा
दट्ठूण ते कामगुणे विरत्ता ॥ ४ ॥

पियपुत्तगा दोन्नि वि माहणस्स
सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स ।
सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइं
तहा सुचिण्णं तवसंजमं च ॥ ५ ॥

ते कामभोगेसु असज्जमाणा
माणुस्सएसु जे यावि दिव्वा।
मोक्खाभिकंखी अभिजायसड्ढा
तायं उवागम्म इमं उदाहु ॥ ६ ॥

असासयं दट्ठु इमं विहारं
बहुअन्तरायं न य दीहमाउं।
तम्हा गिहंसि न रइं लहामो
आमन्तयामो चरिस्सामु मोणं ॥ ७ ॥

अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं
तवस्स वाघायकरं वयासी।
इमं वयं वेयविओ वयन्ति
जहा न होई असुयाण लोगो ॥ ८ ॥

अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे
पुत्ते पडिट्ठप्प गिहंसि जाया।
भोच्चाण भोए सह इत्थियाहिं
आरण्णगा होह मुणी पसत्था ॥ ९ ॥

सोयग्गिणा आयगुणिन्धणेणं
मोहाणिला पज्जलणाहिएणं।
संतत्तभावं परितप्पमाणं
लोलुप्पमाणं बहुहा बहुं च ॥ १० ॥

पुरोहियं तं कमसोऽणुणन्तं
निमंतयन्तं च सुए धणेणं।
जहक्कमं कामगुणेहि चेव
कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं ॥ ११ ॥

वेया अहीया न भवन्ति ताणं
भुत्ता दिया निन्ति तमं तमेणं ।
जाया य पुत्ता न हवन्ति ताणं
को णाम ते अणुमन्नेज्ज एयं ॥ १२ ॥

खणमेत्तसोक्खा वहुकालदुक्खा
पगामदुक्खा अणिगामसोक्खा ।
संसारमोक्खस्स विपक्खभूया
खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥ १३ ॥

परिव्वयन्ते अणियत्तकामे
अहो य राओ परितप्पमाणे ।
अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे
पप्पोति मच्चुं पुरिसे जरं च ॥ १४ ॥

इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि
इमं च मे किच्च इमं अकिच्चं ।
तं एवमेवं लालप्पमाणं
हरा हरंति त्ति कहं पमाए ? ॥ १५ ॥

धणं पभूयं सह इत्थियाहिं
सयणा तहा कामगुणा पगामा ।
तवं कए तप्पइ जस्स लोगो
तं सव्व साहीणमिहेव तुब्भं ॥ १६ ॥

धणेण किं धम्मधुराहिगारे
सयणेण वा कामगुणेहि चेव ।
समणा भविस्सामु गुणोहधारी
वहिंविहारा अभिगम्म भिक्खं ॥ १७ ॥

जहा य अग्गी अरणीउऽसन्तो
खीरे घयं तेल्लमहा तिलेसु ।
एमेव जाया ! सरीरंसि सत्ता
संमुच्छई नासइ नावचिट्ठे ॥ १८ ॥

नो इन्दियग्गेज्झ अमुत्तभावा
अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो ।
अज्झत्थहेउं निययऽस्स वन्धो
संसारहेउं च वयन्ति वन्धं ॥ १९ ॥

जहा वयं धम्ममजाणमाणा
पावं पुरा कम्ममकासि मोहा ।
ओरुज्झमाणा परिरक्खियन्ता
तं नेव भुज्जो वि समायरामो ॥ २० ॥

अब्भाहयंमि लोगंमि सव्वओ परिवारिए ।
अमोहाहिं पडन्तीहिं गिहंसि न रइं लभे ॥ २१ ॥

केण अब्भाहओ लोगो ? केण वा परिवारिओ ।
का वा अमोहा वुत्ता? जाया ! चिंतावरो हुमि ॥ २२ ॥

मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो जराए परिवारिओ ।
अमोहा रयणी वुत्ता एवं ताय ! वियाणह ॥ २३ ॥

जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तई ।
अहम्मं कुणमाणस्स अफला जन्ति राइओ ॥ २४ ॥

जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तई ।
धम्मं च कुणमाणस्स सफला जन्ति राइओ ॥ २५ ॥

एगओ संवसित्ताणं दुहओ सम्मत्तसंजुया ।
पच्छा जाया! गमिस्सामो भिक्खमाणा कुले कुले । २६ ।

जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं जस्स वऽत्थि पलायणं ।
जो जाणे न मरिस्सामि सो हु कंखे सुए सिया ॥ २७ ॥

अज्जेव धम्मं पडिवज्जयामो
जहिं पवन्ना न पुणब्भवामो ।
अणागयं नेव य अत्थि किंचि
सद्धाखमं णे विणइत्तु रागं ॥ २८ ॥

पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो
वासिट्ठि! भिक्खायरियाइ कालो ।
साहाहि रुक्खो लहए समाहिं
छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणुं । १९ ॥

पंखाविहूणो व्व जहेह पक्खी
भिच्चाविहूणो व्व रणे नरिन्दो ।
विवन्नसारो वणिओ व्व पोए
पहोणपुत्तो मि तहा अहं पि ॥ ३० ॥

सुसंभिया कामगुणा इमे ते
संपिण्डिया अग्गरसापभूया ।
भुंजामु ता कामगुणे पगामं
पच्छा गमिस्सामु पहाणमग्गं ॥ ३१ ॥

भुत्ता रसा भोइ ! जहाइ णे वओ
न जीवियट्ठा पजहामि भोए ।
लाभं अलाभं च सुहं च दुक्खं
संचिक्खमाणो चरिस्सामि मोणं ॥ ३२ ॥

मा हू तुमं सोयरियाण सम्भरे
जुण्णो व हंसो पडिसोत्तगामी ।
भुंजाहि भोगाइ मए समाणं
दुक्खं खु भिक्खायरियाविहारो ॥ ३३ ॥

जहा य भोई ! तणुयं भुयंगो
निम्मोयणिं हिच्च पलेइ मुत्तो ।
एमेए जाया पयहन्ति भोए
ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्को ? ॥ ३४ ॥

छिन्दित्तु जालं अवलं व रोहिया
मच्छा जहा कामगुणे पहाय ।
धोरेयसीला तवसा उदारा
धीरा हु भिक्खायरियं चरन्ति ॥ ३५ ॥

नहेव कुंचा समइक्कमन्ता
तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा ।
पलेन्ति पुत्ता य पई य मज्झं
ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्का? ॥ ३६ ॥

पुरोहियं तं ससुयं सदारं
सोच्चाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए ।
कुडुम्बसारं विउलुत्तमं तं
रायं अभिक्खं समुवाय देवी ॥ ३७ ॥

वन्तासी पुरिसो रायं ! न सो होइ पसंसिओ ।
माहणेण परिच्चत्तं धणं आदाउमिच्छसि ॥ ३८ ॥

सव्वं जगं जइ तुहं सव्वं वावि धणं भवे ।
सव्वं पि ते अपज्जत्तं नेव ताणाय तं तव ॥ ३९ ॥

मरिहिसि रायं ! जया तया वा
मणोरमे कामगुणे पहाय ।
एक्को हु धम्मो नरदेव ! ताणं
न विज्जई अन्नमिहेह किंचि ।। ४० ।।

नाहं रमे पक्खिणि पंजरे वा
संताणछिन्ना चरिस्सामि मोणं ।
अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा
परिग्गहारम्भनियत्तदोसा ।। ४१ ।।

दवग्गिणा जहा रण्णे डज्झमाणेसु जन्तुसु ।
अन्ने सत्ता पमोयन्ति रागद्दोसवसं गया ।। ४२ ।।

एवमेव वयं मूढा कामभोगेसु मुच्छिया ।
डज्झमाणं न वुज्झामो रागद्दोसग्गिणा जगं ।। ४३ ।।

भोगे भोच्चा वमित्ता य लहुभूयविहारिणो ।
आमोयमाणा गच्छन्ति दिया कामकमा इव ।। ४४ ।।

इमे य वद्धा फन्दन्ति मम हत्थऽज्जमागया ।
वयं च सत्ता कामेसु भविस्सामो जहा इमे ।। ४५ ।।

सामिसं कुललं दिस्स वज्झमाणं निरामिसं ।
आमिसं सव्वमुज्झित्ता विहरिस्सामि निरामिसा । ४६ ।

गिद्धोवमे उ नच्चाणं कामे संसारवड्ढणे ।
उरगो सुवण्णपासे व संकमाणो तणुं चरे ।। ४७ ।।

नागो व्व वन्धणं छित्ता अप्पणो वसहिं वए ।
एयं पत्थ महारायं ! उसुयारि त्ति मे सुयं ।। ४८ ।।

चइत्ता विउलं रज्जं कामभोगे य दुच्चए।
निव्विसया निरामिसा निन्नेहा निप्परिग्गहा ॥ ४९ ॥

सम्मं धम्मं वियाणित्ता चेच्चा कामगुणे वरे।
तवं पगिज्झऽहक्खायं घोरं घोरपरक्कमा ॥ ५० ॥

एवं ते कमसो बुद्धा
सव्वे धम्मपरायणा।
जम्ममच्चुभउव्विग्गा
दुक्खस्सन्तगवेसिणो ॥ ५१ ॥

सासणे विगयमोहाणं पुव्विं भावणभाविया।
अचिरेणेव कालेण दुक्खस्सन्तमुवागया ॥ ५२ ॥

राया सह देवीए माहणो य पुरोहिओ।
माहणी दारगा चेव सव्वे ते परिनिव्वुडा ॥ ५३ ॥

—त्ति बेमि ॥

पनरसमं अज्झयणं

सभिक्खुयं

मोणं चरिस्सामि समिच्च धम्मं
सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ने ।
संथवं जहिज्ज अकामकामे
अन्नायएसी परिव्वए जे स भिक्खू ॥ १ ॥

राओवरयं चरेज्ज लाढे
विरए वेयवियाऽयरक्खिए ।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी
जे कम्हिचि न मुच्छिए स भिक्खू ॥ २ ॥

अक्कोसवहं विइत्तु धीरे
मुणी चरे लाढे निच्चमायगुत्ते ।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे
जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥ ३ ॥

पन्तं सयणासणं भइत्ता
सीउण्हं विविहं च दंसमसगं ।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे
जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥ ४ ॥

नो सक्कियमिच्छई न पूयं
नो वि य वन्दणगं कुओ पसंसं ।
से संजए सुव्वए तवस्सी
सहिए आयगवेसए स भिक्खू ॥ ५ ॥

जेण पुण जहाइ जीवियं
मोहं वा कसिणं नियच्छई ।
नरनारिं पजहे सया तवस्सी
न य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू ॥ ६ ॥

छिन्नं सरं भोमं अन्तलिक्खं
सुमिणं लक्खणदण्डवत्थुविज्जं ।
अंगवियारं सरस्स विजयं
जो विज्जाहिं न जीवइ स भिक्खू ॥ ७ ॥

मन्तं मूलं विविहं वेज्जचिन्तं
वमणविरेयणधूमणेत्तसिणाणं ।
आउरे सरणं तिगिच्छियं च
तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥ ८ ॥

खत्तियगणउग्गरायपुत्ता
माहणभोइय विविहा य सिप्पिणो ।
नो तेसिं वयइ सिलोगपूयं
तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥ ९ ॥

गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा
अप्पव्वइएण व संथुया हविज्जा ।
तेसिं इहलोइयफलट्ठा
जो संथवं न करेइ स भिक्खू ॥ १० ॥

सयणासणपाणभोयणं
विविहं खाइमसाइमं परेसिं ।
अदए पडिसेहिए नियण्ठे
जे तत्थ न पउस्सई स भिक्खू ॥ ११ ॥

जं किंचि आहारपाणं विविहं
खाइमसाइमं परेसिं लद्धुं।
जो तं तिविहेण नाणुकम्पे
मणवयकायसुसंवुडे स भिक्खू ॥ १२ ॥

आयामगं चेव जवोदणं च
सीयं च सोवीरजवोदगं च।
नो हीलए पिण्डं नीरसं तु
पन्तकुलाइं परिव्वए स भिक्खू ॥ १३ ॥

सद्दा विविहा भवन्ति लोए
दिव्वा माणुस्सगा तहा तिरिच्छा।
भीमा भयभेरवा उराला
जो सोच्चा न वहिज्जई स भिक्खू ॥ १४ ॥

वादं विविहं समिच्च लोए
सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी
उवसन्ते अविहेडए स भिक्खू ॥ १५ ॥

असिप्पजीवी अगिहे अमित्ते
जिइन्दिए सव्वओ विप्पमुक्के।
अणुक्कसाई लहुअप्पभक्खी
चेच्चा गिहं एगचरे स भिक्खू ॥ १६ ॥

—त्ति बेमि ॥

सोलसमं अज्झयणं

बम्भचेरसमाहिठाणं

सू० १—सुयं मे, आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा, निसम्म, संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ।

सू० २—कयरे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता ? जे भिक्खू सोच्चा, निसम्म, संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ?

सू० ३—इमे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा, निसम्म, संजमबहुले, संवरबहुले समाहिबहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा, तं जहा—विवित्ताइं सयणासणाइं सेविज्जा, से निग्गन्थे । नो इत्थीपसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीपसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा नो इत्थिपसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

सू० ४—नो इत्थीणं कहं कहित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं कहं कहेमाणस्स, वम्भयारिस्स वम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा नो इत्थीणं कहं कहेज्जा ।

सू० ५—नो इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागयस्स, वम्भयारिस्स वम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरेज्जा ।

सू० ६—नो इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं आलोइत्ता, निज्झाइत्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं, मणोरमाइं आलोएमाणस्स, निज्झायमाणस्स वम्भयारिस्स वम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकलियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा तम्हा खलु निग्गन्थे नो इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं, मणोरमाइं आलोएज्जा, निज्झाएज्जा ।

सू० ७ -नो इत्थीणं कुड्डन्तरंसि वा, दूसन्तरंसि वा, भित्तन्तरंसि वा, कुइयसद्दं वा, रुइयसद्दं वा, गीयसद्दं वा, हसियसद्दं वा, थणियसद्दं वा, कन्दियसद्दं वा, विलवियसद्दं वा, सुणेत्ता हवइ से निग्गन्थे।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं कुड्डन्तरंसि वा, दूसन्तरंसि वा, भित्तन्तरंसि वा कुइयसद्दं वा रुइयसद्दं वा, गीयसद्दं वा, हसियसद्दं वा, थणियसद्दं वा, कन्दियसद्दं वा, विलवियसद्दं वा, सुणेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु निग्गन्थे नो इत्थीणं कुड्डन्तरंसि वा, दूसन्तरंसि वा, भित्तन्तरंसि वा, कुइयसद्दं वा, रुइयसद्दं वा, गीयसद्दं वा, हसियसद्दं वा, थणियसद्दं वा, कन्दियसद्दं वा, विलवियसद्दं वा सुणेमाणे विहरेज्जा।

सू० ८—नो निग्गन्थे पुव्वरयं, पुव्वकीलियं अणुसरित्ता हवइ, से निग्गन्थे।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं पुव्वरयं, पुव्वकीलियं अणुसरमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरेज्जा।

सू० ९—नो पणीयं आहारं आहारित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु पणीयं पाणभोयणं आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं व लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे पणीयं आहारं आहारेज्जा ।

सू० १०—नो अइमायाए पाणभोयणं आहारेत्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु अइमायाए पाणभोयणं आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रागायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे अइमायाए पाणभोयणं भुंजिज्जा ।

सू० ११—नो विभूसाणुवाई हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—विभूसावत्तिए, विभूसियसरीरे इत्थिजणस्स अभिलसणिज्जे हवइ । तओ णं तस्स इत्थिजणेणं अभिलसिज्जमाणस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे विभूसाणुवाई हवेज्जा ।

सू० १२—नो सद्दरूवरसगन्धफासाणुवाई हवइ, से निग्गन्थे।
तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु सद्दरूवरसगन्धफासाणुवाइस्स वम्भयारिस्स वम्भचेरे संका वा, कंखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे सद्दरूवरसगन्धफासाणुवाई हविज्जा। दसमे वम्भचेरसमाहिठाणे हवइ।

भवन्ति इत्थ सिलोगा, तं जहा—

जं विवित्तमणाइण्णं रहियं इत्थीजणेण य।
वम्भचेरस्स रक्खट्ठा आलयं तु निसेवए॥ १॥

मणपल्हायजणणिं कामरागविवड्ढणिं।
वम्भचेररओ भिक्खू थीकहं तु विवज्जए॥ २॥

समं च संथवं थीहिं संकहं च अभिक्खणं।
वम्भचेररओ भिक्खू निच्चसो परिवज्जए॥ ३॥

अंगपच्चंगसंठाणं चारुल्लवियपेहियं।
वम्भचेररओ थीणं चक्खुगिज्झं विवज्जए॥ ४॥

कुइयं रुइयं गीयं हसियं थणियकन्दियं।
वम्भचेररओ थीणं सोयगिज्झं विवज्जए॥ ५॥

हासं किड्डं रइं दप्पं सहसाऽवत्तासियाणि य।
वम्भचेररओ थीणं नाणुचिन्ते कयाइ वि॥ ६॥

पणीयं भत्तपाणं तु खिप्पं मयविवड्ढणं।
वम्भचेररओ भिक्खू निच्चसो परिवज्जए॥ ७॥

धम्मलद्धं मियं काले जत्तत्थं पणिहाणवं।
नाइमत्तं तु भुंजेज्जा बम्भचेररओ सया ॥ ८ ॥

विभूसं परिवज्जेज्जा सरीरपरिमण्डणं।
बम्भचेररओ भिक्खू सिंगारत्थं न धारए ॥ ९ ॥

सद्दे रूवे य गन्धे य रसे फासे तहेव य।
पंचविहे कामगुणे निच्चसो परिवज्जए ॥ १० ॥

आलओ थीजणाइण्णो थीकहा य मणोरमा।
संथवो चेव नारीणं तासिं इन्दियदरिसणं ॥ ११ ॥

कुइयं रुइयं गीयं हसियं भुत्तासियाणि य।
पणीयं भत्तपाणं च अइमायं पाणभोयणं ॥ १२ ॥

गतभूसणमिट्ठं च कामभोगा य दुज्जया।
नरस्सत्तगवेसिस्स विसं तालउडं जहा ॥ १३ ॥

दुज्जए कामभोगे य निच्चसो परिवज्जए।
संकट्ठाणाणि सव्वाणि वज्जेज्जा पणिहाणवं ॥ १४ ॥

धम्मारामे चरे भिक्खू धिइमं धम्मसारही।
धम्मारामरए दन्ते बम्भचेरसमाहिए ॥ १५ ॥

देवदाणवगन्धव्वा जक्खरक्खसकिन्नरा।
बम्भयारिं नमंसन्ति दुक्करं जे करन्ति तं ॥ १६ ॥

एस धम्मे धुवे निअए सासए जिणदेसिए।
सिद्धा सिज्झन्ति चाणेण सिज्झिस्सन्ति तहापरे ॥ १७ ॥

—त्ति बेमि ।

सतरसमं अज्झयणं

पावसमणिज्जं

जे के इमे पव्वइए नियण्ठे
धम्मं सुणित्ता विणओववन्ने ।
सुदुल्लहं लहिउं वोहिलाभं
विहरेज्ज पच्छा य जहासुहं तु ॥ १ ॥

सेज्जा दढा पाउरणं मे अत्थि
उप्पज्जई भोत्तुं तहेव पाउं ।
जाणामि जं वट्टइ आउसु ! त्ति
किं नाम काहामि सुएण भन्ते ! ॥ २ ॥

जे के इमे पव्वइए निद्दासीले पगामसो ।
भोच्चा पेच्चा सुहं सुवइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ३ ॥

आयरियउवज्झाएहिं सुयं विणयं च गाहिए ।
ते चेव खिसई वाले पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ४ ॥

आयरियउवज्झायाणं सम्मं नो पडितप्पइ ।
अप्पडिपूयए थद्धे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ५ ॥

सम्मद्दमाणे पाणाणि वीयाणि हरियाणि य ।
असंजए संजयमन्नमाणे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ६ ॥

संथारं फलगं पीढं निसेज्जं पायकम्वलं ।
अप्पमज्जियमारुहइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ७ ॥

दवदवस्स चरई पमत्ते य अभिक्खणं।
उल्लंघणे य चण्डे य पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ८ ॥

पडिलेहेइ पमत्ते अवउज्झइ पायकम्वलं।
पडिलेहणाअणाउत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ९ ॥

पडिलेहेइ पमत्ते से किंचि हु निसामिया।
गुरुपरिभावए निच्चं पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १० ॥

वहुमाई पमुहरे थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
असंविभागी अचियत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ११ ॥

विवादं च उदीरेइ अहम्मे अत्तपन्नहा।
वुग्गहे कलहे रत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १२ ॥

अथिरासणे कुक्कुईए जत्थ तत्थ निसीयई।
आसणम्मि अणाउत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १३ ॥

ससरक्खपाए सुवई सेज्जं न पडिलेहइ।
संथारए अणाउत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १४ ॥

दुद्धदहीविगईओ आहारेइ अभिक्खणं।
अरए य तवोकम्मे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १५ ॥

अत्थन्तम्मि य सूरम्मि आहारेइ अभिक्खणं।
चोइओ पडचोएइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १६ ॥

आयरियपरिच्चाई परपासण्डसेवए।
गाणंगणिए दुब्भूए पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १७ ॥

सयं गेहं परिचज्ज परगेहंसि वावडे।
निमित्तेण य ववहरई पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १८ ॥

सन्नाइपिण्डं जेमेइ नेच्छई सामुदाणियं ।
गिहिनिसेज्जं च वाहेइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १९ ॥

एयारिसे पंचकुसीलसंवुडे
रूवंधरे मुणिपवराण हेट्ठिमे ।
अयंसि लोए विसमेव गरहिए
न से इहं नेव परत्थ लोए ॥ २० ॥

जे वज्जए एए सया उ दोसे
से सुव्वए होइ मुणीण मज्झे ।
अयंसि लोए अमयं व पूइए
आराहए दुहओ लोगमिणं ॥ २१ ॥
त्ति वेमि ॥

अट्ठारसमं अज्झयणं

संजइज्जं

कम्पिल्ले नयरे राया उदिण्णबलवाहणे ।
नामेणं संजए नाम मिगव्वं उवणिग्गए ॥ १ ॥

हयाणीए गयाणीए रहाणीए तहेव य ।
पायत्ताणीए महया सव्वओ परिवारिए ॥ २ ॥

मिए छुभित्ता हयगओ कम्पिल्लुज्जाणकेसरे ।
भीए सन्ते मिए तत्थ वहेइ रसमुच्छिए ॥ ३ ॥

अह केसरम्मि उज्जाणे अणगारे तवोधणे ।
सज्झायज्झाणसंजुत्ते धम्मज्झाणं झियायई ॥ ४ ॥

अप्फोवमण्डवम्मि झायई झवियासवे ।
तस्सागए मिए पासं वहेई से नराहिवे ॥ ५ ॥

अह आसगओ राया खिप्पमागम्म सो तहिं ।
हए मिए उ पासित्ता अणगारं तत्थ पासई ॥ ६ ॥

अह राया तत्थ संभन्तो अणगारो मणाऽऽहओ ।
मए उ मन्दपुण्णेणं रसगिद्धेण घन्तुणा ॥ ७ ॥

आसं विसज्जइत्ताणं अणगारस्स सो निवो ।
विणएण वन्दए पाए भगवं ! एत्थ मे खमे ॥ ८ ॥

अह मोणेण सो भगव अणगारे झाणमस्सिए ।
रायाणं न पडिमन्तेइ तओ राया भयद्दुओ ॥ ९ ॥

संजओ अहमम्मीति भगवं ! वाहराहि मे ।
कुद्धे तेएण अणगारे डहेज्ज नरकोडिओ ॥ १० ॥

अभओ पत्थिवा ! तुब्भं अभयदाया भवाहि य ।
अणिच्चे जीवलोगम्मि किं हिंसाए पसज्जसि ? ॥ ११ ॥

जया सव्वं परिच्चज्ज गन्तव्वमवसस्स ते ।
अणिच्चे जीवलोगम्मि किं रज्जम्मि पसज्जसि ? ॥ १२ ॥

जीवियं चेव रूवं च विज्जुसंपायचंचलं ।
जत्थ तं मुज्झसी रायं पेच्चत्थं नावबुज्झसे ॥ १३ ॥

दाराणि य सुया चेव मित्ता य तह वन्धवा ।
जीवन्तमणुजीवन्ति मयं नाणुव्वयन्ति य ॥ १४ ॥

नीहरन्ति मयं पुत्ता पियरं परमदुक्खिया ।
पियरो वि तहा पुत्ते वन्धू रायं ! तवं चरे ॥ १५ ॥

तओ तेणऽज्जिए दव्वे दारे य परिरक्खिए ।
कीलन्तऽन्ने नरा रायं ! हट्ठतुट्ठमलंकिया ॥ १६ ॥

तेणावि जं कयं कम्मं सुहं वा जइ वा दुहं ।
कम्मुणा तेण संजुत्तो गच्छई उ परं भवं ॥ १७ ॥

सोऊण तस्स सो धम्मं अणगारस्स अन्तिए ।
महया संवेगनिव्वेयं समावन्नो नराहिवो ॥ १८ ॥

संजओ चइउं रज्जं निक्खन्तो जिणसासणे ।
गद्दभालिस्स भगवओ अणगारस्स अन्तिए ॥ १९ ॥

चिच्चा रट्ठं पव्वइए खत्तिए परिभासइ ।
जहा ते दीसई रूवं पसन्नं ते तहा मणो ॥ २० ॥

किंनामे ? किंगोत्ते ? कस्सट्ठाए व माहणे ? ।
कहं पडियरसी बुद्धे ? कहं-विणीए त्ति वुच्चसि ? ॥ २१ ॥

संजओ नाम नामेणं तहा गोत्तेण गोयमे ।
गद्दभाली ममायरिया विज्जाचरणपारगा ॥ २२ ॥

किरियं अकिरियं विणयं अन्नाणं च महामुणी! ।
एएहिं चउहिं ठाणेहिं मेयन्ने किं पभासई ? ॥ २३ ॥

इइ पाउकरे बुद्धे नायए परिनिव्वुडे ।
विज्जाचरणसंपन्ने सच्चे सच्चपरक्कमे ॥ २४ ॥

पडन्ति नरए घोरे जे नरा पावकारिणो ।
दिव्वं च गइं गच्छन्ति चरित्ता धम्ममारियं ॥ २५ ॥

मायावुइयमेयं तु मुसाभासा निरत्थिया ।
संजममाणो वि अहं वसामि इरियामि य ॥ २६ ॥

सव्वे ते विइया मज्झं मिच्छादिट्ठी अणारिया ।
विज्जमाणे परे लोए सम्मं जाणामि अप्पगं ॥ २७ ॥

अहमासी महापाणे जुइमं वरिससओवमे ।
जा सा पाली महापाली दिव्वा वरिससओवमा ॥ २८ ॥

से चुए बम्भलोगाओ माणुस्सं भवमागए ।
अप्पणो य परेसिं च आउं जाणे जहा तहा ॥ २९ ॥

नाणारुइं च छन्दं च परिवज्जेज्ज संजए ।
अणट्ठा जे य सव्वत्था इइ विज्जामणुसंचरे ॥ ३० ॥

पडिक्कमामि पसिणाणं परमन्तेहिं वा पुणो ।
अहो उट्ठिए अहोरायं इइ विज्जा तवं चरे ॥ ३१ ॥

जं च मे पुच्छसी काले सम्मं सुद्धेण चेयसा ।
ताइं पाउकरे बुद्धे तं नाणं जिणसासणे ॥ ३२ ॥

किरियं च रोयए धीरे अकिरियं परिवज्जए ।
दिट्ठीए दिट्ठिसंपन्ने धम्मं चर सुदुच्चरं ॥ ३३ ॥

एयं पुण्णपयं सोच्चा अत्थधम्मोवसोहियं ।
भरहो वि भारहं वासं चेच्चा कामाइ पव्वए ॥ ३४ ॥

सगरो वि सागरन्तं भरहवासं नराहिवो ।
इस्सरियं केवलं हिच्चा दयाए परिनिव्वुडे ॥ ३५ ॥

चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ ।
पव्वज्जमब्भुवगओ मघवं नाम महाजसो ॥ ३६ ॥

सणंकुमारो मणुस्सिन्दो चक्कवट्टी महिड्ढिओ ।
पुत्तं रज्जे ठवित्ताणं सो वि राया तवं चरे ॥ ३७ ॥

चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ ।
सन्ती सन्तिकरे लोए पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ३८ ॥

इक्खागरायवसभो कुन्थू नाम नराहिवो ।
विक्खायकित्ती धिइमं मोक्खं गओ अणुत्तरं ॥ ३९ ॥

सागरन्तं जहित्ताणं भरहं वासं नरीसरो ।
अरो य अरयं पत्तो पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४० ॥

चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी नराहिओ ।
चइत्ता उत्तमे भोए महापउमे तवं चरे ॥ ४१ ॥

एगच्छत्तं पसाहित्ता महिं माणनिसूरणो ।
हरिसेणो मणुस्सिन्दो पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४२ ॥

अन्निओ रायसहस्सेहिं सुपरिच्चाई दमं चरे।
जयनामो जिणक्खायं पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४३ ॥

दसण्णरज्जं मुइयं चइत्ताणं मुणी चरे।
दसण्णभद्दो निक्खन्तो सक्खं सक्केण चोइओ ॥ ४४ ॥

नमी नमेइ अप्पाणं सक्खं सक्केण चोइओ।
चइऊण गेहं वइदेही सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥

करकण्डू कलिंगेसु पंचालेसु य दुम्मुहो।
नमी राया विदेहेसु गन्धारेसु य नग्गई ॥ ४५ ॥
एए नरिन्दवसभा निक्खन्ता जिणसासणे।
पुत्ते रज्जे ठवित्ताणं सामण्णे पज्जुवट्ठिया ॥ ४६ ॥
सोवीररायवसभो चेच्चा रज्जं मुणी चरे।
उद्दायणो पव्वइओ पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४७ ॥
तहेव कासीराया सेओसच्चपरक्कमे।
कामभोगे परिच्चज्ज पहणे कम्ममहावणं ॥ ४८ ॥
तहेव विजओ राया अणट्ठाकित्ति पव्वए।
रज्जं तु गुणसमिद्धं पयहित्तु महाजसो ॥ ४९ ॥
तहेवुग्गं तवं किच्चा अव्वक्खित्तेण चेयसा।
महाबलो रायरिसी अद्दाय सिरसा सिरं ॥ ५० ॥
कहं धीरो अहेऊहिं उम्मत्तो व्व महिं चरे?।
एए विसेसमादाय सूरा दढपरक्कमा ॥ ५१ ॥
अच्चन्तनियाणखमा सच्चा मे भासिया वई।
अतरिंसु तरन्तेगे तरिस्सन्ति अणागया ॥ ५२ ॥
कहं धीरे अहेऊहिं अत्ताणं परियावसे ?।
सव्वसंगविनिम्मुक्के सिद्धे हवइ नीरए ॥ ५३ ॥
—त्ति बेमि ॥

एगूणविसइमं अज्झयणं

मियापुत्तिज्जं

सुग्गीवे नयरे रम्मे काणणुज्जाणसोहिए ।
राया वलभद्दो त्ति मिया तस्सग्गमाहिसी ॥ १ ॥

तेसिं पुत्ते वलसिरी मियापुत्ते त्ति विस्सुए ।
अम्मापिऊण दइए जुवराया दमीसरे ॥ २ ॥

नन्दणे सो उ पासाए कीलए सह इत्थिहिं ।
देवो दोगुन्दगो चेव निच्चं मुइयमाणसो ॥ ३ ॥

मणिरयणकुट्टिमतले पासायालोयणट्ठिओ ।
आलोएइ नगरस्स चउक्कतियचच्चरे ॥ ४ ॥

अह तत्थ अइच्छन्तं पासई समणसंजयं ।
तवनियमसंजमधरं सीलड्ढं गुणआगरं ॥ ५ ॥

तं देहई मियापुत्ते दिट्ठीए अणिमिसाए उ ।
कहिं मन्नेरिसं रूवं दिट्ठपुव्वं मए पुरा ॥ ६ ॥

साहुस्स दरिसणे तस्स अज्झवसाणम्मि सोहणे ।
मोहंगयस्स सन्तस्स जाईसरणं समुप्पन्नं ॥ ७ ॥

देवलोग चुओ संतो माणुसं भवमागओ ।
सन्निनाणे समुप्पण्णे जाइं सरइ पुराणयं ॥ ८ ॥

जाईसरणे समुप्पन्ने मियापुत्ते महिड्ढिए ।
सरई पोराणियं जाइं सामण्णं च पुराकयं ॥ ९ ॥

विसएहि अरज्जन्तो रज्जन्तो संजमम्मि य ।
अम्मापियरं उवागम्म इमं वयणमब्ववी ॥ १० ॥

सुयाणि मे पंच महव्वयाणि
नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु ।
निव्विण्णकामो मि महण्णवाओ
अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ॥ ११ ॥

अम्मताय ! मए भोगा भुत्ता विसफलोवमा ।
पच्छा कडुयविवागा अणुवन्धदुहावहा ॥ १२ ॥

इमं सरीरं अणिच्चं असुइं असुइसंभवं ।
असासयावासमिणं दुक्खकेसाण भायणं ॥ १३ ॥

असासए सरीरम्मि रइं नोवलभामहं ।
पच्छा पुरा व चइयव्वे फेणवुब्वयसन्निभे ॥ १४ ॥

माणुसत्ते असारम्मि वाहीरोगाण आलए ।
जरामरणघत्थम्मि खणं पि न रमामऽहं ॥ १५ ॥

जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं रोगा य मरणाणि य ।
अहो दुक्खो हु संसारो जत्थ कीसन्ति जन्तवो ॥ १६ ॥

खेत्तं वत्थं हिरण्णं च पुत्तदारं च वन्धवा ।
चइत्ताणं इमं देहं गन्तव्वमवसस्स मे ॥ १७ ॥

जहा किम्पागफलाणं परिणामो न सुन्दरो ।
एवं भुत्ताण भोगाणं परिणामो न सुन्दरो ॥ १८ ॥

अद्धाणं जो महन्तं तु अपाहेओ पवज्जई ।
गच्छन्तो सो दुही होइ छुहातण्हाए पीडिओ ॥ १९ ॥

एवं धम्मं अकाऊणं जो गच्छइ परं भवं।
गच्छन्तो सो दुही होइ वाहीरोगेहिं पीडिओ ॥ २० ॥

अद्धाणं जो महन्तं तु सपाहेओ पवज्जई।
गच्छन्तो सो सुही होइ छुहातण्हाविवज्जिओ ॥ २१ ॥

एवं धम्मं पि काऊणं जो गच्छइ परं भवं।
गच्छन्तो सो सुही होइ अप्पकम्मे अवेयणे ॥ २२ ॥

जहा गेहे पलित्तम्मि तस्स गेहस्स जो पहू।
सारभण्डाणि नीणेइ असारं अवउज्झइ ॥ २३ ॥

एवं लोए पलित्तम्मि जराए मरणेण य।
अप्पाणं तारइस्सामि तुब्भेहिं अणुमन्निओ ॥ २४ ॥

तं बितऽम्मापियरो सामण्णं पुत्त ! दुच्चरं।
गुणाणं तु सहस्साइं धारेयव्वाइं भिक्खुणो ॥ २५ ॥

समया सव्वभूएसु सत्तुमित्तेसु वा जगे।
पाणाइवायविरई जावज्जीवाए दुक्करा ॥ २६ ॥

निच्चकालऽप्पमत्तेणं मुसावायविवज्जणं।
भासियव्वं हियं सच्चं निच्चाउत्तेण दुक्करं ॥ २७ ॥

दन्तसोहणमाइस्स अदत्तस्स विवज्जणं।
अणवज्जेसणिज्जस्स गेण्हणा अवि दुक्करं ॥ २८ ॥

विरई अबम्भचेरस्स कामभोगरसन्नुणा।
उग्गं महव्वयं बम्भं धारेयव्वं सुदुक्करं ॥ २९ ॥

धणधन्नपेसवग्गेसु परिग्गहविवज्जणं।
सव्वारम्भपरिच्चाओ निम्ममत्तं सुदुक्करं ॥ ३० ॥

चउव्विहे वि आहारे राईभोयणवज्जणा ।
सन्निहीसंचओ चेव वज्जेयव्वो सुदुक्करो ।। ३१ ।।

छुहा तण्हा य सीउण्हं दंसमसगवेयणा ।
अक्कोसा दुक्खसेज्जा या तणफासा जल्लमेव य ।।३२।।

तालणा तज्जणा चेव वहबन्धपरीसहा ।
दुक्खं भिक्खायरिया जायणा य अलाभया ।। ३३ ।।

कावोया जा इमा वित्ती केसलोओ य दारुणो ।
दुक्खं बम्भवयं घोर धारेउं अ महप्पणो ।। ३४ ।।

सुहोइओ तुमं पुत्ता ! सुकुमालो सुमज्जिओ ।
न हु सी पभू तुमं पुत्ता! सामण्णमणुपालिउं ।। ३५ ।।

जावज्जीवमविस्सामो गुणाणं तु महाभरो ।
गुरुओ लोहभारो व्व जो पुत्ता ! होइ दुव्वहो ।। ३६ ।।

आगासे गंगासोउ व्व पडिसोओ व्व दुत्तरो ।
वाहाहिं सागरो चेव तरियव्वो गुणोयही ।। ३७ ।।

वालुयाकवले चेव निरस्साए उ संजमे ।
असिधारागमणं चेव दुक्करं चरिउं तवो ।। ३८ ।।

अहीवेगन्तदिट्ठीए चरित्ते पुत्त दुच्चरे ।
जवा लोहमया चेव चावेयव्वा सुदुक्करं ।। ३९ ।।

जहा अग्गिसिहा दित्ता पाउं होइ सुदुक्करं ।
तह दुक्करं करेउं जे तारुण्णे समणत्तणं ।। ४० ।।

जहा दुक्खं भरेउं जे होइ वायस्स कोत्थलो ।
तहा दुक्खं करेउं जे कीवेणं समणत्तणं ।। ४१ ।।

जहा तुलाए तोलेउं दुक्करं मन्दरो गिरी ।
तहा निहुय नीसंकं दुक्करं समणत्तणं ॥ ४२ ॥

जहा भुयाहिं तरिउं दुक्करं रयणागरो ।
तहा अणुवसन्तेणं दुक्करं दमसागरो ॥ ४३ ॥

भुंज माणुस्सए भोगे पंचलक्खणए तुमं ।
भुत्तभोगी तओ जाया ! पच्छा धम्मं चरिस्ससि ॥ ४४ ॥

तं वित ऽम्मापियरो एवमेयं जहा फुडं ।
इह लोए निप्पिवासस्स नत्थि किंचि वि दुक्करं ॥ ४५ ॥

सारीरमाणसा चेव वेयणाओ अणन्तसो ।
मए सोढाओ भीमाओ असइं दुक्खभयाणि य ॥ ४६ ॥

जरामरणकन्तारे चाउरन्ते भयागरे ।
मए सोढाणि भीमाणि जम्माणि मरणाणि य ॥ ४७ ॥

जहा इहं अगणी उण्हो एत्तोऽणन्तगुणे तहिं ।
नरएसु वेयणा उण्हा अस्साया वेइया मए ॥ ४८ ॥

जहा इमं इहं सीयं एत्तोऽणन्तगुणं तहिं ।
नरएसु वेयणा सीया अस्साया वेइया मए ॥ ४९ ॥

कन्दन्तो कंदुकुम्भीसु उड्ढपाओ अहोसिरो ।
हुयासणे जलन्तम्मि पक्कपुव्वो अणन्तसो ॥ ५० ॥

महादवग्गिसंकासे मरुम्मि वइरवालुए ।
कलम्बवालुयाए य दड्ढपुव्वो अणन्तसो ॥ ५१ ॥

रसन्तो कंदुकुम्भीसु उड्ढं बद्धो अबन्धवो ।
करवत्तकरकयाईहिं छिन्नपुव्वो अणन्तसो ॥ ५२ ॥

अइतिक्खकण्टगाइण्णे तुंगे सिम्वलिपायवे।
खेवियं पासबद्धेणं कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं ॥ ५३ ॥

महाजन्तेसु उच्छू वा आरसन्तो सुभेरवं।
पीलिओ मि सकम्मेहिं पावकम्मो अणन्तसो ॥ ५४ ॥

कूवन्तो कोलसुणएहिं सामेहिं सवलेहि य।
पाडिओ फालिओ छिन्नो विप्फुरन्तो अणेगसो ॥ ५५ ॥

असीहि अयसिवण्णाहिं भल्लीहिं पट्टिसेहि य।
छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य ओइण्णो पावकम्मुणा ॥५६।

अवसो लोहरहे जुत्तो जलन्ते समिलाजुए।
चोइओ तोत्तजुत्तेहिं रोज्झो वा जह पाडिओ ॥ ५७ ॥

हुयासणे जलन्तम्मि चियासु महिसो विव।
दड्ढो पक्को य अवसो पावकम्मेहि पाविओ ॥ ५८ ॥

वला संडासतुण्डेहिं लोहतुण्डेहि पक्खिहिं।
विलुत्तो विलवन्तो हं ढंकगिद्धेहिऽणन्तसो ॥ ५९ ॥

तण्हाकिलन्तो धावन्तो पत्तो वेयरणिं नदिं।
जलं पाहि ति चिन्तन्तो खुरधाराहिं विवाइओ ॥ ६० ॥

उण्हाभितत्तो संपत्तो असिपत्तं महावणं।
असिपत्तेहिं पडन्तेहिं छिन्नपुव्वो अणेगसो ॥ ६१ ॥

मुग्गरेहिं मुसंढीहिं सूलेहिं मुसलेहि य।
गयासं भग्गगत्तेहिं पत्तं दुक्खं अणन्तसो ॥ ६२ ॥

खुरेहिं तिक्खधारेहिं छुरियाहिं कप्पणीहि य।
कप्पिओ फालिओ छिन्नो उक्कत्तोयं अणेगसो ॥ ६३ ॥

पासेहिं कूडजालेहिं मिओ वा अवसो अहं ।
वाहिओ वद्धरुद्धो अ वहुसो चेव विवाइओ ॥ ६४ ॥

गलेहिं मगरजालेहिं
मच्छो वा अवसो अहं ।
उल्लिओ फालिओ गहिओ
मारिओ य अणन्तसो ॥ ६५ ॥

वीदंसएहि जालेहिं
लेप्पाहिं सउणो विव ।
गहिओ लग्गो वद्धो य
मारिओ य अणन्तसो ॥ ६६ ॥

कुहाडफरसुमाईहिं
वड्ढईहिं दुमो विव ।
कुट्टिओ फालिओ छिन्नो
तच्छिओ य अणन्तसो ॥ ६७ ॥

चवेडमुट्ठिमाईहि
कुमारेहि अयं पिव ।
ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो
चुण्णिओ य अणन्तसो ॥ ६८ ॥

तत्ताइं तम्वलोहाइं तउयाइं सीसयाणि य ।
पाइओ कलकलन्ताइं आरसन्तो सुभेरवं ॥ ६९ ॥

तुहं पियाइं मंसाइं खण्डाइं सोल्लगाणि य ।
खाविओ मि समंसाइं अग्गिवण्णाइं णेगसो ॥ ७० ॥

तुहं पिया सुरा साहू मेरओ य महूणि य ।
पाइओ मि जलन्तीओ वसाओ रुहिराणि य ॥ ७१ ॥

निच्चं भीएण तत्थेण दुहिएण वहिएण य।
परमा दुहसंबद्धा वेयणा वेइया मए ॥ ७१ ॥

तिव्वचण्डप्पगाढाओ घोराओ अइदुस्सहा।
महब्भयाओ भीमाओ नरएसु वेइया मए ॥ ७२ ॥

जारिसा माणुसे लोए ताया !दीसन्ति वेयणा।
एत्तो अणन्तगुणिया नरएसु दुक्खवेयणा ॥ ७३ ॥

सव्वभवेसु अस्साया वेयया वेइया मए।
निमेसन्तरमित्तं पि जं साया नत्थि वेयणा ॥ ७४ ॥

तं बितऽम्मापियरो छन्देणं पुत्त ! पव्वया।
नवरं पुण सामण्णे दुक्खं निप्पडिकम्मया ॥ ७५ ॥

सो बितऽम्मापियरो ! एवमेयं जहाफुडं।
पडिकम्मं को कुणई अरण्णे मियपक्खिणं ? ॥ ७६ ॥

एगभूओ अरण्णे वा जहा उ चरई मिगे।
एवं धम्मं चरिस्सामि संजमेण तवेण य ॥ ७७ ॥

जया मिगस्स आयंको महारण्णम्मि जायई।
अच्छन्तं रुक्खमूलम्मि को णं ताहे तिगिच्छई ? ॥ ७८ ॥

को वा से ओसहं देई को वा से पुच्छई सुहं ?।
को से भत्तं च पाणं च आहरित्तु पणामए ? ॥ ७९ ॥

जया य से सुही होइ तया गच्छइ गोयरं।
भत्तपाणस्स अट्ठाए वल्लराणि सराणि य ॥ ८० ॥

खाइत्ता पाणियं पाउं वल्लरेहिं सरेहि वा।
मिगचारियं चरित्ताणं गच्छई मिगचारियं ॥ ८१ ॥

एवं समुट्ठिओ भिक्खू एवमेव अणेगओ ।
मिगचारियं चरित्ताण उड्ढं पक्कमई दिसं ॥ ८२ ॥

जहा मिगे एग अणेगचारी
अणेगवासे धुवगोयरे य ।
एवं मुणी गोयरियं पविट्ठे
नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा ॥ ८३ ॥

मिगचारियं चरिस्सामि एवं पुत्ता जहासुहं ।
अम्मापिऊहिंऽणुन्नाओ जहाइ उवहिं तओ ॥ ८४ ॥

मियचारियं चरिस्सामि सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
तुब्भेहिं अम्म !ऽणुन्नाओ गच्छ पुत्त ! जहासुहं ॥ ८५ ॥

एवं सो अम्मापियरो अणुमाणित्ताण बहुविहं ।
ममत्तं छिन्दई ताहे महानागो व्व कंचुयं ॥ ८६ ॥

इड्ढि वित्तं च मित्ते य पुत्तदारं च नायओ ।
रेणुयं वं पडे लग्गं निद्धुणित्ताण निग्गओ ॥ ८७ ॥

पंचमहव्वयजुत्तोपंचसमिओ तिगुत्तिगुत्तो य ।
सब्भिन्तरबाहिरओ तवोकम्मंसि उज्जुओ ॥ ८८ ॥

निम्ममो निरहंकारो निस्संगो चत्तगारवो ।
समो य सव्वभूएसु तसेसु थावरेसु य ॥ ८९ ॥

लाभालाभे सुहे दुक्खे जीविए मरणे तहा ।
समो निन्दापसंसासु तहा माणावमाणओ ॥ ९० ॥

गारवेसु कसाएसु दण्डसल्लभएसु य ।
नियत्तो हाससोगाओ अनियाणो अबन्धणो ॥ ९१ ॥

अणिस्सिओ इहं लोए परलोए अणिस्सिओ ।
वासीचन्दणकप्पो य असणे अणसणे तहा ॥ ९२ ॥

अप्पसत्थेहिं दारेहिं सव्वओ पिहियासवे ।
अज्झप्पज्झाणजोगेहिं पसत्थदमसासणे ॥ ९३ ॥

एवं नाणेण चरणेण दंसणेण तवेण य ।
भावणाहि य सुद्धाहिं सम्मं भावेत्तु अप्पयं ॥ ९४ ॥

वहुयाणि उ वासाणि सामण्णमणुपालिया ।
मासिएण उ भत्तेण सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं ॥ ९५ ॥

एवं करन्ति संवुद्धा पण्डिया पवियक्खणा ।
विणियट्टन्ति भोगेसु मियापुत्ते जहारिसी ॥ ९६ ॥

महापभावस्स महाजसस्स
मियाइ पुत्तस्स निसम्म भासियं ।
तवप्पहाणं चरियं च उत्तमं
गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुयं ॥ ९७ ॥

वियाणिया दुक्खविवद्धणं धणं
ममत्तवंधं च महब्भयावहं ।
सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं
धारेह निव्वाणगुणावहं महं ॥ ९८ ॥
—त्ति बेमि ॥

विसइमं अज्झयणं

महानियण्ठिज्जं

सिद्धाणं नमो किच्चा संजयाणं च भावओ।
अत्थधम्मगइं तच्चं अणुसट्ठिं सुणेह मे ॥ १ ॥

पभूयरयणो राया सेणिओ मगहाहिवो।
विहारजत्तं निज्जाओ मण्डिकुच्छिसि चेइए ॥ २ ॥

नाणादुमलयाइण्णं नाणापक्खिनिसेवियं ।
नाणाकुसुमसंछन्नं उज्जाणं नन्दणोवमं ॥ ३ ॥

तत्थ सो पासई साहुं, संजयं सुसमाहियं ।
निसन्नं रुक्खमूलम्मि सुकुमालं सुहोइयं ॥ ४ ॥

तस्स रूवं तु पासित्ता, राइणो तम्मि संजए।
अच्चन्तपरमो आसी अउलो रूवविम्हओ ॥ ५ ॥

अहो ! वण्णो अहो ! रूवं अहो ! अज्जस्स सोमया।
अहो ! खन्ती अहो ! मुत्ती अहो ! भोगे असंगया ॥ ६ ॥

तस्स पाए उ वन्दित्ता काऊण य पयाहिणं।
नाइदूरमणासन्ने पंजली पडिपुच्छई ॥ ७ ॥

तरुणो सि अज्जो! पव्वइओ, भोगकालम्मि संजया!।
उवट्ठिओ सि सामण्णे एयमट्ठं सुणेमि ता ॥ ८ ॥

अणाहो मि महाराय! नाहो मज्झ न विज्जई।
अणुकम्पगं सुहिं वावि, कंचि नाभिसमेमऽहं ॥ ९ ॥

तओ सो पहसिओ राया सेणिओ मगहाहिवो ।
एवं ते इड्ढिमन्तस्स कहं नाहो न विज्जई ? ॥ १० ॥

होमि नाहो भयन्ताणं ! भोगे भुंजाहि संजया ! ।
मित्तनाईपरिवुडो माणुस्सं खु सुदुल्लहं ॥ ११ ॥

अप्पणा वि अणाहो सि, सेणिया ! मगहाहिवा !।
अप्पणा अणाहो सन्तो कहं नाहो भविस्ससि ?॥ १२ ॥

एवं वुत्तो नरिन्दो सो, सुसंभन्तो सुविम्हिओ ।
वयणं अस्सुयपुव्वं साहुणा विम्हयन्निओ ॥ १३ ॥

अस्सा हत्थी मणुस्सा मे, पुरं अन्तेउरं च मे ।
भुंजामि माणुसे भोगे आणाइस्सरियं च मे ॥ १४ ॥

एरिसे सम्पयग्गम्मि सव्वकामसमप्पिए ।
कहं अणाहो भवइ ? मा हु भन्ते ! मुसंवए ॥ १५ ॥

न तुमं जाणे अणाहस्स, अत्थं पोत्थं व पत्थिवा!।
जहा अणाहो भवई, सणाहो वा नराहिवा ? ॥ १६ ॥

सुणेह मे महाराय ! अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
जहा अणाहो भवई जहा मे य पवत्तियं ॥ १७ ॥

कोसम्बी नाम नयरी पुराणपुरभेयणी ।
तत्थ आसी पिया मज्झ, पभूयधणसंचओ ॥ १८ ॥

पढमे वए महाराय ! अउला मे अच्छिवेयणा ।
अहोत्था विउलो दाहो, सव्वंगेसु य पत्थिवा !॥ १९ ॥

सत्थं जहा परमतिक्खं सरीरविवरन्तरे ।
पवेसेज्ज अरी कुद्धो, एवं मे अच्छिवेयणा ॥ २० ॥

तियं मे अन्तरिच्छं च उत्तमंगं च पीडई ।
इन्दासणिसमा घोरा वेयणा परमदारुणा ।। २१ ।।

उवट्ठिया मे आयरिया, विज्जामन्ततिगिच्छगा ।
अवीया सत्थकुसला मन्तमूलविसारया ।। २२ ।।

ते मे तिगिच्छं कुव्वन्ति, चाउप्पायं जहाहियं ।
न य दुक्खा विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया ।। २३ ।।

पिया मे सव्वसारं पि, दिज्जाहि मम कारणा ।
न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ।। २४ ।।

माया य मे महाराय ! पुत्तसोगदुहट्टिया ।
न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ।। २५ ।।

भायरो मे महाराय ! सगा जेट्ठकणिट्ठगा ।
न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्झ अणाहया ।। २६ ।।

भइणीओ मे महाराय ! सगा जेट्ठकणिट्ठगा ।
न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्झ अणाहया ।। २७ ।।

भारिया मे महाराय ! अणुरत्ता अणुव्वया ।
अंसुपुण्णेहिं नयणेहिं उरं मे परिसिंचई ।। २८ ।।

अन्नं पाणं च ण्हाणं च गन्धमल्लविलेवणं ।
मए नायमणायं वा, सा वाला नोवभुंजई ।। २९ ।।

खणं पि मे महाराय ! पासाओ वि न फिट्टई ।
नय दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ।। ३० ।।

तओ हं एवमाहंसु दुक्खमा हु पुणो पुणो ।
वेयणा अणुभविउं जे, संसारम्मि अणन्तए ।। ३१ ।।

सइं च जई मुच्चेज्जा वेयणा विउला इओ ।
खन्तो दन्तो निरारम्भो पव्वए अणगारियं ॥ ३२ ॥

एवं च चिन्तइत्ताणं, पसुत्तो मि नराहिवा ! ।
परियट्टन्तीए राईए वेयणा मे खयं गया ॥ ३३ ॥

तओ कल्ले पभायम्मि आपुच्छित्ताण वन्धवे ।
खन्तो दन्तो निरारम्भो पव्वइओऽणगारियं ॥ ३४ ॥

ततो हं नाहो जाओ अप्पणो य परस्स य ।
सव्वेसिं चेव भूयाणं तसाण थावराण य ॥ ३५ ॥

अप्पा नई वेयरणी अप्पा मे कूडसामली ।
अप्पा कामदुहा धेणू अप्पा मे नन्दणं वणं ॥ ३६ ॥

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य ।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठियसुपट्ठिओ ॥ ३७ ॥

इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा !
तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि ।
नियण्ठधम्मं लहियाण वी जहा
सीयन्ति एगे वहुकायरा नरा ॥ ३८ ॥

जो पव्वइत्ताण महव्वयाइं
सम्मं नो फासयई पमाया ।
अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे
न मूलओ छिन्दइ वन्धणं से ॥ ३९ ॥

आउत्तया जस्स न अत्थि काइ
इरियाए भासाए तहेसणाए ।
आयाणनिक्खेवदुगुंछणाए
न वीरजायं अणुजाइ मग्गं ॥ ४० ॥

उद्देसियं कीयगडं नियागं
न मुंचई किंचि अणेसणिज्जं ।
अग्गी विवा सव्वभक्खी भवित्ता
इओ चुओ गच्छई कट्टु पावं ॥ ४७ ॥

न तं अरी कण्ठछेत्ता करेइ
जं से करे अप्पणिया दुरप्पा ।
से नाहिई मच्चुमुहं तु पत्ते
पच्छाणुतावेण दयाविहूणो ॥ ४८ ॥

निरट्ठिया नग्गरुई उ तस्स
जे उत्तमट्ठं विवज्जासमेई ।
इमे वि से नत्थि परे वि लोए
दुहओ वि से झिज्जइ तत्थ लोए ॥ ४९ ॥

एमेवऽहाछन्दकुसीलरूवे
मग्गं विराहेत्तु जिणुत्तमाणं ।
कुररं विवा भोगरसाणुगिद्धा
निरट्ठसोया परियावमेइ ॥ ५० ॥

सोच्चाण मेहावि सुभासियं इमं
अणुसासणं नाणगुणोववेयं ।
मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं
महानियण्ठाण वए पहेणं ॥ ५१ ॥

चरित्तमायारगुणन्निए तओ
अणुत्तरं संजम पालियाणं ।
निरासवे संखवियाण कम्मं
उवेइ ठाणं विउलुत्तमं धुवं ॥ ५२ ॥

एवुग्गदन्ते वि महातवोधणे
महामुणी महापइन्ने महायसे ।
महानियण्ठिज्जमिणं महासुयं
से काहए महया वित्थरेणं ॥ ५३ ॥

तुट्ठो य सेणिओ राया इणमुदाहु कयंजली ।
अणाहत्तं जहाभूयं सुट्ठु मे उवदंसियं ॥ ५४ ॥

तुज्झं सुलद्धं खु मणुस्सजम्मं
लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी ! ।
तुब्भे सणाहा य सबन्धवा य
जं भे ठिया मग्गे जिणुत्तमाणं ॥ ५५ ॥

तं सि नाहो अणाहाणं, सव्वभूयाण संजया ! ।
खामेमि ते महाभाग ! इच्छामि अणुसासिउं ॥ ५६ ॥

पुच्छिऊण मए तुब्भं, झाणविग्घो उ जो कओ ।
निमन्तिओ य भोगेहिं, तं सव्वं मरिसेहि मे ॥ ५७ ॥

एवं थुणित्ताण स रायसीहो
अणगारसीहं परमाइ भत्तिए ।
सओरोहो य सपरियणो य
धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा ॥ ५८ ॥

ऊससियरोमकूवो काऊण य पयाहिणं ।
अभिवन्दिऊण सिरसा, अइयाओ नराहिवो ॥ ५९ ॥

इयरो वि गुणसमिद्धो
तिगुत्तिगुत्तो तिदण्डविरओ य ।
विहग इव विप्पमुक्को
विहरइ वसुहं विगयमोहो ॥ ६० ॥

—त्ति बेमि ॥

एगविंसइमं अज्झयणं

समुद्दपालीयं

चम्पाए पालिए नाम, सावए आसि वाणिए ।
महावीरस्स भगवओ, सीसे सो उ महप्पणो ॥ १ ॥

निग्गन्थे पावयणे, सावए से विकोविए ।
पोएण ववहरन्ते पिहुण्डं नगरमागए ॥ २ ॥

पिहुण्डे ववहरन्तस्स वाणिओ देइ धूयरं ।
तं ससत्तं पइगिज्झ सदेसमह पत्थिओ ॥ ३ ॥

अह पालियस्स घरणी समुद्दंमि पसवई ।
अह दारए तहिं जाए, समुद्दपालि त्ति नामए ॥ ४ ॥

खेमेण आगए चम्पं, सावए वाणिए घरं ।
संवड्ढई घरे तस्स दारए से सुहोइए ॥ ५ ॥

बावत्तरिं कलाओ य सिक्खए नीइकोविए ।
जोव्वणेण य संपन्ने सुरूवे पियदंसणे ॥ ६ ॥

तस्स रूववइं भज्जं पिया आणेइ रूविणिं ।
पासाए कीलए रम्मे देवो दोगुन्दओ जहा ॥ ७ ॥

अह अन्नया कयाई, पासायालोयणे ठिओ ।
वज्झमण्डणसोभागं वज्झं पासइ वज्झगं ॥ ८ ॥

तं पासिऊण संविग्गो, समुद्दपालो इणमब्बवी ।
अहोऽसुभाण कम्माणं निज्जाणं पावगं इमं ॥ ९ ॥

संवुद्धो सो तहिं भगवं, परं संवेगमागओ।
आपुच्छऽम्मापियरो पव्वए अणगारियं ॥ १० ॥

जहित्तु संगं च महाकिलेसं
महन्तमोहं कसिणं भयावहं।
परियायधम्मं चऽभिरोयएज्जा
वयाणि सीलाणि परीसहेय ॥ ११ ॥

अहिंस सच्चं च अतेणगं च
तत्तो य वम्भं अपरिग्गहं च।
पडिवज्जिया पंच महव्वयाणि
चरिज्ज धम्मं जिणदेसियं विऊ ॥ १२ ॥

सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकम्पी
खन्तिक्खमे संजयवम्भयारी।
सावज्जजोगं परिवज्जयन्तो
चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिइन्दिए ॥ १३ ॥

कालेण कालं विहरेज्ज रट्ठे
वलावलं जाणिय अप्पणो य।
सीहो व सद्देण न संतसेज्जा
वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु ॥ १४ ॥

उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा
पियमप्पियं सव्व तितिक्खएज्जा।
न सव्व सव्वत्थऽभिरोयएज्जा
न यावि पूयं गरहं च संजए ॥ १५ ॥

अणेगछन्दाइह माणवेहिं
जे भावओ संपगरेइ भिक्खू।
भयभेरवा तत्थ उइन्ति भीमा
दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥ १६ ॥

परीसहा दुव्विसहा अणेगे
सीयन्ति जत्था वहुकायरा नरा ।
से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू
संगामसीसे इव नागराया ॥ १७ ॥

सीओसिणा दंसमसा य फासा
आयंका विविहा फुसन्ति देहं ।
अकुक्कुओ तत्थऽहियासएज्जा
रयाइं खेवेज्ज पुरेकडाइं ॥ १८ ॥

पहाय रागं च तहेव दोसं
मोहं च भिक्खू सययं वियक्खणो ।
मेरु व्व वाएण अकम्पमाणो
परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥ १९ ॥

अणुन्नए नावणए महेसी
न यावि पूयं गरहं च संजए ।
स उज्जुभावं पडिवज्ज संजए
निव्वाणमग्गं विरए उवेइ ॥ २० ॥

अरइरइसहे पहीणसंथवे
विरए आयहिए पहाणवं ।
परमट्ठपएहिं चिट्ठई
छिन्नसोए अममे अकिंचणे ॥ २१ ॥

विवित्तलयणाई भएज्ज ताई
निरोवलेवाइ असंथडाइं ।
इसीहि चिण्णाइ महायसेहिं
काएण फासेज्ज परीसहाइं ॥ २२ ॥

सन्नाणनाणोवगए महेसी
अणुत्तरं चरिउं धम्मसंचयं ।
अणुत्तरेनाणधरे जसंसी
ओभासई सूरिए वन्तलिक्खे ॥ २३ ॥

दुविहं खवेऊण य पुण्णपावं
निरंगणे सव्वओ विप्पमुक्के ।
तरित्ता समुद्दं व महाभवोघं
समुद्दपाले अपुणागमं गए ॥ २४ ॥
—त्ति बेमि ॥

बाइसमं अज्झयणं

रहनेमिज्जं

सोरियपुरंमि नयरे, आसि राया महिड्ढिए।
वसुदेवे त्ति नामेणं रायलक्खणसंजुए ॥ १ ॥

तस्स भज्जा दुवे आसी, रोहिणी देवई तहा।
तासिं दोण्हं पि दो पुत्ता इट्ठा रामकेसवा ॥ २ ॥

सोरियपुरंमि नयरे, आसी राया महिड्ढिए।
समुद्दविजए नामं रायलक्खणसंजुए ॥ ३ ॥

तस्स भज्जा सिवा नाम, तीसे पुत्तो महायसो।
भगवं अरिट्ठनेमि त्ति, लोगनाहे दमीसरे ॥ ४ ॥

सोऽरिट्ठनेमिनामो उ लक्खणस्सरसंजुओ।
अट्ठसहस्सलक्खणधरो गोयमो कालगच्छवी ॥ ५ ॥

वज्जरिसहसंघयणो समचउरंसो झसोयरो।
तस्स राईमई कन्नं भज्जं जायइ केसवो ॥ ६ ॥

अह सा रायवरकन्ना सुसीला चारुपेहिणी।
सव्वलक्खणसंपुन्ना विज्जुसोयामणिप्पभा ॥ ७ ॥

अहाह जणओ तीसे वासुदेवं महिड्ढियं।
इहागच्छऊ कुमारो, जा से कन्नं दलामहं ॥ ८ ॥

सव्वोसहीहि ण्हविओ कयकोउयमंगलो।
दिव्वजुयलपरिहिओ आभरणेहिं विभूसिओ ॥ ९ ॥

मत्तं च गन्धहत्थिं वासुदेवस्स जेट्ठगं ।
आरूढो सोहए अहियं, सिरे चूडामणी जहा ॥ १० ॥

अह ऊसिएण छत्तेण चामराहि य सोहिए ।
दसारचक्केण य सो, सव्वओ परिवारिओ ॥ ११ ॥

चउरंगिणीए सेनाए रइयाए जहक्कमं ।
तुरियाण सन्निनाएण दिव्वेण गगणं फुसे ॥ १२ ॥

एयारिसीए इड्ढीए जुईए उत्तिमाए य ।
नियगाओ भवणाओ निज्जाओ वण्हिपुंगवो ॥ १३ ॥

अह सो तत्थ निज्जन्तो, दिस्स पाणे भयद्दुए ।
वाडेहिं पंजरेहिं च सन्निरुद्धे सुदुक्खिए ॥ १४ ॥

जीवियन्तं तु संपत्ते मंसट्ठा भक्खियव्वए ।
पासेत्ता से महापन्ने सारहिं इणमब्बवी ॥ १५ ॥

कस्स अट्ठा इमे पाणा एए सव्वे सुहेसिणो ।
वाडेहिं पंजरेहिं च सन्निरुद्धा य अच्छहिं ? ॥ १६ ॥

अह सारही तओ भणइ एए भद्दा उ पाणिणो ।
तुज्झं विवाहकज्जंमि भोयावेउं वहुं जणं ॥ १७ ॥

सोऊण तस्स वयणं वहुपाणिविणासणं ।
चिन्तेइ से महापन्ने साणुक्कोसे जिएहि उ ॥ १८ ॥

जइ मज्झ कारणा एए हम्मिहिंति वहू जिया ।
न मे एयं तु निस्सेसं परलोगे भविस्सई ॥ १९ ॥

सो कुण्डलाण जुयलं, सुत्तगं च महायसो ।
आभरणाणि य सव्वाणि सारहिस्स पणामए ॥ २० ॥

मणपरिणामे य कए, देवा य जहोइयं समोइण्णा।
सव्वड्ढीए सपरिसा, निक्खमणं तस्स काउं जे॥ २१॥

देवमणुस्सपरिवुडो, सीयारयण तओ समारूढो।
निक्खमिय वारगाओ, रेवययंमि ट्ठिओ भगवं॥ २२॥

उज्जाणं संपत्तो, ओइण्णो उत्तिमाओ सीयाओ।
साहस्सीए परिवुडो, अह निक्खमई उ चित्ताहिं॥ २३॥

अह से सुगन्धगन्धिए तुरियं मउयकुंचिए।
सयमेव लुंचई केसे पंचमुट्ठीहिं समाहिओ॥ २४॥

वासुदेवो य णं भणइ लुत्तकेसं जिइन्दियं।
इच्छियमणोरहे तुरियं पावेसू तं दमीसरा!॥ २५॥

नाणेणं दंसणेणं च चरित्तेण तहेव य।
खन्तीए मुत्तीए वड्ढमाणो भवाहि य॥ २६॥

एवं ते रामकेसवा दसारा य वहू जणा।
अरिट्ठणेमिं वन्दित्ता अइगया वारगापुरिं॥ २७॥

सोऊण रायकन्ना पव्वज्जं सा जिणस्स उ।
नीहासा य निराणन्दा सोगेण उ समुत्थया॥ २८॥

राईमई विचिन्तेइ धिरत्थु मम जीवियं।
जा हं तेण परिच्चत्ता सेयं पव्वइउं मम॥ २९॥

अह सा भमरसन्निभे कुच्चफणगपसाहिए।
सयमेव लुंचई केसे धिइमन्ता ववस्सिया॥ ३०॥

वासुदेवो य णं भणइ लुत्तकेसं जिइन्दियं।
संसारसागरं घोरं तर कन्ने! लहुं लहुं॥ ३१॥

सा पव्वइया सन्ती पव्वावेसी तहिं बहुं ।
सयणं परियणं चेव सीलवन्ता बहुस्सुया ।। ३२ ।।

गिरिं रेवययं जन्ती वासेणुल्ला उ अन्तरा ।
वासन्ते अन्धयारंमि अन्तो लयणस्स सा ठिया ।। ३३ ।।

चीवराइं विसारन्ती जहा जाय त्ति पासिया ।
रहनेमी भग्गचित्तो पच्छा दिट्ठो य तीइ वि ।। ३४ ।।

भीया य सा तहिं दट्ठुं एगन्ते संजयं तयं ।
बाहाहिं काउं संगोफं वेवमाणी निसीयई ।। ३५ ।।

अह सो वि रायपुत्तो समुद्दविजयंगओ ।
भीयं पवेवियं दट्ठुं इमं वक्कं उदाहरे ।। ३६ ।।

रहनेमी अहं भद्दे ! सुरूवे ! चारुभासिणि ! ।
ममं भयाहि सुयणू ! न ते पीला भविस्सई ।। ३७ ।।

एहि ता भुंजिमो भोए माणुस्सं खु सुदुल्लहं ।
भुत्तभोगा तओ पच्छा जिणमग्गं चरिस्सिमो ।। ३८ ।।

दट्ठूण रहनेमिं तं भग्गुज्जोयपराइयं ।
राईमई असम्भन्ता अप्पाण संवरे तहिं ।। ३९ ।।

अह सा रायवरकन्ना सुट्ठिया नियमव्वए ।
जाई कुलं च सीलं च रक्खमाणी तयं वए ।। ४० ।।

जइ सि रूवेण वेसमणो ललिएण नलकूवरो ।
तहा वि ते न इच्छामि जइ सि सक्खं पुरन्दरो ।। ४१ ।।

पक्खंदे जलियं जोइं धूमकेउं दुरासयं ।
नेच्छन्ति वंतयं भोत्तुं कुले जाया अगंधणे ।।

धिरत्थु ते जसोकामी ! जो तं जीवियकारणा ।
वन्तं इच्छसि आवेउं सेयं ते मरणं भवे ॥ ४२ ॥

अहं च भोयरायस्स, तं च सि अन्धगवण्हिणो ।
मा कुले गन्धणा होमो संजमं निहुओ चर ॥ ४३ ॥

जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारिओ ।
वायाविद्धो व्व हडो अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥ ४४ ॥

गोवालो भण्डवालो वा जहा तद्दव्वऽणिस्सरो ।
एवं अणिस्सरो तं पि सामण्णस्स भविस्ससि ॥ ४५ ॥

कोहं माणं निगिण्हत्ता, मायं लोभं च सव्वसो ।
इन्दियाइं वसे काउं अप्पाणं उवसंहरे ॥ ४६ ॥

तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाए सुभासियं ।
अंकुसेण जहा नागो धम्मे संपडिवाइओ ॥ ४७ ॥

मणगुत्तो वयगुत्तो कायगुत्तो जिइन्दिओ ।
सामण्णं निच्चलं फासे, जावज्जीवं दढव्वओ ॥ ४८ ॥

उग्गं तवं चरित्ताणं, जाया दोण्णि वि केवली ।
सव्वं कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥ ४९ ॥

एवं करेन्ति संबुद्धा, पण्डिया पवियक्खणा ।
विणियट्टन्ति भोगेसु, जहा सो पुरिसोत्तमो ॥ ५० ॥

—त्ति बेमि ॥

●

तेविंसइमं अज्झयणं

केसिगोयमिज्जं

जिणे पासे त्ति नामेण अरहा लोगपूइओ ।
संबुद्धप्पा य सव्वन्नू धम्मतित्थयरे जिणे ॥ १ ॥

तस्स लोगपईवस्स आसि सीसे महायसे ।
केसीकुमारसमणे विज्जाचरणपारगे ॥ २ ॥

ओहिनाणसुए बुद्धे सीससंघसमाउले ।
गामाणुगामं रीयन्ते सावत्थिं नगरिमागए ॥ ३ ॥

तिन्दुयं नाम उज्जाणं तम्मी नगरमण्डले ।
फासुए सिज्जसंथारे तत्थ वासमुवागए ॥ ४ ॥

अह तेणेव कालेणं धम्मतित्थयरे जिणे ।
भगवं वद्धमाणो त्ति सव्वलोगम्मि विस्सुए ॥ ५ ॥

तस्स लोगपईवस्स आसि सीसे महायसे ।
भगवं गोयमे नामं विज्जाचरणपारगे ॥ ६ ॥

बारसंगविऊ बुद्धे सीससंघसमाउले ।
गामाणुगामं रीयन्ते से वि सावत्थिमागए ॥ ७ ॥

कोट्ठगं नाम उज्जाणं तम्मी नयरमण्डले ।
फासुए सिज्जसंथारे तत्थ वासमुवागए ॥ ८ ॥

केसीकुमारसमणे गोयमे य महायसे ।
उभओ वि तत्थ विहरिंसु, अल्लीणा सुसमाहिया ॥ ९ ॥

उभओ सीससंघाणं संजयाणं तवस्सिणं ।
तत्थ चिन्ता समुप्पन्ना गुणवन्ताण ताइणं ॥ १० ॥

केरिसो वा इमो धम्मो ? इमो धम्मो व केरिसो ? ।
आयार धम्मपणिही इमा वा सा व केरिसो ? ॥ ११ ॥

चाउज्जामो य जो धम्मो जो इमो पंचसिक्खिओ ।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महामुणी ॥ १२ ॥

अचेलगो य जो धम्मो जो इमो सन्तरुत्तरो ।
एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं ? ॥ १३ ॥

अह ते तत्थ सीसाणं विन्नाय पवितक्कियं ।
समागमे कयमई उभओ केसिगोयमा ॥ १४ ॥

गोयमे पडिरूवन्नू सीससंघसमाउले ।
जेट्ठं कुलमवेक्खन्तो तिन्दुयं वणमागओ ॥ १५ ॥

केसीकुमारसमणे गोयमं दिस्समागयं ।
पडिरूवं पडिवत्तिं सम्मं संपडिवज्जई ॥ १६ ॥

पलालं फासुयं तत्थ पंचमं कुसतणाणि य ।
गोयमस्स निसेज्जाए खिप्पं संपणामए ॥ १७ ॥

केसीकुमारसमणे गोयमे य महायसे ।
उभओ निसण्णा सोहन्ति चन्दसूरसमप्पभा ॥ १८ ॥

समागया वहू तत्थ पासण्डा कोउगा मिगा ।
गिहत्थाणं अणेगाओ साहस्सोओ समागया ॥ १९ ॥

देवदाणवगन्धव्वा जक्खरक्खसकिन्नरा ।
अदिस्साणं च भूयाणं आसी तत्थ समागमो ॥ २० ॥

पुच्छामि ते महाभाग ! केसी गोयममब्बवी ।
तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥ २१ ॥

पुच्छ भन्ते ! जहिच्छं ते, केसिं गोयममब्बवी ।
तओ केसी अणुन्नाए गोयमं इणमब्बवी ॥ २२ ॥

चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ ।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महामुणी ॥ २३ ॥

एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं ? ।
धम्मे दुविहे मेहावि ! कहं विप्पच्चओ न ते ? ॥ २४ ॥

तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ।
पन्ना समिक्खए धम्मं तत्तं तत्तविणिच्छयं ॥ २५ ॥

पुरिमा उज्जुजडा उ वंकजडा य पच्छिमा ।
मज्झिमा उज्जुपन्ना य, तेण धम्मे दुहा कए ॥ २६ ॥

पुरिमाणं दुव्विसोज्झो उ,
चरिमाणं दुरणुपालओ ।
कप्पो मज्झिमगाणं तु,
सुविसोज्झो सुपालओ ॥ २७ ॥

साहु गोयम ! पन्ना ते,
छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं,
तं मे कहसु गोयमा ! ॥ २८ ॥

अचेलगो य जो धम्मो जो इमो सन्तरुत्तरो ।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महाजसा ॥ २९ ॥

एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं ? ।
लिंगे दुविहे मेहावि ! कहं विप्पच्चओ न ते ? ॥ ३० ॥

केसिमेवं वुवाणं तु गोयमो इणमब्ववी ।
केसिमेव वुवाणं तु गोयमो इणमव्ववी ॥ ३१ ॥

पच्चयत्थं च लोगस्स नाणाविहविगप्पणं ।
जत्तत्थं गहणत्थं च, लोगे लिंगप्पओयणं ॥ ३२ ॥

अह भवे पइन्ना उ मोक्खसब्भूयसाहणे ।
नाणं च दंसण चेव चरित्तं च्रेव निच्छए ॥ ३३ ॥

साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥ ३४ ॥

अणेगाणं सहस्साणं मज्झे चिट्ठसि गोयमा ! ।
ते य ते अहिगच्छन्ति कहं ते निज्जिया तुमे ? ॥ ३५ ॥

एगे जिए जिया पंच पंच जिए जिया दस ।
दसहा उ जिणित्ताणं सव्वसत्तू जिणामहं ॥ ३६ ॥

सत्तू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममव्ववी ।
तओ केसिं वुवंतं तु, गोयमो इणमव्ववी ॥ ३७ ॥

एगप्पा अजिए सत्तू कसाया इन्दियाणि य ।
ते जिणित्तु जहानायं विहरामि अहं मुणी ! ॥ ३८ ॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥ ३९ ॥

दीसन्ति वहवे लोए पासवद्धा सरीरिणो ।
मुक्कपासो लहुब्भूओ, कहं तं विहरसी ? मुणी ! ॥ ४० ॥

ते पासे सव्वसो छित्ता निहन्तूण उवायओ ।
मुक्कपासो लहुब्भूओ विहरामि अहं मुणी ! ॥ ४१ ॥

पासा य इइ के वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥ ४२ ॥

रागद्दोसादओ तिव्वा नेहपासा भयंकरा ।
ते छिन्दित्तु जहानायं विहरामि जहक्कमं ॥ ४३ ॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥ ४४ ॥

अन्तोहियय‌संभूया, लया चिट्ठइ गोयमा ! ।
फलेइ विसभक्खीणि सा उ उद्धरिया कहं ? ॥ ४५ ॥

तं लयं सव्वसो छित्ता उद्धरित्ता समूलियं ।
विहरामि जहानायं मुक्को मि विसभक्खणं ॥ ४६ ॥

लया य इइ का वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥ ४७ ॥

भवतण्हा लया वुत्ता भीमा भीमफलोदया ।
तमुद्धरित्तु जहानायं विहरामि महामुणी ! ॥ ४८ ॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओइ मो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥ ४९ ॥

संपज्जलिया घोरा, अग्गी चिट्ठइ गोयमा ! ।
जे डहन्ति सरीरत्था कहं विज्झाविया तुमे ? ॥ ५० ॥

महामेहप्पसूयाओ गिज्झ वारि जलुत्तमं ।
सिंचामि सययं देहं सित्ता नो व डहन्ति मे ॥ ५१ ॥

अग्गी य इइ के वुत्ता केसी गोयममब्ववी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्ववी ॥ ५२ ॥

कसाया अग्गिणो वुत्ता सुयसीलतवो जलं ।
सुयधाराभिहया सन्ता भिन्ना हु न डहन्ति मे ॥ ५३ ॥

साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥ ५४ ॥

अयं साहसिओ भीमो दुट्ठस्सो परिधावई ।
जंसि गोयम ! आरूढो, कहं तेण न हीरसि ? ॥ ५५ ॥

पधावन्तं निगिण्हामि सुयरस्सीसमाहियं ।
न मे गच्छइ उम्मग्गं मग्गं च पडिवज्जई ॥ ५६ ॥

अस्से य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्ववी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्ववी ॥ ५७ ॥

मणो साहसिओ भीमो दुट्ठस्सो परिधावई ।
तं सम्मं निगिण्हामि धम्मसिक्खाए कन्थगं ॥ ५८ ॥

साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ! ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥ ५९ ॥

कुप्पहा वहवो लोए जेहिं नासन्ति जंतवो ।
अद्धाणे कह वट्टन्ते तं न नस्ससि ? गोयमा ! ॥ ६० ॥

जे य मग्गेण गच्छन्ति जे य उम्मग्गपट्ठिया ।
ते सव्वे विइया मज्झं तो न नस्सामहं मुणी ॥ ६१ ॥

मग्गे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्ववी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्ववी ॥ ६२ ॥

कुप्पवयणपासण्डी सव्वे उम्मग्गपट्ठिया ।
सम्मग्गं तु जिणक्खायं एस मग्गे हि उत्तमे ॥ ६३ ॥

साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥ ६४ ॥

महाउदगवेगेणं वुज्झमाणाण पाणिणं ।
सरणं गई पइट्ठा य दीवं कं मन्नसी ? मुणी ! ॥ ६५ ॥

अत्थि एगो महादीवो वारिमज्झे महालओ ।
महाउदगवेगस्स गई तत्थ न विज्जई ॥ ६६ ॥

दीवे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥ ६७ ॥

जरामरणवेगेणं वुज्झमाणाण पाणिणं ।
धम्मो दीवो पइट्ठा य गई सरणमुत्तमं ॥ ६८ ॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥ ६९ ॥

अण्णवंसि महोहंसि नावा विपरिधावई ।
जंसि गोयममारूढो कहं पारं गमिस्ससि ? ॥ ७० ॥

जा उ अस्साविणी नावा,
न सा पारस्स गामिणी ।
जा निरस्साविणी नावा,
सा उ पारस्स गामिणी ॥ ७१ ॥

नावा य इइ का वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥ ७२ ॥

सरीरमाहु नाव त्ति जीवो वुच्चइ नाविओ ।
संसारो अण्णवो वुत्तो जं तरन्ति महेसिणो ।। ७३ ।।

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ।। ७४ ।।

अन्धयारे तमे घोरे चिट्ठन्ति पाणिणो वहू ।
को करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोगंमि पाणिणं ? ।। ७५ ।।

उग्गओ विमलो भाणू सव्वलोगप्पभंकरो ।
सो करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोगंमि पाणिणं ।। ७६ ।।

भाणू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममव्ववी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमव्ववी ।। ७७ ।।

उग्गओ खीणसंसारो सव्वन्नू जिणभक्खरो ।
सो करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोयंमि पाणिणं ।। ७८ ।।

साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ।। ७९ ।।

सारीरमाणसे दुक्खे वज्झमाणाण पाणिणं ।
खेमं सिवमणावाहं ठाणं किं मन्नसी मुणी ? ।। ८० ।।

अत्थि एवं धुवं ठाणं लोगग्गंमि दुरारुहं ।
जत्थ नत्थि जरा मच्चू वाहिणो वेयणा तहा ।। ८१ ।।

ठाणे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममव्ववी ।
केसिमेवं वुवंतं तु गोयमो इणमव्ववी ।। ८२ ।।

निव्वाणं ति अवाहं ति सिद्धी लोगग्गमेव य ।
खेवं सिवं अणावाहं जं चरन्ति महेसिणो ।। ८३ ।।

तं ठाणं सासयंवासं लोगग्गंमि दुरारुहं ।
जं संपत्ता न सोयन्ति भवोहन्तकरा मुणी ।। ८४ ।।

साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
नमो ते संसयाईय ! सव्वसुत्तमहोयही ! ।। ८५ ।।

एवं तु संसए छिन्ने केसी घोरपरक्कमे ।
अभिवन्दित्ता सिरसा गोयमं तु महायसं ।। ८६ ।।

पंचमहव्वयधम्मं पडिवज्जइ भावओ ।
पुरिमस्स पच्छिमंमी मग्गे तत्थ सुहावहे ।। ८७ ।।

केसीगोयमओ निच्चं तम्मि आसि समागमे ।
सुयसीलसमुक्करिसो महत्थऽत्थविणिच्छओ ।। ८८ ।।

तोसिया परिसा सव्वा सम्मग्गं समुवट्ठिया ।
संथुया ते पसीयन्तु भयवं केसिगोयमे ।। ८९ ।।

—त्ति बेमि ।।

चउविसइमं अज्झयणं

पवयण-माया

अट्ठ पवयणमायाओ समिई गुत्ती तहेव य।
पंचेव य समिईओ तओ गुत्तीओ आहिया ॥ १ ॥

इरियाभासेसणादाणे उच्चारे समिई इय।
मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती य अट्ठमा ॥ २ ॥

एयाओ अट्ठ समिईओ समासेण वियाहिया।
दुवालसंगं जिणक्खायं, मायं, जत्थ उ पवयणं ॥ ३ ॥

आलम्बणेण कालेण मग्गेण जयणाइ य।
चउकारणपरिसुद्धं संजए इरियं रिए ॥ ४ ॥

तत्थ आलंवणं नाणं दंसणं चरणं तहा।
काले य दिवसे वुत्ते मग्गे उप्पहवज्जिए ॥ ५ ॥

दव्वओ खेत्तओ चेव कालओ भावओ तहा।
जयणा चउव्विहा वुत्ता तं मे कित्तयओ सुण ॥ ६ ॥

दव्वओ चक्खुसा पेहे जुगमित्तं च खेत्तओ।
कालओ जाव रीएज्जा उवउत्ते य भावओ ॥ ७ ॥

इन्दियत्थे विवज्जित्ता सज्झायं चेव पंचहा।
तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे उवउत्ते इरियं रिए ॥ ८ ॥

कोहे माणे य मायाए लोभे य उवउत्तया।
हासे भए मोहरिए विगहासु तहेव च ॥ ९ ॥

एयाइं अट्ठ ठाणाइं परिवज्जित्तु संजए ।
असावज्जं मियं काले भासं भासेज्ज पन्नवं ।। १० ।।

गवेसणाए गहणे य परिभोगेसणा य जा ।
आहारोवहिसेज्जाए एए तिन्नि विसोहए ।। ११ ।।

उग्गमुप्पायणं पढमे, वीए सोहेज्ज एसणं ।
परिभोयंमि चउक्कं विसोहेज्ज जयं जई ।। १२ ।।

ओहोवहोवग्गहियं भण्डगं दुविहं मुणी ।
गिण्हन्तो निक्खिवन्तो य, पउंजेज्ज इमं विहिं ।। १३ ।।

चक्खुसा पडिलेहित्ता पमज्जेज्ज जयं जई ।
आइए निक्खिवेज्जा वा दुहओ वि समिए सया । १४ ।।

उच्चारं पासवणं, खेलं सिंघाणजल्लियं ।
आहारं उवहिं देहं, अन्नं वावि तहाविहं ।। १५ ।।

अणावायमसंलोए अणावाए चेव होइ संलोए ।
आवायमसंलोए आवाए चेय संलोए ।। १६ ।।

अणावायमसंलोए परस्सऽणुवघाइए ।
समे अज्झुसिरे यावि अचिरकालकयंमि य ।। १७ ।।

वित्थिण्णे दूरमोगाढे नासन्ने विलवज्जिए ।
तसपाणवीयरहिए उच्चाराईणि वोसिरे ।। १८ ।।

एयाओ पंच समिईओ समासेण वियहिया ।
एत्तो य तओ गुत्तीओ वोच्छामि अणुपुव्वसो ।। १९ ।।

सच्चा तहेव मोसा य सच्चमोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा मणगुत्ती चउव्विहा ।। २० ।।

संरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य।
मणं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई ॥ २१ ॥

सच्चा तहेव मोसा य सच्चामोसा तहेव य।
चउत्थी असच्चमोसा वइगुत्ती चउव्विहा ॥ २२ ॥

संरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य।
वयं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई ॥ २३ ॥

ठाणे निसीयणे चेव तहेव य तुयट्टणे।
उल्लंघणपल्लंघणे इन्दियाण य जुंजणे ॥ २४ ॥

संरम्भसमारम्भे आरम्भम्मि तहेव य।
कायं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई ॥ २५ ॥

एयाओ पंच समिईओ चरणस्स य पवत्तणे।
गुत्ती नियत्तणे वुत्ता असुभत्थेसु सव्वसो ॥ २६ ॥

एया पवयणमाया जे सम्मं आयरे मुणी।
से खिप्पं सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डिए ॥ २७ ॥

—त्ति बेमि।

पंचविसइमं अज्झयणं

जन्नइज्जं

माहणकुलसंभूओ आसि विप्पो महायसो ।
जायाई जमजन्नंमि जयघोसे त्ति नामओ ॥ १ ॥

इन्दियग्गामनिग्गाही मग्गगामी महामुणी ।
गामाणुगामं रीयन्ते पत्ते वाणारसिं पुरिं ॥ २ ॥

वाणारसीए वहिया उज्जाणंमि मणोरमे ।
फासुए सेज्जसंथारे तत्थ वासमुवागए ॥ ३ ॥

अह तेणेव कालेणं पुरीए तत्थ माहणे ।
विजयघोसे त्ति नामेण जन्नं जयइ वेयवी ॥ ४ ॥

अह से तत्थ अणगारे मासक्खमणपारणे ।
विजयघोसस्स जन्नंमि भिक्खमट्ठा उवट्ठिए ॥ ५ ॥

समुवट्ठियं तहिं सन्तं जायगो पडिसेहए ।
न हु दाहामि ते भिक्खं भिक्खू जायाहि अन्नओ ॥ ६ ॥

जे य वेयविऊ विप्पा, जन्नट्ठा य जे दिया ।
जोइसंगविऊ जे य, जे य धम्माण पारगा ॥ ७ ॥

जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ।
तेसिं अन्नमिणं देयं भो भिक्खू सव्वकामियं ॥ ८ ॥

सो एवं तत्थ पडिसिद्धो जायगेण महामुणी ।
न वि रुट्ठो न वि तुट्ठो उत्तमट्ठगवेसओ ॥ ९ ॥

नऽन्नट्ठं पाणहेउं वा न वि निव्वाहणाय वा।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए इमं वयणमव्ववी ॥ १० ॥

नवि जाणसि वेयमुहं नवि जन्नाण जं मुहं।
नक्खत्ताण मुहं जं च जं च धम्माण वा मुहं ॥ ११ ॥

जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य।
न ते तुमं वियाणासि अह जाणासि तो भण ॥ १२ ॥

तस्सऽक्खेवपमोक्खं च अचयन्तो तहिं दियो।
सपरिसो पंजली होउं पुच्छई तं महामुणिं ॥ १३ ॥

वेयाणं च मुहं बूहि बूहि जन्नाण जं मुहं।
नक्खत्ताण मुहं बूहि बूहि धम्माण वा मुहं ॥ १४ ॥

जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य।
एयं मे संसयं सव्वं साहू कहय पुच्छिओ ॥ १५ ॥

अग्गिहोत्तमुहा वेया जन्नट्ठी वेयसां मुहं।
नक्खत्ताण मुहं चन्दो धम्माणं कासवो मुहं ॥ १६ ॥

जहा चन्दं गहाईया चिट्ठन्ती पंजलीउडा।
वन्दमाणा नमंसन्ता उत्तमं मणहारिणो ॥ १७ ॥

अजाणगा जन्नवाई विज्जामाहणसंपया।
गूढा सज्झायतवसा भासच्छन्ना इवऽग्गिणो ॥ १८ ॥

जो लोए वम्भणो वुत्तो अग्गी वा महिओ जहा।
सया कुसलसंदिट्ठं तं वयं बूम माहणं ॥ १९ ॥

जो न सज्जइ आगन्तुं पव्वयन्तो न सोयई।
रमए अज्जवयणंमि तं वयं बूम माहणं ॥ २० ॥

जायरूवं जहामट्ठं निद्धन्तमलपावगं ।
रागद्दोसभयाईयं तं वयं बूम माहणं ॥ २१ ॥

तवस्सियं किसं दन्तं अवचियमंससोणियं ।
सुव्वयं पत्तनिव्वाणं तं वयं बूम माहणं ॥ २२ ॥

तसपाणे वियाणेत्ता संगहेण य थावरे ।
जो न हिंसइ तिविहेणं तं वयं बूम माहणं ॥ २३ ॥

कोहा वा जइ वा हासा लोहा वा जइ वा भया ।
मुसं न वयई जो उ तं वयं बूम माहणं ॥ २४ ॥

चित्तमन्तमचित्तं वा अप्पं वा जइ वा बहुं ।
न गेण्हइ अदत्तं जो तं वय बूम माहणं ॥ २५ ॥

दिव्वमाणुसतेरिच्छं जो न सेवइ मेहुणं ।
मणसा कायवक्केणं तं वयं बूम माहणं ॥ २६ ॥

जहा पोमं जले जायं नोवलिप्पइ वारिणा ।
एवं अलित्तो कामेहिं तं वयं बूम माहणं ॥ २७ ॥

अलोलुयं मुहाजीवी अणगारं अकिंचणं ।
असंसत्तं गिहत्थेसु तं वयं बूम माहणं ॥ २८ ॥

जहित्ता पुव्वसंजोगं नाइसंगे य बन्धवे ।
जो न सज्जइ एएहिं तं वयं बूम माहणं ॥ २९ ॥

पसुबन्धा सव्ववेया जट्ठं च पावकम्मुणा ।
न तं तायन्ति दुस्सीलं कम्माणि बलवन्ति ह ॥ ३० ॥

न वि मुण्डिएण समणो न ओंकारेण बम्भणो ।
न मुणी रण्णवासेणं कुसचीरेण न तावसो ॥ ३१ ॥

समयाए समणो होइ बम्भचेरेण बम्भणो।
नाणेण य मुणी होइ तवेणं होइ तावसो॥ ३२॥

कम्मुणा बम्भणो होइ कम्मुणा होइ खत्तिओ।
वइस्सो कम्मुणा होइ सुद्दो हवइ कम्मुणा॥ ३३॥

एए पाउकरे बुद्धे जेहिं होइ सिणायओ।
सव्वकम्मविनिम्मुक्कं तं वयं बूम माहणं॥ ३४॥

एवं गुणसमाउत्ता जे भवन्ति दिउत्तमा।
ते समत्था उ उद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य॥ ३५॥

एवं तु संसए छिन्ने विजयघोसे य माहणे।
समुदाय तयं तं तु जयघोसं महामुणिं॥ ३६॥

तुट्ठे य विजयघोसे इणमुदाहु कयंजली।
माहणत्तं जहाभूयं सुट्ठु मे उवदंसियं॥ ३७॥

तुब्भे जइया जन्नाणं तुब्भे वेयविऊ विऊ।
जोइसंगविऊ तुब्भे तुब्भे धम्माण पारगा॥ ३८॥

तुब्भे समत्था उद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य।
तमणुग्गहं करेहऽम्हं भिक्खेणं भिक्खुउत्तमा॥ ३९॥

न कज्जं मज्झ भिक्खेण, खिप्पं निक्खमसू दिया।
मा भमिहिसि भयावट्टे घोरे संसारसागरे॥ ४०॥

उवलेवो होइ भोगेसु अभोगी नोवलिप्पई।
भोगी भमइ संसारे अभोगी विप्पमुच्चई॥ ४१॥

उल्लो सुक्को य दो छूढा गोलया मट्टियामया।
दो वि आवडिया कुड्डे जो उल्लो सोतत्थ लग्गई॥ ४२॥

एवं लग्गन्ति दुम्मेहा जे नरा कामलालसा।
विरत्ता उ न लग्गन्ति जहा सुक्को उ गोलओ॥ ४३ ॥

एवं से विजयघोसे जयघोसस्स अन्तिए।
अणगारस्स निक्खन्तो धम्मं सोच्चा अणुत्तरं॥ ४४ ॥

खवित्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य।
जयघोसविजयघोसा सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं॥ ४५ ॥

—त्ति बेमि॥

छव्वीसइमं अज्झयणं

सामायारी

सामायारिं पवक्खामि सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
जं चरित्ताण निग्गन्था तिण्णा संसारसागरं ॥ १ ॥

पढमा आवस्सिया नाम विइया य निसीहिया ।
आपुच्छणा य तइया चउत्थी पडिपुच्छणा ॥ २ ॥

पंचमा छन्दणा नाम इच्छाकारो य छट्ठओ ।
सत्तमो मिच्छकारो य तहक्कारो य अट्ठमो ॥ ३ ॥

अब्भुट्ठाणं नवमं दसमा उवसंपदा ।
एसा दसंगा साहूणं सामायारी पवेइया ॥ ४ ॥

गमणे आवस्सियं कुज्जा ठाणे कुज्जा निसीहियं ।
आपुच्छणा सयंकरणे परकरणे पडिपुच्छणा ॥ ५ ॥

छन्दणा दव्वजाएणं इच्छाकारो य सारणे ।
मिच्छाकारो य निन्दाए तहक्कारो य पडिस्सुए ॥ ६ ॥

अब्भुट्ठाणं गुरुपूया अच्छणे उवसंपदा ।
भवं दुपंचसंजुत्ता सामायारी पवेइया ॥ ७ ॥

पुव्विल्लंमि चउब्भाए आइच्चंमि समुट्ठिए ।
भण्डयं पडिलेहित्ता वन्दित्ता या तओ गुरुं ॥ ८ ॥

पुच्छेज्जा पंजलिउडो किं कायव्वं मए इहं ? ।
इच्छं निओइउं भन्ते ! वेयावच्चे व सज्झाए ॥ ९ ॥

वेयावच्चे निउत्तेणं कायव्वं अगिलायओ ।
सज्झाए वा निउत्तेण सव्वदुक्खविमोक्खणे ॥ १० ॥

दिवसस्स चउरो भागे कुज्जा भिक्खू वियक्खणो ।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा दिणभागेसु चउसु वि ॥ ११ ॥

पढमं पोरिसिं सज्झायं वीयं झाणं झियायई ।
तइयाए भिक्खायरियं पुणो चउत्थीए सज्झायं ॥ १२ ॥

आसाढे मासे दुपया पोसे मासे चउप्पया ।
चित्तासोएसु मासेसु तिपया हवइ पोरिसी ॥ १३ ॥

अंगुलं सत्तरत्तेणं पक्खेण य दुअंगुलं ।
वड्ढए हायए वावी मासेणं चउरंगुलं ॥ १४ ॥

आसाढवहुलपक्खे भद्दवए कत्तिए य पोसे य ।
फग्गुणवइसाहेसु य नायव्वा अमोरत्ताओ ॥ १५ ॥

जेट्ठामूले आसाढसावणे छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा ।
अट्ठहिं वीयतियंमी तइए दस अट्ठहिं चउत्थे ॥ १६ ॥

रत्तिं पि चउरो भागे भिक्खू कुज्जा वियक्खणो ।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा राइभाएसु चउसु वि ॥ १७ ॥

पढमं पोरिसिं सज्झायं बीयं झाणं झियायई ।
तइयाए निद्दमोक्खं तु, चउत्थी भुज्जो वि सज्झायं ॥ १८ ॥

जं नेइ जया रत्तिं नक्खत्तं तंमि नहचउब्भाए ।
संपत्ते विरमेज्जा सज्झायं पओसकालम्मि ॥ १९ ॥

तम्मेव य नक्खत्ते गयणचउब्भागसावसेसंमि ।
वेरत्तियं पि कालं पडिलेहित्ता मुणी कुज्जा ॥ २० ॥

पुव्विल्लंमि चउब्भाए पडिलेहित्ताण भण्डयं।
गुरुं वन्दित्तु सज्झायं कुज्जा दुक्खविमोक्खणं ॥ २१ ॥

पोरिसीए चउब्भाए वन्दित्ताण तओ गुरुं।
अपडिक्कमित्ता कालस्स भायणं पडिलेहए ॥ २२ ॥

मुहपोत्तियं पडिलेहित्ता पडिलेहिज्ज गोच्छगं।
गोच्छगलइयंगुलिओ वत्थाइं पडिलेहए ॥ २३ ॥

उड्ढं थिरं अतुरियं पुव्वं वा वत्थमेव पडिलेहे।
तो विइयं पप्फोडे तइयं च पुणो पमज्जेज्जा ॥ २४ ॥

अणच्चावियं अवलियं अणाणुबन्धि अमोसलिं चेव।
छप्पुरिमा नव खोडा पाणीपाणविसोहणं ॥ २५ ॥

आरभडा सम्मद्दा वज्जेयव्वा य मोसली तइया।
पप्फोडणा चउत्थी विक्खित्ता वेइया छट्ठी ॥ २६ ॥

पसिढिलपलम्बलोला एगामोसा अणेगरूवधुणा।
कुणइ पमाणि पमायं संकिए गणणोवगं कुज्जा ॥ २७ ॥

अणूणाइरित्तपडिलेहा अविवच्चासा तहेव य।
पढमं पयं पसत्थं सेसाणि उ अप्पसत्थाइं ॥ २८ ॥

पडिलेहणं कुणन्तो मिहोकहं कुणइ जणवयकहं वा।
देइ व पच्चक्खाणं वाएइ सयं पडिच्छइ वा ॥ २९ ॥

पुढवीआउक्काए तेऊवाऊवणस्सइतसाणं।
पडिलेहणापमत्तो छण्हं पि विराहओ होइ ॥ ३० ॥

पुढवीआउक्काए तेऊवाऊवणस्सइतसाणं।
पडिलेहणआउत्तो छण्हं आराहओ होइ ॥ ३१ ॥

तइयाए पोरिसीए भत्तं पाणं गवेसए ।
छण्हं अन्नयरागम्मि कारणंमि समुट्ठिए ॥ ३२ ॥

वेयणवेयावच्चे इरियट्ठाए य संजमट्ठाए ।
तह पाणवत्तियाए छट्ठं पुण धम्मचिन्ताए ॥ ३३ ॥

निग्गन्थो धिइमन्तो निग्गन्थी वि न करेज्ज छहिं चेव ।
ठाणेहिं उ इमेहिं अणइक्कमणा य से होइ ॥ ३४ ॥

आयंके उवसग्गे तितिक्खया बम्भचेरगुत्तीसु ।
पाणिदया तवहेउं सरीरवोच्छेयणट्ठाए ॥ ३५ ॥

अवसेसं भण्डगं गिज्झा चक्खुसा पडिलेहए ।
परमद्धजोयणाओ विहारं विहरए मुणी ॥ ३६ ॥

चउत्थीए पोरिसीए निक्खिवित्ताण भायणं ।
सज्झायं तओ कुज्जा सव्वभावविभावणं ॥ ३७ ॥

पोरिसीए चउब्भाए वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
पडिक्कमित्ता कालस्स सेज्जं तु पडिलेहए ॥ ३८ ॥

पासवणुच्चारभूमिं च पडिलेहिज्ज जयं जई ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ३९ ॥

देसियं च अईयारं चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो ।
नाणे दंसणे चेव चरित्तम्मि तहेव य ॥ ४० ॥

पारियकाउस्सग्गो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
देसियं तु अईयारं आलोएज्ज जहक्कमं ॥ ४१ ॥

पडिक्कमित्तु निस्सल्लो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ४२ ॥

पारियकाउस्सग्गो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
थुइमंगलं च काऊण कालं संपडिलेहए ॥ ४३ ॥

पढमं पोरिसिं सज्झायं वीयं झाणं झियायई ।
तइयाए निद्दमोक्खं तु सज्झायं तु चउत्थिए ॥ ४४ ॥

पोरिसीए चउत्थीए कालं तु पडिलेहिया ।
सज्झायं तओ कुज्जा अवोहेन्तो असंजए ॥ ४५ ॥

पोरिसीए चउब्भाए वन्दिऊण तओ गुरुं ।
पडिक्कमित्तु कालस्स कालं तु पडिलेहए ॥ ४६ ॥

आगए कायवोस्सग्गे सव्वदुक्खविमोक्खणे ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ४७ ॥

राइयं च अईयारं चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो ।
नाणंमि दंसणंमी य चरित्तंमि तवंमि य ॥ ४८ ॥

पारियकाउस्सग्गो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
राइयं तु अईयारं आलोएज्ज जहक्कमं ॥ ४९ ॥

पडिक्कमित्तु निस्सल्लो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ५० ॥

किं तवं पडिवज्जामि एवं तत्थ विचिन्तए ।
काउस्सग्गं तु पारित्ता वन्दई य तओ गुरुं ॥ ५१ ॥

पारियकाउस्सग्गो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
तवं संपडिवज्जेत्ता करेज्ज सिद्धाण संथवं ॥ ५२ ॥

एसा सामायारी समासेण वियाहिया ।
जं चरित्ता वहू जीवा तिण्णा संसारसागरं ॥ ५३ ॥

—त्ति बेमि ॥

सत्तावीसइमं अज्झयणं

खलुंकिज्जं

थेरे गणहरे गग्गे मुणी आसि विसारए।
आइण्णे गणिभावम्मि समाहिं पडिसंधए ॥ १ ॥

वहणे वहमाणस्स कन्तारं अइवत्तई।
जोए वहमाणस्स संसारो अइवत्तई ॥ २ ॥

खलुंके जो उ जोएइ विहम्माणो किलिस्सई।
असमाहिं च वेएइ तोत्तओ य से भज्जई ॥ ३ ॥

एगं डसइ पुच्छंमि एगं विन्धइऽभिक्खणं।
एगो भंजइ समिलं एगो उप्पहपट्ठिओ ॥ ४ ॥

एगो पडइ पासेणं निवेसइ निवज्जई।
उक्कुद्दइ उप्फिडई सढे वालगवी वए ॥ ५ ॥

माई मुद्धेण पडइ कुद्धे गच्छइ पडिप्पहं।
मयलक्खेण चिट्ठई वेगेण य पहावई ॥ ६ ॥

छिन्नाले छिन्दइ सेल्लिं दुद्दन्तो भंजए जुगं।
से वि य सुस्सुयाइत्ता उज्जाहित्ता पलायए ॥ ७ ॥

खलुंका जारिसा जोज्जा दुस्सीसा वि हु तारिसा।
जोइया धम्मजाणम्मि भज्जन्ति धिइदुब्बला ॥ ८ ॥

इड्ढीगारविए एगे एगेऽत्थ रसगारवे।
सायागारविए एगे एगे सुचिरकोहणे ॥ ९ ॥

भिक्खालसिए एगे एगे ओमाणभीरुए थद्धे ।
एगं च अणुसासम्मी हेऊहिं कारणेहि य ॥ १० ॥

सो वि अन्तरभासिल्लो दोसमेव पकुव्वई ।
आयरियाणं तं वयणं पडिकूलेइ अभिक्खणं ॥ ११ ॥

न सा ममं वियाणाइ न वि सा मज्झ दाहिई ।
निग्गया होहिई मन्ने साहू अन्नोऽत्थ वच्चउ ॥ १२ ॥

पेसिया पलिउंचन्ति ते परियन्ति समन्तओ ।
रायवेट्ठिं व मन्नन्ता करेन्ति भिउडिं मुहे ॥ १३ ॥

वाइया संगहिया चेव भत्तपाणे य पोसिया ।
जायपक्खा जहा हंसा पक्कमन्ति दिसोदिसिं ॥ १४ ॥

अह सारही विचिन्तेइ खलुंकेहिं समागओ ।
किं मज्झ दुट्ठसीसेहिं अप्पा मे अवसीयई ॥ १५ ॥

जारिसा मम सीसाउ तारिसा गलिगद्दहा ।
गलिगद्दहे चइत्ताणं दढं परिगिण्हइ तवं ॥ १६ ॥

मिउ मद्दवसंपन्ने गम्भीरे सुसमाहिए ।
विहरइ महिं महप्पा सीलभूएण अप्पणा ॥ १७ ॥

—त्ति बेमि ॥

अट्ठावीसइमं अज्झयणं

मोक्खमग्गगई

मोक्खमग्गगइं तच्चं सुणेह जिणभासियं ।
चउकारणसंजुत्तं नाणदंसणलक्खणं ॥ १ ॥

नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
एस मग्गो त्ति पन्नत्तो जिणेहिं वरदंसिहिं ॥ २ ॥

नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
एयंमग्गमणुप्पत्ता जीवा गच्छन्ति सोग्गइं ॥ ३ ॥

तत्थ पंचविहं नाणं सुयं आभिनिवोहियं ।
ओहीनाणं तु तइयं मणनाणं च केवलं ॥ ४ ॥

एयं पंचविहं नाणं दव्वाण य गुणाण य ।
पज्जवाणं च सव्वेसिं नाणं नाणीहि देसियं ॥ ५ ॥

गुणाणमासओ दव्वं एगदव्वस्सिया गुणा ।
लक्खणं पज्जवाणं तु उभओ अस्सिया भवे ॥ ६ ॥

धम्मो अहम्मो आगासं कालो पुग्गलजन्तवो ।
एस लोगो त्ति पन्नत्तो जिणेहिं वरदंसिहिं ॥ ७ ॥

धम्मो अहम्मो आगासं दव्वं इक्किक्कमाहियं ।
अणन्ताणि य दव्वाणि कालो पुग्गलजन्तवो ॥ ८ ॥

गइलक्खणो उ धम्मो अहम्मो ठाणलक्खणो ।
भायणं सव्वदव्वाणं नहं ओगाहलक्खणं ॥ ९ ॥

वत्तणालक्खणो कालो जीवो उवओगलक्खणो ।
नाणेणं दंसणेणं च सुहेण य दुहेण य ॥ १० ॥

नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
वीरियं उवओगो य एयं जीवस्स लक्खणं ॥ ११ ॥

सद्दन्धयारउज्जोओ पहा छायातवे इ वा ।
वण्णरसगन्धफासा पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥ १२ ॥

एगत्तं च पुहत्तं च संखा संठाणमेव य ।
संजोगा य विभागा य पज्जवाण तु लक्खणं ॥ १३ ॥

जीवाजीवा य बन्धो य, पुण्णं पावासवो तहा ।
संवरो निज्जरा मोक्खो सन्तेए तहिया नव ॥ १४ ॥

तहियाणं तु भावाणं सब्भावे उवएसणं ।
भावेणं सद्दहन्तस्स सम्मत्तं तं वियाहियं ॥ १५ ॥

निसग्गुवएसरुई आणारुई सुत्तबीयरुइमेव ।
अभिगमवित्थाररुई किरियासंखेवधम्मरुई ॥ १६ ॥

भूयत्थेणाहिगया जीवाजीवा य पुण्णपावं च ।
सहसम्मुइयासवसंवरो य रोएइ उ निसग्गो ॥ १७ ॥

जो जिणदिट्ठे भावे चउव्विहे सद्दहाइ सयमेव ।
एमेव नऽन्नह त्ति य निसग्गरुइ त्ति नायव्वो ॥ १८ ॥

एए चेव उ भावे उवइट्ठे जो परेण सद्दहई ।
छउमत्थेण जिणेण व उवएसरुइ त्ति नायव्वो ॥ १९ ॥

रागो दोसो मोहो अन्नाणं जस्स अवगयं होइ ।
आणाए रोयंतो सो खलु आणारुई नाम ॥ २० ॥

जो सुत्तमहिज्जन्तो सुएण ओगाहई उ सम्मत्तं ।
अंगेण वाहिरेण व सो सुत्तरुइ त्ति नायव्वो ॥ २१ ॥

एगेण अणेगाइं पयाइं जो पसरई उ सम्मत्तं ।
उदए व्व तेल्लविन्दु, सो वीयरुइ त्ति नायव्वो ॥ २२ ॥

सो होइ अभिगमरुई सुयनाणं जेण अत्थओ दिट्ठं ।
एक्कारस अंगाइं पइण्णगं दिट्ठिवाओ य ॥ २३ ॥

दव्वाण सव्वभावा सव्वपमाणेहि जस्स उवलद्धा ।
सव्वाहि नयविहीहि य वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ॥ २४ ॥

दंसणनाणचरित्ते तवविणए सच्चसमिइगुत्तीसु ।
जो किरियाभावरुई सो खलु किरियारुई नाम ॥ २५ ॥

अणभिग्गहियकुदिट्ठी संखेवरुइ त्ति होइ नायव्वो ।
अविसारओ पवयणे अणभिग्गहिओ य सेसेसु ॥ २६ ॥

जो अत्थिकायधम्मं सुयधम्मं खलु चरित्तधम्मं च ।
सद्दहइ जिणाभिहियं सो धम्मरुइ त्ति नायव्वो ॥ २७ ॥

परमत्थसंथवो वा सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वा वि ।
वावन्नकुदंसणवज्जणा य सम्मत्तसद्दहणा ॥ २८ ॥

नत्थि चरित्तं सम्मत्तविहूणं दंसणे उ भइयव्वं ।
सम्मत्तचरित्ताइं जुगवं पुव्वं व सम्मत्तं ॥ २९ ॥

नादंसणिस्स नाणं नाणेण विणा न हुन्ति चरणगुणा ।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो नत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं ॥ ३० ॥

निस्संकिय निक्कंखिय निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य ।
उववूह थिरीकरणे वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥ ३१ ॥

सामाइयत्थ पढमं छेओवट्ठावणं भवे बीयं।
परिहारविसुद्धीयं सुहुमं तह संपरायं च ॥ ३२ ॥

अकसायं अहक्खायं छउमत्थस्स जिणस्स वा।
एयं चयरित्तकरं चारित्तं होइ आहियं ॥ ३३ ॥

तवो य दुविहो वुत्तो वाहिरब्भन्तरो तहा।
वाहिरो छव्विहो वुत्तो एवमब्भन्तरो तवो ॥ ३४ ॥

नाणेण जाणई भावे दंसणेण य सद्दहे।
चरित्तेण निगिण्हाइ तवेण परिसुज्झई ॥ ३५ ॥

खवेत्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य।
सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा पक्कमन्ति महेसिणो ॥ ३६ ॥

—त्ति वेमि ॥

एगूणतीसइमं अज्झयणं

सम्मत्तपरक्कमे

सू० १—सुयं मे आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु सम्मत्तपरक्कमे 'नाम अज्झयणे समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइए जं सम्मं सद्दहित्ता पत्तियाइत्ता रोयइत्ता फासइत्ता पालइत्ता तीरइत्ता किट्टइत्ता सोहइत्ता आराहइत्ता आणाए अणुपालइत्ता वहवे जीवा सिज्झन्ति वुज्झन्ति मुच्चन्ति परिनिव्वायन्ति सव्वदुक्खाणमन्तं करेन्ति। तस्स णं अयमट्ठे एवमाहिज्जइ तं जहा—संवेगे १ निव्वेए २ धम्मसद्धा ३ गुरुसाहम्मिसुस्सूसणया ४ आलोयणया ५ निन्दणया ६ गरहणया ७ सामाइए ८ चउव्वीसत्थए ९ वन्दणए १० पडिक्कमणे ११ काउस्सग्गे १२ पच्चक्खाणे १३ थवथुइमंगले १४ कालपडिलेहणया १५ पायच्छित्तकरणे १६ खमावणया १७ सज्झाए १८ वायणया १९ पडिपुच्छणया २० परियट्टणया २१ अणुप्पेहा २२ धम्मकहा २३ सुयस्स आराहणया २४ एगग्गमण-संनिवेसणया २५ संजमे २६ तवे २७ वोदाणे २८ सुहसाए २९ अप्पडिवद्धया ३० विवित्तसयणासणसेवणया ३१ विणियट्टणया ३२ संभोगपच्चक्खाणे ३३ उवहिपच्चक्खाणे ३४ आहार-पच्चक्खाणे ३५ कसायपच्चक्खाणे ३६ जोगपच्चक्खाणे ३७ सरीरपच्चक्खाणे ३८ सहायपच्चक्खाणे ३९ भत्तपच्चक्खाणे ४० सब्भावपच्चक्खाणे ४१ पडिरूवया ४२ वेयावच्चे ४३ सव्वगुणसंपण्णया ४४ वीयरागया ४५ खन्ती ४६ मुत्ती ४७ अज्जवे ४८ मद्दवे ४९ भावसच्चे ५० करणसच्चे ५१ जोगसच्चे

५२ मणगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५ मणसमाधारणया ५६ वयसमाधारणया ५७ कायसमाधारणया ५८ नाणसंपन्नया ५९ दंसणसंपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१ सोइन्दियनिग्गहे ६२ चक्खिन्दियनिग्गहे ६३ घाणिन्दियनिग्गहे ६४ जिब्भिन्दियनिग्गहे ६५ फासिन्दियनिग्गहे ६६ कोहविजए ६७ माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोहविजए ७० पेज्जदोसमिच्छादंसणविजए ७१ सेलेसी ७२ अकम्मया ७३ ॥

सू० २—संवेगेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयइ। अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगं हव्वमागच्छइ। अणन्ताणुवन्धिकोहमाणमायालोभे खवेइ। नवं च कम्मं न वन्धइ। तप्पच्चइयं च णं मिच्छत्तविसोहिं काऊण दंसणाराहए भवइ। दंसणविसोहीए य णं विसुद्धाए अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झइ। सोहीए य णं विसुद्धाए तच्चं पुणो भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥

सू० ३—निव्वेएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

निव्वेएणं दिव्वमाणुसतेरिच्छिएसु कामभोगेसु निव्वेयं हव्वमागच्छइ। सव्वविसएसु विरज्जइ सव्वविसएसु विरज्जमाणे आरम्भपरिच्चायं करेइ। आरम्भपरिच्चायं करेमाणे संसारमग्गं वोच्छिन्दइ सिद्धिमग्गे पडिवन्ने य भवइ ॥

सू० ४—धम्मसद्धाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

धम्मसद्धाए णं सायासोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ। अगारधम्मं च णं चयइ अणगारेए णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं छेयणभेयणसंजोगाईणं वोच्छेयं करेइ अव्वावाहं च सुहं निव्वत्तेइ ॥

सू० ५—गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाए णं विणयपडिवत्तिं जणयइ। विणयपडिवन्ने य णं जीवे अणच्चासायणसीले नेरइयतिरिक्ख-

जोणियमणुस्सदेवदोग्गईओ निरुम्भइ। वण्णसंजलणभत्तिवहुमाणयाए मणुस्सदेवसोग्गईओ निवन्धइ सिद्धिं सोग्गइं च विसोहेइ। पसत्थाइं च णं विणयमूलाइं सव्वकज्जाइं सोहेइ। अन्ने य वहवे जीवे विणइत्ता भवइ ॥

सू० ६—आलोयणाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

आलोयणाए णं मायानियाणमिच्छादंसणसल्लाणं मोक्खमग्गविग्घाणं अणन्तसंसारवद्धणाणं उद्धरणं करेइ। उज्जुभावं च जणयइ। उज्जुभावपडिवन्ने य णं जीवे अमाई इत्थीवेयनपुंसगवेयं च न वन्धइ। पुव्ववद्धं च णं निज्जरेइ ॥

सू० ७—निन्दणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

निन्दणयाए णं पच्छाणुतावं जणयइ। पच्छाणुतावेणं विरज्जमाणे करणगुणसेढिं पडिवज्जइ। करणगुणसेढिं पडिवन्ने य णं अणगारे मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ ॥

सू० ८—गरहणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

गरहणयाए णं अपुरक्कारं जणयइ। अपुरक्कारगए णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो जोगेहिंतो नियत्तेइ पसत्थजोगपडिवन्ने य णं अणगारे अणन्तघाइपज्जवे खवेइ ॥

सू० ९—सामाइएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सामाइएणं सावज्जजोगविरइं जणयइ ॥

सू० १०—चउव्वीसत्थएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

चउव्वीसत्थएणं दंसणविसोहिं जणयइ ॥

सू० ११—वन्दणएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वन्दणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ। उच्चागोयं निवन्धइ। सोहग्गं च णं सप्पडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ दाहिणभावं च णं जणयइ ॥

सू० १२—पडिक्कमणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पडिक्कमणेणं वयछिद्दाइं पिहेइ । पिहियवयछिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे असबलचरित्ते अट्ठसु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणिहिए विहरइ ।

सू० १३—काउस्सग्गेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

काउस्सग्गेणं तीयपडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ । विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वुयहियए ओहरियभारो व्व भारवहे पसत्थज्झाणोवगए सुहंसुहेणं विहरइ ।

सू० १४—पच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पच्चक्खाणेणं आसवदाराइं निरुम्भइ ।

सू० १५—थवथुइमंगलेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

थवथुइमंगलेणं नाणदंसणचरित्तबोहिलाभं जणयइ । नाणदंसणचरित्तबोहिलाभसंपन्ने य णं जीवे अन्तकिरियं कप्पविमाणोववत्तिगं आराहणं आराहेइ ।

सू० १६—कालपडिलेहणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कालपडिलेहणयाए णं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ।

सू० १७—पायच्छित्तकरणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पायच्छित्तकरणेणं पावकम्मविसोहिं जणयइ निरइयारे यावि भवइ । सम्मं च णं पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ आयारं च आयारफलं च आराहेइ ।

सू० १८—खमावणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

खमावणयाए णं पल्हायणभावं जणयइ । पल्हायणभावमुवगए य सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु मित्तीभावमुप्पाएइ । मित्तीभावमुवगए यावि जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ ।

सू० १९—सज्झाएण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सज्झाएण नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ।

सू० २०—वायणाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वायणाए णं निज्जरं जणयइ। सुयस्स य अणासायणाए वट्टए । सुयस्स अणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलम्बइ । तित्थधम्मं अवलम्बमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ।

सू० २१—पडिपुच्छणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पडिपुच्छणयाए णं सुत्तत्थतदुभयाइं विसोहेइ । कंखामोहणिज्जं कम्मं वोच्छिन्दइ।

सू० २२—परियट्टणाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

परियट्टणाए णं वंजणाइं जणयइ वंजणलद्धिं च उप्पाएइ ।

सू० २३—अणुप्पेहाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

अणुप्पेहाए णं आउयवज्जाओ सत्तकम्मप्पगडीओ धणियबन्धणबद्धाओ सिढिलबन्धणबद्धाओ पकरेइ । दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ। तिव्वाणुभावाओ मन्दाणुभावाओ पकरेइ बहुपएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ। आउयं च णं कम्मं सिय बन्धइ सिय नो बन्धइ। असायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो उवचिणाइ अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरन्तं संसारकन्तारं खिप्पामेव वीइवयइ ।

सू० २४—धम्मकहाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

धम्मकहाए णं निज्जरं जणयइ । धम्मकहाए णं पवयणं पभावेइ । पवयणपभावेणं जीवे आगमिसस्स भद्दत्ताए कम्मं निबन्धइ ।

सू० २५—सुयस्स आराहणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सुयस्स आराहणयाए णं अन्नाणं खवेइ न य संकिलिस्सइ ।

सू० २६—एगग्गमणसंनिवेसणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

एगग्गमणसंनिवेसणयाए णं चित्तनिरोहं करेइ ।

सू० २७—संजमेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

संजमेणं अणण्हयत्तं जणयइ ।

सू० २८—तवेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

तवेणं वोदाणं जणयइ ।

सू० २९—वोदाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वोदाणेणं अकिरियं जणयइ । अकिरियाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाएइ सव्व-दुक्खाणमन्तं करेइ ।

सू० ३०—सुहसाएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सुहसाएणं अणुस्सुयत्तं जणयइ । अणुस्सुयाए णं जीवे अणुकम्पए अणुब्भडे विगयसोगे चरित्तमोहणिज्जं कम्मं खवेइ ।

सू० ३१—अप्पडिबद्धयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

अप्पडिबद्धयाए णं निस्संगत्तं जणयइ । निस्संगत्तेणं जीवे एगे एगग्गचित्ते दिया य राओ य असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ ।

सू० ३२—विवित्तसयणासणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

विवित्तसयणासणयाए णं चरित्तगुत्तिं जणयइ । चरित्तगुत्ते य णं जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगन्तरए मोक्ख-भावपडिवन्ने अट्ठविहकम्मगण्ठिं निज्जरेइ ।

सू० ३३—विणियट्टणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

विणियट्टणयाए ण पावकम्माणं अकरणयाए अब्भुट्ठेइ। पुव्वबद्धाण य निज्जरणयाए तं नियत्तेइ तओ पच्छा चाउरन्तं संसारकन्तारं वीइवयइ।

सू० ३४—संभोगपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

संभोगपच्चक्खाणेणं आलम्बणाइं खवेइ। निरालम्बणस्स य आययट्ठिया जोगा भवन्ति। सएणं लाभेणं संतुस्सइ परलाभं नो आसाएइ नो तक्केइ नो पीहेइ नो पत्थेइ नो अभिलसइ। परलाभं अणासायमाणे अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्थेमाणे अणभिलसमाणे दुच्चं सुहसेज्जं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

सू० ३५—उवहिपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

उवहिपच्चक्खाणेणं अपलिमन्थं जणयइ। निरुवहिए णं जीवे निक्कंखे उवहिमन्तरेण य न संकिलिस्सई।

सू० ३६—आहारपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

आहारपच्चक्खाणेणं जीवियासंसप्पओगं वोच्छिन्दइ। जीवियासंसप्पओगं वोच्छिन्दित्ता जीवे आहारमन्तरेणं न संकिलिस्सइ।

सू० ३७—कसायपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कसायपच्चक्खाणेणं वीयरागभावं जणयइ। वीयरागभावपडिवन्ने वि य णं जीवे समसुहदुक्खे भवइ।

सू० ३८—जोगपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

जोगपच्चक्खाणेणं अजोगत्तं जणयइ। अजोगी णं जीवे नवं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं निज्जरेइ।

सू० ३९—सरीरपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सरीरपच्चक्खाणेणं सिद्धाइसयगुणत्तणं निव्वत्तेइ। सिद्धाइसयगुणसंपन्ने य णं जीवे लोगग्गमुवगए परमसुही भवइ।

सू० ४०—सहायपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सहायपच्चक्खाणेणं एगीभावं जणयइ। एगीभावभूए वि य णं जीवे एगग्गं भावेमाणे अप्पसद्दे अप्पझंझे अप्पकलहे अप्पकसाए अप्पतुमंतुमे संजमबहुले संवरबहुले समाहिए यावि भवइ।

सू० ४१—भत्तपच्चक्खाणेणं भन्ते। जीवे किं जणयइ ?

भत्तपच्चक्खाणेणं अणेगाइं भवसयाइं निरुम्भइ।

सू० ४२—सब्भावपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ !

सब्भावपच्चक्खाणेणं अनियट्टिं जणयइ। अनियट्टि-पडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ तं जहा वेयणिज्जं आउयं नामं गोयं। तओ पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ।

सू० ४३—पडिरूवयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पडिरूवयाए णं लाघवियं जणयइ। लहुभूए णं जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थलिंगे विसुद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसमत्ते सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु वीससणिज्जरूवे अप्पडिलेहे जिइन्दिए विउलतवसमिइसमन्नागए यावि भवइ।

सू० ४४—वेयावच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वेयावच्चेणं तित्थयरनामगोत्तं कम्मं निबन्धइ।

सू० ४५—सव्वगुणसंपन्नयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सव्वगुणसंपन्नयाए णं अपुणरावत्तिं जणयइ। अपुणरावत्तिं पत्तए य णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं नो भागी भवइ।

सू० ४६—वीयरागयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वीयरागयाएणं नेहाणुवन्धणाणि तण्हाणुवन्धणाणि य वोच्छिन्दइ मणुन्नेसु सद्दफरिसरसरूवगन्धेसु चेव विरज्जइ।

सू० ४७—खन्तीए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

खन्तीए णं परीसहे जिणइ।

सू० ४८—मुत्तीए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मुत्तीए णं अकिंचणं जणयइ। अकिंचणे य जीवे अत्थलोलाणं अपत्थणिज्जो भवइ॥

सू० ४९—अज्जवयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

अज्जवयाए णं काउज्जुययं भावुज्जुययं भासुज्जुययं अविसंवायणं जणयइ। अविसंवायणसंपन्नयाए णं जीवे धम्मस्स आराहए भवइ।

सू० ५०—मद्दवयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मद्दवयाए णं अणुस्सियत्तं जणयइ। अणुस्सियत्ते णं जीवे मिउमद्दवसंपन्ने अट्ठ मयट्ठाणाइं निट्ठवेइ।

सू० ५१—भावसच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

भावसच्चेणं भावविसोहिं जणयइ। भावविसोहीए वट्टमाणे जीवे अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठेइ। अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठित्ता परलोग-धम्मस्स आराहए हवइ।

सू० ५२—करणसच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

करणसच्चेणं करणसत्तिं जणयइ। करणसच्चे वट्टमाणे जीवे जहावाई तहाकारी यावि भवइ।

सू० ५३—जोगसच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

जोगसच्चेणं जोगं विसोहेइ।

सू० ५४—मणगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मणगुत्तयाए णं जीवे एगग्गं जणयइ । एगग्गचित्ते णं जीवे मणगुत्ते संजमाराहए भवइ ।

सू० ५५—वयगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वयगुत्तयाए णं निव्वियारं जणयइ । निव्वियारेणं जीवे वइगुत्ते अज्झप्पजोग ज्झाणगुत्ते यावि भवइ ।

सू० ५६—कायगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कायगुत्तयाए णं संवरं जणयइ । संवरेणं कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोहं करेइ ।

सू० ५७—मणसमाहारणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मणसमाहारणयाए णं एगग्गं जणयइ । एगग्गं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ । नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ मिच्छत्तं च निज्जरेइ ।

सू० ५८—वयसमाहारणया णं भन्ते ! जीवं किं जणयइ ?

वयसमाहारणयाए णं वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेइ । वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेत्ता सुलहबोहियत्तं निव्वत्तेइ दुल्लहबोहियत्तं निज्जरेइ ।

सू० ५९—कायासमाहारणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कायसमाहारणयाए णं चरित्तपज्जवे विसोहेइ । चरित्त-पज्जवे विसोहेत्ता अहक्खायचरित्तं विसोहेइ । अहक्खायचरित्तं विसोहेत्ता चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ । तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ।

सू० ६०—नाणसंपन्नयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

नाणसंपन्नायाए णं जीवे सव्वभावाहिगमं जणयइ । नाणसंपन्ने णं जीवे चाउरन्ते संसारकन्तारे न विणुस्सइ ।

जहा सूई ससुत्ता, पडिया वि विणस्सइ ।
तहा जीवे ससुत्ते, संसारे न विणस्सइ ॥

नाणविणयतवचरित्तजोगे संपाउणइ ससमयपर-समय संघायणिज्जे भवइ ।

सू० ६१—दंससंपन्नयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

दसणसंपन्नयाए णं भवमिच्छत्तछेयणं करेइ परं न विज्झायइ । अणुत्तरेणं नाणदंसणेणं अप्पाणं सजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ ।

सू० ६२—चरित्तसंपन्नयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

चरित्तसंपन्नयाए णं सेलेसीभावं जणयइ । सेलेसिं पडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ । तओ पच्छा सिज्झइ वुज्झइ परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ।

सू० ६३—सोइन्दियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सोइन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु सद्देसु रागदोस-निग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न वन्धइ पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६४—चक्खिन्दियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

चक्खिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु रूवेसु रागदोस-निग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न वन्धइ पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६५—घाणिन्दियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

घाणिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु गन्धेसु रागदोस-निग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न वन्धइ पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६६—जिब्भिन्दियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

जिब्भिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु रसेसु रागदोस-

निग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न वन्धइ पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६७—फासिन्दियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

फासिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु फासेसु रागदोस-निग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न वन्धइ पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६८—कोहविजएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कोहविजएणं खन्ति जणयइ कोहवेयणिज्जं कम्मं न वन्धइ पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६९—माणविजएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

माणविजएणं मद्दवं जणयइ माणवेयणिज्जं कम्मं न वन्धइ पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ७०—मायाविजएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मायाविजएणं उज्जुभावं जणयइ मायावेयणिज्जं कम्मं न वन्धइ पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ७१—लोभविजएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

लोभविजएणं संतोसीभावं जणयइ लोभवेयणिज्जं कम्मं न वन्धइ पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ७२—पेज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पेज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं नाणदंसणचरित्ता-राहणयाए अब्भुट्ठेइ अट्ठविहस्स कम्मस्स कम्मगण्ठिविमोयणयाए तप्पढमयाए जहाणुपुव्विं अट्ठवीसइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ पंचविहं नाणावरणिज्जं नवविहं दंसणावरणिज्जं

पंचविहं अन्तरायं एए तिन्नि वि कम्मंसे जुगवं खवेइ। तओ पच्छा अणुत्तरं अणंतं कसिणं पडिपुण्णं निरावरणं वितिमिरं विसुद्धं लागालोगप्पभावगं केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेइ। जाव सजोगी भवइ ताव य इरियावहियं कम्मं वन्धइ सुहफरिसं दुसमयठिइयं। तं पढमसमए वद्धं विइयसमए वेइयं तइयसमए निज्जिण्णं तं वद्धं पुट्ठं उदीरियं वेइयं निज्जिण्णं सेयाले य अकम्मं चावि भवइ।

सू० ७३—अहाउयं पालइत्ता अन्तोमुहुत्तद्धावसेसाउए जोग-निरोहं करेमाणे सुहुमकिरियं अप्पडिवाइ सुक्कज्झाणं झायमाणे तप्पढमयाए मणजोगं निरुम्भइ २ त्ता वइजोगं निरुम्भइ २ त्ता आणापाणुनिरोहं करेइ २ त्ता ईसि पंचरहस्सक्खरुच्चारद्धाए य णं अणगारे समुच्छिन्नकिरियं अनियट्टिसुक्कज्झाणं झियाय-माणे वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च एए चत्तारि वि कम्मंसे जुगवं खवेइ।

सू० ७४—तओ ओरालियकम्माइं च सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहित्ता उज्जुसेढिपत्ते अफुसमाणगई उड्ढं एगसमएणं अविग्गहेणं तत्थ गन्ता सागारोवउत्ते सिज्झइ वुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ।

एस खलु सम्मत्तपरक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे समणेणं भगवया महावीरेणं आघविए पन्नविए परूविए दंसिए उवदंसिए।

—त्ति वेमि ॥

तीसइमं अज्झयणं

तवमग्गगई

जहा उ पावगं कम्मं रागदोससमज्जियं ।
खवेइ तवसा भिक्खू तमेगग्गमणो सुण ॥ १ ॥

पाणवहमुसावाया, अदत्तमेहुणपरिग्गहा विरओ ।
राईभोयणविरओ जीवो भवइ अणासवो ॥ २ ॥

पंचसमिओ तिगुत्तो अकसाओ जिइन्दिओ ।
अगारवो य निस्सल्लो जीवो होइ अणासवो ॥ ३ ॥

एएसिं तु विवच्चासे रागद्दोससमज्जियं ।
जहा खवयइ भिक्खू तं मे एगमणो सुण ॥ ४ ॥

जहा महातलायस्स सन्निरुद्धे जलागमे ।
उस्सिचणाए तवणाए कमेणं सोसणा भवे ॥ ५ ॥

एवं तु संजयस्सावि पावकम्मनिरासवे ।
भवकोडीसंचियं कम्मं तवसा निज्जरिज्जइ ॥ ६ ॥

सो तवो दुविहो वुत्तो वाहिरब्भन्तरो तहा ।
वाहिरो छव्विहो वुत्तो एवमब्भन्तरो तवो ॥ ७ ॥

अणसणमूणोयरिया, भिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ ।
कायकिलेसो संलीणया य, वज्झो तवो होइ ॥ ८ ॥

इत्तिरिया मरणकाले दुविहा अणसणा भवे ।
इत्तिरिया सावकंखा, निरवकंखा विइज्जिया ॥ ९ ॥

जो सो इत्तरियतवो, सो समासेण छव्विहो ।
सेढितवो पयरतवो, घणो य तह होइ वग्गो य ॥ १० ॥

तत्तो य वग्गवग्गो उ पंचमो छट्ठओ पइण्णतवो ।
मणइच्छियचित्तत्थो नायव्वो होइ इत्तरिओ ॥ ११ ॥

जा सा अणसणा मरणे, दुविहा सा वियाहिया ।
सवियारअवियारा कायचिट्ठं पई भवे ॥ १२ ॥

अहवा सपरिकम्मा अपरिकम्मा य आहिया ।
नीहारिमणीहारी आहारच्छेओ य दोसु वि ॥ १३ ॥

ओमोयरियं पंचहा समासेण वियाहियं ।
दव्वओ खेत्तकालेणं भावेणं पज्जवेहि य ॥ १४ ॥

जो जस्स उ आहारो तत्तो ओमं तु जो करे ।
जहन्नेणेगसित्थाई एवं दव्वेण ऊ भवे ॥ १५ ॥

गामे नगरे तह रायहाणि-निगमे य आगरे पल्ली ।
खेडे कव्वडदोणमुह- पट्टणमडम्बसंवाहे ॥ १६ ॥

आसमपए विहारे सन्निवेसे समायघोसे य ।
थलिसेणाखन्धारे सत्थे संवट्टकोट्टे य ॥ १७ ॥

वाडेसु व रच्छासु व, घरेसु वा एवमित्तियं खेत्तं ।
कप्पइ उ एवमाई एवं खेत्तेण ऊ भवे ॥ १८ ॥

पेडा य अद्धपेडा गोमुत्तिपयंगवीहिया चेव ।
सम्बुक्कावट्टाऽऽययगन्तुं पच्चागया छट्ठा ॥ १९ ॥

दिवसस्स पोरुसीणं, चउण्हं पि उ जत्तिओ भवे कालो ।
एवं चरमाणो खलु कालोमाणं मुणेयव्वो ॥ २० ॥

अहवा तइयाए पोरिसीए ऊणाइ घासमेसन्तो ।
चउभागूणाए वा एवं कालेण ऊ भवे ॥ २१ ॥

इत्थी वा पुरिसो वा, अलंकिओ वाऽणलंकिओ वा वि ।
अन्नयरवयत्थो वा अन्नयरेणं व वत्थेणं ॥ २२ ॥

अन्नेण विसेसेणं वण्णेणं भावमणुमुयन्ते उ ।
एवं चरमाणो खलु भावोमाणं मुणेयव्वो ॥ २३ ॥

दव्वे खेत्ते काले, भावम्मि य आहिया उ जे भावा ।
एएहि ओमचरओ, पज्जवचरओ भवे भिक्खू ॥ २४ ॥

अट्ठविहगोयरग्गं तु तहा सत्तेव एसणा ।
अभिग्गहा य जे अन्ने भिक्खायरियमाहिया ॥ २५ ॥

खीरदहिसप्पिमाई पणीयं पाणभोयणं ।
परिवज्जणं रसाणं तु भणियं रसविवज्जणं ॥ २६ ॥

ठाणा वीरासणाईया जीवस्स उ सुहावहा ।
उग्गा जहा धरिज्जन्ति कायकिलेसं तमाहियं ॥ २७ ॥

एगन्तमणावाए इत्थीपसुविवज्जिए ।
सयणासणसेवणया विवित्तसयणासणं ॥ २८ ॥

एसो बाहिरगतवो समासेण वियाहिओ ।
अब्भिन्तरं तवं एत्तो वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥ २९ ॥

पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ।
झाणं च विउस्सग्गो एसो अब्भिन्तरो तवो ॥ ३० ॥

आलोयणारिहाईयं पायच्छित्तं तु दसविहं ।
जे भिक्खू वहई सम्मं पायच्छित्तं तमाहियं ॥ ३१ ॥

अब्भुट्ठाणं अंजलिकरणं तहेवासणदायणं।
गुरुभत्तिभावसुस्सूसा विणओ एस वियाहिओ ॥ ३२ ॥

आयरियमाइयम्मि य वेयावच्चम्मि दसविहे।
आसेवणं जहाथामं वेयावच्चं तमाहियं ॥ ३३ ॥

वायणा पुच्छणा चेव तहेव परियट्टणा।
अणुप्पेहा धम्मकहा सज्झाओ पंचहा भवे ॥ ३४ ॥

अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता झाएज्जा सुसमाहिए।
धम्मसुक्काइं झाणाइं झाणं तं तु बुहा वए ॥ ३५ ॥

सयणासणठाणे वा जे उ भिक्खू न वावरे।
कायस्स विउस्सग्गो छट्ठो सो परिकित्तिओ ॥ ३६ ॥

एवं तवं तु दुविहं जे सम्मं आयरे मुणी।
से खिप्पं सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डिए ॥ ३७ ॥

—त्ति बेमि ॥

एगतीसइमं अज्झयणं

चरणविही

चरणविहिं पवक्खामि जीवस्स उ सुहावहं ।
जं चरित्ता वहू जीवा तिण्णा संसारसागरं ।। १ ।।

एगओ विरइं कुज्जा एगओ य पवत्तणं ।
असंजमे नियत्तिं च संजमे य पवत्तणं ।। २ ।।

रागद्दोसे य दो पावे पावकम्मपवत्तणे ।
जे भिक्खू रुम्भई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ।। ३ ।।

दण्डाणं गारवाणं च सल्लाणं च तियं तियं ।
जे भिक्खू चयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ।। ४ ।।

दिव्वे य जे उवसग्गे तहा तेरिच्छमाणुसे ।
जे भिक्खू सहई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ।। ५ ।।

विगहाकसायसन्नाणं झाणाणं च दुयं तहा ।
जे भिक्खू वज्जई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ।। ६ ।।

वएसु इन्दियत्थेसु समिईसु किरियासु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ।। ७ ।।

लेसासु छसु काएसु छक्के आहारकारणे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ।। ८ ।।

पिण्डोग्गहपडिमासु भयट्ठाणेसु सत्तसु ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ।। ९ ।।

मयेसु वम्भगुत्तीसु भिक्खुधम्मंमि दसविहे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ।। १० ।।

उवासगाणं पडिमासु भिक्खूणं पडिमासु य।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥ ११ ॥

किरियासु भूयगामेसु परमाहम्मिएसु य।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥ १२ ॥

गाहासोलसएहिं तहा अस्संजमम्मि य।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥ १३ ॥

बम्भम्मि नायज्झयणेसु ठाणेसु यऽ समाहिए।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥ १४ ॥

एगवीसाए सबलेसु बावीसाए परीसहे।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥ १५ ॥

तेवीसइ सूयगडे रूवाहिएसु सुरेसु अ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥ १६ ॥

पणवीसभावणाहिं उद्देसेसु दसाइणं।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥ १७ ॥

अणगारगुणेहिं च पकप्पम्मि तहेव य।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥ १८ ॥

पावसुयपसंगेसु मोहट्ठाणेसु चेव य।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥ १९ ॥

सिद्धाइगुणजोगेसु तेत्तीसासायणासु य।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥ २० ॥

इइ एएसु ठाणेसु जे भिक्खू जयई सया।
खिप्पं से सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डिओ ॥ २१ ॥

—त्ति बेमि ॥

बत्तीसइमं अज्झयणं

पमायट्ठाणं

अच्चन्तकालस्स समूलगस्स, सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो ।
तं भासओ मे पडिपुण्णचित्ता, सुणेह एगग्गहियं हियत्थं ॥ १ ॥

नाणस्स सव्वस्स पगासणाए, अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए ।
रागस्स दोसस्स य संखएणं, एगन्तसोक्खं समुवेइ मोक्खं ॥ २ ॥

तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा, विवज्जणा वालजणस्स दूरा ।
सज्झायएगन्तनिसेवणा य, सुत्तत्थसंचिन्तणया धिई य ॥ ३ ॥

आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं, सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धिं ।
निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोग्गं, समाहिकामे समणे तवस्सी ॥ ४ ॥

न वा लभेज्जा निउणं सहायं, गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
एक्को वि पावाइ विवज्जयन्तो, विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥ ५ ॥

जहा य अण्डप्पभवा वलागा, अण्डं वलागप्पभवं जहा य ।
एमेव मोहाययणं खु तण्हं, मोहं च तण्हाययणं वयन्ति ॥ ६ ॥

रागो य दोसो वि य कम्मवीयं कम्मं च मोहप्पभवं वयन्ति ।
कम्मं च जाईमरणस्स मूलं दुक्खं च जाईमरणं वयन्ति ॥ ७ ॥

दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो, मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा ।
तण्हा हया जस्स न होइ लोहो, लोहो हओ जस्स न किंचणाइं ॥ ८ ॥

रागं च दोसं च तहेव मोहं, उद्धत्तुकामेण समूलजालं ।
जे जे उवाया पडिवज्जियव्वा, ते कित्तइस्सामि अहाणुपुव्विं ॥ ९ ॥

रसा पगामं न निसेवियव्वा, पायं रसा दित्तिकरा नराणं।
दित्तं च कामा समभिद्दवन्ति, दुमं जहा साउफलं व पक्खी ॥ १० ॥

जहा दवग्गी पउरिन्धणे वणे, समारुओ नोवसमं उवेइ।
एविन्दियग्गी वि पगामभोइणो, न वम्भयारिस्स हियाय कस्सई ॥ ११ ॥

विवित्तसेज्जासणजन्तियाणं, ओमसणाणं दमिइन्दियाणं।
न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं, पराइओ वाहिरिवोसहेहिं ॥ १२ ॥

जहा विरालावसहस्स मूले, न मूसगाणं वसही पसत्था।
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्झे, न वम्भयारिस्स खमो निवासो ॥ १३ ॥

न रूवलावण्णविलासहासं, न जंपियं इंगियपेहियं वा।
इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता, दट्ठुं ववस्से समणे तवस्सी ॥ १४ ॥

अदंसणं चेव अपत्थणं च, अचिन्तणं चेव अकित्तणं च।
इत्थीजणस्सारियझाणजोग्गं, हियं सया वम्भवए रयाणं ॥ १५ ॥

कामं तु देवीहि विभूसियाहिं, न चाइया खोभइउं तिगुत्ता।
तहा वि एगन्तहियं ति नच्चा, विवित्तवासो मुणिणं पसत्थो ॥ १६ ॥

मोक्खाभिकंखिस्स वि माणवस्स, संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मे।
नेयारिसं दुत्तरमत्थि लोए, जहित्थिओ वालमणोहराओ ॥ १७ ॥

एए य संगे समइक्कमित्ता, सुहुत्तरा चेव भवन्ति सेसा।
जहा महासागरमुत्तरित्ता, नई भवे अवि गंगासमाणा ॥ १८ ॥

कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं, सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स।
जं काइयं माणसियं च किंचि, तस्सऽन्तगं गच्छइ वीयरागो ॥ १९ ॥

जहा य किंपागफला मणोरमा, रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा।
ते खुड्डए जीविय पच्चमाणा, एओवमा कामगुणा विवागे ॥ २० ॥

जे इन्दियाणं विसया मणुन्ना, न तेसु भावं निसिरे कयाइ ।
न याऽमणुन्नेसु मणं पि कुज्जा, समाहिकामे समणे तवस्सी ॥ २१ ॥

चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ २२ ॥

रूवस्स चक्खुं गहणं वयन्ति, चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ २३ ॥

रूवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे से जह वा पयंगे, आलोयलोले समुवेइ मच्चुं ॥ २४ ॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू, न किंचि रूवं अवरज्झई से ॥ २५ ॥

एगन्तरत्ते रुइरंसि रूवे अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ २६ ॥

रूवाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ २७ ॥

रूवाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहिं सुहं से ? संभोगकाले य अतित्तिलाभे ॥ २८ ॥

रूवे अतित्ते य परिग्गहे य सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं ॥ २९ ॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्थाऽवि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ३० ॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ३१ ॥

रूवाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ३२ ॥

एमेव रूवम्मि गओ पओसं उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ३३ ॥

रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पए भवमज्झे वि सन्तो जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ३४ ॥

सोयस्स सद्दं गहणं वयन्ति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ३५ ॥

सद्दस्स सोयं गहणं वयन्ति सोयस्स सद्दं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ३६ ॥

सद्देसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे हरिणमिगे व मुद्धे सद्दे अतित्ते समुवेइ मच्चुं ॥ ३७ ॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू न किंचि सद्दं अवरज्झई से ॥ ३८ ॥

एगन्तरत्ते रुइरंसि सद्दे अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ वाले न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ३९ ॥

सद्दाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परियावेइ वाले पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ४० ॥

सद्दाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहिं सुहं से ? संभोगकाले य अतित्तिलाभे ॥ ४१ ॥

सद्दे अतित्ते य परिग्गहे य सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ४२ ॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो सद्दे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ४३ ॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो सद्दे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ४४ ॥

सद्दाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ४५ ॥

एमेव सद्दम्मि गओ पओसं उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ४६ ॥

सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पए भवमज्झे वि सन्तो जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ४७ ॥

घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ४८ ॥

गन्धस्स घाणं गहणं वयन्ति घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ४९ ॥

गन्धेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे ओसहिगन्धगिद्धे सप्पे विलाओ विव निक्खमन्ते ॥ ५० ॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू न किंचि गन्धं अवरज्झई से ॥ ५१ ॥

एगन्तरत्ते रुइरंसि गन्धे अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ वाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ५२ ॥

गन्धाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ वाले पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ५३ ॥

गन्धाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खणसन्निओगे।
वए विओगे य कहिं सुहं से ? संभोगकाले य अतित्तिलाभे ॥ ५४ ॥

गन्धे अतित्ते य परिग्गहे य सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ५५ ॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो गन्धे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ५६ ॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरन्ते।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो गन्धे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ५७ ॥

गन्धाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ?।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ५८ ॥

एमेव गन्धम्मि गओ पओसं उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ५९ ॥

गन्धे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ६० ॥

जिहाए रसं गहणं वयन्ति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ६१ ॥

रसस्स जिब्भं गहणं वयन्ति जिब्भाए रसं गहणं वयन्ति।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ६२ ॥

रसेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं।
रागाउरे बडिसविभिन्नकाए मच्छे जहा आमिसभोगगिद्धे ॥ ६३ ॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू रसं न किंचि अवरज्झई से ॥ ६४ ॥

एगन्तरत्ते रुइरे रसम्मि अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ६५ ॥

रसाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ६६ ॥

रसाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहिं सुहं से ? संभोगकाले य अतित्तिलाभे ॥ ६७ ॥

रसे अतित्ते य परिग्गहे य सत्तावसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ६८ ॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो रसे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ६९ ॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ७० ॥

रसाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्तई जस्स कए ण दुक्खं ? ॥ ७१ ॥

एमेव रसम्मि गओ पओसं उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ७२ ॥

रसे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ७३ ॥

कायस्स फासं गहणं वयन्ति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ७४ ॥

फासस्स कायं गहणं वयन्ति कायस्स फासं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ७५ ॥

फासेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे सीयजलावसन्ने गाहग्गहोए महिसे व ऽरन्ने ॥ ७६ ॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू न किंचि फासं अवरज्झई से ॥ ७७ ॥

एगन्तरत्ते रुइरंसि फासे अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ वाले न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ७८ ॥

फासाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ वाले पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ७९ ॥

फासाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहिं सुहं से ? संभोगकाले य अतित्तिलाभे ॥ ८० ॥

फासे अतित्ते य परिग्गहे य सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ८१ ॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो फासे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ८२ ॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ८३ ॥

फासाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ८४ ॥

एमेव फासम्मि गओ पओसं उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ८५ ॥

फासे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ८६ ॥

मणस्स भावं गहणं वयन्ति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ८७ ॥

भावस्स मणं गहणं वयन्ति मणस्स भावं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ८८ ॥

भावेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे करेणुमग्गावहिए व नागे ॥ ८९ ॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू न किंचि भावं अवरज्झई से ॥ ९० ॥

एगन्तरत्ते रुइरंसि भावे अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ वाले न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ९१ ॥

भावाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ वाले पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ९२ ॥

भावाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहिं सुहं से ? संभोगकाले य अतित्तिलाभे ॥ ९३ ॥

भावे अतित्ते य परिग्गहे य सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ९४ ॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो भावे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढई लोभदोसा तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ९५ ॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ९६ ॥

भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ९७ ॥

एमेव भावम्मि गओ पओसं उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ।। ९८ ।।

भावे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ।। ९९ ।।

एविन्दियत्था य मणस्स अत्था दुक्खस्स हेउं मणुयस्स रागिणो ।
ते चेव थोवं पि कयाइ दुक्खं न वीयरागस्स करेन्ति किंचि ।। १०० ।।

न कामभोगा समयं उवेन्ति न यावि भोगा विगइं उवेन्ति ।
जे तप्पओसी य परिग्गही य सो तेसु मोहा विगइं उवेइ ।। १०१ ।।

कोहं च माणं च तहेव मायं लोहं दुगुंछं अरइं रइं च ।
हासं भयं सोगपुमित्थिवेयं नपुंसवेयं विविहे य भावे ।। १०२ ।।

आवज्जई एवमणेगरूवे एवंविहे कामगुणेसु सत्तो ।
अन्ने य एयप्पभवे विसेसे कारुण्णदीणे हिरिमे वइस्से ।। १०३ ।।

कप्पं न इच्छिज्ज सहायलिच्छू पच्छाणुतावेय तवप्पभावं ।
एवं वियारे अमियप्पयारे आवज्जई इन्दियचोरवस्से ।। १०४ ।।

तओ से जायन्ति पओयणाइं निमज्जिउं मोहमहण्णवम्मि ।
सुहेसिणो दुक्खविणोयणट्ठा तप्पच्चयं उज्जमए य रागी ।। १०५ ।।

विरज्जमाणस्स य इन्दियत्था सद्दाइया तावइयप्पगारा ।
न तस्स सव्वे वि मणुन्नयं वा निव्वत्तयन्ती अमणुन्नयं वा ।। १०६ ।।

एवं ससंकप्पविकप्पणासुं संजायई समयमुवट्ठियस्स ।
अत्थे य संकप्पयओ तओ से पहीयए कामगुणेसु तण्हा ।। १०७ ।।

स वीयरागो कयसव्वकिच्चो खवेइ नाणावरणं खणेणं ।
तहेव जं दंसणमावरेइ जं चऽन्तरायं पकरेइ कम्मं ।। १०८ ।।

सव्वं तओ जाणइ पासए य अमोहणे होइ निरन्तराए ।
अणासवे झाणसमाहिजुत्ते आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥ १०९ ॥

सो तस्स सव्वस्स दुहस्स मुक्को जं बाहई सययं जन्तुमेयं ।
दीहामयविप्पमुक्को पसत्थो तो होइ अच्चन्तसुही कयत्थो ॥ ११० ॥

अणाइकालप्पभवस्स एसो सव्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गो ।
वियाहिओ जं समुविच्च सत्ता कमेण अच्चन्तसुही भवन्ति ॥ १११ ॥

—त्ति बेमि ॥

तेतीसइमं अज्झयणं

कम्मपयडी

अट्ठ कम्माइं वोच्छामि आणुपुव्विं जहक्कमं ।
जेहिं वद्धो अयं जीवो संसारे परिवत्तए ॥ १ ॥

नाणस्सावरणिज्जं दंसणावरणं तहा ।
वेयणिज्जं तहा मोहं आउकम्मं तहेव य ॥ २ ॥

नामकम्मं च गोयं च अन्तरायं तहेव य ।
एवमेयाइ कम्माइं अट्ठेव उ समासओ ॥ ३ ॥

नाणावरणं पंचविहं सुयं आभिणिबोहियं ।
ओहिनाणं तइयं मणनाणं च केवलं ॥ ४ ॥

निद्दा तहेव पयला निद्दानिद्दा य पयलपयला य ।
तत्तो य थीणगिद्धी उ पंचमा होइ नायव्वा ॥ ५ ॥

चक्खुमचक्खुओहिस्स दंसणे केवले य आवरणे ।
एवं तु नवविगप्पं नायव्वं दंसणावरणं ॥ ६ ॥

वेयणीयं पि य दुविहं सायमसायं च आहियं ।
सायस्स उ वहू भेया एमेव असायस्स वि ॥ ७ ॥

मोहणिज्जं पि दुविहं दंसणे चरणे तहा ।
दंसणं तिविहं वुत्तं चरणे दुविहं भवे ॥ ८ ॥

सम्मत्तं चेव मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तमेव य ।
एयाओ तिन्नि पयडीओ मोहणिज्जस्स दंसणे ॥ ९ ॥

चरित्तमोहणं कम्मं दुविहं तु वियाहियं ।
कसायमोहणिज्जं तु नोकसायं तहेव य ॥ १० ॥

सोलसविहभेएणं कम्मं तु कसायजं ।
सत्तविहं नवविहं वा कम्मं नोकसायजं ॥ ११ ॥

नेरइयतिरिक्खाउ मणुस्साउ तहेव य ।
देवाउयं चउत्थं तु आउकम्मं चउव्विहं ॥ १२ ॥

नामं कम्मं तु दुविहं सुहमसुहं च आहियं ।
सुहस्स उ बहू भेया एमेव असुहस्स वि ॥ १३ ॥

गोयं कम्मं दुविहं उच्चं नीयं च आहियं ।
उच्चं अट्ठविहं होइ एवं नीयं पि आहियं ॥ १४ ॥

दाणे लाभे य भोगे य उवभोगे वीरिए तहा ।
पंचविहमन्तरायं समासेण वियाहियं ॥ १५ ॥

एयाओ मूलपयडीओ उत्तराओ य आहिया ।
पएसग्गं खत्तकाले य भावं चादुत्तरं सुण ॥ १६ ॥

सव्वेसिं चेव कम्माणं पएसग्गमणन्तगं ।
गण्ठियसत्ताईयं अन्तो सिद्धाण आहियं ॥ १७ ॥

सव्वजीवाण कम्मं तु संगहे छद्दिसागयं ।
सव्वेसु वि पएसेसु सव्वं सव्वेण वद्धगं ॥ १८ ॥

उदहीसरिनामाणं तीसई कोडिकोडिओ ।
उक्कोसिया ठिई होइ अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १९ ॥

आवरणिज्जाण दुण्हं पि वेयणिज्जे तहेव य ।
अन्तराए य कम्मम्मि ठिई एसा वियाहिया ॥ २० ॥

उदहीसरिनामाणं सत्तरिं कोडिकोडिओ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ २१ ॥

तेत्तीस सागरोवमा उक्कोसेण वियाहिया।
ठिई उ आउकम्मस्स अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ २२ ॥

उदहीसरिनामाणं वीसई कोडिकोडिओ।
नामगोत्ताणं उक्कोसा अट्ठ मुहुत्ता जहन्निया ॥ २३ ॥

सिद्धाणऽणन्तभागो य अणुभागा हवन्ति उ।
सव्वेसु वि पएसग्गं सव्व जीवेसु ऽइच्छियं ॥ २४ ॥

तम्हा एएसि कम्माणं अणुभागे वियाणिया।
एएसिं संवरे चेव खवणे य जए वुहे ॥ २५ ॥

—त्ति बेमि ॥

चउतीसइमं अज्झयणं

लेसज्झयणं

लेसज्झयणं पवक्खामि आणुपुव्विं जहक्कमं ।
छण्हं पि कम्मलेसाणं अणुभावे सुणेह मे ॥ १ ॥

नामाइं वण्णरसगन्ध - फासपरिणामलक्खणं ।
ठाणं ठिइं गइं चाउं लेसाणं तु सुणेह मे ॥ २ ॥

किण्हा नीला य काऊ य तेऊ पम्हा तहेव य ।
सुक्कलेसा य छट्ठा उ नामाइं तु जहक्कमं ॥ ३ ॥

जीमूयनिद्धसंकासा गवलरिट्ठगसन्निभा ।
खंजणंजणनयणनिभा किण्हलेसा उ वण्णओ ॥ ४ ॥

नीलाऽसोगसंकासा चासपिच्छसमप्पभा ।
वेरुलियनिद्धसंकासा नीललेसा उ वण्णओ ॥ ५ ॥

अयसीपुप्फसंकासा कोइलच्छदसन्निभा ।
पारेवयगीवनिभा काउलेसा उ वण्णओ ॥ ६ ॥

हिंगुलुयधाउसंकासा तरुणाइच्चसन्निभा ।
सुयतुण्डपईवनिभा तेउलेसा उ वण्णओ ॥ ७ ॥

हरियालभेयसंकासा हलिद्दाभेयसंनिभा ।
सणासणकुसुमनिभा पम्हलेसा उ वण्णओ ॥ ८ ॥

संखंककुन्दसंकासा खीरपूरसमप्पभा ।
रययहारसंकासा सुक्कलेसा उ वण्णओ ॥ ९ ॥

जह कडुयतुम्बगरसो निम्बरसो कडुयरोहिणिरसो वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो रसो उ किण्हाए नायव्वो ॥ १० ॥

जह तिगडुयस्स य रसो तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो रसो उ नीलाए नायव्वो ॥ ११ ॥

जह तरुणअम्बगरसो तुवरकविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अणन्तगुणो रसो उ काऊए नायव्वो ॥ १२ ॥

जहपरिणयम्बगरसो पक्ककविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अणन्तगुणो रसो उ तेऊए नायव्वो ॥ १३ ॥

वरवारुणीए व रसो विविहाण व आसवाण जारिसओ ।
महुमेरगस्स व रसो एत्तो पम्हाए परएणं ॥ १४ ॥

खज्जूरमुद्दियरसो खीररसो खण्डसक्कररसो वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो रसो उ सुक्काए नायव्वो ॥ १५ ॥

जह गोमडस्स गन्धो सुणगमडगस्स व जहा अहिमडस्स ।
एत्तो वि अणन्तगुणो लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥ १६ ॥

जह सुरहिकुसुमगन्धो गन्धवासाण पिस्समाणाणं ।
एत्तो वि अणन्तगुणो पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥ १७ ॥

जह करगयस्स फासो गोजिब्भाए व सागपत्ताणं ।
एत्तो वि अणन्तगुणो लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥ १८ ॥

जह बूरस्स व फासो नवणीयस्स व सिरीसकुसुमाणं ।
एत्तो वि अणन्तगुणो पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥ १९ ॥

तिविहो व नवविहो वा सत्तावीसइविहेक्कसीओ वा ।
दुसओ तेयालो वा लेसाणं होइ परिणामो ॥ २० ॥

पंचासवप्पवत्तो तीहिं अगुत्तो छसुं अविरओ य।
तिव्वारम्भपरिणओ खुद्दो साहसिओ नरो ॥ २१ ॥

निद्धन्धसपरिणामो निस्संसो अजिइन्दिओ।
एयजोगसमाउत्तो किण्हलेसं तु परिणमे ॥ २२ ॥

इस्साअमरिसअतवो अविज्जमाया अहीरिया य।
गेद्धी पओसे य सढे, पमत्ते रसलोलुए साय गवेसए य ॥ २३ ॥

आरम्भाओ अविरओ खुद्दो साहस्सिओ नरो।
एयजोगसमाउत्तो नीललेसं तु परिणमे ॥ २४ ॥

वंके वंकसमायारे नियडिल्ले अणुज्जुए।
पलिउंचग ओवहिए मिच्छदिट्ठी अणारिए ॥ २५ ॥

उप्फालगदुट्ठवाई य तेणे यावि य मच्छरी।
एयजोगसमाउत्तो काउलेसं तु परिणमे ॥ २६ ॥

नीयावित्ती अचवले अमाई अकुऊहले।
विणीयविणए दन्ते जोगवं उवहाणवं ॥ २७ ॥

पियधम्मे दढधम्मे वज्जभीरू हिएसए।
एयजोगसमाउत्तो तेउलेसं तु परिणमे ॥ २८ ॥

पयणुक्कोहमाणे य मायालोभे य पयणुए।
पसन्तचित्ते दन्तप्पा जोगवं उवहाणवं ॥ २९ ॥

तहा पयणुवाई य उवसन्ते जिइन्दिए।
एयजोगसमाउत्तो पम्हलेसं तु परिणमे ॥ ३० ॥

अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता धम्मसुक्काणि झायए।
पसन्तचित्ते दन्तप्पा समिए गुत्ते य गुत्तिहिं ॥ ३१ ॥

सरागे वीयरागे वा उवसन्ते जिइन्दिए।
एयजोगसमाउत्तो सुक्कलेसं तु परिणमे ॥ ३२ ॥

असंखिज्जाणोसप्पिणीण, उस्सप्पिणीण जे समया।
संखाईया लोगा, लेसाण हुन्ति ठाणाइं ॥ ३३ ॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसं सागरा मुहुत्तऽहिया।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा किण्हलेसाए ॥ ३४ ॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस उदही पलियमसंखभागमब्भहिया।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा नीललेसाए ॥ ३५ ॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तिण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा काउलेसाए ॥ ३६ ॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दोउदही पलियमसंखभागमब्भहिया।
उक्कोसा होई ठिई, नायव्वा तेउलेसाए ॥ ३७ ॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस होन्ति सागरा मुहुत्ताहिया।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा पम्हलेसाए ॥ ३८ ॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसं सागरा मुहुत्तहिया।
उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा सुक्कलेसाए ॥ ३९ ॥

एसा खलु लेसाणं, ओहेण ठिई उ वण्णिया होइ।
चउसु वि गईसु एत्तो, लेसाण ठिइं तु वोच्छामि ॥ ४० ॥

दस वाससहस्साइं, काऊए ठिई जहन्निया होइ।
तिण्णुदही पलिओवम, असंखभागं च उक्कोसा ॥ ४१ ॥

तिण्णुदही पलिय, मसंखभाग जहन्नेण नीलठिई।
दस उदही पलिओवम, असंखभागं च उक्कोसा ॥ ४२ ॥

दस उदही पलिय - मसंखभागं जहन्निया होइ ।
तेत्तीससागराइं उक्कोसा, होइ किण्हाए लेसाए ॥ ४३ ॥

एसा नेरइयाणं, लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
तेण परं वोच्छामि तिरियमणुस्साण देवाणं ॥ ४४ ॥

अन्तोमुहुत्तमद्धं लेसाण ठिई जहिं जहिं जा उ ।
तिरियाण नराणं वा, वज्जित्ता केवलं लेसं ॥ ४५ ॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, उक्कोसा होइ पुव्वकोडी उ ।
नवहि वरिसेहि ऊणा, नायव्वा सुक्कलेसाए ॥ ४६॥

एसा तिरियनराणं, लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
तेण परं वोच्छामि, लेसाण ठिई उ देवाणं ॥ ४७ ॥

दस वाससहस्साइं, किण्हाए ठिई जहन्निया होइ ।
पलियमसंखिज्जइमो, उक्कोसा होइ किण्हाए ॥ ४८ ॥

जा किण्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं नीलाए, पलियमसंखं तु उक्कोसा ॥ ४९ ॥

जा नीलाए ठिई खलु, उक्कोसा साउ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं काऊए, पलियमसंखं च उक्कोसा ॥ ५० ॥

तेण परं वोच्छामि, तेउलेसा जहा सुरगणाणं ।
भवणवइवाणमन्तर, जोइसवेमाणियाणं च ॥ ५१ ॥

पलिओवमं जहन्ना, उक्कोसा सागरा उ दुण्हऽहिया ।
पलियमसंखेज्जेणं, होई भागेण तेऊए ॥ ५२ ॥

दस वाससहस्साइं, तेऊए ठिई जहन्निया होइ ।
दुण्णुदही पलिओवम, असंखभागं च उक्कोसा ॥ ५३ ॥

जा तेऊए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं पम्हाए दसउ, मुहुत्तऽहियाइं च उक्कोसा ॥ ५४ ॥

जा पम्हाए ठिई खलु, उक्कोसा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं सुक्काए, तेत्तीसमुहुत्तमब्भहिया ॥ ५५ ॥

किण्हा नीला काऊ, तिन्नि वि एयाओ अहम्मलेसाओ ।
एयाहि तिहि वि जीवो, दुग्गइं उववज्जई बहुसो ॥ ५६ ॥

तेऊ पम्हा सुक्का, तिन्नि वि एयाओ धम्मलेसाओ ।
एयाहि तिहि वि जीवो, सुग्गइं उववज्जई बहुसो ॥ ५७ ॥

लेसाहिं सव्वाहिं पढमे समयम्मि परिणयाहिं तु ।
न वि कस्सवि उववाओ, परे भवे अत्थि जीवस्स ॥ ५८ ॥

लेसाहिं सव्वाहिं, चरमे समयम्मि परिणयाहिं तु ।
न वि कस्सवि उववाओ, परे भवे अत्थि जीवस्स ॥ ५९ ॥

अन्तमुहुत्तम्मि गए, अन्तमुहुत्तम्मि सेसए चेव ।
लेसाहिं परिणयाहिं, जीवा गच्छन्ति परलोयं ॥ ६० ॥

तम्हा एयाण लेसाणं, अणुभागे वियाणिया ।
अप्पसत्थाओ वज्जित्ता पसत्थाओ अहिट्ठेज्जासि ॥ ६१ ॥

—त्ति बेमि ।

पणतीसइमं अज्झयणं

अणगारमग्गगई

सुणेह मे एगग्गमणा मग्गं बुद्धेहि देसियं।
जमायरन्तो भिक्खू दुक्खाणन्तकरो भवे ॥ १ ॥

गिहवासं परिच्चज्ज पवज्जंअस्सिओ मुणी।
इमे संगे वियाणिज्जा जेहिं सज्जन्ति माणवा ॥ २ ॥

तहेव हिंसं अलियं चोज्जं अवम्भसेवणं।
इच्छाकामं च लोभं च संजओ परिवज्जए ॥ ३ ॥

मणोहरं चित्तहरं मल्लधूवेण वासियं।
सकवाडं पण्डुरुल्लोयं मणसा वि न पत्थए ॥ ४ ॥

इन्दियाणि उ भिक्खुस्स तारिसम्मि उवस्सए।
दुक्कराइं निवारेउं कामरागविवड्ढणे ॥ ५ ॥

सुसाणे सुन्नगारे वा रुक्खमूले व एक्कओ।
पइरिक्के परकडे वा वासं तत्थऽभिरोयए ॥ ६ ॥

फासुयम्मि अणावाहे इत्थीहिं अणभिद्दुए।
तत्थ संकप्पए वासं भिक्खू परमसंजए ॥ ७ ॥

न सयं गिहाइं कुज्जा णेव अन्नेहिं कारए।
गिहकम्मसमारम्भे भूयाणं दीसई वहो ॥ ८ ॥

तसाणं थावराणं च सुहुमाणं वायराण य।
तम्हा गिहसमारम्भं संजओ परिवज्जए ॥ ९ ॥

तहेव भत्तपाणेसु पयण पयावणेसु य।
पाणभूयदयट्ठाए न पये न पयावए ॥ १० ॥

जलधन्ननिस्सिया जीवा पुढवीकट्ठनिस्सिया ।
हम्मन्ति भत्तपाणेसु तम्हा भिक्खू न पायए ॥ ११ ॥

विसप्पे सव्वओधारे वहुपाणविणासणे ।
नत्थि जोइसमे सत्थे तम्हा जोइं न दीवए ॥ १२ ॥

हिरण्णं जायरूवं च मणसा वि न पत्थए ।
समलेट्ठुकंचणे भिक्खू विरए कयविक्कए ॥ १३ ॥

किणन्तो कइओ होइ विक्किणन्तो य वाणिओ ।
कयविक्कयम्मि वट्टन्तो भिक्खू न भवइ तारिसो ॥ १४ ॥

भिक्खियव्वं न केयव्वं भिक्खुणा भिक्खवत्तिणा ।
कयविक्कओ महादोसो भिक्खावत्ती सुहावहा ॥ १५ ॥

समुयाणं उंछमेसिज्जा जहासुत्तमणिन्दियं ।
लाभालाभम्मि संतुट्ठे पिण्डवायं चरे मुणी ॥ १६ ॥

अलोले न रसे गिद्धे जिब्भादन्ते अमुच्छिए ।
न रसट्ठाए भुंजिज्जा जवणट्ठाए महामुणी ॥ १७ ॥

अच्चणं रयणं चेव वन्दणं पूयणं तहा ।
इड्ढीसक्कारसम्माणं मणसा वि न पत्थए ॥ १८ ॥

सुक्कझाणं झियाएज्जा अणियाणे अकिंचणे ।
वोसट्ठकाए विहरेज्जा जाव कालस्स पज्जओ ॥ १९ ॥

निज्जूहिऊण आहारं कालधम्मे उवट्ठिए ।
जहिऊण माणुसं वोन्दिं पहू दुक्खे विमुच्चई ॥ २० ॥

निम्ममो निरहंकारो वीयरागो अणासवो ।
संपत्तो केवलं नाणं सासयं परिणिव्वुए ॥ २१ ॥

—त्ति बेमि ॥

छत्तीसइमं अज्झयणं

जीवाजीवविभत्ती

जीवाजीवविभत्तिं सुणेह मे एगमणा इओ ।
जं जाणिऊण समणे सम्मं जयइ संजमे ॥ १ ॥

जीवा चेव अजीवा य एस लोए वियाहिए ।
अजीवदेसमागासे अलोए से वियाहिए ॥ २ ॥

दव्वओ खेत्तओ चेव कालओ भावओ तहा ।
परूवणा तेसि भवे जीवाणमजीवाण य ॥ ३ ॥

रूविणो चेवऽरूवी य अजीवा दुविहा भवे ।
अरूवी दसहा वुत्ता रूविणो वि चउव्विहा ॥ ४ ॥

धम्मत्थिकाए तद्देसे तप्पएसे य आहिए ।
अहम्मे तस्स देसे य तप्पएसे य आहिए ॥ ५ ॥

आगासे तस्स देसे य तप्पएसे य आहिए ।
अद्धासमए चेव अरूवी दसहा भवे ॥ ६ ॥

धम्माधम्मे य दोऽवेए लोगमित्ता वियाहिया ।
लोगालोगे य आगासे समए समयखेत्तिए ॥ ७ ॥

धम्माधम्मागासा तिन्नि वि एए अणाइया ।
अपज्जवसिया चेव सव्वद्धं तु वियाहिया ॥ ८ ॥

समए वि सन्तइं पप्प एवमेव वियाहिए ।
आएसं पप्प साईए सपज्जवसिए वि य ॥ ९ ॥

खन्धा य खन्धदेसा य तप्पएसा तहेव य।
परमाणुणो य बोद्धव्वा रूविणो य चउव्विहा ॥ १० ॥

एगत्तेण पुहत्तेण खन्धा य परमाणुणो।
लोएगदेसे लोए य भइयव्वा ते उ खेत्तओ ॥ ११ ॥

सुहुमा सव्वलोगंमि लोगदेसे य बायरा।
इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥ १२ ॥

संतइं पप्प तेऽणाई अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥ १३ ॥

असंखकालमुक्कोसं एगं समयं जहन्निया।
अजीवाण य रूवीणं ठिई एसा वियाहिया ॥ १४ ॥

अणन्तकालमुक्कोसं एगं समयं जहन्नयं।
अजीवाण य रूवीण अन्तरेयं वियाहियं ॥ १५ ॥

वण्णओ गन्धओ चेव रसओ फासओ तहा।
संठाणओ य विन्नेओ परिणामो तेसि पंचहा ॥ १६ ॥

वण्णओ परिणया जे उ पंचहा ते पकित्तिया।
किण्हा नीला य लोहिया हालिद्दा सुक्किला तहा ॥ १७ ॥

गन्धओ परिणया जे उ दुविहा ते वियाहिया।
सुब्भिगन्धपरिणामा दुब्भिगन्धा तहेव य ॥ १८ ॥

रसओ परिणया जे उ पंचहा ते पकित्तिया।
तित्तकडुयकसाया अम्बिला महुरा तहा ॥ १९ ॥

फासओ परिणया जे उ अट्ठहा ते पकित्तिया।
कक्खडा मउया चेव गरुया लहुया तहा ॥ २० ॥

सीया उण्हा य निद्धा य तहा लुक्खा य आहिया ।
इइ फासपरिणया एए पुग्गला समुदाहिया ॥ २१ ॥

संठाणपरिणया जे उ पंचहा ते पकित्तिया ।
परिमण्डला य वट्टा तंसा चउरंसमायया ॥ २२ ॥

वण्णओ जे भवे किण्हे भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ २३ ॥

वण्णओ जे भवे नीले भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ २४ ॥

वण्णओ लोहिए जे उ भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ २५ ॥

वण्णओ पीयए जे उ भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ २६ ॥

वण्णओ सुक्किले जे उ भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ २७ ॥

गन्धओ जे भवे सुब्भी भइए से उ वण्णओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ २८ ॥

गन्धओ जे भवे दुब्भी भइए से उ वण्णओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ २९ ॥

रसओ तित्तए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ३० ॥

रसओ कडुए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ३१ ॥

रसओ कसाए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ३२ ॥

रसओ अम्बिले जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ३३ ॥

रसओ महुरए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ३४ ॥

फासओ कक्खडे जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ३५ ॥

फासओ मउए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ३६ ॥

फासओ गुरुए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ३७ ॥

फासओ लहुए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ३८ ॥

फासओ सीयए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ३९ ॥

फासओ उण्हए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ४० ॥

फासओ निद्धए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ४१ ॥

फासओ लुक्खए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ४२ ॥

परिमण्डलसंठाणे भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए फासओ वि य ॥ ४३ ॥

संठाणओ भवे वट्टे भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए फासओ वि य ॥ ४४ ॥

संठाणओ भवे तंसे भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए फासओ वि य ॥ ४५ ॥

संठाणओ य चउरंसे भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए फासओ वि य ॥ ४६ ॥

जे आययसंठाणे भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए फासओ वि य ॥ ४७ ॥

एसा अजीवविभत्ती समासेण वियाहिया।
इत्तो जीवविभत्ति वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥ ४८ ॥

संसारत्था य सिद्धा य दुविहा जीवा वियाहिया।
सिद्धा णंगविहा वुत्ता तं मे कित्तयओ सुण ॥ ४९ ॥

इत्थी पुरिससिद्धा य तहेव य नपुंसगा।
सलिंगे अन्नलिंगे य गिहिलिंगे तहेव य ॥ ५० ॥

उक्कोसोगाहणाए य जहन्नमज्झिमाइ य।
उड्ढं अहे य तिरियं च समुद्दम्मि जलम्मि य ॥ ५१ ॥

दस चेव नपुंसेसुं वीसं इत्थियासु य।
पुरिसेसु य अट्ठसयं समएणेगेण सिज्झई ॥ ५२ ॥

चत्तारि य गिहिलिंगे अन्नलिंगे दसेव य।
सलिंगेण य अट्ठसयं समएणेगेण सिज्झई ॥ ५३ ॥

उक्कोसोगाहणाए य सिज्झन्ते जुगवं दुवे।
चत्तारि जहन्नाए जवमज्झऽट्ठुत्तरं सयं ॥ ५४ ॥

चउरुड्ढलोए य दुवे समुद्दे तओ जले वीसमहे तहेव।
सयं च अट्ठुत्तर तिरियलोए समएणेगेण उ सिज्झई उ ॥ ५५ ॥

कहिं पडिहया सिद्धा ? कहिं सिद्धा पइट्ठिया ?।
कहिं वोन्दि चइत्ताणं ? कत्थ गन्तूण सिज्झई ? ॥ ५६ ॥

अलोए पडिहया सिद्धा लोयग्गे य पइट्ठिया।
इहं वोन्दि चइत्ताणं तत्थ गन्तूण सिज्झई ॥ ५७ ॥

बारसहिं जोयणेहिं सव्वट्ठस्सुवरिं भवे।
ईसीपब्भारनामा उ पुढवी छत्तसंठिया ॥ ५८ ॥

पणयालसयसहस्सा जोयणाणं तु आयया।
तावइयं चेव विच्छिण्णा तिगुणो तस्सेव परिरओ ॥ ५९ ॥

अट्ठजोयणबाहल्ला सा मज्झम्मि वियाहिया।
परिहायन्ती चरिमन्ते मच्छियपत्ता तणुयरी ॥ ६० ॥

अज्जुणसुवण्णगमई सा पुढवी निम्मला सहावेणं।
उत्ताणगछत्तगसंठिया य भणिया जिणवरेहिं ॥ ६१ ॥

संखंककुन्दसंकासा पण्डुरा निम्मला सुहा।
सीयाए जोयणे तत्तो लोयन्तो उ वियाहिओ ॥ ६२ ॥

जोयणस्स उ जो तस्स कोसो उवरिमो भवे।
तस्स कोसस्स छब्भाए सिद्धाणोगाहणा भवे ॥ ६३ ॥

तत्थ सिद्धा महाभागा लोयग्गम्मि पइट्ठिया।
भवप्पवंच उम्मुक्का सिद्धिं वरगइं गया ॥ ६४ ॥

उस्सेहो जस्स जो होइ भवम्मि चरिमम्मि उ।
तिभागहीणा तत्तो य सिद्धाणोगाहणा भवे ॥ ६५ ॥

एगत्तेण साईया अपज्जवसिया वि य।
पुहुत्तेण अणाईया अपज्जवसिया वि य ॥ ६६ ॥

अरूविणो जीवघणा नाणदंसणसन्निया।
अउलं सुहं संपत्ता उवमा जस्स नत्थि उ ॥ ६७ ॥

लोएगदेसे ते सव्वे नाणदंसणसन्निया।
संसारपारनिच्छिन्ना सिद्धिं वरगइं गया ॥ ६८ ॥

संसारत्था उ जे जीवा दुविहा ते वियाहिया।
तसा य थावरा चेव थावरा तिविहा तहिं ॥ ६९ ॥

पुढवी आउजीवा य तहेव य वणस्सई।
इच्चेए थावरा तिविहा तेसिं भेए सुणेह मे ॥ ७० ॥

दुविहा पुढवीजीवा उ सुहुमा वायरा तहा।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥ ७१ ॥

वायरा जे उ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया।
सण्हा खरा य वोद्धव्वा सण्हा सत्तविहा तहिं ॥ ७२ ॥

किण्हा नीला य रुहिरा य, हालिद्दा सुक्किला तहा।
पण्डुपणगमट्टिया, खरा छत्तीसईविहा ॥ ७३ ॥

पुढवी य सक्करा वालुया य उवले सिला य लोणूसे।
अयतम्वतउय-सीसग, रुप्पसुवण्णे य वइरे य ॥ ७४ ॥

हरियाले हिंगुलुए, मणोसिला सासगंजणपवाले।
अब्भपडलऽब्भवालुय, वायरकाए मणिविहाणा ॥ ७५ ॥

गोमेज्जए य रुयगे अंके फलिहे य लोहियक्खे य ।
मरगयमसारगल्ले, भुयमोयगइन्दनीले य ।। ७६ ।।

चन्दणगेरुयहंसगब्भ, पुलए सोगन्धिए य वोद्धव्वे ।
चन्दप्पहवेरुलिए, जलकन्ते सूरकन्ते य ।। ७७ ।।

एए खरपुढवीए भेया छत्तीसमाहिया ।
एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया ।। ७८ ।।

सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य वायरा ।
इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ।। ७९ ।।

संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ।। ८० ।।

वावीससहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउठिई पुढवीणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ।। ८१ ।।

असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायठिई पुढवीणं तं कायं तु अमुंचओ ।। ८२ ।।

अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए पुढवीजीवाण अन्तरं ।। ८३ ।।

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ।। ८४ ।।

दुविहा आउजीवा उ सुहुमा वायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ।। ८५ ।।

वायरा जे उ पज्जत्ता पंचहा ते पकित्तिया ।
सुद्धादए य उस्से हरतणू महिया हिमे ।। ८६ ।।

एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया।
सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य वायरा ॥ ८७ ॥

सन्तइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥ ८८ ॥

सत्तेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे।
आउट्ठिई आऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ ८९ ॥

असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया।
कायट्ठिई आऊणं तं कायं तु अमुंचओ ॥ ९० ॥

अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए आऊजीवाण अन्तरं ॥ ९१ ॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥ ९२ ॥

दुविहा वणस्सईजीवा सुहुमा वायरा तहा।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥ ९३ ॥

वायरा जे उ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया।
साहारणसरीरा य पत्तेगा य तहेव य ॥ ९४ ॥

पत्तेगसरीरा उ णेगहा ते पकित्तिया।
रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य लया वल्ली तणा तहा ॥ ९५ ॥

लयावलया पव्वगा कुहुणा जलरुहा ओसहीतिणा।
हरियकाया य वोद्धव्वा पत्तेया इति आहिया ॥ ९६ ॥

साहारणसरीरा उ णेगहा ते पकित्तिया।
आलुए मूलए चेव सिंगबेरे तहेव य ॥ ९७ ॥

हिरिली सिरिली सिस्सिरिली जावई केदकन्दली ।
पलंडूलसणकन्दे य कन्दली य कुडुंवए ॥ ९८ ॥

लोहि णीहू य थिहू य कुहगा य तहेव य ।
कण्हे य वज्जकन्दे य कन्दे सूरणए तहा ॥ ९९ ॥

अस्सकण्णी य वोद्धव्वा सीहकण्णी तहेव य ।
मुसुण्ढी य हलिद्दा य णेगहा एवमायओ ॥१००॥

एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य वायरा ॥१०१॥

संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥१०२॥

दस चेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।
वणप्फईण आउं तु अन्तोमुहुत्तं जहन्नगं ॥१०३॥

अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायठिई पणगाणं तं कायं तु अमुंचओ ॥१०४॥

असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए पणगजीवाण अन्तरं ॥१०५॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥१०६॥

इच्चेए थावरा तिविहा समासेण वियाहिया ।
इत्तो उ तसे तिविहे वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥१०७॥

तेऊ वाऊ य वोद्धव्वा उराला य तसा तहा ।
इच्चेए तसा तिविहा तेसिं भेए सुणेह मे ॥१०८॥

दुविहा तेउजीवा उ सुहुमा वायरा तहा।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥१०६॥

वायरा जे उ पज्जत्ता णेगहा ते वियाहिया।
इंगाले मुम्मुरे अगणी अच्चि जाला तहेव य ॥११०॥

उक्का विज्जू य वोद्धव्वा णेगहा एवमायओ।
एगविहमणाणत्ता सुहुमा ते वियाहिया ॥१११॥

सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य वायरा।
इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥११२॥

संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥११३॥

तिण्णेव अहोरत्ता उक्कोसेण वियाहिया।
आउट्ठिई तेऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥११४॥

असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
कायट्ठिई तेऊणं तं कायं तु अमुंचओ ॥११५॥

अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए तेउजीवाण अन्तरं ॥११६॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥११७॥

दुविहा वाउजीवा उ सुहुमा वायरा तहा।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥११८॥

वायरा जे उ पज्जत्ता पंचहा ते पकित्तिया।
उक्कलियामण्डलिया- घणगुंजा सुद्धवाया य ॥११६॥

संवट्टगवाते य ऽणेगविहा एवमायओ ।
एगविहमणाणत्ता सुहुमा ते वियाहिया ॥१२०॥

सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य वायरा ।
इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥१२१॥

संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥१२२॥

तिण्णेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउट्ठिई वाऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१२३॥

असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायट्ठिई वाऊणं तं कायं तु अमुंचओ ॥१२४॥

अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए वाउजीवाण अन्तरं ॥१२५॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥१२६॥

ओराला तसा जे उ चउहा ते पकित्तिया ।
वेइन्दियतेइन्दिय- चउरोपंचिन्दिया चेव ॥१२७॥

वेइन्दिया उ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे ॥१२८॥

किमिणो सोमंगला चेव अलसा माइवाहया ।
वासीमुहा य सिप्पीया संखा संखणगा तहा ॥१२९॥

पल्लोयाणुल्लया चेव तहेव य वराडगा ।
जलूगा जालगा चेव चन्दणा य तहेव य ॥१३०॥

इइ वेइन्दिया एए णेगहा एवमायओ।
लोगेगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥१३१॥

संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥१३२॥

वासाइं बारसे व उ उक्कोसेण वियाहिया।
वेइन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१३३॥

संखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
वेइन्दियकायठिई तं कायं तु अमुंचओ ॥१३४॥

अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
वेइन्दियजीवाणं अन्तरेयं वियाहियं ॥१३५॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥१३६॥

तेइन्दिया उ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे ॥१३७॥

कुन्थुपिवीलिउड्डंसा उक्कलुद्देहिया तहा।
तणहारकट्ठहारा मालुगा पत्तहारगा ॥१३८॥

कप्पासऽट्ठिमिजा य तिंदुगा तउसमिंजगा।
सदावरी य गुम्मी य बोद्धव्वा इन्दकाइया ॥१३९॥

इन्दगोवगमाईया णेगहा एवमायओ।
लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥१४०॥

संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥१४१॥

एगूणपण्णऽहोरत्ता उक्कोसेण वियाहिया ।
तेइन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१४२॥

संखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
तेइन्दियकायठिई तं कायं तु अमुंचओ ॥१४३॥

अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
तेइन्दियजीवाणं अन्तरेयं वियाहियं ॥१४४॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥१४५॥

चउरिन्दिया उ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे ॥१४६॥

अन्धिया पोत्तिया चेव मच्छिया मसगा तहा ।
भमरे कोडपयंगे य ढिकुणे कुंकुणे तहा ॥१४७॥

कुक्कुडे सिंगिरीडी य नन्दावत्ते य विंछिए ।
डोले भिंगारी य विरली अच्छिवेहए ॥१४८॥

अच्छिले माहए अच्छिरोडए विचित्ते चित्तपत्तए ।
ओहिंजलिया जलकारी य नीया तन्तवगाविय ॥१४९॥

इइ चउरिन्दिया एए ऽणेगहा एवमायओ ।
लोगस्स एग देसम्मि ते सव्वे परिकित्तिया ॥१५०॥

संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥१५१॥

छच्चेव य मासा उ उक्कोसेण वियाहिया ।
चउरिन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१५२॥

संखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
चउरिन्दियकायठिई तं कायं तु अमुंचओ ॥१५३॥

अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
चउरिंदिय जीवाणं अन्तरेयं वियाहियं ॥१५४॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥१५५॥

पंचिन्दिया उ जे जीवा चउव्विहा ते वियाहिया।
नेरइयतिरिक्खा य मणुया देवा य आहिया ॥१५६॥

नेरइया सत्तविहा पुढवीसु सत्तसू भवे।
रयणाभ सक्कराभा वालुयाभा य आहिया ॥१५७॥

पंकाभा धूमाभा तमा तमतमा तहा।
इइ नेरइया एए सत्तहा परिकित्तिया ॥१५८॥

लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे उ वियाहिया।
एत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥१५९॥

संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥१६०॥

सागरोवममेगं तु उक्कोसेण वियाहिया।
पढमाए जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥१६१॥

तिण्णेव सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया।
दोच्चाए जहन्नेणं एगं तु सागरोवमं ॥१६२॥

सत्तेव सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया।
तइयाए जहन्नेणं तिण्णेव उ सागरोवमा ॥१६३॥

दस सागरोवमा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
चउत्थीए जहन्नेणं सत्तेव उ सागरोवमा ॥१६४॥

सत्तरस सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
पंचमाए जहन्नेणं दस चेव उ सागरोवमा ॥१६५॥

बावीस सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
छट्ठीए जहन्नेणं सत्तरस सागरोवमा ॥१६६॥

तेत्तीस सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
सत्तमाए जहन्नेणं बावीसं सागरोवमा ॥१६७॥

जा चेव उ आउठिई नेरइयाणं वियाहिया ।
सा तेसिं कायठिई जहन्नुक्कोसिया भवे ॥१६८॥

अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए नेरइयाणं तु अन्तरं ॥१६९॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥१७०॥

पंचिन्दियतिरिक्खाओ दुविहा ते वियाहिया ।
सम्मुच्छिमतिरिक्खाओ गब्भवक्कन्तिया तहा ॥१७१॥

दुविहावि ते भवे तिविहा जलयरा थलयरा तहा ।
खहयरा य बोद्धव्वा तेसिं भेए सुणेह मे ॥१७२॥

मच्छा य कच्छभा य गाहा य मगरा तहा ।
सुंसुमारा य बोद्धव्वा पंचहा जलयराहिया ॥१७३॥

लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ।
एत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥१७४॥

संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥१७५॥

एगा य पुव्वकोडीओ उक्कोसेण वियाहिया।
आउट्ठिई जलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१७६॥

पुव्वकोडीपुहत्तं तु उक्कोसेण वियाहिया।
कायट्ठिई जलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१७७॥

अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए जलयराणं तु अन्तरं ॥१७८॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥१७९॥

चउप्पया य परिसप्पा दुविहा थलयरा भवे।
चउप्पया चउविहा ते मे कित्तयओ सुण ॥१८०॥

एगखुरा दुखुरा चेव गण्डीपयसणप्पया।
हयमाइगोणमाइ- गयमाइसीहमाइणो ॥१८१॥

भुओरगपरिसप्पा य परिसप्पा दुविहा भवे।
गोहाई अहिमाई य एक्केक्का णेगहा भवे ॥१८२॥

लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया।
एत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥१८३॥

संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥१८४॥

पलिओवमाउ तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया।
आउट्ठिई थलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१८५॥

पलिओवमाउ तिण्णि उ उक्कोसेण तु साहिया ।
पुव्वकोडीपुहत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१८६॥

कायट्ठिई थलयराणं अन्तरं तेसिमं भवे ।
कालमणन्तमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥१८७॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥१८८॥

चम्मे उ लोमपक्खी य तइया समुग्गपक्खिया ।
विययपक्खी य बोद्धव्वा पक्खिणो य चउव्विहा ॥१८९॥

लोगेगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ।
इत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥१९०॥

संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥१९१॥

पलिओवमस्स भागो असंखेज्जइमो भवे ।
आउट्ठिई खहयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९२॥

असंखभागो पलियस्स उक्कोसेण उ साहिओ ।
पुव्वकोडीपुहत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९३॥

कायठिई खहयराणं अन्तरं तेसिमं भवे ।
कालं अणन्तमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥१९४॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥१९५॥

मणुया दुविहभेया उ ते मे कित्तयओ सुण ।
संमुच्छिमा य मणुया गब्भवक्कन्तिया तहा ॥१९६॥

गब्भवक्कन्तिया जे उ तिविहा ते वियाहिया ।
अकम्मकम्मभूमा य अन्तरद्दीवया तहा ॥१९७॥

पन्नरस तीसइ विहा भेया अट्ठवीसइं ।
संखा उ कमसो तेसिं इइ एसा वियाहिया ॥१९८॥

संमुच्छिमाण एसेव भेओ होइ आहिओ ।
लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे वि वियाहिया ॥१९९॥

संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥२००॥

पलिओवमाइं तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया ।
आउट्ठिई मणुयाणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥२०१॥

पलिओवमाइं तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया ।
पुव्वकोडीपुहत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥२०२॥

कायट्ठिई मणुयाणं अन्तरं तेसिमं भवे ।
अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥२०३॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥२०४॥

देवा चउव्विहा वुत्ता ते मे कित्तयओ सुण ।
भोमिज्जवाणमन्तर- जोइसवेमाणिया तहा ॥२०५॥

दसहा उ भवणवासी अट्ठहा वणचारिणो ।
पंचविहा जोइसिया दुविहा वेमाणिया तहा ॥२०६॥

असुरा नागसुवण्णा विज्जू अग्गी य आहिया ।
दीवोदहिदिसा वाया थणिया भवणवासिणो ॥२०७॥

पिसायभूय जक्खाय रक्खसा किन्नरा य किंपुरिसा ।
महोरगा य गन्धव्वा अट्ठविहा वाणमन्तरा ॥२०८॥

चन्दा सूरा य नक्खत्ता गहा तारागणा तहा ।
दिसाविचारिणो चेव पंचहा जोइसालया ॥२०९॥

वेमाणिया उ जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।
कप्पोवगा य बोद्धव्वा कप्पाईया तहेव य ॥२१०॥

कप्पोवगा बारसहा सोहम्मीसाणगा तहा ।
सणंकुमारमाहिन्दा बम्भलोगा य लन्तगा ॥२११॥

महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया तहा ।
आरणा अच्चुया चेव इइ कप्पोवगा सुरा ॥२१२॥

कप्पाईया उ जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।
गेविज्जाऽणुत्तरा चेव गेविज्जा नवविहा तहिं ॥२१३॥

हेट्ठिमाहेट्ठिमा चेव हेट्ठिमामज्झिमा तहा ।
हेट्ठिमा उवरिमा चेव मज्झिमाहेट्ठिमा तहा ॥२१४॥

मज्झिमामज्झिमा चेव मज्झिमाउवरिमा तहा ।
उवरिमाहेट्ठिमा चेव उवरिमामज्झिमा तहा ॥२१५॥

उवरिमाउवरिमा चेव इय गेविज्जगा सुरा ।
विजया वेजयन्ता य जयन्ता अपराजिया ॥२१६॥

सव्वट्ठसिद्धगा चेव पंचहाऽणुत्तरा सुरा ।
इइ वेमाणिया देवा णेगहा एवमायओ ॥२१७॥

लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे परिकित्तिया ।
इत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥२१८॥

संतइं पप्पाऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥२१६॥

साहियं सागरं एक्कं उक्कोसेण ठिई भवे।
भोमेज्जाणं जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥२२०॥

पलिओवममेगं तु उक्कोसेण ठिई भवे।
वन्तराणं जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥२ १॥

पलिओवमं एगं तु वासलक्खेण साहियं।
पलिओवमऽट्ठभागो जोइसेसु जहन्निया ॥२२२॥

दो चेव सागराइं उक्कोसेण वियाहिया।
सोहम्मंमि जहन्नेणं एगं च पलिओवमं ॥२२३॥

सागरा साहिया दुन्नि उक्कोसेण वियाहिया।
ईसाणम्मि जहन्नेणं साहियं पलिओवमं ॥२२४॥

सागराणि य सत्तेव उक्कोसेण ठिई भवे।
सणंकुमारे जहन्नेणं दुन्नि ऊ सागरोवमा ॥२२५॥

साहिया सागरा सत्त उक्कोसेण ठिई भवे।
माहिन्दम्मि जहन्नेणं साहिया दुन्नि सागरा ॥२२६॥

दस चेव सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
बम्भलोए जहन्नेणं सत्त ऊ सागरोवमा ॥२२७॥

चउद्दस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
लन्तगम्मि जहन्नेणं दस ऊ सागरोवमा ॥२२८॥

सत्तरस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
महासुक्के जहन्नेणं चउद्दस सागरोवमा ॥२२९॥

अट्ठारस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
सहस्सारे जहन्नेणं सत्तरस सागरोवमा ॥२३०॥

सागरा अउणवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे।
आणयम्मि जहन्नेणं अट्ठारस सागरोवमा ॥२३१॥

वीसं तु सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
पाणयम्मि जहन्नेणं सागरा अउणवीसई ॥२३२॥

सागरा इक्कवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे।
आरणम्मि जहन्नेणं वीसई सागरोवमा ॥२३३॥

वावीसं सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
अच्चुयम्मि जहन्नेणं सागरा इक्कवीसई ॥२३४॥

तेवीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
पढमम्मि जहन्नेणं वावीसं सागरोवमा ॥२३५॥

चउवीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
विइयम्मि जहन्नेणं तेवीसं सागरोवमा ॥२३६॥

पणवीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
तइयम्मि जहन्नेणं चउवीसं सागरोवमा ॥२३७॥

छव्वीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
चउत्थम्मि जहन्नेणं सागरा पणुवीसई ॥२३८॥

सागरा सत्तवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे।
पंचमम्मि जहन्नेणं सागरा उ छवीसई ॥२३९॥

सागरा अट्ठवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे।
छट्ठम्मि जहन्नेणं सागरा सत्तवीसई ॥२४०॥

सागरा अउणतीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे।
सत्तमम्मि जहन्नेणं सागरा अट्ठवीसई ॥२४१॥

तीसं तु सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
अट्ठमम्मि जहन्नेणं सागरा अउणतीसई ॥२४२॥

सागरा इक्कतीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे।
नवमम्मि जहन्नेणं तीसई सागरोवमा ॥२४३॥

तेत्तीस सागराउ उक्कोसेण ठिई भवे।
चउसुं पि विजयाईसुं जहन्नेणेक्कतीसई ॥२४४॥

अजहन्नमणुक्कोसा तेत्तीसं सागरोवमा।
महाविमाण सव्वट्ठे ठिई एसा वियाहिया ॥२४५॥

जा चेव उ आउठिई देवाणं तु वियाहिया।
सा तेसिं कायठिई जहन्नुक्कोसिया भवे ॥२४६॥

अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए देवाणं हुज्ज अन्तरं ॥२४७॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्सओ ॥२४८॥

संसारत्था य सिद्धा य इइ जीवा वियाहिया।
रूविणो चेव ऽरूवी य अजीवा दुविहा वि य ॥२४९॥

इइ जीवमजीवे य सोच्चा सद्दहिऊण य।
सव्वनयाण अणुमए रमेज्जा संजमे मुणी ॥२५०॥

तओ वहूणि वासाणि सामण्णमणुपालिया।
इमेण कमजोगेण अप्पाणं संलिहे मुणी ॥२

वारसेव उ वासाइं संलेहुक्कोसिया भवे ।
संवच्छरं मज्झिमिया छम्मासा य जहन्निया ॥२५२॥

पढमे वासचउक्कम्मि विगईनिज्जूहणं करे ।
विइए वासचउक्कम्मि विचित्तं तु तवं चरे ॥२५३॥

एगन्तरमायामं कट्टु संवच्छरे दुवे ।
तओ संवच्छरद्धं तु नाइविगिट्ठं तवं चरे ॥२५४॥

तओ संवच्छरद्धं तु विगिट्ठं तु तवं चरे ।
परिमियं चेव आयामं तंमि संवच्छरे करे ॥२५५॥

कोडीसहियमायामं कट्टु संवच्छरे मुणी ।
मासद्धमासिएणं तु आहारेण तवं चरे ॥२५६॥

कन्दप्पमाभिओगं किव्विसियं मोहमासुरत्तं च ।
एयाओ दुग्गईओ मरणम्मि विराहिया होन्ति ॥२५७॥

मिच्छादंसणरत्ता सनियाणा हु हिंसगा ।
इय जे मरन्ति जीवा तेसिं पुण दुल्लहा वोही ॥२५८॥

सम्मद्दंसणरत्ता अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा ।
इय जे मरन्ति जीवा सुलहा तेसिं भवे वोही ॥२५९॥

मिच्छादंसणरत्ता सनियाणा कण्हलेसमोगाढा ।
इय जे मरन्ति जीवा तेसिं पुण दुल्लहा वोही ॥२६०॥

जिणवयणे अणुरत्ता जिणवयणं जे करेन्ति भावेण ।
अमला असंकिलिट्ठा ते होन्ति परित्तसंसारी ॥२६१॥

वालमरणाणि वहुसो अकाममरणाणि चेव य वहूणि ।
मरिहिन्ति ते वराया जिणवयणं जे न जाणन्ति ॥२६२॥

वहुआगमविन्नाणा समाहिउप्पायगा य गुणगाही ।
एएण कारणेणं अरिहा आलोयणं सोउं ।।२६३।।

कन्दप्पकोक्कुइयाइं तह सीलसहावहासविगहाहिं ।
विम्हावेन्तो य परं कन्दप्पं भावणं कुणइ ।।२६४।।

मन्ताजोगं काउं भूईकम्मं च जे पउंजन्ति ।
सायरसइड्ढिहेउं अभिओगं भावणं कुणइ ।।२६५।।

नाणस्स केवलीणं धम्मायरियस्स संघसाहूणं ।
माई अवण्णवाई किब्बिसियं भावणं कुणइ ।।२६६।।

अणुवद्धरोसपसरो तह य निमित्तंमि होई पडिसेवि ।
एएहि कारणेहि आसुरिय भावणं कुणइ ।।२६७।।

सत्थग्गहणं विसभक्खणं च जलणं च जलप्पवेसो य ।
अणायारभण्डसेवा जम्मणमरणाणि वन्धन्ति ।।२६८।।

इइ पाउकरे वुद्धे नायए परिनिव्वुए ।
छत्तीसं उत्तरज्झाए भवसिद्धीयसंमए ।।२६९।।

—त्ति वेमि ।।

—:उत्तराध्ययन संपूर्ण:—

णमोऽत्थु णं तस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स

नन्दी-सुत्तं

वीरस्तुति—

जयइ जग-जीव-जोणी, वियाणओ जगगुरू जगाणंदो ।
जगणाहो जगबंधू, जयइ जगप्पियामहो भयवं ॥ १ ॥

जयइ सुआणं पभवो, तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ ।
जयइ गुरू लोगाणं, जयइ महप्पा महावीरो ॥ २ ॥

भद्दं सव्वजगुज्जोयगस्स, भद्दं जिणस्स वीरस्स ।
भद्दं सुरासुरनमंसियस्स, भद्दं धूय रयस्स ॥ ३ ॥

संघस्तुति—

गुण-भवण-गहण, सुय-रयण-भरिय-दंसण-विसुद्ध-रत्थागा ।
संघ-नगर ! भद्दं ते, अखंड-चारित्त-पागारा ॥ ४ ॥

संजम-तव तुंबारयस्स, नमो सम्मत्तपारियल्लस्स ।
अप्पडिचक्कस्स जओ, होउ सया संघ-चक्कस्स ॥ ५ ॥

भद्दं सीलपडागूसियस्स, तव-नियम-तुरय-जुत्तस्स ।
संघ-रहस्स भगवओ, सज्झायसु नंदिघोसस्स ॥ ६ ॥

कम्मरय-जलोहविणिग्गयस्स, सुयरयण-दीहनालस्स ।
पंचमहव्वय-थिरकण्णियस्स, गुणकेसरालस्स ॥ ७ ॥

सावग-जण-महुअरिपरिवुडस्स, जिण-सूर-तेयवुद्धस्स ।
संघ-पउमस्स भद्दं, समण-गण-सहस्सपत्तस्स ॥ ८ ॥

तव-संजम मय-लंछण! अकिरिय राहुमुह-दुद्धरिस! निच्चं।
जय संघचंद ! निम्मल,-सम्मत्तविसुद्ध जोण्हागा ! ॥ ९ ॥

परतित्थिय-गह-पह-नासगस्स, तवतेयदित्त लेसस्स।
ना णु ज्जो य स्स ज ए, भद्दं दम संघ-सू र स्स ॥ १० ॥

भद्दं धिइवेला परिगयस्स, सज्झाय जोग मगरस्स।
अक्खोहस्स भगवओ, संघसमुदस्स रुंदस्स ॥ ११ ॥

सम्मदंसण-वर वइर,-दढरूढगाढावगाढ-पेढस्स।
धम्मवर - रयण - मंडिय - चामीयर—मेहलागस्स ॥ १२ ॥

नियमूसिय कणय, सिलायलुज्जल जलंत-चित्त-कूडस्स।
नंदणवण मणहर सुरभि, सीलगंधुद्धुमायस्स ॥ १३ ॥

जीवदया-सुन्दर-कंदरुद्दरिय-मुणिवर मइंदइन्नस्स।
हेउ-सयधाउपगलंत, रयणदित्तोसहि गुहस्स ॥ १४ ॥

संवरवर जल पगलिय, उज्झरप्पविरायमाणहारस्स।
सावग-जण पउर-रवंत, मोर नच्चंत कुहरस्स ॥ १५ ॥

विणय-नय-पवर मुणिवर, फुरंत विज्जुज्जलंत सिहरस्स।
विविहगुण कप्परुक्खग, फलभरकुसुमाउलवणस्स ॥ १६ ॥

नाणवर-रयण-दिप्पंत, कंतवेरुलियविमलचूलस्स।
वंदामि विणयपणओ, संघ-महामंदरगिरिस्स ॥ १७ ॥

गुण-रयणुज्जलकडयं, सीलसुगंधि-तवमंडिउद्देसं।
सुय-बारसंग-सिहरं, संघ-महामंदरं वंदे ॥ १८ ॥

नगर रह चक्क पउमे, चंदे सूरे समुद्द मेरुंमि।
जो उवमिज्जइ सययं, तं संघ-गुणायरं वंदे ॥ १९ ॥

तीर्थंकरनामानि—

उसभं अजियं संभव, मभिनंदण सुमइ सुप्पभ सुपासं।
ससि पुप्फदंत सीयल, सिज्जंसं वासुपुज्जं च ॥ २० ॥

विमल मणंतं य धम्मं, संतिं कुंथुं अरं च मल्लिं च।
मुनिसुव्वय -नमि -नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ २१ ॥

गणवरनामानि—

पढमित्थ इंदभूई, वीए पुण होइ अग्गिभूइ त्ति।
तइए य वाउभूई, तओ वियत्ते सुहम्मे य ॥ २२ ॥

मंडिअ-मोरियपुत्ते, अकंपिए चेव अयलभाया य।
मेयज्जे य पहासे, गणहरा हुंति वीरस्स ॥ २३ ॥

जिनशासनस्तुति—

निव्वुइ-पह-सासणयं, जयइ सया सव्वभाव-देसणयं।
कुसमय-मयनासणयं, जिणिंदवर वीरसासणयं ॥ २४ ॥

स्थविरावली—

सुहम्मं[1] अग्गिवेसाणं, जंबूनामं[2] च कासवं।
पभवं[3] कच्चायणं वंदे, वच्छं सिज्जंभवं[4] तहा ॥ २५ ॥

जसभद्दं[5] तुंगियं वंदे, संभूयं[6] चेव माढरं।
भद्दबाहुं[7] च पाइन्नं, थूलभद्दं[8] च गोयमं ॥ २६ ॥

एलावच्चसगोत्तं, वंदामि महागिरिं[9] सुहत्थिं[10] च।
तत्तो कोसियगोत्तं[11] बहुलस्स सरिव्वयं वंदे ॥ २७ ॥

हारियगुत्तं साइं[12] च, वंदिमो हारियं च सामज्जं[13]।
वंदे कोसियगोत्तं, संडिल्लं[14] अज्जजीयधरं ॥ २८ ॥

ति-समुद्द-खायकित्ति,[१५] दीवसमुद्देसु गहिय-पेयालं ।
वंदे अज्जसमुद्दं, अक्खुभिय-समुद्द-गंभीरं ॥ २९ ॥

भणगं करगं झरगं, पभावगं णाण-दंसणगुणाणं ।
वंदामि अज्जमंगुं,[१६] सुयसागरपारगं धीरं ॥ ३० ॥

वंदामि अज्जधम्मं[१७] तत्तो वंदे य भद्दगुत्तं[१८] च ।
तत्तो य अज्जवइरं[१९], तव-नियम-गुणेहिं वइरसमं ॥ ३१ ॥

वंदामि अज्जरक्खिय[२०] खवणे रक्खिय चारित्त सव्वस्से ।
रयणकरंडगभूओ, अणुओगो रक्खिओ जेहिं ॥ ३२ ॥

नाणंमि दंसणंमि य, तव-विणए णिच्चकालमुज्जुत्तं ।
अज्जं नंदिल-खवणं[२१], सिरसा वंदे पसन्नमणं ॥ ३३ ॥

वड्ढउ वायगवंशो, जसवंसो अज्जनागहत्थीणं[२२] ।
वागरण-करण-भंगिय, कम्मपयडीपहाणाणं ॥ ३४ ॥

जच्चंजण:धाउसमप्पहाणं, मुद्दिय-कुवलयनिहाणं ।
वड्ढउ वायगवंसो, रेवइ-नक्खत्तनामाणं[२३] ॥ ३५ ॥

"अयलपुरा" निक्खंते, कालियसुअ-आणुओगिए धीरे ।
"बंभद्दीवग"-सीहे[२४], वायगपयमुत्तमं पत्ते ॥ ३६ ॥

जेसिं इमो अणुओगो, पयरइ अज्जावि अड्ढभरहंमि ।
वहुनयरनिग्गयजसे, ते वंदे खंदिलायरिए[२५] ॥ ३७ ॥

तत्तो हिमवंत-महंत-विक्कमे, धिइपरक्कममणंते ।
सज्झायमणंतधरे, हिमवंते[२६] वंदिमो सिरसा ॥ ३८ ॥

कालिय सुय-अणुओगस्स-धारए, धारए य पुव्वाणं ।
हिमवंतखमासमणे, वंदे णागज्जुणायरिए[२७] ॥ ३९ ॥

मिउमद्दवसंपन्ने, आणुपुव्वि वायगत्तणं पत्ते ।
ओहसुयसमायारे, नागज्जुणवायए वंदे ॥ ४० ॥

गोविंदाणं[२८] पि नमो, अणुओगे विउलधारणिंदाणं ।
णिच्चं खंतिदयाणं, परूवणे दुल्लभिंदाणं ॥ ४१ ॥

तत्तो य भूयदिन्नं,[२९] निच्चं तव-संजमे अनिव्विण्णं ।
पंडियजणसम्माणं, वंदामो संजमविहिण्णुं ॥ ४२ ॥

वर-कणग-तविय-चंपग,-विमउल-वर-कमलगब्भसरिवन्ने ।
भवियजणहिययदइए, दयागुणविसारए धीरे ॥ ४३ ॥

अड्ढभरहप्पहाणे, वहुविह-सज्झाय-सुमुणियपहाणे ।
अणुओगियवरवसभे, नाइलकुलवंसनंदिकरे ॥ ४४ ॥

भूयहियप्पगब्भे, वंदेऽहं भूयदिन्नमायरिए ।
भवभयवुच्छेयकरे, सीसे नागज्जुणरिसीणं ॥ ४५ ॥

सुमुणिय निच्चानिच्चं, सुमुणिय सुत्तत्थधारयं वंदे ।
सब्भावुब्भावणया, तत्थं लोहिच्च[३०] णामाणं ॥ ४६ ॥

अत्थमहत्थखाणिं, सुसमणवक्खाणकहण निव्वाणिं ।
पयईए महुरवाणिं, पयओ पणमामि दूसगणिं ॥ ४७ ॥

तव-नियम-सच्च-संजम,-विणयज्जव-खंति-मद्दवरयाणं ।
सीलगुणगद्दियाणं, अणुओगजुगप्पहाणाणं ॥ ४८ ॥

सुकुमालकोमलतले, तेसिं पणमामि लक्खणपसत्थे ।
पाए पावयणीणं, पडिच्छयसयएहिं पणिवइए ॥ ४९ ॥

जे अन्ने भगवंते, कालियसुय-आणुओगिए धीरे ।
ते पणमिऊण सिरसा, नाणस्स परूवणं वोच्छं ॥ ५० ॥

श्रोतुश्चतुर्दशदृष्टान्तानि—

सेल-घण-कुडग-चालिणि, परिपुण्णग-हंस-महिस-मेसे य ।
मसग-जलूग-विराली, जाहग-गो-भेरि आभीरी ॥ १ ॥

त्रिविधा परिषदा—

सा समासओ तिविहा पण्णत्ता,

तं जहा—

जाणिया, अजाणिया, दुव्वियड्ढा ।

जाणिया जहा—

खीरमिव जहा हंसा, जे घुट्टंति इह गुरुगुणसमिद्धा ।
दोसे अ विवज्जंती, तं जाणसु जाणियं परिसं ॥ २ ॥

अजाणिया जहा—

जा होइ पगइ-महुरा, मियछावय-सीह-कुक्कुडयभूआ ।
रयणमिव असंठविआ, अजाणिया सा भवे परिसा ॥ ३ ॥

दुव्वियड्ढा जहा—

न य कत्थइ निम्माओ, न य पुच्छइ परिभवस्सदोसेणं ।
वत्थिव्व वायपुण्णो, फुट्टइ गामिल्लय विअड्ढो ॥ ४ ॥

पञ्चविधं ज्ञानम्—

सुत्तं १ नाणं पंचविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ आभिनिवोहियनाणं,
२ सुयनाणं,
३ ओहिनाणं,
४ मणपज्जवनाणं,
५ केवलनाणं ।

सुत्तं २ तं समासओ दुविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

१ पच्चक्खं च, २ परोक्खं च ।

सुत्तं ३ से किं तं पच्चक्खं ?

पच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

१ इंदिय-पच्चक्खं, २ नोइंदिय-पच्चक्खं ।

सुत्तं ४ से किं तं इंदिय-पच्चक्खं ?

इंदिय-पच्चक्खं पंचविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

१ सोइंदिय-पच्चक्खं,

२ चक्खिंदिय-पच्चक्खं,

३ घाणिंदिय-पच्चक्खं,

४ जिब्भिंदिय-पच्चक्खं,

५ फासिंदिय-पच्चक्खं,

से त्तं इंदिय-पच्चक्ख ।

सुत्तं ५ से किं तं नोइंदिय-पच्चक्खं ?

नो इंदिय-पच्चक्खं तिविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

१ ओहिनाण-पच्चक्खं,

२ मणपज्जवनाण-पच्चक्खं,

३ केवलनाण-पच्चक्खं ।

अवधिज्ञानम्—

सुत्तं ६ से किं तं ओहिनाण-पच्चक्खं ?
ओहिनाण-पच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ भव-पच्चइयं च, २ खाओवसमियं च ।

सुत्तं ७ से किं तं भव-पच्चइयं ?
भव-पच्चइय दुण्हं,
तं जहा—
१ देवाण य, २ नेरइयाण य ।

सुत्तं ८ से किं तं खाओवसमियं ?
खाओवसमियं दुण्हं,
तं जहा—
१ मणुस्साण य,
२ पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण य ।
को हेऊ खाओवसामियं ?
खाओवसामियं-तयावरणिज्जाणं कम्माणं
उदिण्णाणं खएणं, अणुदिण्णाणं उवसमेणं
ओहिनाणं समुप्पज्जइ ।

सुत्तं ९ अहवा गुणपडिवन्नस्स अणगारस्स—
ओहि-नाणं समुप्पज्जइ,
तं समासओ छव्विहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ आणुगामियं, २ अणाणुगामियं,
३ वड्ढमाणयं, ४ हीयमाणयं,
५ पडिवाइयं, ६ अप्पडिवाइयं ।

(३) से किं तं पासओ अंतगयं ?
पासओ अंतगयं—
से जहानामए केइ पुरिसे,
उक्कं वा, चडुलियं वा, अलायं वा,
मणिं वा, पईवं वा, जोइं वा,
पासओ काउं परिकड्ढेमाणे परिकड्ढेमाणे गच्छिज्जा,
से त्तं पासओ अंतगयं।
से त्तं अंतगयं।
से किं तं मज्झगयं ?
मज्झगयं—से जहानामए केइ पुरिसे,
उक्कं वा, चडुलियं वा, अलायं वा,
मणिं वा, पईवं वा, जोइं वा,
मत्थए काउं समुव्वहमाणे समुव्वहमाणे गच्छिज्जा,
से त्तं मज्झगयं।
अंतगयस्स य मज्झगयस्स य को पइविसेसो ?
पुरओ अंतगएणं ओहिनाणेणं पुरओ चेव
संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ, पासइ,
मग्गओ अंतगएणं ओहिनाणेणं मग्गओ चेव
संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ, पासइ,
पासओ अंतगएणं ओहिनाणेणं पासओ चेव
संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि-वा जोयणाइं जाणइ, पासइ,
मज्झगएणं ओहिनाणेणं सव्वओ समंता
संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ, पासइ,
से त्तं आणुगामियं ओहिनाणं ॥ १० ॥

सुत्तं ११ से किं तं अणाणुगामियं ओहिनाणं ?

अणाणुगामियं ओहिनाणं—
से जहानामए केइ पुरिसे एगं महंतं जोइट्ठाणं काउं
तस्सेव जोइट्ठाणस्स परिपेरंतेहिं,
परिघोलेमाणे परिघोलेमाणे तमेव जोइट्ठाणं पासइ,
अन्नत्थगए न जाणइ, न पासइ,
एवामेव अणाणुगामियं ओहिनाणं जत्थेव समुप्पज्जइ
तत्थेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा
संवद्धाणि वा असंवद्धाणि वा,
जोयणाइं जाणइ, पासइ,
अन्नत्थगए (न जाणइ) न पासइ।
से त्तं अणाणुगामियं ओहिनाणं।

सुत्तं १२ से किं तं वड्ढमाणयं ओहिनाणं ?

वड्ढमाणयं ओहिनाणं—पसत्थेसु अज्झवसायट्ठाणेसु
वट्टमाणस्स वड्ढमाणचरित्तस्स
विसुज्झमाणस्स विसुज्झमाण-चरित्तस्स
सव्वओ समंता ओही वड्ढइ।

गाहा —जावइआ तिसमया-हारगस्स, सुहुमस्स पणगजीवस्स।
ओगाहणा जहन्ना, ओहिखित्तं जहन्नं तु ॥ १ ॥

सव्व-वहु-अगणिजीवा, निरंतरं जत्तियं भरिज्जंसु।
खित्तं सव्वदिसागं, परमोही खित्त निद्दिट्ठो ॥ २ ॥

अंगुलमावलियाणं, भागमसंखिज्ज दोसु संखिज्जा।
अंगुलमावलिअंतो, आवलिया अंगुलपुहुत्तं ॥ ३ ॥

हत्थंमि मुहुत्तंतो, दिवसंतो गाउअंमि बोद्धव्वो।
जोयण दिवसपुहुत्तं, पक्खंतो पन्नवीसाओ ॥ ४ ॥

भरहंमि अड्ढमासो, जंबुद्दिवंमि साहिओ मासो।
वासं च मणुयलोए, वासपुहुत्तं च रुयगंमि ॥ ५ ॥

संखिज्जंमि उ काले, दीवसमुद्दा वि हूंति संखिज्जा।
कालंमि असंखिज्जे, दीवसमुद्दा उ भइयव्वा ॥ ६ ॥

काले चउण्ह वुड्ढी, कालो भइअव्वु खित्तवुड्ढीए।
वुड्ढीए दव्वपज्जव, भइयव्वा खित्तकाला उ ॥ ७ ॥

सुहुमो य होइ कालो, तत्तो सुहुमयरं हवइ खित्तं।
अंगुलसेढीमित्ते ओसप्पिणिओ असंखिज्जा ॥ ८ ॥

से त्तं वड्ढमाणयं ओहिनाणं।

सुत्तं १३ से किं तं हीयमाणयं ओहिनाणं ?

हीयमाणयं ओहिनाणं---अप्पसत्थेहिं अज्झवसायट्ठाणेहिं
वट्टमाणस्स वट्टमाण चरित्तस्स,
संकिलिस्समाणस्स, संकिलिस्समाण-चरित्तस्स
सव्वओ समंता ओही परिहायइ,
से त्तं हीयमाणयं ओहिनाणं।

सुत्तं १४ से किं तं पडिवाइ ओहिनाणं ?

पडिवाइ-ओहिनाणं जहन्नेणं अंगुलस्स

असंखिज्जइ भागं वा, संखिज्जइ भागं वा वालग्गं वा, वालग्गपुहुत्तं वा, लिक्खं वा, लिक्खपुहुत्तं वा, जूयं वा, जूयपुहुत्तं वा, जवं वा, जवपुहुत्तं वा, अगुलं वा, अंगुलपुहुत्तं वा, पायं वा, पायपुहुत्तं वा, विहत्थि वा, विहत्थिपुहुत्तं वा, रयणि वा, रयणिपुहुत्तं वा,

कुच्छि वा, कुच्छिपुहुत्तं वा, धणुं वा, धणुपुहुत्तं वा, गाउयं वा, गाउयपुहुत्तं वा, जोयणं वा, जोयणपुहुत्तं वा, जोयणसयं वा, जोयणसयपुहुत्तं वा, जोयणसहस्सं वा, जोयणसहस्सपुहुत्तं वा, जोयणलक्खं वा, जोयणलक्खपुहुत्तं वा, जोयण-कोडिं वा, जोयण-कोडिपुहुत्तं वा, जोयण-कोडाकोडिं वा, जोयण-कोडाकोडिपुहुत्तं वा, जोयण-संखेज्जं वा, जोयण-संखेज्जपुहुत्तं वा, जोयण-असंखेज्जं वा, जोयण-असंखेज्जपुहुत्तं वा, उक्कोसेणं लोगं वा पासित्ताणं पडिवइज्जा, से त्तं पडिवाइ ओहिनाणं।

सुत्तं १५ से किं तं अपडिवाइ-ओहिनाणं ?

अपडिवाइ-ओहिनाणं-जेण अलोगस्स एगमवि-
आगास-पएसं जाणइ, पासइ, तेण परं अपडिवाइ-ओहिनाणं।
से त्तं अपडिवाइ-ओहिनाणं।

सुत्तं १६ तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं,

तं जहा—
दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ।

तत्थ दव्वओ णं ओहिनाणी—

जहन्नेणं अणंताइं रूविदव्वाइं जाणइ, पासइ,
उक्कोसेणं सव्वाइं रूविदव्वाइं जाणइ, पासइ।

खित्तओ णं ओहिनाणी—

जहन्नेण अंगुलस्स असंखिज्जइभागं जाणइ, पासइ,
उक्कोसेणं असंखिज्जाइं
अलोगे लोगप्पमाणमित्ताइं खंडाइं जाणइ, पासइ।

कालओ णं ओहिनाणी—

जहन्नेणं आवलियाए असंखिज्जइभागं जाणइ, पासइ,

उक्कोसेणं असंखिज्जाओ उस्सप्पिणीओ अवसप्पिणीओ
अईयमणागयं च कालं जाणइ, पासइ ।

भावओ णं ओहिनाणी—

जहन्नेणं अणंते भावे जाणइ, पासइ,
उक्कोसेण वि अणंते भावे जाणइ, पासइ,
सव्वभावाणमणंतभागं जाणइ, पासइ ।

गाहा—ओही भवपच्चइओ, गुणपच्चइओ य वण्णिओ दुविहो ।
तस्स य वहू विगप्पा, दव्वे खित्ते अ काले य ॥ ९ ॥

नेरइय-देव-तित्थंकरा य, ओहिस्सऽवाहिरा हुंति ।
पासंति सव्वओ खलु, सेसा देसेण पासंति ॥ १० ॥
से त्तं ओहिनाण-पच्चक्खं ।

सुत्तं १७ से किं तं मणपज्जवनाणं ?

मणपज्जवनाणे णं भंते !
किं मणुस्साणं उप्पज्जइ, अमणुस्साणं ?
गोयमा ! मणुस्साणं, नो अमणुस्साणं ।
जइ मणुस्साणं,
किं सम्मुच्छिम-मणुस्साणं, गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं ?

गोयमा ! नो संमुच्छिम-मणुस्साणं,
गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं उप्पज्जइ ।

जइ गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं,
किं कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं,
अकम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं,
अंतरदीवग गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं ?

गोयमा ! कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं

नो अकम्मभूमिय ,, ,,

नो अंतरदीवग ,, ,,

जइ कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं,

किं संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं,

असंखिज्ज ,, ,, ,, ,, ?

गोयमा ! संखिज्जवासाउय ,, ,, ,,

नो असंखिज्ज ,, ,, ,, ,,

जइ संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं,

किं पज्जत्तग संखेज्जवासाउय ,, ,, ,,

अपज्जत्तग ,, ,, ,, ,, ?

गोयमा ! पज्जत्तग ,, ,, ,, ,,

नो अपज्जत्तग ,, ,, ,, ,,

जइ पज्जत्तग संखेज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं

किं सम्मदिट्ठिपज्जत्तग ,, ,, ,, ,,

मिच्छदिट्ठि ,, ,, ,, ,, ,,

सम्मामिच्छदिट्ठि ,, ,, ,, ,, ,,

गोयमा !

सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं,

नो मिच्छदिट्ठि ,, ,, ,, ,, ,,

नो सम्म-मिच्छदिट्ठि ,, ,, ,, ,,

जइ सम्मदिट्ठिपज्जत्तग ,, ,, ,, ,,

किं संजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तग संखे० ,, ,, ,,

असंजय सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखिज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भ-वक्कंतियमणुस्साणं,

संजयासंजय ,, ,, ,, ,,

गोयमा ! संजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तग संखे० ,, ,,

नो असंजय ,, ,, ,, ,,

नो संजयासंजय ,, ,, ,, ,,

जइ संजय-सम्मदिट्ठिपज्जत्तग ,, ,, ,,

किं पमत्तसंजय ,, ,, ,, ,,

अपमत्तसंजय ,, ,, ,, ,,

गोयमा ! अपमत्तसंजय ,, ,, ,, ,,

नो पमत्तसंजय ,, ,, ,, ,,

जइ अपमत्तसंजय ,, ,, ,, ,,

किं इड्ढिपत्त अपमत्त ,, ,, ,, ,,

अणिड्ढीपत्त ,, ,, ,, ,, ,,

गोयमा ! इड्ढीपत्त ,, ,, ,, ,, ,,

णो अणिड्ढीपत्त ,, ,, ,, ,, ,,

मणपज्जवनाणं समुप्पज्जइ।

सुत्तं १८ तं च दुविहं उप्पज्जइ,

तं जहा—

१ उज्जुमई य, २ विउलमई य।

तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं,

तं जहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ।

तत्थ दव्वओ णं उज्जुमई अणंते अणंतपएसिए खंधे जाणइ, पासइ, तं चेव विउलमई अब्भहियतराए विउलतराए—

विसुद्धतराए, वितिमिरतराए जाणइ, पासइ।

खित्तओ णं उज्जुमई य जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए—
उवरिमहेट्ठिल्ले खुड्डगपयरे,
उड्ढं-जाव-जोइसस्स उवरिमतले,
तिरियं-जाव-अंतोमणुस्सखित्ते
अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु
पन्नरससु कम्मभूमिसु, तिसाए अकम्मभूमिसु
छप्पन्नाए अंतरदीवगेसु
सन्निपंचिंदियाणं पज्जत्तयाणं मणोगए भावे जाणइ, पासइ,

तं चेव विउलमई अड्ढाइज्जेहिं अंगुलेहिं अब्भहियतरं विउलतरं,
विसुद्धतरं वितिमिरतरागं खेत्तं जाणइ, पासइ।

कालओ णं उज्जुमई—
जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखिज्जयभागं
अतीयमणागयं वा कालं जाणइ, पासइ,

तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं, विउलतरागं
विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ, पासइ।

भावओ णं उज्जुमई अणंते भावे जाणइ, पासइ,
सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ, पासइ,

तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं विउलतरागं
विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ, पासइ।

गाहा—मणपज्जवनाणं पुण, जणमणपरिंचितिअत्थपागडणं।
माणुसखित्तनिवद्धं, गुणपच्चइअं चरित्त वओ॥ १॥

से त्तं मणपज्जवनाणं।

सु. १६ से किं तं केवलनाणं ?

केवलनाणं दुविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

(१) भवत्थकेवलनाणं च ।

(२) सिद्धकेवलनाणं च ।

से किं तं भवत्थकेवलनाणं ?

भवत्थकेवलनाणं दुविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

(१) सजोगिभवत्थकेवलनाणं च,

(२) अजोगिभवत्थकेवलनाणं च ।

से किं तं सजोगिभवत्थकेवलनाणं ?

सजोगिभवत्थकेवलनाणं दुविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

(१) पढमसमय-सजोगि-भवत्थकेवलनाणं च

(२) अपढमसमय-सजोगि-भवत्थकेवलनाणं च ।

अहवा—

(१) चरमसमय-सजोगी-भवत्थकेवलनाणं च

(२) अचरमसमय-सजोगी-भवत्थकेवलनाणं च ।

से त्तं सजोगिभवत्थकेवलनाणं ।

से किं तं अजोगिभवत्थकेवलनाणं ?

अजोगिभवत्थकेवलनाणं दुविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

(१) पढमसमय-अजोगि-भवत्थकेवलनाणं च

(२) अपढमसमय-अजोगि-भवत्थकेवलनाणं च ।

अहवा—

(१) चरमसमय-अजोगि-भवत्थकेवलनाणं च

(२) अचरमसमय-अजोगि-भवत्थकेवलनाणं च ।

से त्तं अजोगिभवत्थकेवलनाणं ।

से त्तं भवत्थकेवलनाणं ।

सुत्तं २० से किं तं सिद्धकेवलनाणं ?

सिद्धकेवलनाणं दुविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

(१) अणंतरसिद्धकेवलनाणं च

(२) परंपरसिद्धकेवलनाणं च ।

सुत्तं २१ से किं तं अणंतरसिद्धकेवलनाणं ?

अणंतरसिद्धकेवलनाणं पण्णरसविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

१ तित्थसिद्धा २ अतित्थसिद्धा

३ तित्थयरसिद्धा ४ अतित्थयरसिद्धा

५ सयंबुद्धसिद्धा ६ पत्तेयबुद्धसिद्धा

७ बुद्धबोहियसिद्धा

८ इत्थिलिंगसिद्धा ९ पुरिसलिंगसिद्धा

१० नपुंसकलिंगसिद्धा

११ सलिंगसिद्धा १२ अन्नलिंगसिद्धा

१३ गिहिलिंगसिद्धा

१४ एगसिद्धा १५ अणेगसिद्धा

से त्तं अणंतरसिद्ध-केवलनाणं ?

सुत्तं २२ से किं तं परंपरसिद्ध केवलनाणं ?

परंपरसिद्ध केवलनाणं अणेगविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
अपढमसमयसिद्धा, दुसमयसिद्धा,
तिसमयसिद्धा, चउसमयसिद्धा जाव दससमयसिद्धा
संखिज्ज समयसिद्धा, असंखिज्ज समयसिद्धा,
अणंत समयसिद्धा,
से त्तं परंपरसिद्ध केवलनाणं ।
से त्तं सिद्धकेवलनाणं ।
तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं,
तं जहा—

दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ ।
तत्थ दव्वओ णं केवलनाणी सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ ।
खित्तओ णं केवलनाणी सव्वं खित्तं जाणइ पासइ ।
कालओ णं केवलनाणी सव्वं कालं जाणइ पासइ ।
भावओ णं केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ ।

गाहा—अहसव्वदव्व परिणाम-भावविण्णत्ति कारणमणंतं ।
सासयमप्पडिवाई, एगविहं केवलनाणं ।। १ ।।

सुत्तं २३ गाहा—केवलनाणेणऽत्थे, नाउं जे तत्थ पण्णवणजोगे ।
ते भासइ तित्थयरो, वइजोगसुअं हवइ सेसं ।। २ ।।

से त्तं केवलनाणं ।
से त्तं नोइंदियपच्चक्खं ।
से त्तं पच्चक्खनाणं ।

सुत्तं २४ से किं तं परुक्खनाणं ?

परुक्खनाणं दुविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

(१) आभिणिवोहियनाणपरुक्खं च

(२) सुयनाणपरुक्खं च ।

जत्थ आभिणिवोहियनाणं तत्थ सुयनाणं,

जत्थ सुयनाणं तत्थ आभिणिवोहियनाणं ।

दो वि एयाइं अण्णमण्णमणुगयाइं,

तहवि पुण इत्थ आयरिआ नाणत्तं पण्णविंति—

अभिणिवुज्झइ त्ति आभिणिवोहियनाणं,

सुणेइ त्ति सुयं,

मइपुव्वं जेण सुअं, न मई सुयपुव्विया ।

सुत्त २५ अविसेसिया मई—मइनाणं च मइअण्णाणं च ।

विसेसिया—

सम्मदिट्ठिस्स मई मइनाणं,

मिच्छादिट्ठिस्स मई मइ-अन्नाणं ।

अविसेसियं सुयं—सुयनाणं च सुयअन्नाणं च ।

विसेसिअं सुअं—

सम्मदिट्ठिस्स सुअं सुयनाणं,

मिच्छदिट्ठिस्स सुअं सुय-अन्नाणं ।

सुत्तं २६ से किं तं आभिणिवोहियनाणं ?

आभिणिवोहियनाणं दुविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

१ सुयनिस्सियं च, २ असुयनिस्सियं च ।

से किं तं असुयनिस्सियं ?

असुयनिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तं,

तं जहा—

गाहा—उप्पत्तिया वेणइआ, कम्मिया परिणामिया ।
बुद्धी चउव्विहा वुत्ता, पंचमा नोवलब्भइ ॥ १ ॥

पुव्वमदिट्ठमस्सुय, मवेइयं तक्खणविसुद्धगहियत्था ।
अव्वाहयफलजोगा, बुद्धी उप्पत्तिया नाम ॥ १ ॥

भरहसिल मिढ कुक्कुड तिल वालुय हत्थि अगड वणसंडे ।
पायस अइआ पत्ते, खाडहिला पंचपियरो य ॥ २ ॥

भरहसिल पणिय रुक्खे, खुड्डग पड सरड काय उच्चारे ।
गय घयण गोल खंभे, खुड्डग मग्गि त्थि पइ पुत्ते ॥ ३ ॥

महुसित्थ मुद्दि अंके, नाणए भिक्खु चेडगनिहाणे ।
सिक्खा य अत्थसत्थे, इच्छा य महं सयसहस्से ॥ ४ ॥

भरनित्थरणसमत्था, तिव्वग्ग-सुत्तत्थ-गहिय-पेयाला ।
उभओ लोग फलवई, विणयसमुत्था हवइ बुद्धी ॥ १ ॥

निमित्तं अत्थसत्थे अ लेहे गणिए अ कूव अस्से य ।
गद्दभ लक्खण गंठी अगए रहिए य गणिया य ॥ २ ॥

सीआ साडो दीहं च तणं, अवसव्वयं च कुंचस्स ।
निव्वोदए य गोणे, घोडग-पडणं च रुक्खाओ ॥ ३ ॥

उवओग-दिट्ठ सारा, कम्म-पसंग-परिघोलण-विसाला ।
साहुक्कार फलवई कम्मसमुत्था हवइ बुद्धी ॥ १ ॥

हेरण्णिए करिसए, कोलिअ डोवे य मुत्ति घय पवए ।
तुन्नाए, वड्ढई पूयइ य घड चित्तकारे य ॥ २ ॥

अणुमाण-हेउ-दिट्ठंत-साहिया वय-विवाग-परिणामा।
हिय निस्सेयसफलवई, बुद्धी परिणामिया नाम॥ १ ॥

अभए सिट्ठि कुमारे देवी उदिओदए हवइ राया।
साहू य नंदिसेणे धणदत्ते सावग अमच्चे॥ २ ॥

खमए अमच्चपुत्ते चाणक्के चेव थूलभद्दे य।
नासिक्क सुंदरि नंदे वइरे परिणामिआ बुद्धीए॥ ३ ॥

चलणाहण आमंडे मणी य सप्पे य खग्गी थूभिंदे।
पारिणामिय-बुद्धीए एवमाई उदाहरणा॥

से तं अस्सुयनिस्सियं।
से किं तं सुयनिस्सियं?
सुयनिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तं,
तं जहा—
उग्गहे, ईहा, अवाओ, धारणा।

सुत्तं २७ से किं तं उग्गहे?
उग्गहे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
अत्थुग्गहे य वंजणुग्गहे य।

सुत्तं २८ से किं तं वंजणुग्गहे?
वंजणुग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते
तं जहा—
(१) सोइंदिय वंजणुग्गहे (२) घाणिंदिय वंजणुग्गहे
(३) जिब्भिंदिय वंजणुग्गहे (४) फासिंदिय वंजणुग्गहे।
से त्तं वंजणुग्गहे।

सत्तं २९ से किं तं अत्थुग्गहे ?

अत्थुग्गहे छव्विहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ सोइंदिय-अत्थुग्गहे

२ चक्खिंदिय-अत्थुग्गहे

३ घाणिंदिय-अत्थुग्गहे

४ जिब्भिंदिय-अत्थुग्गहे

५ फासिंदिय-अत्थुग्गहे

६ नोइंदिय अत्थुग्गहे ।

३० तस्स णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा

पंच नामधिज्जा भवंति,

तं जहा—

१ ओगेण्हणया

२ उवधारणया

३ सवणया

४ अवलंबणया

५ मेहा ।

से त्तं उग्गहे ।

३१ से किं तं ईहा ?

ईहा छव्विहा पण्णत्ता,

तं जहा—

(१) सोइंदिय-ईहा (२) चक्खिंदिय-ईहा

(३) घाणिंदिय-ईहा (४) जिब्भिंदिय-ईहा

(५) फासिंदिय-ईहा (६) नो इंदिय-ईहा ।

तीसे णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा, नाणावंजणा,
पंच नामधिज्जा भवंति,
तं जहा—
१ आभोगणया २ मग्गणया
३ गवेसणया ४ चिंता ५ विमंसा।
से त्तं ईहा।

सुत्तं ३२ से किं तं अवाए?

अवाए छव्विहे पण्णत्ते,
तं जहा—
(१) सोइंदिय-अवाए (२) चक्खिदिय-अवाए
(३) घाणिंदिय-अवाए (४) जिब्भिदिय-अवाए
(५) फासिंदिय-अवाए (६) नो-इंदिय-अवाए।
तस्सणं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा
पंचनामधिज्जा भवंति,
तं जहा—
१ आउट्टणया २ पच्चाउट्टणया
३ अवाए ४ बुद्धी ५ विण्णाणे।
से त्तं अवाए।

सुत्तं ३३ से किं तं धारणा?

धारणा छव्विहा पण्णत्ता,
तं जहा—
(१) सोइंदिय-धारणा (३) चक्खिदिय-धारणा
(३) घाणिंदिय-धारणा (४) जिब्भिदिय-धारणा
(५) फासिंदिय-धारणा (६) नो-इंदिय-धारणा।

नो एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति,
नो दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति,
जाव—नो दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति,
नो संखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति
असंखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति।
से त्तं पडिवोहगदिट्ठन्ते णं।
से किं तं मल्लगदिट्ठन्ते णं?
मल्लगदिट्ठन्ते णं—से जहानामए
केइ पुरिसे आवागसीसाओ मल्लगं गहाय
तत्थेगं उदगविंदुं पक्खेविज्जा से नट्ठे,
अण्णेवि पक्खित्ते सेऽवि नट्ठे,
एवं पक्खिप्पमाणेसु पक्खिप्पमाणेसु
होही से उदगविंदू, जे णं तं मल्लगं रावेहिइ त्ति,
होही से उदगविंदू, जे णं तंसि मल्लगंसि ठाहित्ति,
होही से उदगविंदू, जे णं तं मल्लगं भरिहित्ति,
होही से उदगविंदू, जे णं तं मल्लगं पवाहेहिति।
एवामेव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं
अणंतेहिं पुग्गलेहिं जाहे तं वंजणं पूरियं होइ
ताहे 'हुं' ति करेइ, नो चेव णं जाणइ "के एस सद्दाइ"?
तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ "अमुगे एस सद्दाइ"।
तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ।
तओ धारणं पविसइ,
तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं।
से जहानामए केइ पुरिसे

अव्वत्तं सद्दं सुणिज्जा, तेणं सद्दो त्ति उग्गहिए
नो चेव णं जाणइ, 'के वेस सद्दाइ ?'
तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ 'अमुगे एससद्दे ।'
तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ ।
तओ धारणं पविसइ,
तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं ।
से जहानामए केइ पुरिसे—
अव्वत्तं रूवं पासिज्जा, तेणं रूवे त्ति उग्गहिए,
नो चेव णं जाणइ 'के वेस रूव त्ति' ?
तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ 'अमुगे एस रूवे' ।
तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ ।
तओ धारणं पविसइ,
तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं ।
से जहानामए केइ पुरिसे
अवत्तं गंधं अग्घाइज्जा, तेणं गंधं त्ति उग्गहिए
नो चेव णं जाणइ 'के वेस गंधे त्ति' ?
तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ "अमुगे एस गंधे" ।
तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ ।
तओ धारणं पविसइ,
तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं ।
से जहानामए केइ पुरिसे—
अव्वत्तं रसं आसाइज्जा, तेणं रसो त्ति उग्गहिए,
नो चेव णं जाणइ "के वेस रसो त्ति" ?
तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ "अमुगे एस रसे" ।
तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ ।

तओ धारणं पविसइ,
तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं ।
से जहानामए केइ पुरिसे—
अव्वत्तं फासं पडिसंवेइज्जा, तेणं फासेत्ति उग्गहिए
नो चेव णं जाणइ "के वेस फासो त्ति ?"
तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ "अमुगे एस फासे।"
तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ
तओ धारणं पविसइ,
तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं ।
से जहानामए केइ पुरिसे—
अव्वत्तं सुमिणं पासिज्जा, तेणं सुमिणो त्ति उग्गहिए,
नो चेव णं जाणइ 'के वेस सुमिणो त्ति ?'
तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ 'अमुगे एस सुमिणे।'
तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ ।
तओ धारणं पविसइ,
तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं ।
से त्तं मल्लगदिट्ठन्ते णं ।

सुत्तं ३६ तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं,

तं जहा—
१ दव्वओ, २ खित्तओ, ३ कालओ, ४ भावओ ।
तत्थ दव्वओ णं आभिणिवोहियनाणी आएसेणं
सव्वाइं दव्वाइं जाणइ न पासइ ।
खेत्तओ णं आभिणिवोहियनाणी आएसेणं सव्वं
खेत्तं जाणइ, न पासइ ।
कालओ णं आभिणिवोहियनाणी आएसेणं सव्वं

काल जाणइ, न पासइ ।

भावओ णं आभिणिवोहियनाणी आएसेणं

सव्वे भावे जाणइ, न पासइ ।

गाहा—उग्गह ईहाऽवाओ य, धारणा एव हुंति चत्तारि ।
आभिणिवोहियनाणस्स, भेयवत्थू समासेणं ॥ १ ॥

अत्थाणं उग्गहणंमि, उग्गहो तह वियालणे ईहा ।
ववसायम्मि अवाओ, धरणं पुण धारणं विंति ॥ २ ॥

उग्गह इक्कं समयं, ईहावाया मुहुत्तमद्धं तु ।
कालमसंखं संखं च, धारणा होइ नायव्वा ॥ ३ ॥

पुट्ठं सुणेइ सद्दं, रूवं पुण पासइ अपुट्ठं तु ।
गंधं रसं च फासं च, बद्धपुट्ठं वियागरे ॥ ४ ॥

भासासमसेढीओ, सद्दं जं सुणइ मीसियं सुणइ ।
वीसेढी पुण सद्दं, सुणेइ नियमा पराघाए ॥ ५ ॥

ईहा अपोह वीमंसा, मग्गणा य गवेसणा ।
सन्ना सई मई पन्ना, सव्वं आभिणिवोहियं ॥ ६ ॥

से त्तं आभिणिवोहियनाण-परोक्खं ।

से त्तं मइनाणं ।

श्रुतज्ञानम्—

सुत्तं ३७ से किं तं सुयनाणपरोक्खं ?

सुयनाणपरोक्खं चोद्दसविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

१ अक्खरसुयं २ अणक्खरसुयं,

३ सण्णिसुयं, ४ असण्णिसुयं,
५ सम्मसुयं, ६ मिच्छासुयं,
७ साइयं, ८ अणाइयं,
९ सपज्जवसियं, १० अपज्जवसियं,
११ गमियं, १२ अगमियं,
१३ अंगपविट्ठं, १४ अणंगपविट्ठं ।

सुत्तं ३८ (१) से किं तं अक्खरसुयं ?
अक्खरसुयं तिविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ सन्नक्खरं, २ वंजणक्खरं, ३ लद्धिअक्खरं ।
(१) से किं तं सन्नक्खरं ?
सन्नक्खरं-अक्खरस्स संठाणागिई ।
से त्तं सन्नक्खरं ।
(२) से किं तं वंजणक्खरं ?
वंजणक्खरं-अक्खरस्स वंजणाभिलावा ।
से त्तं वंजणक्खरं ।
(३) से किं तं लद्धि-अक्खरं ?
लद्धिअक्खरं-अक्खर-लद्धियस्स लद्धि-अक्खरं समुप्पज्जइ,
तं जहा—
१ सोइंदिय-लद्धि-अक्खरं,
२ चक्खिंदिय-लद्धि-अक्खरं,
३ घाणिंदिय-लद्धि-अक्खरं,
४ रसणिंदिय-लद्धि-अक्खरं,
५ फासिंदिय-लद्धि-अक्खरं,
६ नोइंदिय-लद्धि-अक्खरं ।

से त्तं लद्धि-अक्खरं।

से त्तं अक्खरसुयं।

(२) से किं तं अणक्खरसुयं ?

अणक्खरसुयं अणेगविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

गाहा—ऊससियं नीससियं, निच्छूढं खासियं च छीयं च।
निस्सिंघियमणुसारं, अणक्खरं छेलियाईयं ॥ १ ॥

से त्तं अणक्खरसुयं।

सु ३९ (३) से किं तं सण्णिसुयं ?

सण्णिसुयं तिविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

१ कालिओवएसेणं, २ हेऊवएसेणं, ३ दिट्ठिवाओवएसेणं।

(१) से किं तं कालिओवएसेणं ?

कालिओवएसेणं-जस्स णं अत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा, चिंता, वीमंसा, से णं सण्णी त्ति लब्भइ,

जस्स णं नत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा, चिंता, वीमंसा, से णं असण्णी त्ति लब्भइ।

से त्त कालिओवएसेणं।

(२) से किं तं हेऊवएसेणं ?

हेउवएसेणं—जस्स णं अत्थि अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती से णं सण्णी त्ति लब्भइ,

जस्स णं णत्थि अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती, से णं असण्णी त्ति लब्भइ।

से त्तं हेऊवएसेणं।

(३-४) से किं तं दिट्ठिवाओवएसेणं ?

दिट्ठिवाओवएसेणं—सण्णिसुयस्स खओवसमेणं--
सण्णी लब्भइ,
असण्णिसुयस्स खओवसमेणं-
असण्णी लब्भइ ।

से त्तं दिट्ठिवाओवएसेणं।

से त्तं सण्णिसुयं; से त्तं असण्णिसुयं ।

सुत्तं ४० (५) से किं त सम्मसुयं ?

सम्मसुयं—जं इमं अरिहंतेहिं भगवंतेहिं
उप्पण्णनाणदंसणधरेहिं,
तेलुक्कनिरिक्खमहियपूइएहिं
तीय-पडुप्पण्ण-मणागय जाणएहिं
सव्वण्णूहिं सव्वदरिसीहिं
पणीयं दुवालसंगं गणिपडिगं,

तं जहा—

१ आयारो २ सूयगडो ३ ठाणं
४ समवाओ ५ विवाहपण्णत्ती ६ नायाधम्मकहाओ
७ उवसगदसाओ ८ अंतगडदसाओ ९ अणुत्तरोववाइयदसाओ
१० पण्हावागरणं ११ विवागसुयं १२ दिट्ठिवाओ ।

इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं—
चोद्दस पुव्विस्स सम्मसुयं,
अभिण्णदसपुव्विस्स सम्मसुयं,
तेण परं भिण्णेसु भयणा ।
से त्तं सम्मसुयं ।

सुत्तं ४१ (६) से किं तं मिच्छासुयं ?

मिच्छासुयं—जं इमं अण्णाणिएहिं मिच्छादिट्ठिएहिं-
सच्छंदबुद्धि-मइविगप्पियं,

तं जहा—
भारहं, रामायणं, भीमासुरुक्खं,
कोडिल्लयं, सगडभद्दियाओ, खोडमुहं
कप्पासियं, नागसुहुमं, कणगसत्तरी,
वइसेसियं, वुद्धवयणं, तेरासियं,
काविलियं, लोगाययं, सट्ठितंतं,
माढरं, पुराणं, वागरणं,
भागवयं, पायंजलि, पुस्सदेवयं,
लेहं, गणियं, सउणरुयं, नाडयाइं,
अहवा बावत्तरि कलाओ,
चत्तारि य वेया संगोवंगा,

एयाइं मिच्छादिट्ठिस्स मिच्छत्तपरिग्गहियाइं मिच्छासुयं ।

एयाइं चेव सम्मदिट्ठिस्स सम्मत्तपरिग्गहियाइं सम्मसुयं ।

अहवा मिच्छदिट्ठिस्स वि एयाइं चेव सम्मसुयं ।

कम्हा ?
सम्मत्तहेउत्तणओ
जम्हा ते मिच्छदिट्ठिआ
तेहिं चेव समएहिं चोइया समाणा
केइ सपक्खदिट्ठीओ चयंति ।
से त्तं मिच्छासुयं ।

सुत्तं ४२ (७-८) से किं तं साइयं सपज्जवसियं ?

(९-१०) अणाइयं अपज्जवसियं च ?

इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं
वुच्छित्तिनयट्ठयाए साइयं सपज्जवसियं,
अव्वुच्छित्तिनयट्ठयाए अणाइयं अपज्जवसियं ।
तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं,
तं जहा—
दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ
तत्थ दव्वओ णं सम्मसुयं एगं पुरिसं पडुच्च—
साइयं सपज्जवसियं,
बहवे पुरिसे य पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं ।
खेत्तओ णं पंचभरहाइं, पंचएरवयाइं पडुच्च—
साइयं सपज्जवसियं,
पंचमहाविदेहाइं पडुच्च—
अणाइयं अपज्जवसियं ।
कालओ णं उस्सप्पिणिं ओसप्पिणिं च पडुच्च—
साइयं सपज्जवसियं,
नो उस्सप्पिणिं नो ओसप्पिणिं च पडुच्च—
अणाइयं अपज्जवसियं ।
भावओ णं जे जया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति
तया ते भावे पडुच्च साइयं सपज्जवसियं,
खाओवसमियं पुण भावं पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं ।
अहवा भवसिद्धियस्स सुयं साइयं सपज्जवसियं च,
अभवसिद्धियस्स सुयं अणाइयं अपज्जवसियं च ।

सव्वागासपएसग्गं सव्वागासपएसेहिं
अणंतगुणियं पज्जवक्खरं निप्फज्जइ,
सव्वजीवाणं पि य णं—
अक्खरस्स अणंतभागो निच्चुग्घाडिओ चिट्ठइ।
जइ पुण सो वि आवरिज्जा—
तेण जीवो अजीवत्तं पाविज्जा—
'सुट्ठुवि मेहसमुदए, होइपभा चंदसूराणं'
से त्तं साइयं सपज्जवसियं।
से त्तं अणाइयं अपज्जवसियं।

सुत्तं ४३ (११) से किं तं गमियं ?
गमियं दिट्ठिवाओ।
(१२) से किं तं अगमियं ?
अगमियं कालियं सुयं।
से त्तं गमियं, से त्तं अगमियं।
अहवा तं समासओ दुविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
(१३-१४) १ अंगपविट्ठं २ अंगबाहिरं च।
से किं तं अंगबाहिरं ?
अंगबाहिरं दुविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
१ आवस्सयं च २ आवस्सयवइरित्तं च।
(१) से किं तं आवस्सयं ?
आवस्सयं छव्विहं पण्णत्तं,
तं जहा—

१ सामाइयं १ चउवीसत्थओ ३ वंदणयं
४ पडिक्कमणं ५ काउस्सग्गो ६ पच्चक्खाणं ।
से त्तं आवस्सयं ।
(२) से किं तं आवस्सयवइरित्तं ?
आवस्सयवइरित्तं दुविहं पण्णत्तं,

तं जहा—
१ कालियं च २ उक्कालियं च
से किं तं उक्कालियं ?
उक्कालियं अणेगविहं पण्णत्तं,
तं जहा—
दसवेआलियं, कप्पियाकप्पियं,
चुल्लकप्पसुयं, महाकप्पसुयं
उववाइयं, रायपसेणियं, जीवाभिगमो,
पण्णवणा, महापण्णवणा, पमायप्पमायं,
नंदी, अणुओगदाराइं, देविंदत्थओ,
तंदुलवेयालियं, चंदाविज्जयं, सूरपण्णत्ती,
पोरिसिमंडलं, मंडलपवेसो, विज्जाचरणविणिच्छओ,
गणिविज्जा, झाणविभत्ती, मरणविभत्ती,
आयविसोही, वीयरागसुयं, संलेहणासुयं,
विहारकप्पो, चरणविही, आउरपच्चक्खाणं,
महापच्चक्खाणं, एवमाइ ।
से त्तं उक्कालियं ।
से किं तं कालियं ?
कालियं अणेगविहं पण्णत्तं,
तं जहा—

उत्तरज्झयणाइं, दसाओ, कप्पो, ववहारो,
निसीहं, महानिसीहं, इसिभासियाइं,
जंबूदीवपन्नत्ती, दीवसागरपन्नत्ती, चंदपन्नत्ती,
खुड्डियाविमाणविभत्ती, महल्लियाविमाणविभत्ती,
अंगचूलिया वग्गचूलिया, विवाहचूलिया,
अरूणोववाए, वरुणोववाए, गरुलोववाए,
धरणोववाए, वेसमणोववाए
वेलंधरोववाए, देविंदोववाए,
उट्ठाणसुयं, समुट्ठाणसुयं,
नागपरियावणियाओ, निरयावलियाओ,
कप्पियाओ, कप्पवडंसियाओ,
पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ, वण्हीदसाओ,
आसीविस-भावणाणं, दिट्ठिविस-भावणाणं,
सुमिण-भावणाणं, महासुमिण-भावणाणं,
तेयग्गी निसग्गाणं
एवमाइयाइं चउरासीइ पइन्नगसहस्साइं—
भगवओ अरहओ उसहसाम्मिस्स आइतित्थयरस्स ।
तहा संखिज्जाइं पइन्नगसहस्साइं-मज्झिमगाणं जिणवराणं ।
चोद्दसपन्नइगसहस्साइं भगवओ वद्धमाणसामिस्स,

अहवा जस्स जत्तिया सीसा

उप्पत्तिआए, वेणइयाइ, कम्मयाए, पारिणामियाए
चउव्विहाए बुद्धीए उववेया,
तस्स तत्तियाइं पइण्णगसहस्साइं ।
पत्तेअबुद्धा वि तत्तिया चेव ।
से त्तं कालियं ।। से त्तं आवस्सयवइरित्तं ।
से त्तं अणंगपविट्ठं ।

सुत्तं ४४ से किं तं अंगपविट्ठं ?

अंगपविट्ठं दुवालसविहं पण्णत्तं
तं जहा—
१ आयारो २ सूयगडो ३ ठाणं
४ समवाओ ५ विवाहपन्नत्ती ६ णायाधम्मकहाओ
७ उवासगदसाओ ८ अंतगडदसाओ ९ अणुत्तरोववाइयदसाओ
१० पण्हावागरणाइं ११ विवागसुयं १२ दिट्ठिवाओ ।

सुत्तं ४५ से किं तं आयारे ?

आयारे णं समणाणं निग्गंथाणं
आयार-गोयर-विणय-वेणइय-सिक्खा—
भासा-अभासा-चरण-करण-जाया-माया—
वित्तिओ आघविज्जंति ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्तं,
तं जहा—
१ नाणायारे २ दंसणायारे ३ चरित्तायारे
४ तवायारे ५ वीरियायारे ।
आयारे णं परित्ता वायणा,
संखेज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा,
संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखिज्जाओ पडिवत्तीओ,
से अंगट्ठयाए पढमे अंगे,
दो सुयक्खंधा, पणवीसं अज्झयणा,
पंचासीई उद्देसणकाला, पंचासीई समुद्देसणकाला,
अट्ठारसपयसहस्साइं पयग्गेणं,

संखिज्जा अक्खरा, अणंतगमा, अणंतापज्जवा,
परित्ता तसा. अणंता थावरा,
सासय-कड-निवद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से त्तं आयारे ।

सुत्तं ४६ से किं तं सूयगडे ?
सूयगडे णं लोए सूइज्जइ,
अलोए सूइज्जइ,
लोयालोए सूइज्जइ,
जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जंति, जीवाजीवा सूइज्जंति
ससमए सूइज्जइ, परसमए सूइज्जइ, ससमय-परसमए सूइज्जइ
सूयगडे णं असीयस्स किरियावाइसयस्स,
चउरासीइए अकिरियावाईणं
सत्तट्ठीए अण्णाणि-आवाईणं—
वत्तीसाए वेणइज्ज-वाइणं—
तिण्हं तेसट्ठाणं पासंडियसयाणं
वूहं किच्चा ससमए ठाविज्जइ ।
सूयगडेणं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा,
संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ-निजुत्तीओ,
(संखिज्जाओ संगहणीओ) संखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।
से णं अंगट्ठयाए विईए अंगे,
दो सुयक्खंधा, तेवीसं अज्झयणा,

तेत्तीसं उद्देसणकाला, तेत्तीसं समुद्देसणकाला,
छत्तीसं पयसहस्साणि पयग्गेणं,
संखिज्जा अक्खरा, अणंतागमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से त्तं सूयगडे ।

सुत्तं ४७ से किं तं ठाणे ?
ठाणे णं जीवा ठाविज्जंति,
अजीवा ठाविज्जंति,
जीवाजीवा ठाविज्जंति,
ससमए ठाविज्जइ,
परसमए ठाविज्जइ,
ससमय-परसमए ठाविज्जइ,
लोए ठाविज्जइ, अलोए ठाविज्जइ, लोयालोए ठाविज्जइ ।
ठाणे णं टंका, कूडा, सेला, सिहरिणो, पब्भारा,
कुंडाइं, गुहाओ, आगरा, दहा, नईओ आघविज्जंति ।
ठाणे णं एगाइयाए एगुत्तीरयाए वुड्ढीए
दसट्ठाणग विवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ ।
ठाणे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा,
संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा; संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ ।

संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।
से णं अंगट्ठयाए चउत्थे अंगे,
एगे सुयक्खंधे, एगे अज्झयणे,
एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले,
एगे चोयाले सयसहस्से पयग्गेणं,
संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से त्तं समवाए ।

सुत्तं ४६ से किं तं विवाहे ?
विवाहेणं जीवा विआहिज्जंति.
अजीवा विआहिज्जंति,
जीवाजीवा विआहिज्जंति,
ससमए विआहिज्जइ,
परसमए विआहिज्जइ,
ससमय-परसमए विआहिज्जइ,
लोए विआहिज्जइ, अलोए विआहिज्जइ,
लोयालोए विआहिज्जइ,
विवाहस्स णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा,
संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।

से णं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे,
एगे सुयक्खंधे, एगे साइरेगे अज्झयणसए,
दस उद्देसगसहस्साइं, दससमुद्देसगसहस्साइं,
छत्तीसं वागरण-सहस्साइं,
दो लक्खा अट्ठासीइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखिज्जा अक्खरा, अणंतागमा, अणंतापज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-काड-निवद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति,
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से त्तं विवाहे ।

सुत्तं ५० से किं तं नायाधम्मकहाओ ?
नायाधम्मकहासु णं
नायाणं नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं,
रायाणो, अम्मापियरो,
धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा,
भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परिआया,
सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, संलेहणाओ,
भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं,
सुकुलपच्चाइयाओ, पुणवोहिलाभा, अंतकिरियाओ
य आघविज्जंति ।
दस धम्मकहाणं वग्गा,
तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं,

एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयासयाइं,
एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइय—
उवक्खाइयासयाइं,
एवामेव सपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाओ कहाणगकोडीओ—
हवंति त्ति समक्खायं ।
णायाधम्मकहाणं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा,
संखिज्जा वेढा, संखिज्जासिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।
से णं अगट्ठयाए छट्ठे अंगे, दो सुयक्खंधा
एगूणवीसं अज्झयणा, एगूणवीसं उद्देसणकाला,
एगूणवीसं समुद्देसणकाला,
संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-कड-निवद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति,
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से तं णायाधम्मकहाओ ।

सुत्तं ५१ से किं तं उवासगदसाओ ?
उवासगदसासु णं समणोवासयाणं—
नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं,
रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ,

इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा,
भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परिआया,
सुयपरिग्गहा, तओवहाणाइं,
सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववास-सपडिवज्जणया
पडिमाओ, उवसग्गा, संलेहणाओ,
भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं, देवलोगमणाइं
सुकुलपच्चाइआओ, पुणवोहिलाभा,
अंतकिरियाओ य आघविज्जंति।
उवासगदसाणं परित्ता वायणा,
संखेज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा,
संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखिज्जाओ संगहणीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ,
से णं अंगट्ठयाए सत्तमे अंगे,
एगे सुयक्खंधे, पणवीसं अज्झयणा,
दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला,
संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखिज्जा अक्खरा, अणंतागमा, अणंतापज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ।
से त्तं उवासगदसाओ।

सुत्तं ५२ से किं तं अंतगडदसाओ ?

अंतगडदसासु णं अंतगडाणं—

नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं,

रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ,

इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा,

भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परिआया,

सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, संलेहणाओ,

भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं,

अंतकिरियाओ य आघविज्जंति।

अंतगडदसासु णं परित्ता वायणा,

संखिज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा, वेढा,

संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निजुत्तीओ,

संखिज्जाओ संगहणीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ।

से णं अंगट्ठयाए अट्ठमे अंगे,

एगे सुयक्खंधा, अट्ठवग्गा,

अट्ठ उद्देसणकाला, अट्ठ समुद्देसणकाला,

संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,

संखिज्जा अक्खरा, अणंतागमा, अणता पज्जवा,

परित्ता तसा, अणंता थावरा,

सासय-कड-निवद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा

आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति

दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति।

से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,

एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ।

से त्तं अंतगडदसाओ।

सुत्तं ५३ से किं तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ?

अणुत्तरोववाइयदसासु णं अणुत्तरोववाइयाणं-
नगराइं उज्जाणाइं, चेइयाइं वणसंडाइं, समोसरणाइं,
रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ,
इहलोइय परलोइया इड्ढिविसेसा,
भोगपरिच्चागा, पव्वज्जाओ, परिआया,
सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, पडिमाओ,
उवसग्गा; संलेहणाओ,
भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं,
अणुत्तरोववाइयत्ते उववत्ती, सुकुलपच्चायाइओ,
पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ य आघविज्जंति ।
अणुत्तरोववाइयदसासु णं परित्ता वायणा,
संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा,
संखेज्जा सिलोगा; संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ ।
से णं अंगट्ठयाए नवमे अंगे,
एगे सुयक्खंधे, तिन्निवग्गा,
तिन्नि उद्देसणकाला, तिन्नि समुद्देसणकाला,
संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंतापज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति

दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से त्तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ।

सुत्तं ५४ से किं तं पण्हावागरणाइं ?
पण्हावागरणेसु णं अट्ठुत्तरं पसिणसयं,
अट्ठुत्तरं अपसिणसयं
अट्ठुत्तरं पसिणापसिणसयं,
तं जहा—
अंगुट्ठपसिणाइं, बाहुपसिणाइं, अद्दागपसिणाइं
अन्ने वि विचित्ता विज्जाइसया,
नागसुवण्णेहिं सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जंति ।
पण्हावागरणाणं परित्ता वायणा,
संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा,
संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।
से णं अंगट्ठयाए दसमे अंगे,
एगे सुयक्खंधे, पणयालीसं अज्झयणा,
पणयालीसं उद्देसणकाला, पणयालीसं समुद्देसणकाला,
संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा

आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ।
से त्तं पण्हावागरणाइं।

सुत्तं ५५ से किं तं विवागसुयं ?

विवागसुए णं सुकडदुक्कडाणं कम्माणं—
फलविवागे आघविज्जइ।
तत्थ णं दस दुह-विवागा, दस सुह-विवागा।
से किं तं दुह-विवागा ?
दुह-विवागेसु णं दुहविवागाणं—
नगराइं, उज्जाणाइं, वणसंडाइं, चेइयाइं, समोसरणाइं
रायाणो अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ,
इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा,
निरयगमणाइं, संसारभव-पवंचा, दुहपरंपराओ,
दुक्कुलपच्चायाइओ, दुल्लहबोहियत्तं आघविज्जइ।
से त्तं दुहविवागा।
से किं तं सुहविवागा ?
सुहविवागेसु णं सुह-विवागाणं-
नगराइं, उज्जाणाइं, वणसंडाइं, चेइयाइं, समोसरणाइं,
रायाणो, अम्मापियरो,
धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा,
भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परिआया,
सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइ, संलेहणाओ,

भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं,
देवलोगगमणाइं, सुहपरंपराओ, सुकुलपच्चायाईओ,
पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ य आघविज्जंति।
विवागसुयस्स णं परित्ता वायणा,
संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा,
संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ।
से णं अंगट्ठयाए इक्कारसमे अंगे,
दो सुयक्खंधा वीसं अज्झयणा,
वीसं उद्देसणकाला, वीसं समुद्देसणकाला,
संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति,
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ।
से त्तं विवागसुयं।

सुत्तं ५६ से किं तं दिट्ठिवाए?

दिट्ठिवाए णं सव्वभावपरूवणा आघविज्जइ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते,
तं जहा—

१ परिकम्मे २ सुत्ताइं ३ पुव्वगए ४ अणुओगे-
५ चूलिया ।
से किं तं परिकम्मे ?
परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते,
तं जहा—
१ सिद्धसेणिया-परिकम्मे
२ मणुस्ससेणिया-परिकम्मे
३ पुट्ठसेणिया-परिकम्मे
४ ओगाढसेणिया-परिकम्मे
५ उवसंपज्जणसेणिया-परिकम्मे
६ विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे
७ चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे ।
से किं तं सिद्धसेणिया परिकम्मे ?
सिद्धसेणियापरिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते,
तं जहा —

१ माउगापयाइं २ एगट्ठियपयाइं
३ अट्ठपयाइं ४ पाढो आगासपयाइं
५ केउभूयं ६ रासिवद्धं
७ एगगुणं ८ दुगुणं
९ तिगुणं १० केउभूयं
११ पडिग्गहो १२ संसारपडिग्गहो
१३ नंदावत्तं १४ सिद्धावत्तं ।
से त्तं सिद्ध-सेणिया-परिकम्मे । (१)
से किं तं मणुस्ससेणिया-परिकम्मे ?

मणुस्स-सेणिया-परिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते,
तं जहा -

१ माउगापयाइं २ एगट्ठियपयाइं
३ अट्ठपयाइं ४ पाढो आगासपयाइं
५ केउभूयं ६ रासिवद्धं
७ एगगुणं ८ दुगुणं
९ तिगुणं १० केउभूयं
११ पडिग्गहो १२ संसारपडिग्गहो
१३ नंदावत्तं १४ मणुस्सावत्तं ।

से त्तं मणुस्ससेणिया-परिकम्मे । (२)
से किं तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे ?
पुट्ठसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते,
तं जहा—

१ पाढो अगासपयाइं २ केउभूयं
३ रासिवद्धं ४ एगगुणं
५ दुगुणं ६ तिगुणं
७ केउभूयं ८ पडिग्गहो
९ संसारपडिग्गहो १० नंदावत्तं
११ पुट्ठावत्तं ।

से त्तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे । (३)
से किं तं ओगाढसेणिया परिकम्मे ?
ओगाढसेणिया परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते
तं जहा—

१ पाढोआगासपयाइं, २ केउभूयं,
३ रासिबद्धं, ४ एगगुणं
५ दुगुणं ६ तिगुणं
७ केउभूयं ८ पडिग्गहो
९ संसारपडिग्गहो १० नंदावत्तं
११ ओगाढावत्तं ।
से त्तं ओगाढसेणिया-परिकम्मे ? (४)
से किं तं उवसंपज्जणसेणिया-परिकम्मे ?
उवसंपज्जणसेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते,
तं जहा—

१ पाढोआगासपयाइं २ केउभूयं
३ रासिबद्धं ४ एगगुणं
५ दुगुणं ६ तिगुणं
७ केउभूयं ८ पडिग्गहो
९ संसारपडिग्गहो १० नंदावत्तं
११ उवसंपज्जणावत्तं ।
से त्तं उवसंपज्जणसेणिया-परिकम्मे । (५)
से किं तं विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे ?
विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते,
तं जहा—

१ पाढोआगासपयाइं २ केउभूयं
३ रासिबद्धं ४ एगगुणं
५ दुगुणं ६ तिगुणं
७ केउभूयं ८ पडिग्गहो

९ संसारपडिग्गहो १० नंदावत्तं
११ विप्पजहणावत्तं ।
से त्तं विप्पजहणसेणिया परिकम्मे । (६)
से किं तं चुयाचुयसेणिया परिकम्मे ?
चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते,
तं जहा—

१ पाढोआगासपयाइं २ केउभूयं
३ रासिवद्धं ४ एगगुणं
५ दुगुणं ६ तिगुणं
७ केउभूयं ८ पडिग्गहो
९ संसारपडिग्गहो १० नंदावत्तं
११ चुयाचुयवत्तं ।
से त्तं चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे । (७)
छ-चउक्क नइयाइं, सत्त तेरासियाइं,
से-त्तं परिकम्मे ।
से किं तं सुत्ताइं ?
सुत्ताइं वावीसं पण्णत्ताइं,
तं जहा—

१ उज्जुसुयं २ परिणयापरिणयं ३ वहुभंगियं
४ विजयचरियं ५ अणंतरं ६ परंपरं
७ आसाणं ८ संजूहं ९ संभिण्णं
१० आहव्वायं ११ सोवत्थियावत्तं १२ नंदावत्तं
१३ वहुलं १४ पुट्ठापुट्ठं १५ वियावत्तं

१६ एवंभूयं १७ दुयावत्तं १८ वत्तमाणपयं
१९ समभिरूढं २० सव्वओभद्दं २१ पस्सासं
२२ दुप्पडिग्गहं ।
इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं छिन्न-छेयनइयाणि
ससमयसुत्तपरिवाडीए ।
इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं अच्छिन्नच्छेयनइयाणि—
आजीवियसुत्तपरिवाडिए ।
इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं तिगणइयाणि
तेरासियसुत्तपरिवाडीए ।
इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं चउक्कनइयाणि
ससमयसुत्तपरिवाडीए ।

एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठासीइ सुत्ताइं भवंति त्ति मक्खायं ।

से त्तं सुत्ताइं ।

से किं तं पुव्वगए ?

पुव्वगए चउद्दसविहे पण्णत्ते,

तं जहा—

१ उप्पायपुव्वं २ अग्गाणीयं
३ वीरियं ४ अत्थिनत्थि-प्पवायं
५ नाण-प्पवायं ६ सच्च-प्पवायं
७ आय-प्पवायं ८ कम्म-प्पवायं
९ पच्चक्खाण-प्पवायं १० विज्जाणु-प्पवायं
११ अबंझं १२ पाणाऊ
१३ किरियाविसालं १४ लोकविंदुसारं ।

१ उप्पायपुव्वस्स णं दसवत्थू, चत्तारि चूलियावत्थू पण्णत्ता,
२ अग्गाणीयपुव्वस्स णं चोद्दसवत्थू दुवालसचूलियावत्थू पण्णत्ता,
३ वीरियपुव्वस्स णं अट्ठवत्थू, अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता,
४ अत्थि-नत्थिप्पवायपुव्वस्स णं अट्ठारस वत्थू,
दसचूलियावत्थू पण्णत्ता,
५ नाणप्पवाणपुव्वस्स णं वारस वत्थू पण्णत्ता,
६ सच्चप्पवायपुव्वस्स णं दोण्णि वत्थू पण्णत्ता,
७ आयप्पवायपुव्वस्स णं सोलसं वत्थू पण्णत्ता,
८ कम्मप्पवायपुव्वस्स णं तीसं वत्थू पण्णत्ता,
९ पच्चक्खाणपुव्वस्स णं वीसं वत्थू पण्णत्ता,
१० विज्जाणुप्पवायपुव्वस्स णं पन्नरस वत्थू पण्णत्ता,
११ अवंझपुव्वस्स णं वारस वत्थू पण्णत्ता,
१२ पाणाऊपुव्वस्स णं तेरस वत्थू पण्णत्ता,
१३ किरियाविसालपुव्वस्स णं तीसं वत्थू पण्णत्ता,
१४ लोकविंदुसारपुव्वस्स णं पणत्रीसं वत्थू पण्णत्ता,

गाहा—

दस-चोद्दस-अट्ट-अट्ठारसेव-वारस-दुवे य वत्थूणि ।
सोलस - तीसा - वीसा - पन्नरस अणुप्पवायंमि ।। १ ।।

वारस-इक्कारसमे, बारसमे तेरसेव वत्थूणि ।
तीसा पुण तेरसमे, चोद्दसमे पण्णवीसाओ ।। २ ।।

चत्तारि-दुवालस-अट्ठ चेव, दस चेव चुल्लवत्थूणि ।
आइल्लाण-चउण्हं, सेसाणं चूलिया नत्थि ।। ३ ।।

से त्तं पुव्वगए ।
से किं तं अणुओगे ?
अणुओगे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा—

१ मूलपढमाणुओगे, २ गंडियाणुओगे य ।
से किं तं मूलपढमाणुओगे ?
मूलपढमाणुओगे णं अरहंताणं भगवंताणं—
पुव्वभवा, देवलोगगमणाइं, आउं, चवणाइं,
जम्मणाणि, अभिसेया, रायवरसिरीओ,
पव्वज्जाओ, तवा य उग्गा,
केवलनाणुप्पयाओ, तित्थ पवत्तणाणि य,
सीसा, गणा, गणहरा, अज्जा, पवत्तिणीओ,
संघस्स चउव्विहस्स जं च परिमाणं,
जिण-मणपज्जव-ओहिनाणा,
सम्मत्तसुयनाणिणो य, वाई,
अणुत्तरगई य, उत्तरवेउव्विणो य मुणिणो,
जत्तिया सिद्धा, सिद्धिपहो जहा देसिओ,
जच्चिरं च कालं,
पाओवगया-जेहिं जत्तियाइं भत्ताइं
अणसणाए छेइत्ता अंतगडे,
मुणिवरुत्तमे तिमिरओघविप्पमुक्के,
मुक्खसुहमणुत्तरं च पत्ते,
एवमन्ने य एवमाइभावा मूलपढमाणुओगे कहिया ।

से त्तं मूलपढमाणुओगे ।

से किं तं गंडियाणुओगे ?

गंडियाणुओगे कुलगरगंडियाओ, तित्थयरगंडियाओ,
चक्कवट्टिगंडियाओ, वासुदेवगंडियाओ,
गणधरगंडियाओ, भद्दबाहुगंडियाओ,
तवोकम्मगंडियाओ, हरिवंसगंडियाओ,
उस्सप्पिणीगंडियाओ, ओसप्पिणीगंडियाओ,
चित्तंतरगंडियाओ,

अमर-नर-तिरिय-निरय गइ-गमण-विविह-
परियट्टणाणुओगेसु एवमाइयाओ गंडियाओ
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति ।

से त्तं गंडियाणुओगे ।

से त्तं अणुओगे ।

से किं त चूलियाओ ?

चूलियाओ-आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं चूलिआ,
सेसाइं पुव्वाइं अचूलियाइं ।
से त्तं चूलियाओ ।

दिट्ठिवायस्स णं परित्ता वायणा,
संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा,
संखज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ ।
से णं अंगट्ठयाए बारसमे अंगे,
एगे सुयक्खंधे, चोद्दसपुव्वाइं,
संखेज्जा वत्थू, संखेज्जा चूलवत्थू,

संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जा पाहुडपाहुडा,
संखेज्जाओ पाहुडियाओ, संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ,
संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-कड-निवद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति,
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से त्तं दिट्ठिवाए ।

सुत्तं ५७ इच्चेयम्मि दुवालसंगे गणिपिडगे
अणंता भावा, अणंता अभावा,
अणंता हेऊ, अणंता अहेउ,
अणंता कारणा, अणंता अकारणा,
अणंता जीवा, अणंता अजीवा,
अणंता भवसिद्धिआ, अणंता अभवसिद्धिआ,
अणंता सिद्धा, अणंता असिद्धा पण्णत्ता ।

गाहा—भावमभावा हेऊमहेऊ, कारणमकारणे चेव ।
जीवाजीवाभविय-मभविया सिद्धा असिद्धा य ॥ १ ॥

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं
तीए काले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता
चाउरंतं संसार कंतारं अणुपरियट्टिसु,

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं
पडुप्पण्णकाले परित्ताजीवा आणाए विराहित्ता
चाउरंतं संसारकंतार अणुपरियट्टंत्ति
इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं
अणागए काले अणंताजीवा आणाए विराहित्ता
चाउरंतं संसार-कंतारं अणुपरियट्टिस्संति,
इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं
तीए काले अणंताजीवा आणाए आराहित्ता
चाउरंतं संसार-कंतारं वीईवइंसु,
इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं
पडुप्पण्णकाले परित्ताजीवा आणाए आराहित्ता
चाउरंतं संसारकंतारं वीईवयंति,
इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं
अणागएकाले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता
चाउरंतं संसार-कंतारं वीईवइस्संति।
इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं
न कयाइ नासी,
न कयाइ न भवइ,
न कयाइ न भविस्सइ,
भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य,
धुवे, नियए, सासए,
अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे।
से जहानामए पंच अत्थिकाया-
न कयाइ नासी,
न कयाइ नत्थि,
न कयाइ न भविस्सइ,

भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य,
धुवे, नियए, सासए,
अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे,
एवामेव दुवालसंगं गणिपिडगं
न कयाइ नासी,
न कयाइ नत्थि,
न कयाइ न भविस्सइ,
भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य,
धुवे, नियए, सासए,
अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे ।
से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते,
तं जहा—

दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ ।
तत्थ दव्वओ णं सुयणाणी उवउत्ते
सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ,
खित्तओ णं सुयणाणी उवउत्ते
सव्वं खेत्तं जाणइ पासइ.
कालओ णं सुयनाणी उवउत्ते
सव्वं कालं जाणइ पासइ,
भावओ णं सुयनाणी उवउत्ते
सव्वं भावं जाणइ पासइ,

गाहा— अक्खर सन्नी सम्मं, साइयं खलु सपज्जवसियं च ।
गमियं अंगपविट्ठं, सत्ते वि एए सपडिवक्खा ॥ १ ॥

आगमसत्थग्गहणं, जं बुद्धिगुणेहिं अट्ठहिं दिट्ठं।
विंति सुयनाणलंभं, तं पुव्वविसारया धीरा ॥ २ ॥

सुस्सुसइ पडिपुच्छइ, सुणेइ गिण्हइ य ईहए यावि।
तत्तो अपोहए वा, धारेइ करेइ वा सम्मं ॥ ३ ॥

मूअं हुंकारं वा, वाढक्कारं पडिपुच्छ वीमंसा।
तत्तो पसंगपरायणं, च परिणिट्ठ सत्तमए ॥ ४ ॥

सुत्तत्थो खलु पढमो, वीओ निज्जुत्तिमीसिओ भणिओ।
तइओ य निरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥ ५ ॥

से त्तं अंगपविट्ठं। से त्तं सुयनाणं।
से त्तं परोक्खनाणं। से त्तं नाणं। सेत्तं नंदी।

॥ नंदी सुत्तं सम्मत्तं ॥

सुहविवाग सुत्तं

(१) तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे। (रिद्धत्थिमियसमिद्धे) गुणसिलए चेइए। सुहम्मे समोसढे। जंबू जाव पज्जुवासति एवं वयासि-'जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं अयमट्ठे पण्णत्ते; सुहविवागाणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?' तएणं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासि-'एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता; तं जहा-सुवाहू, भद्दनंदी य सुजाए सुवासवे, तहेव जिणदासे, धणवई य महब्बले भद्दनंदी, महचंदे वरदत्ते।

'जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स सुहविवागाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?' तएणं से सुहम्मे जंबू अणगारं एवं वयासि-'एवं खलु जंबू ! तेणं कालेण तेणं समएणं हत्थिसीसे णामं णयरे होत्था। रिद्धत्थिमियसमिद्धे। तस्स णं हत्थिसीसस्स णयरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसोभाए एत्थणं पुप्फकरंडए, णामं उज्जाणे होत्था। सव्वोउय-पुप्फफलसमिद्धे, रम्मे, नंदण-वणप्पगासे पासाइए दरिसणिज्जे अभिरूवे, पडिरूवे। तत्थ णं कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खायतणे होत्था, दिव्वे०।

तत्थ णं हत्थिसीसे णयरे अदीणसत्तू नामं राया होत्था। महया हिमवंत० रायवण्णओ। तस्स णं अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणी-पामोक्खं देवीसहस्सं ओरोहे यावि होत्था। तए णं सा धारिणी देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासभवणंसि सीहं सुमिणे, जहा मेहजम्मणं तहा भाणियव्वं। णवरं सुवाहुकुमारे जाव अलं भोगसमत्थे यावि जाणेंति २ त्ता अम्मापियरो पंचपासाय-वडंसगसयाइं करेंति अब्भुग्गय-

मूसियपहसियविव, भवणं० एवं जहा महब्बलस्स रण्णो, णवरं पुप्फचूलापामोक्खाणं पंचपहं रायवरकण्णगसयाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेति; तहेव पंचसइओ दाओ, जाव उप्पि पासायवरगते फुट्टमाणेहिं जाव विहरति ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे । परिसा णिग्गया । अदीणसत्तू णिग्गए जहा कोणिए । सुवाहू वि जहा जमाली तहा रहेणं णिग्गए; जाव धम्मो कहिओ राया परिसा गया ।

तए णं से सुवाहूकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ जाव एवं वयासी-'सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं जाव जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए वहवे राईसर-तलवर-माडंविय-कोडुंविय-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहभिईओ मुंडा भवित्ता आगाराओ अणगारियं, पव्वइया; नो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वतियं सत्तसिक्खावतियं-दुवालसविहं-गिहिधम्मं पडिव्वजिस्सामि। अहासुहं, देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेह ।

तए णं से सुवाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खाव्वइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जइ २ त्ता, तमेव रहं दुरुहइ २ त्ता जामेव दिसं पाउभूए तामेव दिसं पडिगए ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे जाव एवं वयासी 'अहो णं भंते ! सुवाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे १ कंते कंतरूवे २ पिये पियरूवे ३ मणुन्ने मणुन्नरूवे ४ मणामे मणामरूवे ५ सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे; वहुजणस्सवि य णं भंते ! सुवाहुकुमारे इट्ठे ५ सोमे ४ जाव सुरूवे। साहुजणस्स वि य णं भते ! सुवाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे ५ जाव सुरूवे। सुवाहुणा भंते ! कुमारेणं इमे एयारूवा उराला माणुस्सरिद्धी किण्णा लद्धा, किण्णा पत्ता किण्णा अभिसमण्णागया ? को वा एस आसी पुव्वभवे ? किं नामए वा किं गोत्तए कयरंसी वा, गामंसी वा, संनीवे-

संसी वा ? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता ? कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आयरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म सुवाहुकुमारेणं इमे इयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ?'

'एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंवूद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे णामं णयरे रिद्धत्थिमियसमिद्धे वण्णओ। तत्थ णं हत्थिणाउरे णयरे सुमुहे णामं गाहावई परिवसइ। अड्ढे दित्ते जाव अपरिभूए। तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसे णामं थेरा जाइसंपण्णा जाव पंचहिं समणसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दुइज्जमाणा जेणेव हत्थिणाउरे णयरे जेणेव सहस्संववणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति।

तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी सुदत्ते णामं अणगारे उराले जाव तेउलेसे, मासं मासेणं खममाणे विहरइ। तए णं से सुदत्ते अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ;जहा गोयमसामी तहेव धम्मघोसे थेरे आपुच्छइ जाव अडमाणे सुमुहस्स गाहावइस्स गिहं अणुपविट्ठे। तएणं से सुमुहे गाहावई सुदत्तं अणगारं एज्जमाणं पासइ २ त्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ २ त्ता पाउयाओ उमुयति २ त्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ २ त्ता सुदत्तं अणगारं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ २ त्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ णमसइ २ त्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सयहत्थेण विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिलाभिस्सामित्ति कट्टु तुट्ठे पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे पडिलाभिए त्ति तुट्ठे।

तए णं तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिग्गाहगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं सुदत्ते अणगारे पडिलाभिए समाणे संसारे परित्तीकए, मणुस्साउए णिवद्धे। गिहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं—तं जहा वसुहारा वुट्ठा १ दसद्धवण्णे कुसुमे

निवाइए २ चेलुक्खेवे कए ३ आहयाओ देवदुंदुहीओ ४, अंतरावि य णं आगासंसि अहोदाणं २ घुट्ठे य ५। हत्थिणाउरे सिंघाडग जाव पहेसु वहुजणो अण्णमण्णस्स एवं आइक्खइ ४ धन्ने णं देवाणुप्पिया सुमुहे गाहावई, सपुण्णेणं दे० कयत्थेणं दे० कयपुण्णे णं दे० कयलक्खणे णं० कयविहवे णं० सुलद्धे णं०। तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स इमा एयारूवा उराला माणुस्सरिद्धि लद्धा, पत्ता, अभिसमण्णागया।

तए णं से सुमुहे गाहावई वहुइं वासासयाइं आउयं पालेइ २ त्ता कालेमासे कालं किच्चा इहेव हत्थिसीसए णयरे अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीए देवीए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववण्णे। तए णं सा धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २ तहेव सीहं पासइ। सेस तं चेव जाव० उप्पिं पासाए विहरइ। तं एवं खलु गोयमा सुवाहूणा इमा एयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया। 'पभू णं भंते ! सुवाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ?' हंता पभू ! तए णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ २ त्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तए णं से समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइं हत्थिसीसाओ णयराओ पुप्फकरंडयाओ उज्जाणाओ कयवणमालप्पियस्स जक्खस्स जक्खायतणाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ। तए णं से सुवाहुकुमारे समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ। तए णं से सुवाहुकुमारे अण्णया कयाइं चाउद-सट्ठमुदिट्ठ-पुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पोसहसालं पमज्जइ २ त्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ २ त्ता दब्भसंथारगं संथरेइ २ त्ता, दब्भसंथारगं दुरूहइ २ त्ता अट्ठमभत्तं पगेण्हइ २ त्ता पोसहसालाए पोसहिए अट्ठमभत्तिए पोसहं पडिजाग-रमाणे २ विहरइ।

तए णं तस्स सुवाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजा-

गरियं जागरमाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे ५ समुप्पन्ने-'धन्नाणं ते गामागरणगर जाव सन्निवेसा, जत्थ णं समणे भगवं महावीरे विहरइ। धन्नाणं ते राईसर जाव सत्थवाह-पभिइओ, जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता आगारओ अणगारियं पव्वयंति। धन्नाणं ते राईसर जाव सत्थवाह-पभिइओ जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं पडिवज्जंति। धन्नाणं ते राईसर० जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं पडिसुणंति। तं जइ णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्वं चरमाणे जाव गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छेज्जा जाव विहरिज्जा; तए णं अहं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वएज्जा।

तए णं समणे भगवं महावीरे सुवाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे णयरे जेणेव पुप्फकरंडे उज्जाणे जेणेव कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खायतणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। परिसा, राया निग्गए। तए णं तस्स सुवाहुस्स कुमारस्स तं महया०, जहा पढमं तहा निग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया राया य पडिगओ।

तए णं से सुवाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निस्सम्म हट्ठ-तुट्ठे। जहा मेहो तहा अम्मापियरो आपुच्छइ। निक्खमणाभिसेओ तहेव जाव अणगारे जाए इरियासमिए जाव वंभयारी। तए णं से सुवाहू अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस-अंगाइं अहिज्जइ २ त्ता वहूइं चउत्थछट्ठट्ठमतवोविहाणेहिं अप्पाणं भावित्ता वहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाइं छेदित्ता, आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवताए उववण्णे।

से णं तत्तो देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंत्तरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिइ २ त्ता केवलं वोहि वुज्झिहिइ २ त्ता तहारूवाणं थेराणं अंतिए मुंडे जाव पव्वइस्सइ। से णं तत्थ वहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणिहिइ २ त्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सणंकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जिजहिइ। ताओ माणुस्सं, पव्वज्जा, वंभलोए, माणुस्सं, महासुक्के, माणुस्सं, आणए, माणुस्सं, आरणे, माणुस्सं, सव्वट्ठसिद्धे।

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता महाविदेहे जाव जाइं अड्ढाइं जहा दढपइन्ने सिज्झिहिति वुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति। तं एवं खलु जंवू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। त्ति वेमि॥

इइ सुहविवागस्स पढमं अज्झयणं सम्मत्तं॥१॥

(२) वितियस्स उक्खेवओ। एवं खलु जंवू! तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभपुरे णयरे। थूमकरंडगं उज्ज्जाणं। धण्णो जक्खो। धणावहो राया। सरस्सई देवी। सुमिणदंसणं, कहणं जम्मं, वालत्तणं, कलाओ य, जोव्वणं, पाणिग्गहणं, दाओ पासाय भोगा य जहा सुवाहुस्स णवरं भद्दनंदी कुमारे। सिरीदेवी पामोक्खाणं पंचसयाणं कन्नाणं पाणिगहणं। सामिस्स समोसरणं। सावगधम्मं पुव्वभवपुच्छा। महाविदेहे वासे, पुंडरीगिणि नगरी विजए कुमारे। जुगवाहू तित्थयरे पडिलाभिए मणुस्साउए निवद्धे। इहं उप्पण्णे। सेसं जहा सुवाहुस्स जाव महाविदेहे सिज्झिहिति वुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति। एवं खलु जंवू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं वितियस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। त्ति वेमि।

इइ सुहविवागस्स वीइयं अज्झयणं सम्मत्तं॥२॥

(३) तच्चस्स उक्खेवओ। वीरपुरं णयरं मणोरमं उज्जाणं। वीरसेणे जक्खे। वीरकण्हमित्ते राया। सिरी देवी। सुजाए कुमारे। वलसिरीपामोक्खाणं पंचसयकन्नगाणं पाणिग्गहणं। सामी समोसरिए। पुव्वभव-पुच्छा। उसुयारे णयरे० उसभदत्ते गाहावई, पुप्फदत्ते अणगारे पडिलाभिए, माणुस्साउए निवद्धे, इहं उप्पण्णे जाव महाविदेहे सिज्झिहिति ५।

इइ सुहविवागस्स तइयं अज्झयणं सम्मत्तं ॥३॥

(४) चउत्थस्स उक्खेवओ। विजयपुरं णयरं। णंदणवणं उज्जाणं। असोगो जक्खो। वासवदत्ते राया। कण्हा देवी। सुवासवे कुमारे। भद्दापामोक्खाणं पंचसयकन्नगाणं जाव पुव्वभवे। कोसंवी णयरी। धणपाले राया। वेसमणभद्दे अणगारे पडिलाभिए। इहं उप्पण्णे जाव सिद्धे।

इइ सुहविवागस्स चउत्थं अज्झयणं सम्मत्तं ॥४॥

(५) पंचमस्स उक्खेवओ। सोगंधिया णयरी। णीलासोगे उज्जाणे। सुकालो जक्खो। अपडिहयो राया। सुकण्हा देवी। महचंदे कुमारे। तस्स अरहदत्ता भारिया। जिणदासो पुत्तो। तित्थयरागमणं, जिणदास-पुव्वभवो। मज्झमिया नयरी। मेहरहे राया। सुधम्मे अणगारे पडिलाभिए, जाव सिद्धे।

इइ सुहविवागस्स पंचमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥५॥

(६) छट्ठस्स उक्खेवओ। कणगपुरं णयरं। सेयासोयं उज्जाणं। वीरभद्दो जक्खो। पियचंदो राया। सुभद्दा देवी। वेसमणे कुमारे जुवराया। सिरीदेवी-पामोक्खाणं पंचसयाणं रायवरकन्नगाणं पाणिग्गहणं। तित्थयरागमणं। धणवई जुवरायपुत्ते जाव पुव्वभवे। मणि-

चइया णयरी। मित्ते राया। संभूइविजए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे। निक्खेवो।

इइ सुहविवागस्स छट्ठं अज्झयणं सम्मत्तं ॥६॥

(७) सत्तमस्स उक्खेवओ। महापुरं णयरं। रत्तासोगे उज्जाणे। रत्तपाओ जक्खो। वले राया। सुभद्दा देवी। महावले कुमारे। रत्तवईपामोक्खाणं पंचसयरायवरकन्नगाणं पाणिग्गहणं। तित्थयरागमणं जाव पुव्वभवो। मणिपुरं णयरं। णागदत्ते गाहावई इंददत्ते अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।

इइ सुहविवागस्स सत्तमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥७॥

(८) अट्ठमस्स उक्खेवओ। सुघोसं णयरं। देवरमणं उज्जाणं। वीरसेणो जक्खो। अज्जुणो राया। रत्तवई देवी। भद्दनंदी कुमारे। सिरीदेवीपामोक्खाणं पंचसयाणं रायवरकन्नगाणं पाणिग्गहणं जाव पुव्वभवो। महाघोसे णयरे। धम्मघोसे गाहावई। धम्मसीहे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे। निक्खेवो।

इइ सुहविवागस्स अट्ठमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥८॥

(९) नवमस्स उक्खेवओ। चंपा णयरी। पुण्णभद्दे उज्जाणे। पुण्णभद्दे जक्खे। दत्ते राया। रत्तवई देवी। महचंदे कुमारे। जुवराया। सिरीकंतापामोक्खाणं पंचसयाणं रायवरकन्नगाणं पाणिग्गहणं। जाव पुव्वभवो। तिगिच्छा णयरी। जियसत्तू राया। धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।

इइ सुहविवागस्स नवमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥९॥

(१०) जइ णं भंते! दसमस्स उक्खेवओ। एवं खलु जंवू! तेणं कालेण तेणं समएणं साएयं णामं णयरं होत्था। उत्तरकुरू उज्जाणे। पासामिओ जक्खो। मित्तनंदी राया। सिरीकंता देवी। वरदत्ते

कुमारे। वीरसेणापामोक्खाणं पंचदेवीसयाणं रायवरकन्नगाणं पाणिग्गहणं। तित्थयरागमणं। सावगधम्मं। पुव्वभवो (पुच्छा)। सयदुवारे णयरे। विमलवाहणे राया। धम्मरुई अणगारे पडिलाभिए मणुस्साउए निबद्धे। इहं उप्पण्णे। सेसं जहा सुबाहुस्स कुमारस्स चिंता जाव पव्वज्जा। कप्पंतारे ततो जाव सव्वट्ठसिद्धे। तओ महाविदेहे जहा दढपइण्णे जाव सिज्झिहिति ५। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेण सुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। 'सेवं भंते २ सुहविवागा' त्ति बेमि।

इइ सुहविवागस्स दसमं अज्झयणं सम्मत्तं।

णमो सुयदेवाए विवागसुयस्स दो सुयखंधा—दुहविवागे य सुहविवागे य। तत्थ दुहविवागे दस अज्झयणा एक्कासरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति। एवं सुहविवागे वि सेसं जहा आयारस्स। ।१०।।

।। इति सुखविपाकसूत्रम् ।।

उववाई-सुत्तस्स बावीसगाहाओ

कहिं पडिहया सिद्धा ? कहिं सिद्धा पइट्ठिया ? ।
कहिं बोंदि चइत्ताणं, कत्थ गंतूण सिज्झई ॥ १ ॥

अलोगे पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया ।
इह बोंदि चइत्ताणं, तत्थ गंतूण सिज्झई ॥ २ ॥

जं संठाणं तु इहं भवं चयंतस्स चरिमसमयंमि ।
आसी य पएसघणं तं संठाणं तहिं तस्स ॥ ३ ॥

दीहं वा हस्सं वा, जं चरिमभवे हवेज्ज संठाणं ।
तत्तो तिभागहीणं सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥ ४ ॥

तिण्णि सया तेत्तीसा, धणुत्तिभागो य होइ बोद्धव्वा ।
एसा खलु सिद्धाणं, उक्कोसोगाहणा भणिया ॥ ५ ॥

चत्तारि य रयणीओ, रयणितिभागूणिया य बोद्धव्वा ।
एसा खलु सिद्धाणं, मज्झिमओगाहणा भणिया ॥ ६ ॥

एक्को य होइ रयणी, साहीया अंगुलाइ अट्ठ भवे ।
एसा खलु सिद्धाणं, जहण्णओगाहणा भणिया ॥ ७ ॥

ओगाहणाए सिद्धा भवत्तिभागेण होइ परिहीणा ।
संठाणमणित्थंथं जरामरणविप्पमुक्काणं ॥ ८ ॥

जत्थ य एगो सिद्धो तत्थ अणंता भवक्खयविमुक्का ।
अण्णोण्णसमोगाढा, पुट्ठा सव्वे य लोगंते ॥ ९ ॥

फुसइ अणंते सिद्धे-सव्वपएसेहि णियमसो सिद्धा ।
ते वि असंखेज्जा गुणा देसपएसेहिं जे पुट्ठा ॥ १० ॥

असरीरा जीवघणा, उवउत्ता दंसणे य णाणे य।
सागारमणागारं लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥ ११ ॥

केवलणाणुवउत्ता जाणंति सव्वभावगुणभावे।
पासंति सव्वओ खलु केवलदिट्ठिअणंताहिं ॥ १२ ॥

णवि अत्थि माणुसाणं तं सोक्खं णविय सव्वदेवाणं।
जं सिद्धाणं सोक्खं अव्वावाहं उवगयाणं ॥ १३ ॥

जं देवाणं सोक्खं सव्वद्धापिंडियं अणंतगुणं।
ण य पावइ मुक्किसुहं णंताहिं वग्गवग्गूहिं ॥ १४ ॥

सिद्धस्स सुह- रासी सव्वद्धापिंडिओ जइ हवेज्जा।
सोणंतवग्गभइओ सव्वागासे ण माएज्जा ॥ १५ ॥

जह णाम कोई मिच्छो, णगरगुणे वहुविहे वियाणंतो।
ण चएइ परिकहेउं उवमाए तहिं असंतीए ॥ १६ ॥

इय सिद्धाणं सोक्खं अणोवमं णत्थि तस्स ओवम्मं।
किंचि विसेसेणेत्तो, ओवम्ममिणं सुणह वोच्छं ॥ १७ ॥

जह सव्वकामगुणियं पुरिसो भोत्तूण भोयणं कोई।
तण्हाछुहाविमुक्को अच्छेज्ज जहा अमियतित्तो ॥ १८ ॥

इय सव्वकालतित्ता अतुलं निव्वाणमुवगया सिद्धा।
सासयमव्वावाहं चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ॥ १९ ॥

सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य पारगयत्ति य परंपरगयत्ति।
उम्मुक्ककम्मकवया अजरा अमरा असंगा य ॥ २० ॥

णिच्छिण्णसव्वदुक्खा जाइजरामरणबंधणविमुक्का।
अव्वावाहं सुक्खं अणुहोंति सासयं सिद्धा ॥ २१ ॥

अतुलसुहसागरगया अव्वावाहं अणोवमं पत्ता।
सव्वमणागयमद्धं चिट्ठंति सुहं पत्ता ॥ २२ ॥

दसासुयक्खंधस्स चित्तसमाहि णाम पंचमदसा

नमो सुयदेवयाए भगवतीए ।। सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमवखायं, इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं दस चित्त-समाहिठाणा पन्नत्ता । कयरा खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस चित्त-समाहिठाणा-पन्नत्ता ? इमे खलु थेरेहिं भगवंतेहिं दस-चित्तसमाहिठाणा-पन्नत्ता तंजहा—तेणं कालेणं तेण समएण वाणियग्गामे नगरे होत्था, नगर-वण्णओ भाणियव्वो ।। १।।

तस्स ण वाणियग्गामस्स नगरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए दूतिपलासए नामं चेइए होत्था, चेइय-वण्णओ भाणियव्वो ।। २ ।।

जियसत्तू राया, तस्स धारिणी नामं देवी एवं सव्वं समोसरणं भाणियव्वं जाव पुढविसिलापट्टए, सामी समोसढे, परिसा निग्गया; धम्मो कहिओ; परिसा पडिगया ।। ३ ।।

अज्जो ! त्ति समणे भगवं महावीरे समणा य समणीओ य निग्गंथा य निग्गंथीओ य आमंतित्ता एवं वयासी-इह खलु अज्जो ! निग्गंथाणं वा, निग्गंथीण वा इरियासमियाण, भासासमियाणं, एसणासमियाण, आयाणभंड-मत्त-निक्खेवणा-समियाणं, उच्चारपासवण-खेल-जल्लसिंघाण-पारिट्ठावणिया-समियाण, मणसमियाणं, वय-समियाणं, काय-समियाणं, मण-गुत्तियाणं, वयगुत्तियाणं, काय-गुत्तियाणं, गुत्तिंदियाणं गुत्तबंभयारीणं, आयट्ठीणं, आय-हियाण, आय-जोइणं, आय-परक्कमाण पक्खिए पोसहिएसु समाहि-पत्ताणं झियायमाणाण इमाइं दसचित्तसमाहि-ट्ठाणाइं असमुप्पण्ण-पुव्वाइं समुप्पज्जित्था । तंजहा १—धम्मचिंता वा से असमुप्पणपुव्वाइं समुप्पज्जेज्जा सव्वं धम्मं जाणित्तए ।

२—सण्णि-जाइ-सरणेणं सण्णि-णाणं वा से असमुप्पण्ण—पुव्वे समुप्पज्जेज्जा अप्पणो पोराणियं जाइं सुमरित्तए।

३—सुमिण-दंसिण वा से असमुप्पण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा, अहातच्चं सुमिणं पासित्तए।

४—देव-दंसणे वा से असमुप्पण्ण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा दिव्वं देवड्ढि दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं पासित्तए।

५—ओहिणाणे वा से असमुप्पण्ण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा, ओहिणा लोगं जाणित्तए।

६—ओहि-दंसणे वा से असमुप्पण्ण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा ओहिणा लोयं पासित्तए।

७—मणपज्जवनाणे वा से असमुप्पणपुव्वे समुपज्जेज्जा अंतो माणुस्सखित्तेसु अड्ढाइज्जेसु दीव-समुद्देसु सण्णीणंपंचिंदियाणं पज्जत्तगाणं मणोगएभावे जाणित्तए।

८—केवलनाणे वा से असमुप्पण्ण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा केवलकप्पं लोयालोयं जाणित्तए।

९—केवल-दंसणे वा से असमुप्पण्ण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा केवलकप्पं लोयालोयं पासित्तए।

१०—केवल-मरणे वा से असमुप्पण्ण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा सव्व-दुक्खप्पहाणाए।

ओयं चित्तं समादाय, ज्झाणं समुप्पज्जइ।
धम्मे ट्ठिओ अविमणो, निव्वाणमभिगच्छइ॥ १॥

ण इमं चित्तं समादाय, भुज्जो लोयंसि जायइ।
अप्पणो उत्तमं ठाणं, सण्णी णाणेण जाणइ॥ २॥

अहातच्चं तु सुमिणं, खिप्पं पासेति संवुडे।
सव्वं वा ओहं तरति, दुक्खओ य विमुच्चइ॥ ३॥

पंताइं भयमाणस्स, विवित्तं सयणासणं।
अप्पाहारस्स दंतस्स, देवा दंसेंति ताइणो॥ ४॥

सव्व-काम-विरत्तस्स, खमओ भय-भेरवं ।
तओ से ओही भवइ, संजयस्स तवस्सिणो ॥ ५ ॥

तवसा अवहट्टु लेस्सस्स, दंसणं परिसुज्झइ ।
उड्ढं अहे तिरियं च, सव्वमणुपस्सति ॥ ६ ॥

सुसमाहियलेस्सस्स, अवितक्कस्स भिक्खुणो ।
सव्वओ विप्पमुक्कस्स, आया जाणइ पज्जवे ॥ ७ ॥

जया से नाणावरणं, सव्वं होइ खयं गयं ।
तओ लोगमलोगं च, जिणो जाणति केवली ॥ ८ ॥

जया से दरिसणावरणं, सव्वं होइ खयं गयं ।
तओ लोगमलोगं च, जिणो पासति केवली ॥ ९ ॥

पडिमाए विसुद्धाए, मोहणिज्जं खयं गयं ।
असेसं लोगमलोगं च पासेति सुसमाहिए ॥१०॥

जहा मत्थए सूइए, हंताए हम्मइ तले ।
एवं कम्माणि हम्मंति, मोहणिज्जे खयं गए ॥११॥

सेणावइम्मि निहते, जहा सेणा पणस्सइ ।
एवं कम्माणि णस्संति, मोहणिज्जे खयं गए ॥१२॥

धूम-हीणो जहा अग्गी, खीयति से निरिंधणे ।
एवं कम्माणि खीयंति, मोहणिज्जे खयं गए ॥१३॥

सुक्क-मूले जहा रुक्खे, सिंचमाणे ण रोहति ।
एवं कम्मा ण रोहंति, मोहणिज्जे खयं गए ॥१४॥

जहा दड्ढाणं वीयाणं, न जायंति पुण अंकुरा ।
कम्म-वीएसु दड्ढेसु न जायंति भवंकुरा ॥१५॥

चिच्चा ओरालियं वोंदिं, नाम गोयं च केवली ।
आउयं वेयणिज्जं च, छित्ता भवति णीरए ॥१६॥

एवं अभिसमागम्म, चित्तमादाय आउसो ।
सेणिसुद्धिमुवागम्म आयसुद्धिमुवागए ॥१७॥ त्ति वेमि

वीरत्थुई

पुच्छिस्सु णं समणा माहणा य, आगारिणो या परतित्थिआ य।
से केइ णेगंतहियधम्ममाहु, अणेलिसं साहुसमिक्खयाए ॥१॥

कहं च णाणं कह दंसणं से, सीलं कहं नायसुयस्स आसि ?।
जाणासि णं भिक्खु जहातहेणं, अहासुयं बूहि जहा णिसंतं ॥२॥

खेयन्नए से कुसले महेसी, अणंतनाणी य अणंतदंसी।
जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि धम्मं च धिइं च पेहि ॥३॥

उड्ढं अहे यं तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा।
से णिच्चणिच्चेहि समिक्ख पन्ने, दीवे व धम्मं समियं उदाहु ॥४॥

से सव्वदंसी अभिभूयनाणी, णिरामगंधे धिइमं ठियप्पा।
अणुत्तरे सव्वजगंसि विज्जं, गंथा अईए अभए अणाऊ ॥५॥

से भूइपण्णे अणिए अचारी, ओहंतरे धीरे अणंतचक्खू।
अणुत्तरं तप्पइ सूरिए वा, वइरोयणिंदे व तमं पगासे ॥६॥

अणुत्तरं धम्ममिणं जिणाणं, णेया मुणी कासव आसुपन्ने।
इंदेव देवाण महाणुभावे, सहस्सणेया दिवि णं विसिट्ठे ॥७॥

से पन्नया अक्खयसायरे वा, महोदही वा वि अणंतपारे।
अणाविले वा अकसाइ मुक्के, सक्के व देवाहिवई जुईमं ॥८॥

से वीरिएणं पडिपुन्नवीरिए, सुदंसणे वा णगसव्वसेट्ठे।
सुरालए वा सि मुदागरे से, विरायए णेगगुणोववेए ॥९॥

सयं सहस्साण उ जोयणाणं, तिकंडगे पंडगवेजयंते।
से जोयणे णवणवइसहस्से, उड्ढुस्सितो हेट्ठ सहस्समेगं ॥१०॥

पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमिवट्ठिए, जं सूरिया अणुपरियट्टयंति।
से हेमवन्ने बहुनंदणे य, जंसि रइं वेदयंति महिंदा ॥११॥

से पव्वए सद्दमहप्पगासे, विरायइ कंचणमट्ठवन्ने।
अणुत्तरे गिरिसु य पव्वदुग्गे, गिरीवरे से जलिए व भोमे ॥१२॥

महीए मज्झंमि ठिए णगिंदे, पन्नायते सूरिए सुद्धलेसे।
एवं सिरीए उ स भूरिवन्ने, मणोरमे जोयइ अच्चिमाली ॥१३॥

सुदंसणस्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चई महतो पव्वयस्स।
एतोवमे समणे नायपुत्ते, जाइ-जसो-दंसण-नाणसीले ॥१४॥

गिरीवरे वा निसहाययाणं, रुयए व सेट्ठे वलयायताणं।
तओवमे से जगभूइपन्ने मुणीण मज्झे तमुदाहु पन्ने ॥१५॥

अणुत्तरं धम्ममुईरइत्ता, अणुत्तरं झाणवरं झियाइ।
सुसुक्कसुक्कं अपगंडसुक्कं, संखिंदुएगंतवदातसुक्कं ॥१६॥

अणुत्तरग्गं परमं महेसी, असेसकम्मं स विसोहइत्ता।
सिद्धिं गए साइमणंतपत्ते, नाणेण सीलेण य दंसणेण ॥१७॥

रुक्खेसु णाए जह सामली वा, जंसि रइं वेदयंति सुवन्ना।
वणेसु वा णंदणमाहु सेट्ठं, नाणेण सीलेण य भूतिपन्ने ॥१८॥

थणियं व सद्दाण अणुत्तरे उ, चन्दो व ताराण महाणुभावे।
गंधेसु वा चन्दणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिन्नमाहु ॥१९॥

जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे, नागेसु वा धरणिंदमाहु सेट्ठे।
खोओदए वा रसवेजयंते, तवोवहाणे मुणीवेजयंते ॥२०॥

हत्थीसु एरावणमाहु नाए, सीहो मियाणं सलिलाण गंगा।
पक्खीसु वा गरुले वेणुदेवो, निव्वाणवादीणिह नायपुत्ते ॥२१॥

जोहेसु नाए जह वीससेणे, पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु।
खत्तीण सेट्ठे जह दंतवक्के, इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥२२॥

दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं, सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति।
तवेसु वा उत्तम बंभचेरं, लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥२३॥

ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा, सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा।
निव्वाणसेट्ठा जह सव्वधम्मा न नायपुत्ता परमत्थि नाणी ॥२४॥

पुढोवमे धुणइ विगयगेही, न सण्णिहिं कुव्वइ आसुपन्ने।
तरिउं समुद्दं च महाभवोघं, अभयंकरे वीर अणंतचक्खू ॥२५॥

कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थं अज्झत्थदोसा।
एयाणि वंता अरहा महेसी, ण कुव्वई पाव ण कारवेइ ॥२६॥

किरियाकिरियं वेणईयाणुवायं, अण्णाणियाणं पडियच्च ठाणं।
से सव्ववायं इइ वेयइत्ता, उवट्ठिए संजम दीहरायं ॥२७॥

से वारिया इत्थी सराइभत्तं, उवहाणवं दुक्खखयट्ठयाए।
लोगं विदित्ता आरं परं च, सव्वं पभू वारिय सव्ववारं ॥२८॥

सोच्चा य धम्मं अरहंतभासियं समाहियं अट्ठपओविसुद्धं।
तं सद्दहाणा य जणा अणाऊ, इंदा व देवाहिव आगमिस्संति ॥२९॥
त्ति बेमि ॥

॥ वीर थुई सम्मत्ता ॥

तत्त्वार्थ-सूत्र

प्रथमोऽध्यायः

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ॥१॥
तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥२॥
तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥३॥
जीवाजीवास्रववन्धसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ॥४॥
नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ॥५॥
प्रमाणनयैरधिगमः ॥६॥
निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः ॥७॥
सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पवहुत्वैश्च ॥८॥
मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम् ॥९॥
तत् प्रमाणे ॥१०॥
आद्ये परोक्षम् ॥११॥
प्रत्यक्षमन्यत् ॥१२॥
मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताऽभिनिवोध इत्यनर्थान्तरम ॥१३॥
तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥१४॥
अवग्रहेहावायधारणाः ॥१५॥
वहुवहुविधक्षिप्रानिश्रितासंदिग्धध्रुवाणांसेतराणाम् ॥१६॥
अर्थस्य ॥१७॥
व्यञ्जनस्यावग्रहः ॥१८॥
न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ॥१९॥
श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥२०॥
द्विविधोऽवधिः ॥२१॥

तत्र भवप्रत्ययो नारकदेवानाम् ॥२२॥

यथोक्तनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम् ॥२३॥

ऋजुविपुलमती मनःपर्यायः ॥२४॥

विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ॥२५॥

विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमनःपर्यययोः ॥२६॥

मतिश्रुतयोर्निवन्धः सर्वद्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ॥२७॥

रूपिष्ववधेः ॥२८॥

तदनन्तभागे मनःपर्यायस्य ॥२९॥

सर्वद्रव्य-पर्यायेषु केवलस्य ॥३०॥

एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥३१॥

मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च ॥३२॥

सदसतोरविशेषाद् यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥३३॥

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जु सूत्रशब्दा नयाः ॥३४॥

आद्यशब्दौ द्वित्रिभेदौ ॥३५॥

द्वितीयोऽध्यायः

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्यस्वतत्त्वमौदयिक-पारिणामिकौ च ॥१॥

द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमम् ॥२॥

सम्यक्त्वचारित्रे ॥३॥

ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ॥४॥

ज्ञानाज्ञानदर्शनदानादिलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपञ्चभेदाः यथाक्रमं सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च ॥५॥

गतिकषायलिङ्गमिथ्यादर्शनाऽज्ञानाऽसंयताऽसिद्धत्वलेश्याश्च-तुश्चतुस्त्र्येकैकैकषड्भेदाः ॥६॥

जीवभव्याभव्यत्वादीनि च ॥७॥
उपयोगो लक्षणम् ॥८॥
स द्विविधोऽष्टचतुर्भेदः ॥९॥
संसारिणो मुक्ताश्च ॥१०॥
समनस्काऽमनस्काः ॥११॥
संसारिणस्त्रसस्थावराः ॥१२॥
पृथिव्यम्बुवनस्पतयः स्थावराः ॥१३॥
तेजोवायू द्वीन्द्रियादयश्च त्रसाः ॥१४॥
पञ्चेन्द्रियाणि ॥१५॥
द्विविधानि ॥१६॥
निर्वृत्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ॥१७॥
लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ॥१८॥
उपयोगः स्पर्शादिषु ॥१९॥
स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्राणि ॥२०॥
स्पर्शरसगन्धवर्णशब्दास्तेषामर्थाः ॥२१॥
श्रुतमनिन्द्रियस्य ॥२२॥
वाय्वन्तानामेकम् ॥२३॥
कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ॥२४॥
संज्ञिनः समनस्काः ॥२५॥
विग्रहगतौ कर्मयोगः ॥२६॥
अनुश्रेणि गतिः ॥२७॥
अविग्रहा जीवस्य ॥२८॥
विग्रहवती च संसारिणः प्राक्चतुर्भ्यः ॥२९॥
एकसमयोऽविग्रहः ॥३०॥
एकं द्वौ वाऽनाहारकः ॥३१॥

सम्मूर्छनगर्भोपपाता जन्म ॥३२॥

सचित्तशीतसंवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ॥३३॥

जराखण्डपोतजानां गर्भः ॥३४॥

नारकदेवानामुपपातः ॥३५॥

शेषाणां सम्मूर्छनम् ॥३६॥

औदारिकवैक्रियाऽऽहारकतैजसकार्मणानि शरीराणि ॥३७॥

परं परं सूक्ष्मम् ॥३८॥

प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक् तैजसात् ॥३९॥

अनन्तगुणे परे ॥४०॥

अप्रतिघाते ॥४१॥

अनादिसम्वन्धे च ॥४२॥

सर्वस्य ॥४३॥

तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्याचतुर्भ्यः ॥४४॥

निरुपभोगमन्त्यम् ॥४५॥

गर्भसम्मूर्छनजमाद्यम् ॥४६॥

वैक्रियमौपपातिकम् ॥४७॥

लब्धिप्रत्ययं च ॥४८॥

शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं चतुर्दशपूर्वधरस्यैव ॥४९॥

नारकसम्मूर्छिनो नपुंसकानि ॥५०॥

न देवाः ॥५१॥

औपपातिकचरमदेहोत्तमपुरुषाऽसंख्येयवर्षायुषोऽनप-
वर्त्यायुषः ॥५२॥

तृतीयोऽध्यायः

रत्नशर्करावालुकापङ्कधूमतमोमहातमःप्रभा भूमयो घनाम्बुवाताकाशप्रतिष्ठाः
सप्ताधोऽधःपृथुतराः ॥१॥
तासु नरकाः ॥२॥
नित्याशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रियाः ॥३॥
परस्परोदीरितदुःखाः ॥४॥
संक्लिष्टासुरोदीरितदुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः ॥५॥
तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाः
सत्वानां परा स्थितिः ॥६॥
जम्बूद्वीपलवणादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ॥७॥
द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः ॥८॥
तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ॥९॥
तत्र भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः
क्षेत्राणि ॥१०॥
तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वताः ॥११॥
द्विर्धातकीखण्डे ॥१२॥
पुष्करार्धे च ॥१३॥
प्राङ्मानुषोत्तरान् मनुष्याः ॥१४॥
आर्या म्लेच्छाश्च ॥१५॥
भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः ॥१६॥
नृस्थिती परापरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते ॥१७॥
तिर्यग्योनीनां च ॥१८॥

चतुर्थोऽध्यायः

देवाश्चतुर्निकायाः ॥१॥
तृतीयः पीतलेश्यः ॥२॥
दशाष्टपञ्चद्वादशविकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यन्ताः ॥३॥
इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशपारिषद्यात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्ण-
काभियोग्यकिल्विषिकाश्चैकशः ॥४॥
त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्या व्यन्तरज्योतिष्काः ॥५॥
पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ॥६॥
पीतान्तलेश्याः ॥७॥
कायप्रवीचारा आ ऐशानात् ॥८॥
शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनःप्रवीचाराद्वयोर्द्वयोः ॥९॥
परेऽप्रवीचाराः ॥१०॥
भवनवासिनोऽसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीप-
दिक्कुमाराः ॥११॥
व्यन्तराः किन्नरकिंपुरुषमहोरगगान्धर्वयक्षराक्षस-
भूतपिशाचाः ॥१२॥
ज्योतिष्काः सूर्याश्चन्द्रमसो ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णतारकाश्च ॥१३॥
मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ॥१४॥
तत्कृतः कालविभागः ॥१५॥
वहिरवस्थिताः ॥१६॥
वैमानिकाः ॥१७॥
कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च ॥१८॥
उपर्युपरि ॥१९॥
सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्र ब्रह्मलोक-लान्तकमहाशुक्रसह-

स्रारेष्वानतप्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजयवै-
जयन्तजयन्ताऽपराजितेषु सर्वार्थसिद्धे च ॥२०॥

स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्याविशुद्धीन्द्रियावधिविषय-
तोऽधिकाः ॥२१॥

गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतो हीनाः ॥२२॥

पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु ॥२३॥

प्राग् ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ॥२४॥

ब्रह्मलोकालया लोकान्तिकाः ॥२५॥

सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताऽव्यावाध-
मरुतोऽरिष्टाश्च ॥२६॥

विजयादिषु द्विचरमाः ॥२७॥

औपपातिकमनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः ॥२८॥

स्थितिः ॥२६॥

भवनेषु दक्षिणार्धाधिपतीनां पल्योपममध्यर्धम् ॥३०॥

शेषाणां पादोने ॥३१॥

असुरेन्द्रयोः सागरोपममधिकं च ॥३२॥

सौधर्मादिषु यथाक्रमम् ॥३३॥

सागरोपमे ॥३४॥

अधिके च ॥३५॥

सप्त सानत्कुमारे ॥३६॥

विशेषत्रिसप्तदशैकादशत्रयोदशपञ्चदशभिरधिकानि च ॥३७॥

आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु
सर्वार्थसिद्धे च ॥३८॥

अपरा पल्योपममधिकं च ॥३९॥

सागरोपमे ॥४०॥

अविके च ॥४१॥
परतः परतः पूर्वापूर्वाऽनन्तरा ॥४२॥
नारकाणां च द्वितीयादिषु ॥४३॥
दशवर्षसहस्राणि प्रथमायाम् ॥४४॥
भवनेषु च ॥४५॥
व्यन्तराणां च ॥४६॥
परा पल्योपमम् ॥४७॥
ज्योतिष्काणामधिकम् ॥४८॥
ग्रहाणामेकम् ॥४९॥
नक्षत्राणामर्धम् ॥५०॥
तारकाणां चतुर्भागः ॥५१॥
जघन्या त्वष्टभागः ॥५२॥
चतुर्भागः शेषाणाम् ॥५३॥

पंचमोऽध्यायः

अजीवकाया धर्माधर्माकाशपुद्गलाः ॥१॥
द्रव्याणि जीवाश्च ॥२॥
नित्यावस्थितान्यरूपाणि ॥३॥
रूपिणः पुद्गलाः ॥४॥
आकाशादेकद्रव्याणि ॥५॥
निष्क्रियाणि च ॥६॥
असङ्ख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मयोः ॥७॥
जीवस्य च ॥८॥
आकाशस्यानन्ताः ॥९॥
संख्येयासंख्येयाश्च पुद्गलानाम् ॥१०॥

नाणोः ।।११।।
लोकाकाशेऽवगाहः ।।१२।।
धर्माधर्मयोः कृत्स्ने ।।१३।।
एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानाम् ।।१४।।
असङ्ख्येयभागादिषु जीवानाम् ।।१५।।
प्रदेशसंहारविसर्गाभ्यां प्रदीपवत् ।।१६।।
गतिस्थित्युपग्रहो धर्माधर्मयोरुपकारः ।।१७।।
आकाशस्यावगाहः ।।१८।।
शरीरवाङ्मनः प्राणापानाः पुद्गलानाम् ।।१९।।
सुखदुःखजीवितमरणोपग्रहाश्च ।।२०।।
परस्परोपग्रहो जीवानाम् ।।२१।।
वर्तना परिणामः क्रिया परत्वापरत्वे च कालस्य ।।२२।।
स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः ।।२३।।
शब्दबन्धसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायाऽऽतपो-
द्योतवन्तश्च ।।२४।।
अणवः स्कन्धाश्च ।।२५।।
संघातभेदेभ्य उत्पद्यन्ते ।।२६।।
भेदादणुः ।।२७।।
भेदसंघाताभ्यां चाक्षुषाः ।।२८।।
उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ।।२९।।
तद्भावाव्ययं नित्यम् ।।३०।।
अर्पितानर्पितसिद्धेः ।।३१।।
स्निग्धरूक्षत्वाद्बन्धः ।।३२।।
न जघन्यगुणानाम् ।।३३।।
गुणसाम्ये सदृशानाम् ।।३४।।

तत्प्रदोषनिह्नवमात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शना-
वरणयोः ॥११॥
दुःखशोकतापाक्रन्दनवधपरिदेवनान्यात्मपरोभयस्थान्य-
सद्वेद्यस्य ॥१२॥
भूतव्रत्यनुकम्पा दानं सरागसंयमादियोगः क्षान्तिः शौचमिति
सद्वेद्यस्य ॥१३॥
केवलिश्रुतसङ्घधर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ॥१४॥
कषायोदयात्तीव्रात्मपरिणामश्चारित्रमोहस्य ॥१५॥
बह्वारम्भपरिग्रहत्वं च नारकस्यायुषः ॥१६॥
माया तैर्यग्योनस्य ॥१७॥
अल्पारम्भपरिग्रहत्वं स्वभावमार्दवार्जवं च मानुषस्य ॥१८॥
निःशीलव्रतत्वं च सर्वेषाम् ॥१९॥
सरागसंयमसंयमासंयमाकामनिर्जराबालतपांसि दैवस्य ॥२०॥
योगवक्रता विसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः ॥२१॥
विपरीतं शुभस्य ॥२२॥
दर्शनविशुद्धिर्विनयसंपन्नताशीलव्रतेष्वनतिचारोऽभीक्ष्णं ज्ञानो-
पयोगसंवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी सङ्घसाधुसमाधिवैयावृत्य-
करणमर्हदाचार्यबहुश्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहाणिर्मार्गप्रभा-
वना प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थकृत्त्वस्य ॥२३॥
परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्गुणाच्छादनोद्भावने च नीचै-
र्गोत्रस्य ॥२४॥
तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ॥२५॥
विघ्नकरणमन्तरायस्य ॥२६॥

मंत्रभेदाः ॥२१॥
स्तेनप्रयोगतदाहृतादानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मान-
प्रतिरूपकव्यवहाराः ॥२२॥
परविवाहकरणेत्वरपरिगृहीतापरिगृहीतागमनानङ्गक्रीडा-
तीव्रकामाभिनिवेशाः ॥२३॥
क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यप्रमाणा-
तिक्रमाः ॥२४॥
ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रमक्षेत्रवृद्धिस्मृत्यन्तर्धानानि ॥२५॥
आनयनप्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलक्षेपाः ॥२६॥
कन्दर्पकौत्कुच्यमौखर्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोगाधिकत्वानि ॥२७॥
योगदुष्प्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थापनानि ॥२८॥
अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादाननिक्षेपसंस्तारोपक्रमणानादर-
स्मृत्यनुपस्थापनानि ॥२९॥
सचित्तसंवद्धसंमिश्राभिषवदुष्पक्वाहाराः ॥३०॥
सचित्तनिक्षेपपिधानपरव्यपदेशमात्सर्यकालातिक्रमाः ॥३१॥
जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुवन्धनिदानकरणानि ॥३२॥
अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ॥३३॥
विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात् तद्विशेषः ॥३४॥

अष्टमोऽध्यायः

मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगा बन्धहेतवः ॥१॥
सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते ॥२॥
स वन्धः ॥३॥
प्रकृतिस्थित्यनुभावप्रदेशास्तद्विधयः ॥४॥
आद्यो ज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुष्कनामगोत्रान्त-
रायाः ॥५॥

पञ्चनवद्व्यष्टाविंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपञ्चभेदा यथाक्रमम् ॥६॥

मत्यादीनाम् ॥७॥

चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रा-निद्रानिद्राप्रचला-प्रचलाप्रचला-स्त्यानगृद्धिवेदनीयानि च ॥८॥

सदसद्वेद्ये ॥९॥

दर्शनचारित्रमोहनीयकषायनोकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विषोडशनवभेदाः सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयानि कषायनोकषायावनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानावरण संज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमायालोभा हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुंनपुंसक वेदाः ॥१०॥

नारकतैर्यग्योनमानुषदैवानि ॥११॥

गतिजातिशरीराङ्गोपाङ्गनिर्माणबन्धनसङ्घात संस्थानसंहननस्पर्शरसगन्धवर्णानुपूर्व्यगुरुलघूपघातपराघातातपोद्योतोच्छ्वासविहायोगतयः प्रत्येकशरीरत्रससुभगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्तस्थिरादेययशांसि सेतराणितीर्थकृत्त्वं च ॥१२॥

उच्चैर्नीचैश्च ॥१३॥

दानादीनाम् ॥१४॥

आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोट्यः परा स्थितिः ॥१५॥

सप्ततिर्मोहनीयस्य ॥१६॥

नामगोत्रयोर्विंशतिः ॥१७॥

त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुष्कस्य ॥१८॥

अपरा द्वादशमुहूर्ता वेदनीयस्य ॥१९॥

नामगोत्रयोरष्टौ ॥२०॥

शेषाणामन्तर्मुहूर्तम् ॥२१॥

विपाकोऽनुभाव: ॥२२॥

स यथानाम ॥२३॥

ततश्च निर्जरा ॥२४॥

नामप्रत्यया: सर्वतो योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाढस्थिता: सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्तप्रदेशा: ॥२५॥

सद्वेद्यसम्यक्त्वहास्यरतिपुरुषवेदशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ॥२६॥

नवमोऽध्याय:

आस्रवनिरोध: संवर: ॥१॥

स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरीषहजयचारित्रै: ॥२॥

तपसा निर्जरा च ॥३॥

सम्यग्योगनिग्रहो गुप्ति: ॥४॥

ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गा: समितय: ॥५॥

उत्तम: क्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिञ्चन्यब्रह्मचर्याणि धर्म: ॥६॥

अनित्याशरणसंसारैकत्वान्यत्वाशुचित्वास्रवसंवरनिर्जरालोकवोधिदुर्लभधर्मस्वाख्याततत्वानुचिन्तनमनुप्रेक्षा: ॥७॥

मार्गाच्यिवननिर्जरार्थं परिसोढव्या: परीषहा: ॥८॥

क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याक्रोशवधयाचनाऽलाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाज्ञानादर्शनानि ॥९॥

सूक्ष्मसंपरायच्छद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश ॥१०॥

एकादश जिने ॥११॥

वादरसंपराये सर्वे ॥१२॥

ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ॥१३॥

दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ ॥१४॥

चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीनिषद्याक्रोशयाचनासत्कार-पुरस्काराः ॥१५॥

वेदनीये शेषाः ॥१६॥

एकादयो भाज्या युगपदैकोनविंशतेः ॥१७॥

सामायिकच्छेदोपस्थाप्यपरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसंपराययथाख्यातानि चारित्रम् ॥१८॥

अनशनावमौदर्यवृत्तिपरिसंख्यानरसपरित्यागविविक्तशय्यासन-कायक्लेशा वाह्यं तपः ॥१९॥

प्रायश्चित्तविनयवैयावृत्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम् ॥२०॥

नवचतुर्दशपञ्चद्विभेदं यथाक्रमं प्राग् ध्यानात् ॥२१॥

आलोचनप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारोपस्थापनानि ॥२२॥

ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः ॥२३॥

आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्षकग्लानगणकुलसङ्घसाधुसमनोज्ञानाम् ॥२४॥

वाचनाप्रच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशाः ॥२५॥

वाह्याभ्यन्तरोपध्योः ॥२६॥

उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यानम् ॥२७॥

आ मुहूर्तात् ॥२८॥

आर्तरौद्रधर्मशुक्लानि ॥२९॥

परे मोक्षहेतू ॥३०॥

आर्तममनोज्ञानां सम्प्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहारः ॥३१॥
वेदनायाश्च ॥३२॥
विपरीतं मनोज्ञानाम् ॥३३॥
निदानं च ॥३४॥
तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानाम् ॥३५॥
हिंसानृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशविरतयोः ॥३६॥
आज्ञाऽपायविपाकसंस्थानविचयाय धर्ममप्रमत्तसंयतस्य ॥३७॥
उपशान्तक्षीणकषाययोश्च ॥३८॥
शुक्लेचाद्ये पूर्वविदः ॥३९॥
परे केवलिनः ॥४०॥
पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रिया-
निवृत्तीनि ॥४१॥
तत् त्र्येककाययोगायोगानाम् ॥४२॥
एकाश्रये सवितर्के पूर्वे ॥४३॥
अविचारं द्वितीयम् ॥४४॥
वितर्कः श्रुतम् ॥४५॥
विचारोऽर्थव्यञ्जनयोगसंक्रान्तिः ॥४६॥
सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानन्तवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमको-
पशान्तमोहक्षपकक्षीणमोहजिनाः क्रमशोऽसङ्ख्येयगुण-
निर्जराः ॥४७॥
पुलाकवकुशकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रन्थाः ॥४८॥
संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिङ्गलेश्योपपातस्थान विकल्पतः
साध्याः ॥४९॥

दशमोऽध्यायः

मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणान्तरायक्षयाच्च केवलम् ॥१॥
वन्धहेत्वभावनिर्जराभ्याम् ॥२॥
कृत्स्नकर्मक्षयो मोक्षः ॥३॥
औपशमिकादि भव्यत्वाभावाच्चान्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शन-
सिद्धत्वेभ्यः ॥४॥
तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात् ॥५॥
पूर्वप्रयोगादसङ्गत्वाद् वन्धच्छेदात् तथागतिपरिणामाच्च
तद्गतिः ॥६॥
क्षेत्रकालगतिलिङ्गतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहना-
न्तरसंख्याल्पवहुत्वतः साध्याः ॥७॥

॥ तत्त्वार्थ सूत्र समाप्त ॥

सुभासिय गाहाओ

नमिऊण असुर-सुर-गरुल-भुयंग-परिवंदिए ।
गयकिलेसे अरिहे-सिद्धायरिय,-उवज्झाय-सव्वसाहूणं ॥१॥

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपारगयाणं ।
लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्व-सिद्धाणं ॥२॥

जो देवाणमवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ।
तं देवं देवमहियं सिरसा वन्दे महावीरं ॥३॥

इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ।
संसार-सागराओ तारेइ, नरं व नारिं वा ॥४॥

सिद्धाणं नमो किच्चा, संजयाणं च भावओ ।
सन्ती सन्तीकरे लोए पत्तो गइमणुत्तरं ॥५॥

देव-दाणव-गंधव्वा जक्ख-रक्खस्स किन्नरा ।
बंभयारिं नमंसंति दुक्करं जे करंति तं । ॥६॥

सारं दंसणनाणं, सारं तव-नियम-संजम सीलं ।
सारं जिणवरधम्मं, सारं संलेहणा पंडियमरणं । ॥७॥

कल्लाण कोडिकारिणी दुग्गइ दुह निट्ठवणी ।
संसार जल तारिणी एगंत सो होइ जीवदया । ॥८॥